जाओ
और
मसीह की
कलीसिया बनाओ

कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई

द्वारा

डोटा

मैनुएल 7

समूह के अगुवों के लिए

(चौथा संशोधित संस्करण 2016)

प्रस्तावना

कलीसिया क्या है।

विश्वव्यापी स्तर पर, कलीसिया मसीह की देह है (इफिसियों 1:22-23) और सारे मसीही उस देह के अंग हैं (1 कुरिन्थियों 12:12)। स्थानीय स्तर पर, मसीहियों के किसी घर (रोमियों 16:5) या शहर (1 कुरिन्थियों 1:2) में जमा होने को कलीसिया कहा जाता है। केवल यीशु सारी स्थानीय व विश्वव्यापक कलीसियाओं का सिर है। केवल वह ही कलीसिया का प्रमुख चरवाहा और बिशप है (1 पतरस 2:24;5:4)। कलीसिया एक *आत्मिक घर है जिसमें प्रत्येक मसीही एक जीवित पत्थर* (1 पतरस 2:5) *या वह वास स्थान है जहाँ पर परमेश्वर अपनी आत्मा के माध्यम से वास करता है* (इफिसियों 2:21-22)। *कलीसिया एक घराना या परमेश्वर का परिवार है*(इफिसियों 2:19)। जिसमें स्वयं परमेश्वर प्रेम व देखभाल करने वाले पिता के समान रहता है और सारे मसीही लोग एक दूसरे के साथ भाई व बहन के रूप में रहते हैं। *कलीसिया एक भेड़ के झुण्ड के समान है जो अपने आगे चलने वाले चरवाहे का अनुसरण करते है*(1पतरस 5:2; 2:25;5:4)। कलीसिया परमेश्वर का चुना हुआ पवित्र देश है जो उन लोगों से मिलकर बना होता है जिन्हें परमेश्वर ने सम्पूर्ण संसार में से चुना होता है(1पतरस 2:9-10)*कलीसिया परमेश्वर के राज्य या उसके धरती पर राजा होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है*(मत्ती 13:36-43; 16:18-19;21:42-44)। *कलीसिया अभी तक भी सिद्ध वास्तविकता नहीं है*(मत्ती 13:24-30), लेकिन मसीह के द्वितीय आगमन पर, *वह मसीह की सिद्ध दुल्हन हो जाएगी*(प्रकाशितवाक्य 21:1-2,9-10, 19:7)। एक तरफ तो कलीसिया संसार में *एक योद्धा कलीसिया है* जो शत्रु के सारे आक्रमणों के विरूद्ध खड़ी होती है(मत्ती 16:18-19; इफिसियों 6:10-18; प्रकाशितवाक्य 12:10-12)। जबकि दूसरी ओर कलीसिया *स्वर्ग में एक विजयी कलीसिया है* जहां पर इस दुनिया से कूच कर गये मसीही पहले ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं(गलातियों 4:26; इब्रानियों 1:10,16;12:22-14;13:14)।

किस प्रकार से मसीह की कलीसिया बनती है?

मसीह कलीसिया का सस्थापक, मालिक और निर्माता है। वह अपनी कलीसिया को बनाता है और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल नहीं हो सकते (मत्ती 16:18)! वह अपनी कलीसिया को पवित्र आत्मा (प्रेरितों 20:28), बाइबल (2 तीमुथीयुस 3:16-17) और स्थानीय कलीसिया के पुनरियों की परिषद (1 तीमुथी 5:17) के द्वारा अगुवाई करता है। मसीह ने यहूदियों, समारियों और अन्यजातियों में कलीसिया की ऐतिहासिक बुनियाद रखने का काम प्रेरितों के द्वारा किया (इफिसियों 2:20)। लेकिन अब वह कलीसिया का निर्माण करने के लिए अति साधारण विश्वासी का इस्तेमाल करता है। वह उन मसीहियों के द्वारा कलीसिया का निर्माण करता है जिनके लक्ष्य निम्नलिखित होते हैं: जो एक दूसरे की ज़िम्मेदारियों को पूरा करने में सहायता के द्वारा आपसी रिश्ते बनाते हैं (इफिसियों 4:1-2), ठोस मसीही सिद्धान्तों के आधार पर अपनी आत्मा की एकता को बनाये रखते हैं (इफिसियों 4:3-6)जिससे वे इस एकता में पायी जाने वाली विविधता को बनाये रखें (इफिसियों 4:7-11), जो मसीह की कलीसिया के भीतर व बाहर व्यवहारिक काम करने के लिए लोगों को तैयार करते हैं (इफिसियों 4:12)और जो सारे मसीहियों को परिपक्ता में अगुवाई करते हैं (इफिसियों 4:13-14)। अत: कलीसिया सत्य,प्रेम, मसीह की समानता और नियमित वृद्धि (इफिसियों 4:15-16) पर आधारित एक समुदाय बन जाती है। मसीह की कलीसिया का निर्माण करना आज सभी विश्वासियों का लक्ष्य है।

डोटा पाठयक्रम समूह के अगुवों को निम्नलिखित घटक उपलब्ध कराने के द्वारा मसीह की कलीसिया को व्यवहारिक बनाता है:

1. प्रत्येक मैनुएल में 12 अध्याय दिये गये हैं जिन्हें 3 महीनों में (अर्थात एक अध्याय प्रति सप्ताह) या छ: महीनों में(अर्थात एक अध्याय प्रति 14 दिनों में) समाप्त किया जा सकता है। गहन अध्ययन कार्यक्रम में पाठयक्रम को छ: दिनों में भी समाप्त किया जा सकता है।
2. महत्वपूर्ण बाइबल के पद विद्यार्थी की मसीह, उसकी कलीसिया और बाइबल को जानने में मदद करते हैं।
3. गहरे शब्दों में लिखे निर्देश जैसे “पढें” “खोजें व चर्चा करें” समूह के अगुवें को अगुवाई करने में सहायता प्रदान करते हैं।
4. “नोट्स” प्रत्येक प्रश्न के उत्तर का साराशं बताते हैं। यह समूह अगुवे के लिए एक मार्गदर्शिका के रूप में काम करता है।
5. यह पाठयक्रम हमें मण्डली का निर्माण करने के लिए व्यवहारिक तरीके व अकेले या छोटे समूह के साथ यूहन्ना की पुस्तक का अध्ययन करने में सहायता करता है।
6. हर एक अध्याय में घर पर तैयारी करने का काम होता है, जिसे अध्याय के अन्त में विद्यार्थियों को दिया जा सकता है।

7. प्रशिक्षण पाठयक्रम दूसरों को देने के लिए सहज है। प्रत्येक पाठयक्रम के 12 अध्यायों को पूरा करने के बाद, जो विद्याथी किसी समूह में दूसरे लोगों को यह शिक्षा देना चाहते हैं वे समूह के अगुवे के लिए एक प्रति या कॉपी प्राप्त कर सकते हैं।
   हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर आपके क्षेत्र में तेजी से मण्डलियों की (घरेलू कलीसिया) संख्या को बढ़ाये और ज्यादा से ज्यादा लोग परमेश्वर पर विश्वास करने में आज्ञाकारी बन जाएं(प्रेरितों 6:7)। यीशु ने कहा,“मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा और अधोलोक के फाटक उसमें प्रबल नहीं होगें!”(मत्ती 16:18)! परमेश्वर को महिमा मिले! “क्योंकि उसी की ओर से, और उसी के द्वारा और उसी के लिए सब कुछ है। उसकी महिमा युगानयुग होती रहे: आमीन!”(रोमियों 11:26)

डोटा (इस नाम की उत्पत्ति 05-10-1993 में हुआ जब यह पाठयक्रम पहली विशेष तौर पर रेडियो में प्रसारित किया गया, “Discipleship training On The Air”, अर्थात चीन पर रोडियो पर प्रसारण व प्रशिक्षण)**1995** में (प्रथम संस्करण)। **2016** में (चौथा संशोधित संस्करण)।

सर्वाधिकार

मसीह की कलीसिया बनाने पर समूह के अगुवों के लिए तैयार किये गये 4 मैनुएल के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। उन्हें प्रशिक्षण देने के लिए नि:शुल्क नकल किया जा सकता है। लेकिन उन्हें बेचा नहीं जा सकता। उन्हें बिना लिखित अनुमति के दूसरी भाषा में अुनवाद नहीं किया जा सकता।

सिफारिश

इस सामग्री को बहुतायत से इस्तेमाल करने और एक आशीष बनने के लिए तैयार किया गया है। लेकिन मसीह की कलीसिया बनाने के 4 मैनुएल का उददेश्य समूह के अगुवों या मसीहियों को तैयार करना है इसलिए, यह सुझाव दिया जाता है कि केवल समूह के अगुवे ही मैनुएल 4 की नकल या कॉपी करें। एक विद्यार्थी को ठीक मूल पाठयक्रम की नकल केवल तभी दी जाये जब उनसे सभी 12 अध्यायों की शिक्षा प्राप्त कर ली हो और वह किसी समूह या किसी व्यक्ति को शिक्षा देने की कामना करता हो।

विषय सूची

समूह के अगुवों के लिए नियमावली 7
कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई

परिचय व सर्वाधिकार

प्रशिक्षण कार्यक्रम 1

3 माह के लिए साप्ताहिक कार्यक्रम। सप्ताह में डेढ़ से लेकर 2 घण्टे के लिए। समूह ज्यादा से ज़्यादा 8 लोगों तक का ही हो।

प्रत्येक कार्यक्रम प्रार्थना के साथ शुरू होकर गृहकार्य देते हुए प्रार्थना के साथ ही समाप्त होता है।

अध्याय 25 शान्त समय को साझा करना (लूका 1:1–4:30)
याद करना (1. छोड़ना मिलना : उत्पत्ति 2:24)
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **मसीही परिवार में बच्चे का पालन पोषण करना**)

अध्याय 26 शान्त समय को साझा करना (लूका 4:31–7:50)
याद करना (2. प्रेम व अगुवाई: इफिसियों 5:23,25)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना रचित सुसमाचार। अध्याय 11)

अध्याय 27 शान्त समय को साझा करना (लूका 8:1–11:28)
याद करना (3. प्रेम करें और अधीन हों। तीतुस 2:4–5।)
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना**)

अध्याय 28 शान्त समय को साझा करना (लूका 11:29–14:35)
याद करना (4. झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23–24।)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना रचित सुसमाचार। अध्याय 12)

अध्याय 29 शान्त समय को साझा करना (लूका 15:1–18:17)
याद करना (5. विश्वास योग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3–4।)
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को **प्रशिक्षण दें**)

अध्याय 30 शान्त समय को साझा करना (लूका 18:18–21:38)
याद करना (श्रृंखला “छ” “मसीही विवाह” का पुनरावलोकन)
बाइबल का अध्ययन (यूहन्ना रचित सुसमाचार। अध्याय 7)

अध्याय 31 शान्त समय को साझा करना (लूका 22–24)
याद करना (11. यूहन्ना 11:25)
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **मसीहियों और कलीसियाओं में बढ़ोतरी**)

अध्याय 32 शान्त समय को साझा करना (तीतुस 1–3)
याद करना (12. यूहन्ना 12:32)
बाइबल का अध्ययन (यूहन्ना रचित सुसमाचार। अध्याय 14)

अध्याय 33 शान्त समय को साझा करना (इब्रानियों 1–3)
याद करना (13. यूहन्ना 13:34–35)

शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **सलाह देना और निर्णय लेना**)
अध्याय 34 शान्त समय को साझा करना (इब्रानियों 4-7)
याद करना (14.यूहन्ना 14:6)
बाइबल का अध्ययन (यूहन्ना रचित सुसमाचार। अध्याय 15)
अध्याय 35 शान्त समय को साझा करना (इब्रानियों 8-10)
याद करना (15. यूहन्ना 15:5)
शिक्षा (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना**)
अध्याय 36 शान्त समय को साझा करना (इब्रानियों 11-13)
याद करना(यूहन्ना से याद की गयी 5 आयतों को पुन: दोहराएं)
बाइबल का अध्ययन (यूहन्ना रचित सुसमाचार। अध्याय 16)
परिशिष्ट 9 कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: मसीही परिवार में बच्चों को अनुशासित करना
परिशिष्ट 10 कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: सलाह देने के लिए तथ्यों को एकत्रित करना
परिशिष्ट 11 कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: उत्तम योजनाएं बनाना
परिशिष्ट 12 कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: अधिक आत्मिक वरदान
परिशिष्ट परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने, बाइबल अध्ययन करने,मनन करने और याद करने के तरीके: समूह के अगुवों के लिए मैनुएल 1 के परिशिष्टों को देखें।

प्रशिक्षण कार्यक्रम 2

गहन कार्यक्रम का इस्तेमाल सप्ताह में एक बार पूरे दिन या 6 दिन के गहन प्रशिक्षण सेमीनार के दौरान किया जा सकता है। पूरे समूह को प्रशिक्षित समूह अगुवे के साथ छोटे समूहों में बांट दें। समूह को 3-10 लोगों के बीच ही सीमित रखें।

सुझावित कार्यक्रम

09.00-09.30	आराधाना (बड़े समूह के साथ)
09.30-11.00	शिक्षा (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
11.30-13.00	बाइबल अधययन (छोटे समूह के साथ)
	अन्तराल
16.00-17.00	शिक्षा या बाइबल अधययन को पूरा करने, प्रश्नों के जवाब देने, या अतिरिक्त शिक्षा के लिए (बड़े समूह के साथ)
	अन्तराल
17.30-17:45	मनन (बड़े समूह के साथ) व वचन याद करना (दो दो के समूह में)
17:45-18:30	बाइबल पठन (अकेले)
18:30-19.00	परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत करना (दो दो के समूह में)
19.00-19:45	बांटना(बड़े समूह के साथ) और प्रार्थना करना (छोटे समूह के साथ)

दिन 1 (अध्याय 25+26)
प्रार्थना
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **मसीही परिवार में बच्चे का पालन पोषण करना**)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 11)
याद करना (उत्पत्ति 2:24+इफिसियों 5:23,25)
बाइबल पठन (लूका 1-7)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में: लूका 6:27-45)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 2 (अध्याय 27+28)
प्रार्थना
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना**)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 12)
याद करना (तीतुस 2:4-5+मत्ती5:23-24)
बाइबल पठन (लूका 8-14)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय (दो दो के जोड़े में:लूका 11:33-54)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 3 (अध्याय 29+30)
प्रार्थना
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को **प्रशिक्षण दें**)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 13)
याद करना (नीतिवचन 3:3-4 + "मसीही विवाह" श्रृंखला छ का पुनरावलोकन)
बाइबल पठन (लूका 15-21)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय(दो दो के जोड़े में: लूका 18:15-43)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 4 (अध्याय 31+32)
प्रार्थना
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **मसीहियों और कलीसियाओं की बढ़ोतरी**)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 14)
याद करना (यूहन्ना 11:25+यूहन्ना 12:32)
बाइबल पठन (लूका 22-24+तीतुस 1-3)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय(दो दो के जोड़े में: तीतुस 2:1-3:11)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 5 (अध्याय 33+34)
प्रार्थना
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **सलाह देना और निर्णय लेना**)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 15)
याद करना (यूहन्ना 13:34-35+यूहन्ना 14:6)
बाइबल पठन (इब्रानियों 1-7)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय(दो दो के जोड़े में: इब्रानियों 3:12-4:16)
बांटना और प्रार्थना करना

दिन 6 (अध्याय 35+36)
प्रार्थना
शिक्षा देना (कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: **आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना**)
बाइबल अध्ययन (यूहन्ना 16)
याद करना (यूहन्ना 15:5+यूहन्ना से याद की गयी अन्तिम 5 पदों को फिर से दोहराए)
बाइबल पठन (इब्रानियों 8:13)
परमेश्वर के साथ व्यक्ति समय(दो दो के जोड़े में: इब्रानियों 12:1-29)
बांटना और प्रार्थना करना

सम्भावित अतिरिक्त शिक्षाएं

परिशिष्ट 9 कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: मसीही परिवार में बच्चों को अनुशासित करना
परिशिष्ट 10कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: सलाह देने के लिए तथ्यों को एकत्रित करना
परिशिष्ट 11कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: उत्तम योजनाएं बनाना
परिशिष्ट 12कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई: अधिक आत्मिक वरदान

कलीसिया   अध्याय 25

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 1:1-4:30**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (या अपने नोट्स से पढ़ें) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 1:1-4:30) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(1) उत्पत्ति 2:24**

वचन याद करने की सातवीं श्रंखला (छ) “मसीही विवाह” के बारे में हैं। पांच स्मरण वचनों के शीर्षक निम्नलिखित हैं:
(1) छोड़ना और मिलना। उत्पत्ति 2:24।
(2) प्रेम और अगुवाई।
(3) प्रेम करें और अधीन हों। तीतुस 2:4-5।
(4) झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23-24।
(5) विश्वास योग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4।

दो दो करके उपरोक्त ***वचनों पर मनन करें, याद करें और उसको पुनरावलोकन करें।***
(1) छोड़ना और मिलना। उत्पत्ति 2:24। इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेगें।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* **मसीही परिवार में बच्चे का पालन पोषण करना**

परिचय। यह अध्याय हमें मसीही परिवार में बच्चे का पालन पोषण करने के बारे में बताता है। इस अध्याय में हम सीखेगें कि बाइबल बच्चों के पालन पोषण करने के क्षेत्र में माता पिता की जिम्मेदारियों के बारे में क्या कहती है। हम खास तौर पर उदाहरणों और प्रेम पर ध्यान केन्द्रित करेगें।
यशायाह 43:7 के अनुसार, *परमेश्वर ने* बच्चों *को अपनी महिमा करने के लिए बनाया* है। इसलिए भजन 127:3 में लिखा है कि बच्चे *परमेश्वर यहोवा के ही हैं।* परमेश्वर ने माता पिता के हाथों में बच्चों को *सौंपा*

है ताकि वे उसकी ओर से बच्चों की परवरिश करें। 1शमुएल 1:11,28 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार से हन्ना ने अपने पुत्र को परमेश्वर की सेवा करने के लिए दे दिया। उसने परमेश्वर से सन्तान के लिए प्रार्थना की और परमेश्वर ने उसे सन्तान दी। लेकिन उसके बाद हन्ना ने अपने बच्चे को अपने सम्पूर्ण भर परमेश्वर की सेवा करने के लिए परमेश्वर को दे दिया। परमेश्वर ऐसे मसीहियों को चाहता है जो अपने बच्चों को प्रभु के भय में होकर पालें, लेकिन वह मसीहियों से यह मांग या अपेक्षा नहीं करता है कि वे अपने बच्चे को कलीसिया या किसी संस्थान या पूर्ण काल की सेवाकाई के लिए समर्पित कर दें। इसका निर्णय बच्चा स्वयं बढ़ा होने पर कर सकता है। परमेश्वर ज्यादातर मसीही बच्चों को समाज में प्रतिदिन अपने साधारण कामों के द्वारा परमेश्वर की सेवा करने के लिए बुलाता है। लेकिन, परमेश्वर माता पिता से उसकी ओर से बच्चों की परवरिश बाइबल में दिये गये सिद्धान्तों व शिक्षाओं के आधार पर करने के लिए जरूर कहता है।
परमेश्वर ने माता पिता को तीन महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां सौंपी हैं:
वे अपने बच्चों के लिए एक आदर्श बनें
उनसे प्रेम करें
उन्हें शिक्षा व प्रशिक्षण प्रदान करें (देखें अध्याय 27)

क. बच्चे के लिए आदर्श बनने की ज़िम्मेदारी

1. माता पिता के दो प्रकार के उदाहरण।

खोजें व चर्चा करें। कौन से बुरे या अच्छे उदाहरण या आदर्श माता पिता अपने बच्चों के सामने रख सकते हैं?

(1) बाइबल माता पिता के बुरे उदाहरणों के प्रति हमें चेतावनी देती है।

पढ़ें 1 राजा 22:51-53; 2 इतिहास 25:2, 14-20; 2 इतिहास 26:4, 16-19।

ध्यान दें। इस्राएल के राजा अहज्याह ने वही किया जो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था, क्योंकि वह अपने दुष्ट माता पिता अहाब और इज़्बेल के सिखाए रास्ते पर ही चला,जिन्होंने इस्राएल से पाप करवाया। वे दोनों मूर्तिपूजक थे और वह भी मूर्तिपूजक बन गया।
राजा अमस्याह ने भी अपने खरे मन से परमेश्वर की सेवा नहीं की। वह बहुत घमण्ड करने लगा। उसका बेटा, राजा उज्जियाह भी अपने पिता के नक्शे कदम पर चला और घमण्डी बन गया।

(2) बाइबल हमें अच्छे माता पिता के प्रभाव के उदारहण भी दिखाती है।

पढ़ें नीतिवचन 31:10-31।

ध्यान दें। नीतिवचन 31:10-31 में हम एक अच्छी मां का उदारहण देखते हैं, जिसके बच्चे और उसका पति सार्वजनिक तौर पर उसकी प्रशंसा करते हैं क्योंकि वह उनके जीवन के लिए एक सुन्दर आशीष ठहरी। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि माता पिता अपने बच्चों के लिए निम्नलिखित पांच क्षेत्रों में एक आदर्श ठहरें: अर्थात आज्ञाकारिता, सच्चाई या ईमानदारी, आदर, बुद्धि और प्रेम।

(3) हालांकि मसीही माता पिता धर्मी ठहराये जा चुके हैं, लेकिन फिर भी उनसे कभी-कभी पाप हो जाता है (1 यूहन्ना 1:8-2:2)

पढ़ें मत्ती 5:23-24; नीतिवचन 3:33।

ध्यान दें। माता पिता या अभिभावक सिद्ध नहीं होते, उनसे भी गलतियां होती हैं और कई क्षेत्रों में वे अपने बच्चों पर बुरा असर डालने वाले भी ठहरते हैं(उहादरण के लिए उनके गुस्से को जाहिर करने के क्षेत्र में)।

लेकिन, उन मौकों पर अभिभावक अपने बच्चे से अपने आचरण या व्यवहार के लिए अपने बच्चे से क्षमा मांग कर उसके साथ मेल मिलाप कर सकता है। परमेश्वर बुराई करने वाले के विमुख रहता है, लेकिन वह धर्मियों के घर को आशीषित करता है(1 पतरस 3:12)।

2. परमेश्वर द्वारा माता पिता को दी गयी जिम्मेदारियों का उदाहरण।

खोजें और चर्चा करें। एक बेटी अमूमन बढ़े होकर किसके समान बनती है? बेटा बड़ा होकर किसके समान बनता है? अपने माता पिता के समान। बच्चे अपने माता पिता के दैनिक जीवन में प्रेम, अगुवाई, आदर और अधीनता को देखकर सबसे अच्छी तरह सीखते हैं।

(1) माता को परमेश्वर द्वारा दी गयी जिम्मेदारियां।

पढ़ें उत्पत्ति 3:16; तीतुस 2:4-5।

ध्यान दें। परमेश्वर द्वारा एक मां की जिम्मेदारी यह है कि वह अपने बच्चों के पिता से प्रेम करे, उसका आदर करे व उसके अधीन रहे। तीतुस 2:4 हमें बताता है कि एक जवान माँ अपने पति और बच्चे से प्रीति रखे, संयमी, पवित्रता घर का कारबार करने वाली, भली और अपने पति के अधीन रहने वाली हो ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा न होने पाएं।

यद्यपि स्त्रियां भी परमेश्वर की दृष्टि में उतनी ही मूल्यवान हैं जितने पुरूष, लेकिन परमेश्वर ने स्त्रियों को अलग कार्य सौंपे हैं:

- *शारीरिक* रूप से बच्चे जनने में
- *सामाजिक* तौर पर विवाह ओर परिवार में
- *आत्मिक* तौर पर मण्डली में भूमिका।

हालांकि संसार में परमेश्वर द्वारा दिये गये इन भिन्न कामों को अस्विकार किया जा रहा है, लेकिन मसीही महिला परमेश्वर के राज्य में इन मूल्यों को बनाये रखती है! खास तौर पर जब बच्चे जवान हो तो, उन्हें घर में मां की जरूरत होती है, जो उनसे प्रेम करने, उन्हें शिक्षा देने तथा उनकी परवरिश करने के लिए वहां है। जब भी मां के नौकरी करने का सवाल आये तो हमेशा उसे तराजू में तौल लेना चाहिए क्योंकि एक तरफ तो पत्नी की ज्यादा भौतिक वस्तुएं प्राप्त करने की इच्छा, अधिक विलासता पूर्ण और स्वाधीन या आत्मनिर्भर जीवन जीने की चाहत है तो दूसरी ओर बच्चे की भावनात्मक, सामाजिक, भौतिक और आत्मिक ज़रूरतें होती हैं।

(2) परमेश्वर द्वारा पिता को सौंपी गयी ज़िम्मेदारियां।

पढ़ें उत्पत्ति 3:17-19; इफिसियों 5:22-25; 6:4; 1 कुरिन्थियों 13:4-8।

ध्यान दें। परमेश्वर द्वारा पिता को दी गयी जिम्मेदारी यह है कि वह अपने बच्चों की मां को प्रेम करके व उसकी अगुवाई करके अपनी पत्नी को प्रेम करे। परमेश्वर ने पिता को अलग तरह के काम सौंपे हैं:

- जिस तरह से मसीह ने कलीसिया को प्रेम किया है वैसे ही वह बच्चों की मां को प्रेम करे।
- जैसे मसीह ने कलीसिया की अगुवाई की वैसे वह अपने बच्चों की अगुवाई करे।
- अपने परिवार के भोजन पानी का इन्तेजाम करने के लिए काम करे।
- कि वह अपने बच्चे की परवरिश परमेश्वर के वचनों और शिक्षाओं के आधार पर करे।

हालांकि संसार में परमेश्वर द्वारा दिये गये इन भिन्न कामों को अस्विकार किया जा रहा है, लेकिन मसीही पिता परमेश्वर के राज्य में इन मूल्यों को बनाये रखता है। खास तौर पर जब उसके बच्चे जवान हों, जिन्हें एक ऐसे पिता की आवश्यकता है जो उन पर ध्यान दे और उनके साथ दोस्त की व्यवहार करे, जो उन्हें सलाह और प्रोत्साहन प्रदान करे।

(3) इसके अलावा परिवार में, माता पिता जो बोते हैं वह काटते भी हैं।

पढ़ें गलातियों 6:7-8; यहेजकेल 16:44।

ध्यान दें। जब कोई पिता मसीह के समान प्रेम व अगुवाई करता है, तो मां के लिए उसे प्रेम करना और परिवार में उसकी अगुवाई के अधीन होना कोई मुश्किल बात नहीं होती। बच्चे भी इसे देखकर सीखेगें कि उन्हें किस तरह से प्रेम, अगुवाई, आदर करना और व्यवहारिक तौर पर अपने अधिकारियों के अधीन होना है। जब माता पिता परमेश्वर द्वारा उन्हें सौंपी गयी जिम्मेदारी को ईमानदारी से पूरा करते हैं, तो बच्चे भी उन्हें देखकर सीखते हैं कि परमेश्वर के राज्य में माता पिता होने का अर्थ क्या होता है। इसके अलावा, यहेजकेल 16:44 के अनुसार, “पुत्री अपनी मां के जैसे ही होगी” और “पुत्र अपने पिता के जैसा ही होगा!”

(4) उपरोक्त कारण दर्शाते हैं कि क्यों बच्चों को एक पिता और माता की आवश्यकता होती है।

पढ़ें मलाकी 2:13-16;लूका 14:12-14; याकूब 1:27।

ध्यान दें। परमेश्वर तलाक से इस लिए सबसे ज्यादा नफरत करता है क्योंकि तलाक के कारण बच्चों की जिन्दगी पूरी तरह बर्बाद हो जाती है। परमेश्वर मसीही विवाह और मसीह परिवार को इसलिए खड़ा करता है कि वह अपने योग्य (सन्तान) उत्पन्न कर सके! ऐसे मामलों में जहां पर किसी परिवार में यदि माता या पिता में से कोई एक मर गया हो, तो मसीही भाई बहनों को उस विधवा बहन या विधुर या तलाकशुदा के परिवार का ख्याल करना चाहिए। उन्हें विधवा के परिवार को नियमित तौर पर अपने परिवार में आमन्त्रित करना चाहिए जिससे वे इन आत्मिक सिद्धान्तों की शिक्षा पा सकें।

3. माता पिता के लोगों और परिस्थितियों के प्रति प्रतिक्रियाओं के उदाहरण।

खोजें और चर्चा करें। किन परिस्थितियों में एक अभिभावक अपने बच्चे पर प्रभाव डाल *सकता है?*
बच्चों के लिए यह देखना बहुत महत्वपूर्ण हैं कि उनके माता पिता लोगों व परिस्थितियों के प्रति किस प्रकार की प्रतिक्रिया प्रगट करते हैं, खास तौर पर रिस दिलाने वाले लोगों और कठिन परिस्थितियों में।

(1) माता पिता के अच्छे उदाहरण का अनुसरण करना।

पढ़ें 1 थिस्लुनिकियों 1:3; 5:14; रोमियों 8:28।

ध्यान दें। मुश्किल स्वभाव वाले लोगों और कठिन परिस्थितियों का सामना करना माता पिता के लिए कठोर स्वभाव के लोगों के प्रेम ज़ाहिर करने, चुनौतिपूर्ण परिस्थितियों में *विश्वास* करने तथा मुश्किल परिस्थितियों में *आशा* दिखाने का अवसर होता है। जब माता पिता निकम्मे लोगों को डांटते, डरे हुए लोगों को उत्साहित करते, कमज़ोरों की सहायता करते, और सबके साथ धीरज के साथ व्यवहार करते हैं तो उनके बच्चो को अच्छा लगता है। इस तरीके से बच्चे अपने माता पिता के पदचिन्हों पर चलना सीखते और वैसे ही कामों को करते हैं! जब बच्चे देखते हैं कि उनके माता पिता किस तरह से परमेश्वर पर भरोसा करते और अपनी कठिन परिस्थितियों में भी किस तरह परमेश्वर के कामों के प्रति समर्पित रहते हैं तो, वे भी व्यस्क होने पर अपने माता पिता के अच्छे उदाहरण का अनुसरण करना पसन्द करेगें।

(2) माता पिता के बुरे उदाहरण का अनुसरण करना।

पढ़ें गलातियों 6:7-8; 1 पतरस 2:23।

ध्यान दें। लेकिन बच्चे केवल माता पिता के अच्छे कामों पर ही ध्यान या अनुसरण नहीं करते। वरन वे अपने माता पिता की बुराईयों को भी दोहराते हैं। यदि उनके माता पिता किसी की आलोचना करते, दूसरों की चुगली या न्याय करते, किसी खास समूह के बारे में नफरत फैलाते हैं(जाति या, धर्म पर टिप्पणी), किसी के द्वारा बेइज्जती करने पर प्रतिकार करते, बदला लेते है, लोगों से परेशान होकर उन्हें धमकाने लगते हैं, तो उनके बच्चे भी बड़े होने पर उनकी इन्हीं बुराईयों को दोहरायेगें।

4. माता पिता के परमेश्वर के साथ सम्बन्ध का उदाहरण।

(1) मसीही परिवारों में मसीह का स्थान।

खोजें और चर्चा करें। मसीही परिवार में मसीह या परमेश्वर को क्या स्थान प्राप्त होना *चाहिए?*

पढ़ें व्यवस्थाविवरण 6:5-6।

ध्यान दें। परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने के क्षेत्र में माता पिता को अपने बच्चों के लिए एक उदाहरण बनना चाहिए। उदाहरण के लिए, प्रतिदिन घर में बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना। व्यवस्थाविवरण 6:5-6 में, परमेश्वर माता पिता को आज्ञा देते हैं कि उन्हें सबसे पहले, “अपने परमेश्वर यहोवा से पने सारे मन, और अपने सारे जीव, और अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना”। माता पिता को चाहिए कि वे परमेश्वर की आज्ञा को अपने हृदय पर राज्य करने दें और उसी की अगुवाई से उनका जीवन व व्यवहार प्रभावित हो। माता पिता के जीवन और मसीही परिवार में सबसे पहला स्थान परमेश्वर को मिलना चाहिए!

(2) मसीही परिवार में बच्चों व सेवाकाई का स्थान।

खोजें व चर्चा करें। मसीही परिवारों में बच्चों और सेवाकाई को कौन सा स्थान नहीं दिया जाना चाहिए?

पढ़ें मत्ती 10:37; 1 तीमुथीयुस 3:4-5।

ध्यान दें। मत्ती 10:37 में यीशु मसीह सिखाते हैं,“ जो कोई अपने पुत्र या पुत्री को मुझसे बढ़कर प्रेम करता है, तो वह मेरे योग्य नहीं है।” इसलिए, माता पिता को *अपनी पूरी दुनिया को अपने बच्चों तक ही सीमित रखने से बचना* चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से उनके बच्चे स्वार्थी हो जाएंगे और बिगड़ जाएंगे। इसके बजाय, माता पिता ने बच्चों को परिपक्वता, जिम्मेदारियों और चरित्र में मज़बूत होने में सहायता करनी चाहिए।

इसी तरीके से, मसीही परिवारों को केवल मसीही सेवाकाई के चारों तरफ ही सीमित होकर नहीं रह जाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे को ऐसा लगेगा कि उसे नज़रअन्दाज़ किया जा रहा है और वह माता पिता से किसी प्रकार की उम्मीद छोड़ देगा। इसके बजाय मसीही परिवार को केवल यीशु मसीह और उसकी शिक्षाओं पर ही अपना ध्यान देना चाहिए। इस तरके से विभिन्न ज़िम्मेदारियों और अभिभावकों तथा बच्चों की प्राथमिकताओं में बेहतर सन्तुलन बनाये रखना सम्भव हो पाएगा।

ख. बच्चों को प्रेम करने की माता पिता की ज़िम्मेदारी

1. 1 कुरिन्थियों 13 के सिद्धान्तों पर आधारित होकर प्रेम करें।

खोजें और चर्चा करें। व्यवहारिक तौर पर मसीही अभिभावकों को किस तरह से प्रेम करना *चाहिए?*

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 13:4-8।

ध्यान दें। माता पिता को अपने बच्चों से विचारों में या ज्यादा लाड़ प्याद दिखाकर प्रेम नहीं,वरन बाइबल के सिद्धान्तों पर आधारित होकर प्रेम करना चाहिए। "धीरज" वह प्रेम हैं जो इन्तज़ार कर सकता है। प्रेम बच्चे पर अपनी कृपा प्रगट करने के लिए जोर जबरजस्ती नहीं करता वरन वह अपनी कृपा प्रगट करने के लिए इन्तज़ार कर सकता है। "कृपा" एक ऐसा प्रेम है, जो मिलनसार होता है, जो हमेशा सहायता करता है और बच्चे की सहायता करने का एक भी अवसर जाने नहीं देता। बच्चे के लिए क्या अच्छा है उसका फैसला बच्चे की इच्छा या परेशानी पर निर्भर नहीं करता, वरन वह परमेश्वर के वचनों और माता पिता के अनुभवों पर निर्भर करता है। "जलन न करने वाला प्रेम" वह प्रेम हैं जो बच्चे की सराहना करता, शाबाशी देता और जो सम्मान उसे मिलना चाहिए वह उसे प्रदान करता है।"घमण्ड न करना" वह प्रेम हैं जो अपनी उपलब्धियों के बावजूद शालीन रहता है और बच्चों को प्रभावित करने का प्रयास नहीं करता। "नहीं फूलने वाला" प्रेम है जो बच्चे के साथ सम्बन्ध बनाते समय अपनी ताकत और बच्चे की कमज़ोरी के प्रति विनम्र बना रहता है। बच्चा अपने माता पिता के ढोंग व दोहरे मापदण्ड को जल्द ही भांप जाता है। "झुंझलाता नहीं" वह प्रेम है, जो बच्चे के प्रति अच्छे व भद्र आचरण को प्रगट करता है। "अपनी भलाई नहीं चाहता" वह प्रेम है जो निस्वार्थ भाव से अपनी नहीं वरन बच्चे का लाभ चाहता है। "बुरा नहीं मानता" वह प्रेम है, जो बच्चे की वजह से लगने वाली चोटों को चुपचाप सह लेता है।

2. एकाग्र ध्यान देने वाला प्रेम।

खोजे व चर्चा करें। *व्यवहारिक तौर पर मसीही माता पिता को अपने बच्चों पर किस तरह ध्यान देना चाहिए?*

(1) एकाग्र ध्यान देना।

पढ़ें गलातियों 6:7-8।

ध्यान दें। माता पिता को अपने बच्चों पर एकाग्र ध्यान देना चाहिए, नहीं तो, बच्चे भी बड़े होकर उनकी किसी भी बात पर बिल्कुल ध्यान नहीं देगें। माता पिता बच्चों की जवानी में वहीं काटते हैं जो उन्होंने उनके बचपने में बोया होता है!

(2) ध्यान से उनकी बात सुनें।

पढ़ें नीतिवचन 18:13।

ध्यान दें। जब बच्चे कोई प्रश्न करें या अपने माता पिता से कोई बात करें तो माता पिता को उनकी बातें ध्यान से सुनना चाहिए। माता पिता को बच्चों की बातों पर अन्दाज़ा नहीं लगाना चाहिए। उन्हें धीरज के साथ तब तक बच्चे की बात को सुनना चाहिए जब तक कि बच्चा अपनी बात को पूरा न कर ले। उन्हें बच्चे की बात को गम्भीरता के साथ सुनना चाहिए और उसे ग्रहण योग्य महसूस कराने में सहायता करनी चाहिए(रोमियों 15:7)। जब बच्चे को महसूस होता है कि उसके माता पिता का रवैय्या उसकी बातों के प्रति आलोचनात्मक है, या वह उनका मज़ाक बनाते हैं, तो उसे ऐसा लगता है कि उसके माता पिता न सिफ उसकी बातों को वरन उसे भी अस्वीकार कर रहे हैं। अगर कोई बच्चा अपने माता पिता की बात नहीं सुन रहा है तो इसका कारण यह भी हो सकता है कि उन्होंने भी उसकी बात को कभी ध्यान से नहीं सुना।

(3) बाधामुक्त समय व्यतीत करें।

पढ़ें मरकुस 3:13-14

ध्यान दें। यीशु चाहते थे कि उसके चेले हमेशा "उसके साथ" रहें। "उनके साथ" रहना ही एकमात्र रास्ता था, जिसके द्वारा वह उन्हें प्रभावित और प्रशिक्षित कर सकता था। माता पिता को अपने बच्चों के साथ

नियमित तौर पर बाधामुक्त व समर्पित समय बिताने की योजना बनानी चाहिए। साथ मिलकर रचनात्मक काम करें, जैसे उनके साथ खेलें, उनके साथ घूने जाएं, उनके साथ गाना बजाना करें, कहानियां सुनाएं। "उनके साथ" हर वह काम करें जो उनके लिए महत्वपूर्ण हो! होने दें कि किसी भी अन्य वजह से बच्चों के साथ समय बिताने की योजना भंग न होने पाए। [2]

(4) धन और खुद को खर्च करें।

पढ़ें **2 कुरिन्थियों 12:14-15।**

ध्यान दें। पौलुस कहता है कि माता पिता को अपने बच्चों के लिए धन *बटोरना* चाहिए। वह कहता है कि वह अपने आत्मिक बच्चों के लिए खुशी खुशी अपना सब कुछ खर्च करने के लिए तैयार है। माता पिता को बच्चों की *महत्वपूर्ण जरूरतों* को पूरा करने के लिए अपना धन *खर्च करने* में खुशी महसूस करना चाहिए। उन्हें अपने बच्चे को घर में, स्कूल में, क्रीड़ा पाठशाला में, विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम के माध्यम से उत्तम शिक्षा, युवा केन्द्रों द्वारा यथा सम्भव आत्मिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। उन्हें अगर अपने कुछ खर्च को काट कर या कुछ अभिलाषाओं को त्यागकर या बच्चों के शिक्षा प्राप्त करने के लिए कहीं जाने पर कुछ अतिरिक्त कार्य करके भी धन अर्जित करना पड़े तो करना चाहिए। और बाद में माता पिता को अपने बच्चों पर आर्थिक बोझ डालने वाला नहीं होना चाहिए।

पौलुस यह भी कहता है कि वह *उनके प्राणों को बचाने के लिए खुद भी बहुतायात से खर्च होने के लिए* तैयार है। चाहे बच्चा अपने माता पिता को ज्यादा प्रेम न भी करे, लेकिन माता पिता को अपने बच्चे से प्रेम करना चाहिए। बच्चे को अपने आप से नहीं वरन मसीह से बांधकर रखें। क्योंकि मसीह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए वरन इसलिए कि वह खुद दूसरों की सेवा टहल करे और उनकी छुड़ौति के लिए अपने प्राणों को दे(मरकुस 10:45)। निश्चय ही, माता पिता को अपने बच्चे की वास्तविक(भावनात्मक, बौद्धिक, शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक) जरूरत को पूरा करने के लिए त्याग करने या उनको लाड़ दिखाते हुए उनकी सारी इच्छाओं को पूरा करने में अन्तर करना आना चाहिए!

3. परिपक्वता और पूर्ण सोहार्द के साथ एक दूसरे पर निर्भरता का विकास करते हुए प्रेम करें।

परिचय। कई बच्चे पूरी तरह से सारे अधिकारों और नियन्त्रण से स्वावलम्बी हो जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे विरोधी और अपराधी बन सकते हैं। जबकि दूसरे बच्चे पूरी तरह से माता पिता या दूसरों पर निर्भर हो जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे अपरिपक्व या जीवन भर किसी न किसी पर निर्भर रहते हैं। पूर्ण रूप से आत्म-निर्भरता या पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होना दोनों ही प्रकार के रिश्ते सिद्ध नहीं हैं।

एक तरफ बाइबल हमें शिक्षा देती हैं कि परिपक्व मसीहियों को एक दूसरे की जरूरत होती है उन्हें एक दूसरे की सेवा करनी चाहिए(1कुरिन्थियों 12:21; 1पतरस 4:10)। इसलिए बच्चों *को कुछ हद तक आपस में एक दूसरे पर निर्भर होना सीखना जरूरी है।* दूसरी तरफ बाइबल मसीहियों को किसी भी इन्सान का गुलाम बनने के लिए मना करती है(यिर्मयाह 17:5-8; गलातियों 1:10)। इसलिए बच्चों *को दूसरों के साथ आपसी सम्बन्धों को कायम रखने के दौरान कुछ हद तक आत्म निर्भरता को सीखना भी जरूरी होता है।*

खोजें और चर्चा करें। बच्चों में परिपक्वता और स्वस्थ परस्पर निर्भरता में माता पिता द्वारा उनके बच्चों की मदद करने के लिए बाइबल क्या कहती है?

(1) बच्चों को करने के लिए कोई कार्यभार सौंपे जिसमें कोई लक्ष्य या कोई जिम्मेदारी हो।

पढ़ें विलापगीत 3:27।

ध्यान दें/ माता पिता अपने बच्चों को कोई जिम्मेदारी सौंपने के द्वारा अपने बच्चों को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। विलापगीत 3:27 हमें सिखाता है,"पुरुष के लिए जवानी में जूआ उठाना भला है"। जब बच्चों को पास हद से ज्यादा खाली समय होता है तो, वे नीरस महसूस करने लगते हैं और जिसके चलते अपने आपको बेकार के कामों में, असमाजिक व्यवहारों और यहां तक कि अपराधों में फंसा लेते हैं। लेकिन जब बच्चों को अच्छे कामों और जिम्मदारियों में व्यस्त रखा जाता है, तो वे आगे चलकर एक परिपक्व और जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। जिन कामों और जिम्मेदारियों को आज वे घर के सुरक्षित माहौल में करना सीखते हैं वे ही उन्हें बाद में समाज के असुरक्षित माहौल में काम करना और जिम्मेदारियां निभाना सिखाएंगे!

(2) बच्चों को सन्तुष्ट और धन्यवादी होना सिखाए।

पढ़ें फिलिप्पियों 4:11-12; 1 तीमुथीयुस 6:6-10।

ध्यान दें/ माता पिता अपने बच्चों को सन्तुष्ट और धन्यवादी होना सिखाकर अपने बच्चों को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। अगर माता पिता अपने बच्चों को सच में प्रेम करते हैं तो वह अपने बच्चों वे सारी चीज़ें उपलब्ध नहीं करा देते जिसके वह लायक है। बच्चे की हर इच्छा या अभिलाषा को पूरा करने से बच्चा पूरी तरह बिगड़ जाएगा। लेकिन अगर वह उन हालातों में सन्तुष्ट होना सीख जाएगा जिसमें उसको वह नहीं प्राप्त कर पाता जिसकी वह चाह कर रहा था तो वह थोड़ा बहुत रचनात्मक होने का प्रयास करता और उसे हासिल करने के लिए कुछ काम करता है, उदाहरण के लिए, वह कोई पार्ट-टाइम जौब देखता है, किसी अतिरिक्त पाठयक्रम की पढ़ाई करता है या फिर वह किसी सामूदायिक केन्द्र में काम करता है।

(3) अति-सुरक्षात्मक रवैय्या न अपनाएं।

पढ़ें यशायाह 43:2।

ध्यान दें/ माता पिता अति सुरक्षात्मक रवैय्या न अपनाकर अपने बच्चो को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। बच्चों को उस संसार में रहना और काम करना सीखना है जिसमें खतरे, परीक्षाएं, गतिरोध, और निराशाएं होती है। यशायाह 43:2, परमेश्वर ने अपने बच्चों से वायदा किया है कि, "जब तू पानी में होकर चले तो मैं तेरे साथ हूँ, जब तू नदियों में से होकर चले तब वे तुझे न डुबा सकेंगी(लाल समुद्र के बारे में विचार करें); जब तू आग में होकर चले, तब तुझे आँच न लगेगी और उसकी लौ तुझे जला न सकेगी(दानिय्येल के मित्रों के आग में डाले जाने के बारे में सोचें)!

अगर माता पिता बच्चे को हर प्रकार के खतरे और बुराई से बचाने का प्रयास करेगें, तो बच्चा अपने जीवन में कभी भी खतरों का सामना करना और बुराई का विरोध करना नहीं सीखेगा। इसके अलावा वह गम्भीर समस्याओं या मुश्किल परीक्षों के पड़ने पर सहायता के लिए पूरी तरह से परमेश्वर पर भरोसा करना भी नहीं सीखेगा।

निश्चय तौर पर, माता पिता को जरूरत पड़ने पर अपने बच्चे की सहायता करनी चाहिए। लेकिन उन्हें साथ ही साथ बच्चों को अपनी समस्या, परीक्षा और खतरों को सामना करने का अवसर भी प्रदान करना चाहिए। केवल इसी तरह से बच्चे समझ और बुद्धि को प्राप्त करते, अच्छे चुनाव करना या निर्णय लेना और बाइबल में लिखी परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करना सीखते हैं। बच्चों के साथ खड़े हों, संसार में होने वाली समस्याओं और उनके परिणामों के बारे में उनके साथ चर्चा करें, जब वे गिरें तो उन्हें दोबारा उठने के लिए प्रोत्साहित करें, उन्हें अच्छी सलाह दें और उनके लिए प्रार्थना करें, ताकि बच्चे परमेशानियों के कारण विचलित न हो जाएं। लेकिन बच्चों से इन समस्याओं और अवसरों के द्वारा सीखने का अवसर न छीनें।

(4) ज़िद्दी (मांग करनेवाले) न बने।

पढ़ें भजन 127:3।

ध्यान दें। माता पिता ज़िददी रवैय्या न अपना कर अपने बच्चों को परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करते हैं। बच्चों को पता हो कि उनकी नहीं वरन परमेश्वर की सम्पत्ति हैं! उनके माता पिता उनके "स्वामी" नहीं वरन प्रभु यीशु मसीह हैं! बच्चे तो परमेश्वर की तरफ से कुछ समय के लिए उनका पालन पोषण करने के लिए *दिये* गये हैं। एक मां का "नियन्त्रित करने वाला प्रेम" तब जाहिर होता है जब वह अपने बच्चे के हर एक विचार और प्रतिक्रिया को जानना चाहती है, या वह जब बच्चे की प्रतिक्रिया को बदलने का प्रयास करती है; या बच्चे को अपने आप पर निर्भर बनाने के द्वारा वह उसे भावनात्मक तौर पर अपने कब्जे में करना चाहती है। एक पिता का "नियंत्रण करने वाला प्रेम" तब प्रगट होता है जब वह बच्चे के बदले सारे निर्णय स्वयं करने का प्रयास करने लगता है। यदि माता पिता अपने बच्चों को प्रेम के नाम पर उन्हें अपने अधिकार में रखना चाहते हैं तो बच्चा भी आगे चलकर अधिकार जताने वाला बनेगा। वे आत्म केन्द्रित, स्वार्थी, लालची, कंजूस,गोपनशील और अक्खड़ बन जाएंगे। इसके बजाय माता पिता को अपने मन में ठानना चाहिए कि वे अपने बच्चों को अपना इनकार करना, चीज़ों को साझा करना और सेवा करने जैसी महत्वपूर्ण विशेषताओं के बारे में बताएंगे।

सारांश। माता पिता की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों की परिपक्व और परस्पर आत्म निर्भर होने में सहायता करें। लेकिन बच्चों पर उनके दोस्तों, उनके अध्यापकों, खेल के प्रशिक्षक, मास मीडिया,उनके स्मार्ट मोबाइल फोन, इलैक्ट्रोनिक्स गेम्स, टेलीविजन और उनकी किताबों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। इसलिए यदि माता पिता को इस बात का पूर्ण भरोसा हो कि उन्होंने अच्छी तरह से अपने बच्चों को पालन पोषण किया है, लेकिन फिर भी उनके बच्चे परिपक्व या जिम्मेदार नागरिक नहीं निकलते, तो माता पिता को अपने आपको दोष नहीं देना चाहिए।

अन्त में हर एक बच्चा जो कुछ बनता और जो कुछ वह करता है उसका स्वयं जिम्मेदार होता है! सभोपदेशक 11:9;12:1,13-14 में लिखा है, "हे जवान, अपनी जवानी में आनन्द कर, और अपनी जवानी के दिनों में मगन रह; अपनी मन मानी कर। और अपनी आंखो की दृष्टि के अनुसार चल। परन्तु यह जान रख कि इन सब बातों के विषय परमेश्वर तेरा न्याय करेगा.....अपनी जवानी के दिनों में अपने सृजनहार को स्मरण रख, इससे पहले कि विपत्ति के दिन और वे वर्ष आएं, जिन में तू कहें कि मेरा मन इन में नहीं लगता।"....सब कुछ सुना गया; अन्त की बात यह है कि परमेश्वर का भय मान, और उसकी आज्ञाओं का पालन कर; क्योंकि मनुष्य का सम्पूर्ण कर्तव्य यही है। क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा।"

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) ***[प्रतिक्रिया]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6 **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*
अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. “मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना ” पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। इस बात का ध्यान दें कि आप बच्चे का पालन पोषण करते समय आप बाइबल के सिद्धान्तों को उसके जीवन के आधार के रूप में इस्तेमाल करें।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। लूका 4:31-7:50** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(2) प्रेम व अगुवाई करें, इफिसियों 5:23,25 ।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 11** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 26

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]*

लूका 4:31-7:50

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 4:31-7:50) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 याद करना (5 मिनट) *[मसीही विवाह]*

(2) इफिसियों 5:23 ,25

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(2) प्रेम व मार्गदर्शन करें। इफिसियों 5:23 ,25। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही देह का उद्धारकता है। हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।

4 बाइबल अध्ययन (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]*

यूहन्ना 11:1-57

परिचय। एक साथ मिलकर, बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए **यूहन्ना 11:1-57** का अध्ययन करें। यूहन्ना अध्याय 11 (यूहन्ना 10:40-11:57) में यीशु मसीह की पिरिया (लूका 13:22-19-27) और बैतनिय्याह में ईसा.प. 29 दिसम्बर से लगभग ईसा.प फरवरी 30 तक (3 महीने) की सेवाकाई का वर्णन किया गया है।

यूहन्ना 11:1-44 में यीशु मसीह ने, लाज़र को मुर्दो में से जीवित करने के लिए, यरदन से बैतनिय्याह की यात्रा की, जो यरूशलेम के नज़दीक था। लाज़र को मुर्दो में से जीवित कर देना बाकि सारे चमत्कारों और चिन्हों से बढ़कर था और इस चमत्कार ने प्रमाणित किया कि यीशु वास्तव में मसीह था। जिस प्रकार से यीशु मसीह द्वारा रोटियों का गुणा किया जाना इस बात को चिन्हित करता है कि वह जीवन की रोटी है(6:35), और जन्म के अन्धे को आंखें प्रदान करना इस बात का प्रतीक था कि यीशु मसीह जगत की ज्योति है(8:12), उसी प्रकार से लाजर का मुर्दो में से जिलाया जाना साबित करता है कि वह अर्थात यीशु

मसीह पुनरूत्थान और जीवन है(11: 25)। इस चमत्कार के बाद यहूदी परिषद ने यीशु को मारने के अपने विचार पर पूरी तरह से मुहर लगा दी(11:47-55)।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 11:1-57 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

11:9-10

खोज 1. परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को पूरा करने हेतू दिया जाने वाला समय।

चेलों ने परिस्थिति को देखते हुए यीशु को यहूदा में वापस न आने का सुझाव दिया, क्योंकि वहां के यहूदी यीशु की हत्या करना चाहते थे। लेकिन यीशु ने उन्हें यह कहते हुए जवाब दिया कि, *दिन की ज्योति में काम करने के लिए एक नियत समय होता है।* इसलिए मनुष्य को ज्योति के रहते चलना या काम करना चाहिए। यीशु के कहने का अर्थ था कि परमेश्वर ने यीशु को धरती पर रहने और रहकर काम पूरा करने का एक नियत समय आवंटित किया है। वह समय चेलों के चाहने से न तो बढ़ाया जा सकता है और न ही शत्रु के षड़यन्त्र के कारण कम किया जा सकता है। परमेश्वर महान है और उसने हर व्यक्ति के लिए जो समय नियुक्त किया है उसे इस संसार की किसी भी परिस्थिति की वजह से बदला नहीं जा सकता है! परमेश्वर पिता ने मुझे भी धरती पर रहने तथा इस धरती पर परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक नियुक्त व नियत समय प्रदान किया है। इसलिए जब तक मैं परमेश्वर की योजना के प्रकाश में होकर चलता हूँ, मुझे किसी भी तरह मनुष्य या किसी भी परिस्थिति से डरने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे न तो किसी प्रकार की चोट पहुंचेगी और न ही मैं असफल होऊँगा! हमें परमेश्वर में कितना अद्भुत निश्चय प्राप्त है कि परमेश्वर सारे सौर्य मण्डल के सिंहासन पर विराजमान है और वह हर जन व हर परिस्थिति पर नियन्त्रण रखता है(पढ़ें मत्ती 10:28-31)।

11:33-35

खोज 2. यीशु किस तरह अपनी आत्मा में उदास हुआ।

जब यीशु ने मरियम और यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा तो “आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ”।

पहले शब्द "आत्मा में बहुत उदास हुआ" का अर्थ है "घोड़े के समान फुफकारना" या "क्रोधित या अप्रसन्न होना" है। जब यीशु ने लोगों को दु:खी होते हुए देखा, तो वह क्रोध से भर गया! क्यों? वह पाप को देखकर उसके विरूद्ध क्रोध से भर गया, क्योंकि हर एक दु:ख या कष्ट या मृत्यु का कारण होता है। लेकिन यीशु *अपनी आत्मा में* उदास था उसके चेहरे पर कोई उदासी नहीं थी। लेकिन लिखा गया शब्द क्रोध की बजाय *सहानुभूति* को अभिव्यक्त करता है। इसलिए यहां पर इस वाक्य का अर्थ पीड़ित या दु:खी लोगों के लिए "सहानुभूति" से भर जाना हुआ"।
दूसरे शब्द "आत्मा में व्याकुल होने का अर्थ" "अन्तर्तात्मा में हिल जाना" है और यूहन्ना 12:27 में इसका अर्थ जी व्याकुल हो जाना बताया गया है। इसका अर्थ हुआ कि "वह जी व्याकुल हो जाने की वजह से झुंझला गया"। जब यीशु ने लोगों के कष्टों को देखा तो वह भी प्रत्यक्ष रूप में झुंझला गया।

कुल मिलाकर ये दोनों शब्द इस तथ्य को प्रदर्शित करते हैं कि यीशु मसीह लोगों के दु:खों और कष्टों की जड़ अर्थात पाप को देखकर क्रोधित था, लेकिन उसने दुखित व कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति अपनी ओर से सहानुभूति भी प्रगट की। अन्तत: यीशु के आसूं बहने लगे। उसके आंसू दुखी व कष्ट में पड़े लोगों के प्रति सहानुभूति की सच्ची अभिव्यक्ति थे। मैं भी यीशु के समान ही अपनी सहानुभूति को लोगों के लिए व्यक्त करना पसन्द करूंगा। मैं पाप के प्रति तो क्रोधित होना वरन पाप के परिणाम के कारण दु:ख सहने वाले लोगों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना चाहता हूँ!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**
ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 11:1-57 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

11:12-13

प्रश्न 1. मसीही लोग मृत्यु और पुनरूत्थान को क्या मान्यता देते हैं?

ध्यान दें।

(1) मृतकों की आत्मा घरों में या कब्रों में ही भटकती नहीं रहती है।

बाइबल हमें बताती है कि मृतकों की आत्मा उनके घरों में भी घूमती नहीं रहती है। न ही आत्माएं अपनी कब्रों में वास करती है। इसलिए मसीही लोग न तो मृतकों की आत्माओं से डरते और न ही इस मान्यता पर विश्वास करके कि वे घरों में, कब्रों में, या मन्दिरों में या कहीं और वास करती हैं, उनकी उपासना या पूजा नहीं करते। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि मृतकों की आत्मा देहान्त के तुरन्त बाद स्वर्ग या नरक में से एक जगह पर तुरन्त चली जाती है। फिलिप्पियों 1:23 के अनुसार मसीही जन की मृत्यु "इस संसार से कूच करके, *मसीह के साथ मसीह के साथ जीवन व्यतीत करना है*"।

(2) बाइबल में "मृत्यु" की तुलना अधिकतर "सोने" से की जाती है।
उदाहरण के लिए, मत्ती 27:25 में लिखा है, "कि कब्रें खुल गई, और सोये हुए पवित्र लोगों के बहुत से *शव* जी उठे"। यह तुलना इस अर्थ को प्रगट करती है कि जो लोग सो गये है वे महिमित रूप में जी उठेगें। मुर्दों में जी उठने की इस घटना को बाइबल में देहों का पुनरूत्थान कहा जाता है। जब यीशु ने कहा कि, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है" तो उसका अर्थ था कि "लाज़र मर चुका है, लेकिन उसकी देह मृतको में से पुन: जीवित हो जाएगी!"

(3) मृतक की आत्मा धरती पर घटी इस घटना के प्रति अचेत होती है।
हालांकि बाइबल में मृत्यु को सोने या निद्रा के रूप में दर्शाया गया है लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि मनुष्य की आत्मा पूरी तरह से अचेत अवस्था में सोई हुई है। वह आत्मा केवल उस संसार के प्रति पूरी तरह अचेह होती है जिसे उसने छोड़ दिया होता है। अब्राहम या याकूब जैसे मृतक लोगों की आत्मा, संसार में रहने वाले लोगों को न तो देख सकते हैं और न ही उनकी दशा को जानते हैं(यशायाह 63:16)। मृतक "कुछ नहीं जानते" और इस धरती पर जो कुछ वर्तमान में होता है, उसमें उनका कोई भाग नहीं होगा"(सभोपदेशक 9:5-6)। हालांकि वह धनी व्यक्ति, जो मर चुका था, अपने उन पांच भाईयों के बारे में सोचता है जो अभी इस संसार में जीवन व्यतीत कर रहे थे, लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वे अपना जीवन वर्तमान में किस प्रकार व्यतीत कर रहे होगें और न ही वह उनसे कोई बातचीत कर सकता था(लूका 16:23-31)। मृतकों की आत्माएं इस धरती पर घटने वाली घटनाओं के प्रति पूरी तरह अचेत होती हैं और वे धरती पर रहने वाले लोगों से कोई सम्पर्क बना कर नहीं रख सकतीं। वे धरती पर वास करने वाले लोगों के जीवन के लिए कोई योजना नहीं बना सकते, कोई काम नहीं कर सकते और उन पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डाल सकते हैं। 1शमूएल 28 में दर्शायी गयी घटना एक दुष्टात्मा की विपरीत नकल है।

(4) मृतकों की आत्मा स्वर्ग और नरक में जाते समय पूरी तरह सचेत अवस्था में होती है।
लूका 16:23-31 में, हम पढ़ते हैं कि मृतकों की आत्मा अचेत अवस्था में नहीं वरन पूरी तरह से सचेत अवस्था में होती हैं। वे नरक में मिलने वाली यातना व स्वर्ग में मिलने वाले आराम दोनों को अनुभव कर सकते हैं। मृतकों की आत्मा उस संसार के प्रति पूरी तरह सचेत होती है जिनमें उनको भेजा जाता है! वे परमेश्वर, मसीह तथा अब्राहम के जैसे स्वर्ग में पाये जाने वाले सभी लोगों को पहिचानती हैं। वे परमेश्वर की उपस्थिति में रहती, उसके साथ बातचीत करतीं, उसकी आराधना करती और उसकी सेवा करती हैं।

11:25-26

प्रश्न 2. यीशु ने जब कहा कि एक मसीही जन कभी नहीं मरेगा तो उसका क्या मतलब था?

ध्यान दें।

25-26 में यीशु कहते हैं, "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जिएगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्तकाल तक न मरेगा"।

(1) यीशु कहते हैं कि "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ"।
इसका अर्थ है कि मृतकों में से जी उठना पूरी तरह से यीशु मसीह से जुड़ा या अविच्छेदित मामला है। इस वाक्य को कुछ इस तरह से भी अनुवाद किया जा सकता है "पुनरूत्थान और जीवन मसीह है" जिसका अभिप्राय यह होगा कि मृतकों में से जी उठना और अमर जीवन मसीह यीशु में ही निहित हैं(प्रकाशितवाक्य

1:18)। क्योंकि मसीह खुद मृतकों में से जी उठा और अमर है, इस कारण मसीह भी मृतकों में से जी उठेगें और अमर हो जाएंगे। यीशु मसीह ही पुनरूत्थान व अमर जीवन का स्रोत है।
आज के दिन तक यीशु मसीह मृतकों में से जी उठने वालों में “पहला फल” है(1 कुरिन्थियों 15:23) अर्थात, प्रथम व एकमात्र जन जो अभी तक मुर्दों में से जी उठा है। मसीह लोग केवल मसीह के द्वितीय आगमन पर ही मृतकों में से जीवित होगें और अमरता के भागीदार बनेगें।

(2) यीशु कहते हैं, “जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जिएगा।”

जब लाज़र बहुत बीमार हो गया तो, उसकी बहनों ने यीशु के पास एक संदेश को भेजा। पद 4 में, यीशु ने कहा, “यह बीमारी मृत्यु की नहीं; परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।” लेकिन यीशु तुरन्त लाजर को चंगा करने के लिए रवाना नहीं हो गये। उनसे वहां से चलने में देरी की, और जिसके कारण जब तक यीशु बैतनिय्याह पहुंचा, लाजर को मरे हुए चार दिन हो चुके थे और अब सम्भवत: उसका बदन सड़ने लगा था। पद 21-22 में मार्था ने यीशु से कहा, “हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। और अब भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा परमेश्वर तुझे देगा।” यह उलाहना या अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति नहीं थी, लेकिन उन वाक्यों के द्वारा वह अपने दु:ख को प्रगट कर रहे थे। वह जानती थी कि यीशु मसीह ने लाजर को चंगा करने हेतू पहुंचने में बहुत देर कर दी है। लेकिन उसे अब भी एक हल्की सी आशा थी कि यीशु मसीह अब भी उसे जीवन प्रदान कर सकते हैं। उसके दिमाग में, मार्था ने इस उम्मीद को नहीं त्यागा था कि लाज़र को अब भी मृतकों में से जीवित नहीं किया जा सकता है। उसके परिवार का एक प्रिय सदस्य गुज़र गया था, जिसकी वजह से उसके मन में एक द्वन्द युद्ध चल रहा था। हालांकि वह विश्वास करती थी कि अन्त में न्याय के दिन लाज़र मृतकों में से जी उठेगा लेकिन उसे इस बात का दु:ख भी था कि लाज़र अब उनके बीच में जीवित नहीं था। दूसरी तरफ, जो संदेश यीशु मसीह द्वारा दूत से कहा गया था, उस संदेश को सुनकर उसे उम्मीद थी कि कोई चमत्कार हो सकता है। दु:खों के अन्धकार और आशा की ज्योति के बीच एक घमासान युद्ध चल रहा था।

तब यीशु ने कहा, “जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि मर भी जाए, अनन्त तक जीवित रहेगा।” यीशु की बात का उससे कहीं अधिक था जो मार्था ने विश्वास किया!

यह वाक्य मृत्यु के क्षण के बारे में बात करता है। हालांकि जो मसीह पर विश्वास करने वाला मसीही शारीरिक रूप में मृत्यु का स्वाद चखता है लेकिन वह आत्मिक तौर पर अनन्त तक जीवित रहता है। हालांकि उसकी देह पुन: मिट्‌टी में मिल जाती है लेकिन उसकी आत्मा कभी नाश नहीं होती है। उसकी आत्मा मसीह के जी उठने के जीवन अर्थात पुनरूत्थान तथा उस अनन्त जीवन के अधिकार का अनुभव करेगी जिसमें मृत्यु की कोई चर्चा नहीं होती। मृत्यु होने पर एक मसीही की देह मिट्‌टी में मिल जाती है, लेकिन उसकी आत्मा तुरन्त स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में प्रवेश कर जाती है। फिलिप्पियों 1:23 में पौलुस कहता है कि वह तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ। उसकी मृतक देह सुन्न पड़ जाती है लेकिन उसकी जीवित आत्मा मसीह की उपस्थिति में अनन्त जीवन का अनुभव करती है। विश्वासियों का नश्वर शरीर नाश हो जाता है परन्तु आत्मा में उसका अनन्त जीवन अमर रहता है।

(3) यीशु ने कहा, "जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्तकाल तक न मरेगा।"

यह वाक्य हमें मृत्यु से पहले के समय के बारे में बताता है। मरने से पहले एक मसीही जन धरती पर रहते हुए जिस प्रकार का जीवन व्यतीत करता है वह उसकी पहिचान बन जाता है। जो जन आत्मिक जीवन व्यतीत करता और यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह कभी अनन्त मृत्यु का स्वाद न चखेगा। 2 थिस्लुनिकियों 1:9 के अनुसार,"अनन्त मृत्यु" का अर्थ आत्मिक व शारीरिक तौर पर परमेश्वर की प्रिय व देखभाल करने वाली उपस्थिति से अलग हो जाना है। लेकिन एक मसीही विश्वासी के जीवन में वैसा क्षण कभी नहीं आता। उसकी आत्मा व उसकी देह परमेश्वर की उपस्थिति, उसके प्रेम व उसकी देखरेख से बिल्कुल अलग नहीं होती। वह इस संसार में जीवन व्यतीत करते हुए भी, उसकी आत्मा अनन्त जीवन और उसका नश्वर शरीर परमेश्वर के प्रेम और उसकी देखरेख का अनुभव कर सकता है।

देहान्त होने पर, व्यक्ति की आत्मा तुरन्त स्वर्ग में परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में प्रवेश कर जाती है। हालांकि उसकी देह कब्र में चली जाएगी, लेकिन परमेश्वर उसकी आत्मा को कभी नाश नहीं होने देगा। यूहन्ना 5:25-29 के अनुसार, मसीह के दूसरे आगमन पर, ये शरीर अनन्तता के लिए जी उठेंगें। फिलिप्पियों 3:23 के अनुसार वह हमारी दीन-हीन देहों को रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा! 1 कुरिन्थियों 15:42-44 के अनुसार मसीहीयों की देह महिमित अमरता को पहन लेगीं!

सारांश। 25 पद में, यीशु ने यह प्रतिज्ञा की है कि मसीहियों का आत्मा कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा। और पद 26 में, वरन वह यह भी प्रतिज्ञा करता है कि कब्र में पड़ने के बावजूद परमेश्वर विश्वासियों की देह को त्याग नहीं देगा! चाहे मसीही जन शारीरिक तौर पर मर जाए, लेकिन न तो उसका आत्मा मरेगा, और न ही उसका शरीर मिट्टी में मिलने के बाद भी परमेश्वर की देखरेख से वंचित होगा।

11:47

प्रश्न 3. सन्हेद्रिन क्या था?

ध्यान दें।

सन्हेद्रिन, इस्राएल में उच्चतम अदालत (मत्ती 5:22) और रोमन सम्राज्य में महासभा अर्थात उच्चतत प्रशासनिक परिषद था। इसकी स्थापना मक्काबीस के समय में हुई और इसे यरूशलेम में स्थापित किया गया। यह महासभा 71 महत्वपूर्ण सदस्यों से मिलकर बनी थी: जिसमें महायाजक, जो अति महत्वपूर्ण याजकीय परिवार के सदस्य थे, परिवार के मुखिया थे जिन्हें प्राचीन के नाम से जाना जाता था, सदूकी, जो यहूदी धर्मशास्त्र का अनुवाद करने में माहिर थे, व्यवस्थापक शामिल थे, जो अपने उपदेशों के द्वारा धर्मशास्त्र में लिखी हुई बातों का उल्लेख किया करते थे। उस समय का महायाजक उस सभा का अध्यक्ष हुआ करता था। सन्हेद्रिन यहूदियों के सारे धार्मिक मामलों पर नज़र रखा करता था, वरन उन यहूदियों के भी जो विदेशों में रहा करते थे।

11:49-52

प्रश्न 4. कैफा कौन था?

ध्यान दें।

वह ई.प. 18-36 के दौरान महायाजक होने के कारण सन्हेद्रिन का अध्यक्ष भी था। उसने अनजाने में, यीशु मसीह के बारे में एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की। यीशु परमेश्वर के लोगों अर्थात यहूदी राष्ट्र में रहने वाले

विश्वासियों के लिए मरेगा, और वह परमेश्वर के तितर-बितर लोगों को अर्थात अन्य देशों के विश्वासियों को इकट्ठा करेगा, और उन्हें एक राष्ट्र बनाएगा(यूहन्ना 10:16; 1 पतरस 2:9-10)।

11:47-53

प्रश्न 5. कैफा के समान दुष्ट व्यक्ति भविष्यद्वाणी कैसे कर सकता है?

ध्यान दें।

(1) कैफा का उद्देश्य।

कैफा ने कहा, "तुम कुछ भी नहीं जानते और न यह समझते हो कि तुम्हारे लिए यह भला है कि हमारे लोगों के लिए एक मनुष्य मरे, और सारी जाति नाश न हो।" इस बदमाश जन का मनसा भली नहीं थी। कैफा के कहने का अर्थ यह था कि यदि इस्राएल के लोग यीशु का अनुसरण कर लेते हैं, तो रोमी साम्राज्य आकर यहूदी राष्ट्र को नाश कर देगें। लेकिन अगर यीशु को मृत्यु मिलती है तो यहूदी राष्ट्र बच जाएगा। देशभक्ति के बहाने दुष्ट कैफा यीशु मसीह से बचने का प्रयास कर रहा था जो उसकी कीर्ति और एश्वर्य के बीच में सबसी बड़ी रूकावट था। लेकिन व्यंगात्मक तरीके से इसके बिल्कुल विपरीत हुआ। यहूदियों ने यीशु की हत्या करके, व्यक्तिगत तौर पर अपने और अपने देश के खिलाफ दण्डाज्ञा पर मुहर लगा दी। 70 ई.प. रोमियों ने आकर यरूशलेम और मन्दिर वरन सम्पूर्ण राष्ट्र को नाश कर दिया। कैफा द्वारा तैयार किया गया यीशु को मारने का षड्यन्त्र तो सफल हो गया लेकिन, जिस परिणाम की कामना कैफा कर रहा था उसका बिल्कुल उल्टा परिणाम हुआ।

(2) कैफा की भविष्यद्वाणी।

लेकिन पद 51-52 में यूहन्ना क्यों कहता है कि कैफा ने यह बात खुद से नहीं कही थी, लेकिन महायाजक के रूप में उसने यह भविष्यद्वाणी की थी कि यहूदी राष्ट्र के लिए यीशु मरेगा? यूहन्ना सिखाता है कि परमेश्वर इतिहास में महान है। इतिहास में कोई भी घटना परमेश्वर के निर्णय, आज्ञा, और नियन्त्रण के बगैर घटित नहीं होती(यशायाह 14:24,27)। परमेश्वर ने अद्‌भुत तरीके से कैफा के शब्दों पर अधिकार कर लिया कि उसकी बातों में इतना गहरा अर्थ समा गया जिसे कैफा स्वयं नहीं समझ पाया। कैफा ने न चाहते हुए भी उस वर्ष का महायाजक होने के नाते इस भविष्यवाणी। पुराने नियम के दिनों में, महायाजक ऊरीम और तुम्मीन की सहायता से परमेश्वर की इच्छा को प्रगट किया करते थे(निर्गमन 28:30)। अब परमेश्वर ने उसके द्वारा भविष्यद्वाणी करवाई, हालांकि उसे खुद नहीं पता था कि वह क्या कर रहा था। कैफा अपनी बातों के द्वारा लोगों को कुछ और समझाना चाहता था लेकिन परमेश्वर ने उसकी बातों के मतलब को पूरी तरह से बदल दिया।

जिस समय पर कैफा और सन्हद्रिन अर्थात महासभा मिलकर यीशु मसीह का मारने का षड्यन्त्र बना रहे थे, उसी बीच परमेश्वर मसीह की मृत्यु द्वारा संसार के कई लोगों के जीवन को बचाने की योजना तैयार कर रहे थे। जबकि कैफा कुछ बुरा करने की योजना बना रहा था क्योंकि उसकी बातें यही बयान करती हैं, उसी समय में परमेश्वर ने अपनी महिमित योजना को तैयार कर लिया। यह अनुच्छेद हमें परमेश्वर की श्रेष्ठता और मनुष्य की ज़िम्मेदारी के बीच सम्बन्ध के बारे में बताता है। कैफा अपने मन उठने वाली भ्रष्ट व दुष्ट बातों को कहने के लिए पूरी तरह से स्वतन्त्र था। फिर भी परमेश्वर की श्रेष्ठ इच्छा और शक्ति ने कैफा के शब्दों के अर्थ को पूरी तरह से बदल दिया जिससे कि उसकी क्रूर हत्या करने की योजना ने परमेश्वर के अदभुत उद्धार की योजना को प्रगट कर दिया। बिना अपनी बातों के मतलब को समझे बूझे ही, दुष्ट कैफा

एक भविष्यद्वक्ता बन गया। जिस प्रकार से परमेश्वर ने पुराने नियम में दुष्ट भविष्यद्वक्ता बिलाम के द्वारा बातें की थीं(गिनती 23), ठीक उसी तरह से उसने अब दुष्ट महायाजक कैफा के द्वारा बातचीत की।

11:51-52

प्रश्न 6. क्या यीशु मसीह केवल यहूदी राष्ट्र के लिए ही मरे?

ध्यान दें।

नहीं, उसने कहा, "यीशु केवल यहूदी राष्ट्र के लिए ही नहीं मरेगा, वरन परमेश्वर के सभी तितर बितर हुई सन्तानों के लिए, ताकि वह उन्हें इकट्ठा करके एक राष्ट्र बना सके"। कैफा ने *राजनैतिक* दृष्टिकोण से एक वाक्य का इस्तेमाल किया "इस्राएल राष्ट्र"। लेकिन यूहन्ना ने इसके *आत्मिक पहलू* का इस्तेमाल करते हुए "परमेश्वर की सन्तानों" लिखा। परमेश्वर की सन्तान वे लोग हैं जिन्होंने यीशु मसीह में विश्वास किया तथा नया जन्म पाया है। यीशु मसीह दो प्रकार के लोगों के लिए मरे:

- सर्वप्रथम "यहूदी समाज के विश्वास करने वाले परमेश्वर की सन्तानों के लिए"
- दूसरा, "परमेश्वर की उन सन्तानों के लिए जो अपनी विश्वास के कारण अन्य देशों में तितर बितर होकर रह रहीं हैं" अर्थात "परमेश्वर की वे सन्तानें जो अन्यजातियों में से हैं"।

यूहन्ना यहां पर उसी बात को दोहराता है जिसे यीशु ने यूहन्ना 10:16 में कहा था। यहूदी समाज में पायी जानी वाली उसकी *भेड़ों* के अलावा यीशु मसीह अन्यजातियों में पायी जाने वाली अपनी *भेड़ों* को लाने जा रहा है जो भविष्य में एक ही चरवाहे का एक झुण्ड कहलाएंगी!

यीशु ने यूहन्ना 12:32 में यही विचार सामने रखा, "जब मैं धरती पर से ऊपर उठाया जाऊंगा तो सारे लोगों को अपने पास खींच लूंगा।" अन्त में चाहे स्वेच्छा से या इच्छा के बिना, हर एक घुटना यीशु के सामने टिकेगा। और हर एक जीभ अंगीकार करेगी, चाहे वह विश्वासी हों या अविश्वासी, कि यीशु मसीह ही "प्रभु" है(फिलिप्पियों 2:9-11; देखें इफिसियों 1:10)।

11:55

प्रश्न 7. यूहन्ना यहां पर किस यहूदी फसह की बात कर रहा है?

ध्यान दें।

यहूदी फसह 1447 ई.पू मूसा की अगुवाई में हुए मिस्र से यहूदियों के निर्गमन का स्मरणोत्सव है। यूहन्ना, यीशु की ज़मीनी सेवाकाई में तीन यहूदी फसह की बात करता है:

- प्रथम फसह ई.प 28 अप्रैल में (यूहन्ना 2:13,23)
- दूसरा फसह ई.प 29 अप्रैल में (यूहन्ना 6:4)
- और तीसरा फसह ई.प. 30 अप्रेल में (यूहन्ना 11:55; 12:1; 13:1; 19:31)।

अन्य तीन सुसमाचारों में केवल अन्तिम फसह की चर्चा की गयी है।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 11:1-57 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 11:1-57 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

11:4। यह जानते हुए की बीमारियों की जड़ संसार के पापों में छुपी होती हैं, कई बीमारियों के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो सकती है।

11:6। याद रखें कि परमेश्वर पर वास्तव में भरोसा रखने के कारण तुरन्त प्रतिक्रिया करने की बजाय कुछ समय के लिए इन्तज़ार करना पड़ सकता है।

11:20-27। हालांकि लूका 10:38-42 में मार्था यीशु के चरणों में बैठकर परमेश्वर के वचनों को सुनने की बजाय इधर उधर के कामों में व्यस्त रही, लेकिन यहां पर वह यीशु से मिलने तथा उसके वचनों को सुनने के लिए बाहर निकली। मार्था बदली और आप भी बदल सकते हैं।

11:25। यद्यपि एक विश्वासी की देह नाश हो जाएगी लेकिन उसकी आत्मा या प्राण कभी नाश नहीं होगा, वरन वह अनन्तकाल के लिए यीशु की उपस्थिति में जीवित रहेगी। पुनरूत्थान के दिन नश्वर देह फिर जी उठेगी ओर अनश्वर देह को धारण कर लेगी।

11:26। यद्यपि एक विश्वासी की देह नाश हो जाएगी, लेकिन उसकी आत्मा और पुनरूत्थिन देह कभी नाश नहीं होगी, अर्थात उसे कभी नरक में नहीं डाला जाएगा।

11:33-35। यीशु मसीह के समान ही विश्वासियों को सारी बिमारियों की जड़ पाप से क्रोधित रहना चाहिए, लेकिन उन्हें कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति हमदर्दी रखने वाला होना चाहिए।

11: 47-48। ध्यान रखें कि बहुत से धार्मिक लोग राजनैतिक शक्ति के दम पर परमेश्वर के राज्य की धार्मिकता को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

2. यूहन्ना 11:1-57 से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं ज़्यादा से ज़्यादा यीशु के समान बनना चाहता हूँ। जब यीशु ने दूसरों को कष्ट या तकलीफों में देखा, वह अपनी आत्मा में बहुत दुखी और उसका वह कष्ट प्रत्यक्ष रूप में प्रगट हुआ। यीशु बिमारियों की जड़ पाप से क्रोधित था, लेकिन उसे कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति हमदर्दी थी। मैं भी यीशु के समान ही अपनी भावनाओं को प्रगट करना चाहूंगा: मैं निश्चय तौर पर पाप के प्रति क्रोधित होना चाहता हूं लेकिन साथ ही

साथ मैं उन लोगों के प्रति हमदर्दी भी रखना चाहता हूँ जो पापों के परिणाम को अपने जीवन में भुगत रहे हैं।

मैं अपने हर दिन का बहुतायत से इस्तेमाल करना चाहता हूँ। परमेश्वर ने मुझे इस धरती पर व्यतीत करने के लिए एक निर्धारित समय दिया है ताकि मैं उस समय में परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा कर सकूं। जब तक मैं परमेश्वर की योजना के प्रकाश में होकर चलता हूँ मुझे किसी व्यक्ति या किसी भी परिस्थिति से डरने की जरूरत नहीं है। मुझे कोई हानि नहीं होगी और नहीं मैं कभी असफल होऊँगा! इस अद्भुत निश्चय के साथ कि परमेश्वर हर व्यक्ति व हर परिस्थिति पर नियन्त्रण रखता है(मत्ती 10:29-31), मैं इस धरती पर परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 11:1-57 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 11 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 8:1-11:28** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(3) प्रेम व अधीनता: तीतुस 2:4-5।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 27

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 **बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]*
लूका 8:1-11:28

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (लूका 8:1-11:28) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 **याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]*
(3) तीतुस 2:4-5

दो दो करके *पुनरावलोकन* करें।
(3) प्रेम व अधीनता। तीतुस 2:4-5। ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारोबार करनेवाली, भली, और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा होने पाए।

4 **शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]*
मसीही परिवारों में बच्चों को प्रशिक्षित करना

परिचय। यह शिक्षा बच्चों को प्रशिक्षित करने के सम्बन्ध में है। इस अध्याय में हम सीखेगें कि बाइबल बच्चों को प्रशिक्षित करने के हेतू मसीही माता पिता की भूमिकाओं के बारे में क्या कहती है। “प्रशिक्षित करने का अर्थ” बच्चों को बौद्धिक, शारीरिक, नैतिक और आत्मिक शिक्षाएं व अभ्यास प्रदान करें। इसके अलावा आप मैनुएल 7 और परिशिष्ठ 9 में “बच्चों को अनुशासित करने के लिए माता पिता की जिम्मेदारी” का भी अध्ययन कर सकते हैं।

अभिभावक हो सकता है कि बाइबल में लिखें इन सिद्धान्तों को पढ़कर मायूस हो जाएं। हो सकते हैं कि वे महसूस करें कि वे अच्छे माता पिता नहीं है या वे कभी भी अपने व्यवहारिक जीवन में बाइबल में दिये गये सिद्धान्तों का पालन नहीं कर पाएगें। इस प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का उद्देश्य अभिभावको को निराश करना नहीं है, वरन इसका उद्देश्य उनके बच्चों को प्रशिक्षित करने तथा सिखाने में सहायता करने के लिए उन्हें एक रूपरेखा प्रदान करना है। ज्यादातर माता पिता अपना पहला बच्चा होने के बाद ही बच्चों को सिखाने या उन्हें

प्रशिक्षण देने के बारे में विचार करते हैं। बहुत से माता पिता अपने बच्चों को सिखाने या प्रशिक्षण देने के समय में अत्यन्त अनुभवहीन होते हैं।
आप अपने सिद्ध होने तक अपने बच्चों को शिक्षा देने या प्रशिक्षित करने का इन्तज़ार न करें। परमेश्वर ने माता पिता के हाथों को में बच्चों को उनके द्वारा अनुभव प्राप्त करने के लिए भी सौंपा है। परमेश्वर माता पिता को अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने, प्रोत्साहित करने तथा उन्हें अनुशासित करने का अनुग्रह प्रदान करता है। इसलिए अपने बच्चों को प्रशिक्षित करने के लिए पहले किसी एक क्षेत्र या पहलु का चुनाव कर लें और जब आपको ऐसा लगे कि आपका बच्चा उस क्षेत्र में निपुण या सिद्ध हो गया है तो आप दूसरे क्षेत्र के बारे में विचार कर सकते हैं। अपने बच्चों को पालन पोषण करते समय हमेशा परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहें!

नीतिवचन 22:6 में लिखा है कि, "लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिए, और वह बुढ़ापे में भी उससे न हटेगा।" "शिक्षा देने" का अर्थ बच्चे को परमेश्वर की इच्छा पर चलाने वाले रास्तों के लिए समर्पित करना या दे देना है। इसका अर्थ बच्चे को शिक्षा देना तथा बाद में उन शिक्षाओं को उसके जीवन में लागू करने के लिए प्रशिक्षित करना। माता पिता के लिए "शिक्षा देना" और "प्रशिक्षण प्रदान करना" समान नहीं है। एक बच्चे के लिए "सुनना" और "सीखना" समान नहीं है!

माली दाख को यह बताने के द्वारा प्रशिक्षित नहीं करता कि उसे कैसे बढ़ता है! प्रकृति में बढ़ने के लिए बहुत से सैद्धान्तिक शिक्षा उपलब्ध हैं! लेकिन माली, दाखलता को *छांटता* और उसे *नियन्त्रित* करता है, वह उसे एक दिशा देता तथा उसे *सही* दिशा में बढ़ने के लिए *अगुवाई* करता है। हर वर्ष वह उसमें से सड़ी गली व मुर्झाई हुई पत्तियों को छांटता है, ताकि अच्छी डालियां और बेहतर फल ला सकें। इसी प्रकार से माता पिता भी अपने बच्चों को शिक्षा देने तथा उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए योजना बनाते हैं और उन्हें सही दिशा में बढ़ाने के लिए उन पर सीमाएं निर्धारित करते हैं। कई बार हमें उन्हें छांटने और नियन्त्रित करने तथा उन्हें फलवन्त बनाने के लिए कुछ निर्धारित काम देने, अभ्यास करनाने और विशेष करके प्रोत्साहित करने की जरूरत पड़ती है।

क. प्रशिक्षित करने का तरीका

पढ़ें: 1 कुरिन्थियों 11:1; इफिसियों 3:20; इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21 (इन शब्दों पर खास ध्यान दें: रिस दिलाना, निर्देश देना, प्रशिक्षण)। गलातियों 6:4-5 ; नीतिवचन 10:17।
शिक्षा दें। बच्चों को शिक्षा देने के चार प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैं:

1. बच्चों के लिए एक आदर्श बनें और उनके लिए प्रार्थना करें।

अगर माता पिता किसी शिक्षा या सिद्धान्त का पालन अपने जीवन में स्वयं नहीं कर रहे हैं तो उन्हें बच्चों को सिखाना व्यर्थ है! इस प्रकार का कपट बच्चो को केवल रिस दिलाता या उनमें चिढ़न उत्पन्न करता है! अच्छी आदतों को माता पिता द्वारा केवल "सिखाया" नहीं जाता है, वरन वे अपने माता पिता को वैसा करते हुए देखते तथा उनके साथ मिलकर वैसा करते हैं! अत: माता पिता को अगर अपने बच्चों को सिखाना है तो उन्हें सबसे पहले अपने आप को प्रशिक्षित करना होगा। और माता पिता जानते हैं कि उन्हें ऐसा करने के लिए परमेश्वर की सहायता की बहुतायत से आवश्यकता है इस कारण वे प्रार्थना करने के द्वारा परमेश्वर पर निर्भर रहते हैं। परमेश्वर ने माता पिता की कल्पनाओं और प्रार्थनाओं से बढ़कर उनके बच्चों के लिए करने की प्रतिज्ञा की है(इफिसियों 3:20)!

2. बच्चे को बाइबल में से शिक्षा दें।

प्रशिक्षिण अच्छे सिद्धान्तों या सत्यों की शिक्षा देने से प्रारम्भ होता है। बच्चे के लिए बाइबल में प्रगट सत्य के ज्ञान को ग्रहण करने की अति आवश्यकता है। बाइबल के सत्यों या सिद्धान्तों में प्रमुख मत,प्रमाणिकता, मान व मानदण्ड शामिल होते हैं। माता पिता को बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए। बच्चों के सामने इस बात को प्रदर्शित करें कि बाइबल में जीवन के हर एक महत्वपूर्ण सवाल का जवाब निहित है।

बच्चे की यह *समझ* में आना चाहिए कि यह सत्य (ज्ञान) क्या है। उसे इस बात का पता होना चाहिए कि *इस शिक्षा* में क्या महत्वपूर्ण है और वह क्यों महत्वपूर्ण है। उसे कामों को ठीक ढंग से करने की *बुद्धि* प्राप्त करनी चाहिए: अर्थात इस काम को कब करना चाहिए, किसके साथ क्या करना चाहिए और इस काम को करने को सबसे उत्तम तरीका क्या है। इसी कारण माता पिता को बच्चों को सत्य की शिक्षा देते समय, आज्ञा पालन करने हेतू प्रेरित करते, और व्यवहारिक अभ्यासों की शिक्षा देते समय बाइबल का इस्तेमाल करना चाहिए।

3. बच्चों में अच्छी आदतों को अर्जित करने के लिए बच्चों को प्रशिक्षण दें(अभ्यास द्वारा)।

अच्छी आदतों को अर्जित करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। बच्चे को सत्य व शिक्षा का अपने जीवन में *मानना* और *पालन करना* सीखना चाहिए।
पालन करना तीन अलग अलग स्तरों पर सीखा जाता है:

- प्रथम, बच्चा माता पिता को करते देख और उनके साथ मिलकर काम करने के द्वारा सीखता है।
- वह किसी व्यक्ति के निरिक्षण में अपने आप शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करने करना सीखता है।
- अन्त में, वह शिक्षाओं को बिना किसी निरिक्षण के आदतन अपने आप करता है।

बच्चों को अत्यधिक आग्रह और प्रोत्साहन की जरूरत होती है इसलिए माता पिता को चाहिए कि वे स्वयं अपने बच्चों का प्रशिक्षण व मार्गदर्शन करें। आदतों का अभ्यास करने के क्षेत्र में, माता पिता और बच्चों को यह जानना बहुत जरूरी होता है कि सच्ची "आज़ादी" की अपनी सीमाएं होती हैं। इसलिए माता पिता एक ही समय पर अपने बच्चों को ध्यान बहुत सी चीज़ों की ओर आकर्षित होने से बचाएं। अच्छी आदतों को सिखाने के लिए, माता पिता अपने बच्चों की तुलना किसी अन्य बच्चे से न करें, क्योंकि परमेश्वर ने हर बच्चे को विशेष व अलग बनाया है। तुलना करने से मायूसी छा जाती है। वरन माता पिता को अपने बच्चे को उसकी उन्नति व प्रगति देखकर उसे अनापेक्षित तौर पर उपहार या पुरूस्कार देकर उसकी तारीफ करनी चाहिए।

4. जब आपका बच्चा गलत रास्ते पर जा रहा हो तो आप समझाएं व ताड़ना (दण्ड) दें।

प्रशिक्षण में संशोधन व ताड़ना(दण्ड) भी शामिल होते हैं। इससे बच्चे को उस मार्ग में चलने में सहायता मिलती है जिसमें उसे चलना चाहिए। परिशिष्ट 9 देखें। ताड़ना करते या सज़ा देने के सन्दर्भ में, माता पिता को निम्नलिखित चीज़ों के बीच ध्यान रखना चाहिए:

- बच्चे को अपने माता पिता के प्रेम के पुनः निश्चय की आवश्यकता होती है।
- बच्चे का अपने माता पिता के अधिकार का विद्रोह करना।

ख. प्रशिक्षण के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र

परिचय। लूका 2:52 में हम पढ़ते हैं कि, “और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।” उपरोक्त वचन यह दर्शाता है कि परमेश्वर हमारे जीवन के निम्न क्षेत्रों को महत्पवूर्ण मानता है:

- “बुद्धि” ज्ञान का वरन प्राप्त ज्ञान को जीवन को अनेकों परिस्थितियों में इस्तेमाल करने का क्षेत्र है।
- “डील-डौल” शारीरिक विकास का क्षेत्र है।
- “परमेश्वर का अनुग्रह” एक आत्मिक क्षेत्र है।
- “मनुष्य का अनुग्रह” सामाजिक क्षेत्र है।

यहां पर भावनात्मक क्षेत्र का ज़िक्र नहीं किया गया है लेकिन हमारी भावनाएं हर क्षेत्र अटूट भाग हैं। लूका 2:52 में दर्शाये गये क्षेत्र जीवन के अति विराट क्षेत्र हैं, जिनका वर्णन इस अध्ययन में नहीं किया जा सकता। हम इसके अलावा आज्ञाकारिता, आदर, परमेश्वर के साथ चलने, संयम और ज़िम्मेदारी का आभास जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करेंगें। इस विषयों को हम बच्चे के विकास से अलग नहीं कर सकते।

1. बच्चे को आज्ञापालन करना सिखाएं।

पढ़ें इफिसियों 6:1।
खोजें व चर्चा करें। बच्चे को सही मार्ग की शिक्षा देना क्यों ज़रूरी व महत्वपूर्ण है?
ध्यान दें। ,प्रशिक्षण के एक मत्वपूर्ण क्षेत्र बच्चे को अपने माता पिता की आज्ञाएं मानना सिखाना है। इफिसियों 6:1 में आज्ञा दी गयी है, “हे बालको, प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है”। यह शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा है जिसे हर मां बाप ने अपने बच्चों को देनी चाहिए! यह बच्चों को दूसरों (विशेष कर: पमरेश्वर/मसीह, उसके शिक्षकों, सरकार, अधिकारियों, कलीसिया के प्राचीनों की) की आज्ञा मानना सिखाने हेतू कुँजी है! आज्ञाकारिता सिखाना बच्चों के पालन पोषण करने का प्रमुख भाग है। बाइबल के अनुच्छेद में, मसीही बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा मानने के लिए कहा गया है, लेकिन इसलिए नहीं कि उनके माता पिता मसीही हैं(“परमेश्वर में हैं”), बल्कि क्योंकि बच्चे मसीही अर्थात (“परमेश्वर में हैं”)। बच्चे चाहे मसीही हों या न हों लेकिन जब वे अपने माता पिता की आज्ञाओं को मानते हैं तो यह परमेश्वर को भाता है। इसीलिए बच्चों को अपने माता पिता की आज्ञा मानने की शिक्षा देना “परमेश्वर की निगाहों में ठीक है”।

यदि माता पिता अपने बच्चों को आज्ञाकारिता की शिक्षा देने में असफल रहे हैं तो देर में शुरू करना कभी न करने से बेहतर होता है। माता पिता को अपने बच्चे तथा परमेश्वर के सामने इस बात को मान लेना चाहिए कि वे अपने बच्चों को आज्ञाकारिता की शिक्षा देने में असफल रहे हैं। परमेश्वर उन माता पिता को क्षमा करके बच्चों को आज्ञाकारिता सिखाने के लिए बुद्धि प्रदान करेगा। उसके बाद माता पिता ने अपने बच्चों को आज्ञा मानना की शिक्षा देना प्रारम्भ कर देना चाहिए। यदि माता पिता फिर भी आज्ञाकारिता और विद्रोह को बर्दाश्त करते हैं तो वे वास्तव में अपने बच्चों को अनाज्ञाकारी और विद्रोही बनाने का प्रशिक्षण दे रहे है, जिसका परिणाम आपराधिक जीवन हो जाता है।

माता पिता ने अपने बच्चों को अच्छी और लाभदायक गतिविधियों में व्यस्त रखना चाहिए, नहीं तो वह बच्चा अन्ततः बुराईयां करना सीखेगा और अन्त में अपराधी बन जाएगा। उससे घर की जिम्मेदारियों या पारिवारिक व्यापार में मदद कराने के लिए आग्रह करें और उससे अपेक्षा करें। उसके द्वारा आज्ञापालन करने पर उसकी प्रशंसा करें व उसे प्रोत्साहित करें। यदि वह तुरन्त आज्ञा पालन नहीं करता है, तो बच्चों को किन्ही दो बातों में से एक को करने का विकल्प प्रदान करें, कुछ न कुछ प्रतिक्रिया जरूर दें अन्यथा आप अपने बच्चे को अनाज्ञाकारी होने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। लेकिन, उनका बच्चा अगर उन कार्यों को करने में हिचकिचाता है जो उसे करना चाहिए, तो मातां पिता को उसकी काम करने में तब तक सहायता करनी चाहिए जब तक कि उस बच्चे में काम करने का आत्मा विश्वास उत्पन्न न हो जाए।

2. बच्चों को अपने माता पिता और (दूसरों का) आदर करना सिखाएं।

पढ़ें इफिसियों 6:2-3।
खोजें व चर्चा करें। व्यवहारिक तरीके से एक बच्चा अपने माता पिता का आदर किस प्रकार कर सकता है?
ध्यान दें। प्रशिक्षण का दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र, बच्चों को अपने माता पिता तथा दूसरों को आदर करना सिखाना और उनके साथ इज्जत से व्यवहार करना है। "आदर" करने का अर्थ सम्मान करना, पूरे मन व निस्वार्थ भावना या बिना किसी भय के अपने माता पिता का ख्याल रखना तथा उन्हें प्रेम करना है। तीन तरीके हैं जिसके द्वारा बच्चों को अपने माता पिता का आदर करना सिखना चाहिए :

(1) बच्चा अपने माता पिता के साथ किसी तरह की बहस या झगड़ा न करके उनका आदर करता है।

झगड़ा करने की बजाय, एक बच्चे को अपना दृष्टिकोण को भद्र तरीके से रखना और बाद में परमेश्वर को इस तरीके से काम करने का अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे उसे माता पिता भी प्रसन्न हो सकें। इस तरह से बच्चा यह प्रगट करता है कि वह परमेश्वर की प्रधानता और श्रेष्ठता पर विश्वास करता है। बच्चों को अपने माता पिता और दूसरों की चुगली नहीं करनी चाहिए। चुगली से हमेशा लोगों को अनादर होता है (नीतिवचन 17:9)।

(2) बच्चा अपने माता पिता की सलाह और सुझावों को मानकर अपने माता पिता का आदर करता है।

बाइबल में लिखा है कि बच्चा सत्य, बुद्धि, शिक्षा और समझ अपने माता पिता से ही सीखता है। जब भी कभी माता पिता अपने बच्चों को कोई सलाह या सुझाव देते हैं तो बच्चों को उन्हें गम्भीरता से स्वीकार करना चाहिए। बच्चों के पास जब अवसर है तो उन्हें अपने माता पिता के वर्षों के अनुभव से सीखना चाहिए।

(3) बच्चा अपने व्यक्तिगत जीवन में माता पिता को शामिल करके उन्हें आदर प्रदान करता है।

2 कुरिन्थियों 6:11-13 सिखाता है कि मसीहियों को एक दूसरे की "सलाह को स्वीकार करना चाहिए"। बच्चों को अपने माता पिता से बातचीत करने के लिए पहल करनी चाहिए और उनसे प्रश्न पूछना चाहिए। उसे अपनी भिन्न गतिविधियों के बारे में अपने माता पिता से बात करना आना चाहिए। उसे अपने माता पिता को बताना आना चाहिए कि उसने स्कूल या कार्यालय में क्या किया, वह कलीसिया के लोगों और अपने मित्रों के साथ क्या करता है। उसे अपने रिश्तों के बारे में अपने माता पिता से बात करना चाहिए: अर्थात

उसके दोस्त कौन हैं और वह उनके साथ किस प्रकार का बर्ताव करता है। उस बच्चे को अपने माता पिता के साथ अपने विश्वास, अपने विचारों, भावनाओं, और योजनाओं के बारे में बताना चाहिए। अतः मसीही माता पिता को अपने बच्चों के सामने आदर्श बनना चाहिए। यदि मसीही माता पिता अपने बच्चों के लिए अपने हृदय को नहीं खोलते हैं तो वे कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि वे उनके बच्चे दूसरों के सामने अपने हृदय को खोलेगें?

3. बच्चे को परमेश्वर के साथ चलना सिखाएं।

खोजें और चर्चा करें। व्यवहारिक जीवन में माता पिता बच्चों को अपने जीवन में परमेश्वर के साथ चलने की शिक्षा कैसे दे सकते हैं?

(1) व्यवस्थाविवरण 6:6-9; 32:46 को *पढ़ें।*

परमेश्वर का वचन माता पिता से उनके बच्चों के मन और जीवन में परमेश्वर की आज्ञाओं को लिखने की आज्ञा देता है। वह कहता है कि, "जब तुम अपने घर में बैठे हो, जब सड़क पर कहीं जा रहे हो, सोते और जागते समय हमेशा परमेश्वर की व्यवस्था पर ध्यान लगाए रहो"। माता पिता और बच्चों को अधिकार देना चाहिए कि परमेश्वर का वचन उनके हाथों के कामों, उनके मन के विचारों, माहौल और उनके घर की गतिविधियों पर नियन्त्रण कर ले! परमेश्वर माता पिता को सिखाता है कि, "जो चितौतियां मैंने तुम्हें बतायी हैं, उन पर अपना अपना मन लगाओ, और अपन बच्चों को भी व्यवस्था के मानने की शिक्षा दो"।

(2) रोमियों 13:1-5; प्रेरितों 5:29; 1 पतरस 2:10।

परमेश्वर ने माता पिता को अपने बच्चों को परमेश्वर का ज्ञान सिखाने, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना सिखाने की जिम्मेदारी सौंपी है और इस संसार में किसी को भी उन्हें इन शिक्षाओं से रोकने का अधिकार किसी को भी नहीं है। इसका कारण यह है कि खुद परमेश्वर ने ही संसार के सभी अधिकारियों को भिन्न भिन्न जिम्मेदारियों और सीमाओं के साथ इस संसार में रखा है। यदि कोई सरकार सर्वश्रेष्ठ अधिकार की न मानते हुए मसीहियों से वह काम करवाती है जो परमेश्वर ने मना किया है और मसीहियों को उन कामो को करने से मना करती है जिसे परमेश्वर ने उनसे करने के लिए कहा है तो मसीही लोगों उस सरकार का भद्र तरीके से सामना करना चाहिए। क्योंकि जगत की सारी सत्ताएं, बाइबल में प्रगट परमेश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं।

(3) तीमुथीयस 2 1:5 ; 3:15-17।

बाइबल वह सर्वोत्तम पुस्तक हैं जिसे हर बच्चे को अपने जीवन में ज़रूर से पड़ना चाहिए। बाइबल लोगों को उद्धार का ज्ञान प्रदान करती है। बाइबल उन्हें सत्य की शिक्षा देती है और उन्हें बताती है कि उन्हें किस प्रकार धार्मिकता के साथ अपनी जीवन व्यतीत करना चाहिए। बाइबल अपरिपक्व मसीहियों और बच्चों को परिपक्व बनाती और उन्हें जीवन में विभिन्न परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। इसलिए, माता पिता को अपने बच्चों को बाइबल पढ़ना लिखना और विशेषकर आज्ञा पालन करना सिखाना चाहिए।

माता पिता भिन्न तरीकों का इस्तेमाल कर सकते हैं। वे चाहें तो, पारिवारिक बाइबल अध्ययन का समय रख सकते हैं, उदाहरण के तौर पर, पिता प्रतिदिन जोर जोर से बाइबल के एक खण्ड को पढ़ सकते हैं। फिर वे सब मिलकर उस पर चर्चा कर सकते हैं। वे बाइबल के एक पद को भी याद कर सकते हैं। बच्चे की बढ़ती अवस्था के अनुसार, माता पिता को बच्चों को सुसमाचार के बारे में समझाना चाहिए और यदि उसने प्रभु यीशु मसीह को अपने जीवन में उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं किया है तो उन्हें उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करने का अवसर प्रदान करना चाहिए।

जब बच्चे बढ़े हो जाएं, तो उनके माता पिता उन्हें अपने व्यक्तिगत साधना का समय बिताना सिखा सकते हैं। एक परिवार अपने पड़ोसियों के साथ मिलकर भी यीशु मसीह की सेवा कर सकते हैं(याकूब 2:15-17)। इस तरीके से बच्चा अपने माता पिता को विश्वासयोग्यता के साथ भक्ति करते हुए देखकर भक्ति करना सीखता है। माता पिता को अपने बच्चों को विश्वास में बढ़ना सिखाना चाहिए ओर उन्हें उन अनुभवों से नहीं रोकना चाहिए जिनके द्वारा उसके लिए परमेश्वर पर विश्वास करना जरूरी है। माता पिता को परमेश्वर के साथ अपने अनुभवों को भी बच्चों के साथ साझा करना चाहिए।

4. अपने बच्चों को संयम बरतना सिखाएं।

पढ़ें 2 पतरस 1:5-6; नीतिवचन 10:19; 15:1; इफिसियों 4:26।
खोजें और चर्चा करें। माता पिता अपने बच्चों को किस तरह संयम रखना सिखा सकते हैं?
ध्यान दें। "संयम" का अर्थ अपनी इच्छाओं, बातों और प्रतिक्रियाओं को नियन्त्रित करना है। माता पिता को अपने बच्चों को अपनी इच्छाओं, बातों और कार्यों पर नियन्त्रण करना सिखाना चाहिए। उदाहरण के लिए, माता पिता को बच्चों को चीज़ें देने के लिए परेशान नहीं करना चाहिए। अगर वे ऐसा करते हैं तो, बच्चा हमेशा अपनी इच्छा पूरी करने के लिए हमेशा कामयाब होने वाले तरीके का इस्तेमाल करेगा।

नीतिवचन 15:1 में लिखा है, "(माता पिता का) कोमल उत्तर सुनने से (बच्चे की) जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कहुवचन से क्रोध धधक उठता है।" और नीतिवचन 10:19 में लिखा है कि, "जहां (माता पिता की बातें) बहुत बातें होती हैं, वहां (माता पिता का) अपराध भी होता है, परन्तु जो अपने मुंह को बन्द रखता है वह बुद्धि से काम करता है।" शान्ति और आराम से बच्चों के साथ व्यवहार करने के मामने में माता पिता को एक आदर्श बनना चाहिए। और उसी तरह उन्हें अपने बच्चों को दूसरों के साथ शान्ति और शालीनता के साथ व्यवहार करना सिखाना चाहिए, खास तौर पर जब वे किसी गुस्सा हों।

कई बच्चे अपना गुस्सा बड़े प्रचण्ड तरीके से प्रगट करते हैं, अर्थात उपद्रव करते हुए, जिससे सम्पत्ती का नुकसान होता है, किसी की बेइज्जती होती है, किसी को चोट पहुंचती है,शालीनता भंग होती है या फिर किसी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचता है। बुद्धिमान माता पिता अपने बच्चों को भावनाएं प्रगट करने देते हैं लेकिन उन्हें अपने बच्चे को यह भी सिखाना चाहिए कि वह अपनी भावनाओं को प्रगट करने में संयम बरतें। एक "गुस्सैल अगुवा" सिर से लेकर पैर तक गुस्से से भरा होता है और गुस्सा ही प्रगट करता है(देखें मैनुएल 4, परिशिष्ठ 17, मसीही चरित्रः क्रोध)। माता पिता को अपने बच्चों को संयम बरतना सिखाना चाहिए। जब कभी उसे गुस्सा आये वह हर बार अपनी भावनाओं को सकारात्मक ढंग से प्रगट करने का अभ्यास करे। उदारहरण के लिए, यदि वह उत्पात मचाते हुए अपने क्रोध को प्रगट किया करता था, उसे उत्पात किये बिना अपने क्रोध को प्रगट करना सीखना चाहिए। और जब बच्चा अपने क्रोध को सकारात्मक तरीके से प्रगट करने में कोई बेहतरी दर्ज करत है तो माता पिता उसे प्रोत्साहित या पुरस्कृत करना चाहिए। बच्चों को पांच सकारात्मक तरीकों से संयम प्रगट करना सिखाना चाहिए:

- वे क्रोध करने में धीमें हों, अर्थात, हर एक गलत बात के लिए गुस्सा न हो या हर बात को व्यक्तिगत तौर पर ठोकर के रूप में न देखें(याकूब 1:19)।
- शाम होने तक गुस्सा थूक दें(इफिसियों 4:26)।
- ऐसे बच्चे दूर ही रहें जिस बहुत जल्दी गुस्सा आ जाता है क्योंकि वह उसके जीवन का भी प्रभावित कर सकता है(नीतिवचन 22:24-25)।

- अपने गुस्से को दबाये, इनकार किये या नज़रअन्दाज़ किये बिना, उस व्यक्ति की सकारात्मक गुणों पर ध्यान दें जिससे आप गुस्सा हैं(रोमियों 12:10)।
- उसके द्वारा किये गयी गलतियों का लेखा न रखे(1कुरिन्थियों 13:5)।

5. बच्चे को जिम्मेदार बनने की शिक्षा दें।

पढ़ें विलापगीत 3:27
खोजें व चर्चा करें। व्यवहारिक तौर पर माता पिता अपने बच्चों को कैसे जिम्मेदार बनने की शिक्षा दे सकते हैं?
ध्यान दें। युवा अवस्था में जुआ उठाने का एक भाग यह है कि उसे कोई विशेष ज़िम्मेदारी सौंपी जाए और उसे उस ज़िम्मेदारी के प्रति उत्तरदायी ठहराया जाए। माता पिता को घर में और घर के बाहर लगातार अपने बच्चों को ज्यादा से ज़्यादा ज़िम्मेदारियां सौंपनी चाहिये। उदारहण के लिए, उसे सिखाएं कि जिस स्थान पर वह रहता और सोता है उस स्थान को वह साफ सुथरा बनाकर रहे। होने दें कि वह घर की जिम्मेदारियों, बाहर की, दुनाक या कारखाने की जिम्मेदारियों में हाथ बटाए। बच्चे को सिखाएं कि वह पैसों और सम्पत्ति के क्षेत्र में भी ज़िम्मेदार बने। उसे यात्रा करना सिखाएं। उसे हर प्रकार के लोगों और संस्कृति के साथ में व्यवहार करना सिखाएं। उसे सिखाएं कि वह अपने से विपरित लिंग के लोगों के साथ किस तरह व्यवहार करें। और उसे सिखाएं कि वह मण्डली में भी अपनी जिम्मेदारियां उठाए।

ग. प्रशिक्षण के भिन्न स्तर

शिक्षा दें। बच्चों को प्रशिक्षण देने से सम्बन्धित बाइबल की शिक्षाओं को व्यवहारिक जीवन में इस्तेमाल किया जाता बहुत जरूरी है। बच्चों को प्रशिक्षित करने के भिन्न भिन्न स्तर हैं: अनुभवी लोगों को कहना है बच्चे के जीवन का सबसे रचनात्मक हिस्सा शून्य से लेकर पांच वर्ष का और दूसरा छ: वर्ष से लेकर ग्यारह वर्ष तक का होता है। एक ग्यारह वर्ष के बच्चे के जीवन के चार छोटे छोटे स्तरों की रूपरेखा कुछ निम्नलिखित है। याद रखें, कि बच्चे के व्यक्तित्व, सैक्स, परिस्थितियों और संस्कृति के कारण इनमें अन्तर हो सकता है।

1. प्रशिक्षण का पहला स्तर दो वर्ष की आयु तक होता है।

बच्चों को *आज्ञाकारिता* सिखाने के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण काल होता है। शारीरिक क्षेत्र में, एक बच्चे को खाने की आदतों, मोटर कौशल और बातचीत करने की योग्यता आदि को सिखाया जाना जरूरी होता है।

2. प्रशिक्षण प्रदान करने का दूसरा स्तर दो वर्ष से तीन वर्ष के आयु के बीच होता है।

इन दिनों में माता पिता ज्यादातर यह देखने का प्रयास करते हैं कि उनका बच्चा किस चीज की सहायता से कितना दूर चल सकता है। *इच्छा* शक्ति के *विकास* के इस काल में उन्हें अनुशासन की शिक्षा देना बहुत महत्वपूर्ण है। माता पिता को बच्चों के लिए हर क्षेत्र में एक सीमा निर्धारित करके उन्हें सुरक्षा प्रदान करने की और उस सीमा को पार करने पर उन्हें डांटने तथा उन सीमाओं के भीतर रहकर कहना मानने पर लगातार उनकी प्रशंसा करने की जरूरत होती है। भावनात्मक क्षेत्र के अन्तर्गत ही बच्चे को अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करने का प्रशिक्षण मिल जाना चाहिए, खास तौर पर संयम के क्षेत्र में। इस अन्तराल के दौरान, उसे अधिक *सुरक्षा* और *प्रेम* की आवश्यकता होती है और वह अपनी मां के पास रहना पसन्द करता है।

3. प्रशिक्षण का तीसरा स्तर तीन वर्ष से पांच वर्ष के बीच का होता है।

(1) शारीरिक क्षेत्र में। बच्चे को अपना शरीर साफ सुथरा रखने की शिक्षा देना शुरू कर दें।

(2) बुद्धि के क्षेत्र में। एक बच्चा लगातार आपसे पूछता है"क्यों"? माता पिता को ध्यानपूर्वक अपने *बच्चे के प्रश्नों का जवाब देने* के लिए समय निकालना चाहिए। जीवन, वृक्षों, जानवरों आदि से जुड़ी चीज़ों के बारे में प्रश्न पूछने के द्वारा बच्चों के मन में सीखने की मनोदशा का विकास करें। उसको अच्छी पुस्तकों से कहानियां पढ़कर सुनाएं और अच्छे गीत गाएं। कामों को साथ मिलकर करें!

(3) सामाजिक क्षेत्र में। यह समय बच्चे को *सामाजिक कौशल* की शिक्षा प्रदान करने का भी एक महत्वपूर्ण समय होता है, जैसे लोगों से मिलना, हम उम्र के बच्चों को दोस्त बनाना इत्यादि।

(4) व्यक्तित्व क्षेत्र में । उसे *जिम्मेदारियां* उठाना सिखाएं। उदाहरण के तौर पर, उसे सिखाएं कि वह अपने खिलौने अपने आप उठाकर रखे, उससे घर के कामों में मदद मांगें। उसे अपने भाव प्रगट करते समय *संयम* बरतने की शिक्षा लगातार देते रहें, खास तौर पर अपने गुस्से को ठीक ढंग से प्रगट करने के क्षेत्र में।

(5) आत्मिक क्षेत्र में। बच्चे को *परमेश्वर के साथ चलना* सिखाने के लिए यह एक सबसे अच्छा समय है। उसे सुसमाचार की शिक्षा दें, उसके सामने ज्यादा से ज्यादा बाइबल की कहानियां पढ़ें, उन्हें बाइबल की आयतें याद करना,प्रार्थना और भजन गाना सिखाएं।

4. प्रशिक्षण का चौथा स्तर छः वर्ष की आयु से ग्यारह वर्ष की आयु के बीच होता है।

(1) शारीरिक क्षेत्र में। यह बच्चे को घरेलू काम, संगीत, खेल कूद सिखाने का सबसे अच्छा समय होता है। इस उम्र में आप बच्चे को यौन क्षेत्र के बारे में अच्छा ज्ञान दे सकते तथा उन्हें जिम्मेदारी के साथ धन का इस्तेमाल करना सिखा सकते हैं।

(2) दिमागी क्षेत्र में। इस उम्र में बच्चा पढ़ना,जमा करना तथा यात्रा करना पसन्द करता है। इसलिए उसे ज्यादा से ज्यादा अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उसे रोचक वस्तुएं इकट्ठा करने के लिए उत्साहित करें। और समय निकालकर अपने बच्चे के साथ अलग अलग जगहों पर जाएं।

(3) सामाजिक क्षेत्र में। यह समय परिवार की परम्पराओं को बच्चों को सिखाने का अच्छा समय होता है, जिससे परिवार आपसी प्रेम में एकजुट बना रहता है। लगातार परिवार में ऐसी पारिवारिक मिलन या सभा का आयोजन करते रहें जिसमें आप एक साथ मिलकर खेले, हँसी मजाक करें या फिर एक साथ कही घूमने जाएं। सबसे अच्छा तरीका यह है कि एक साथ निर्णय लेने या योजना बनाने के लिए एक जगह पर जमा हुआ करें। इन सभाओं के द्वारा बच्चे को यह समझने में सहायता मिलती है कि निर्णय कैसे लिये जाते हैं और उन्हें निर्णय-लेते व योजना बनाते समय साथ में रखना बहुत अच्छा रहता है, खास तौर पर उन निर्णयों और योजनाओं को बनाते समय जिनसे आपके बच्चे का जीवन प्रभावित होने वाला है। यह समय अपने बच्चों को दूसरों की मदद करने का हिस्सा बनाने के लिए उत्तम समय है।

(4) व्यक्तित्व के क्षेत्र में। एक बच्चे की अनुभूतियां और उसकी भावनाएं लगातार ज्वलन्त होती रहती तथा जलिट रूप धारण करती जाती हैं। माता पिता को *स्वीकृति* प्रगट करने की जरूरत पड़ती है। यह बहुत जरूरी है कि माता पिता अपने बच्चों को साथ समझ और प्रेम का एक घनिष्ट सम्बन्ध बनाकर रखें।

(5) आत्मिक क्षेत्र में। यह समय बच्चों की मसीह के साथ सम्बन्ध बनाने तथा कलीसिया के दूसरे मसीही बच्चों के साथ (युवा क्लब में या किसी मसीही कैम्पस या सम्मेलन में) दोस्ती बनाने में मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण समय है। परिवार को एक साथ मिलकर बाइबल पढ़ना और प्रार्थना करना चाहिए। माता पिता को अपने बच्चों को गैर मसीही बच्चों के साथ खेलने के लिए तैयार करना चाहिए। और अन्त में, माता पिता को बच्चों में मसीही सिद्धान्तों की नींव डालन चाहिए। माता पिता को अपने बच्चों के लिए लगातार प्रार्थना करना चाहिए ताकि परमेश्वर उन पर मसीही सिद्धान्तों, आज्ञाओं, मूल्यों और जीवन के स्तर को अपनाने के लिए उन अपना अनुग्रह कर सकें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। यदि आपके पास कोई बच्चा है तो, उसे परमश्ेवर के राज्य के सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा प्रदान करना शुरू कर दें जो बाइबल में लिखी हैं।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 11:29-14:35** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. **याद करें।** नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। **(4) झगड़ों का समाधान करें, मत्ती 5:23-24।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 12** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है(भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 28

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 **बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]*

लूका 11:29-14:35

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 11:29-14:35) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 **याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]*

(4) मत्ती 5:23-24

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(4) झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23-24। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।

4 **बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]*

यूहन्ना 12:1-50

परिचय। बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों का इस्तेमाल करते हुए मिलकर **यूहन्ना 12:1-50** का अध्ययन करें। यूहन्ना 12:1-50 में बैतनिय्याह में यीशु मसीह के अभिषेक, यरूशलेम में उसके विजय प्रवेश और उसकी खोज करने वाले यूनानियों से उसकी मुलाकात और यीशु को अस्वीकार करने वाले यहूदियों को अविश्वास।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 12:1-50 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

खोज 1. मरियम द्वारा यीशु का अभिषेक।

यह घटना लूका 7 में लिखी घटना के समान नहीं है, लेकिन यह घटना और मत्ती 26 व मरकुस 14 में बखान की गयी घटनाएं एक ही हैं। शमौन कोढ़ी के घर में यीशु मसीह के सम्मान में एक रात्रि भोज का आयोजन किया गया था। इस्राएल की रीति के अनुसार, मेहमान भोजन मेज़ के पास टेक लगाकर लेट जाया करते थे। मार्था और लाज़र की बहन, मरियम, ने यीशु के ऊपर महंगे इत्र का मर्तबान उण्डेल दिया, जिसने उसे सिर से लेकर पांव तक तर कर दिया। फिर उसने यीशु के पांव को अपने बालों से धोया। पूरा घर इत्र की सुगन्ध से भर गया।

इस घटना में हम एक तरफ तो मरियम की *उदारता* को देखते हैं और दूसरी तरफ यहूदा का *स्वार्थ।* यहूदा ने मरियम के इस काम को पैसों की बर्बादी करार दिया। उसने हिसाब लगाकर बताया कि उस इत्र का दाम एक व्यक्ति की एक वर्ष की कमाई थी(अर्थात 300 दीनार, और 1 दीनार की कीमत एक दिन की कमाई थी)! गुस्सा होने वालों में कुछ और चेले भी शामिल थे। मरियम ने जिस तरफ भी अपनी निगाह दौड़ाई उस तरफ घूरा और स्वीकृत निगाहों से देखा जा रहा था। केवल यीशु ही उसके बचाव में खड़े हुए। केवल यीशु ही उसकी मनसा को समझे और उसने कहा, "उसने तो यह इत्र मेरे दफन के लिए जमा किया था।"

यीशु के किसी चेले से बढ़कर, मरियम इस बात को महसूस कर पाती थी कि शत्रु जल्द ही मार देगें। हालांकि यीशु ने कई बार अपनी मृत्यु के बारे में बताया था(मरकुस 8:31; 9:31; 10:33-34), लेकिन मरियम यीशु की बातों को शायद सबसे अच्छी तरह सुन रही थी। यहूदी रीति के अनुसार, मृत्यु के पश्चात, देह पर मसाले और इत्र लगाया जाता और लिनेन के कपड़े से लपेट दिया जाता था। लेकिन मरियम यीशु मसीह को जीवित रहते हुए सम्मानित करना चाहती थी। अतः मरियम ने यीशु को दफनाने की तैयारी के रूप में उस पर सारा इत्र उण्डेल दिया। यीशु ने उसके इस उपहार को स्वीकार करते हुए कहा कि संसार में जहां कहीं उसके बारे में चर्चा की जाएगी वहां मरियम के द्वारा किये गये इस काम का भी जिक्र जरूर से किया जाएगा।
निश्चय तौर पर यीशु गरीबों की चिन्ता करता था, और वह बेकार में चीज़ों को बर्बाद करना पसन्द नहीं करता। लेकिन मरियम के द्वारा किया गया काम व्यर्थ नहीं था! यह यीशु के प्रति अपने प्रेम को प्रगट करने के लिए किया गया कार्य था, यह कार्य इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण मृत्यु की तैयारी था! यह कार्य यीशु द्वारा अपनी मृत्यु पर की गयी भविष्यद्वाणी पर विश्वास करने का कार्य था, जिसके द्वारा उसने यह सहमति

दर्ज की वास्तव में यीशु जल्द ही मर जाएगें। यीशु मसीहियों को शिक्षा देते हैं कि वे धन खर्च किये जाने को लोगों के सामान्य दृष्टिकोण से अलग हटकर देखते हैं।

12:12-19

खोज 2. यरूशलेम में यीशु का विजय प्रवेश।

दो तथ्य मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

(1) यीशु ने दर्शाया कि वह सारी परिस्थितियों पर अपना नियन्त्रण रखता है। महासभा अर्थात सिन्हेद्रिन ने यीशु को फसह के पर्व में मारने की योजना नहीं बनायी होती, लेकिन यीशु मसीह द्वारा यरूशलेम में विजय प्रवेश के कारण उन्हें यीशु को मारने की योजना को पहले अन्जाम देना पड़ा। यरूशलेम में प्रवेश करने के लिए द्वारा यीशु ने यह साबित व प्रदर्शित कर दिया कि वह अपने प्राणों को अपनी इच्छा से देने के लिए आया है।

(2) यीशु ने दिखाय की वह मसीह, शान्ति का राजकुमार है(यशायाह 9:6)। लादू के बच्चे पर सवार होकर उसका यरूशलेम में प्रवेश करना जकर्याह 9:9 की भविष्यवाणी का पूरा होना था। अर्थात यरूशलेम के लोग अपने राजा को लादू के बच्चे पर सवार होकर आते हुए देखेंगे। एक तरफ यदि घोड़े पर सवार होने का अर्थ युद्ध करना था उसी प्रकार गधे पर सवार होने का शान्ति के समाचार के रूप में देखा जाता था! एक लादू के बच्चे पर सवार होकर, यीशु ने प्रगट फिर दिया कि वह मसीह है, लेकिन वह को राजनैतिक या सैन्य मसीहा नहीं था जैसा कि यहूदी लोग उम्मीद कर रहे थे, लेकिन वह तो बाइबल का मसीह था! उसने दिखाया कि वह कोई राजनैतिक लड़ाई जीतने के लिए नहीं परन्तु वह लोगों को शान्ति प्रदान करने के लिए आया है। वह परमेश्वर और पापी मनुष्य के बीच मेल कराने के लिए अपने प्राणों की आहूति देगा।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 12:1-50 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

12:20

प्रश्न 1. फसह के पर्व के दौरान यरूशलेम में आराधना करने आये लोगों में यूनानी क्यों मौजूद थे?

ध्यान दें। शताब्दियों तक यहूदी लोग आस पास के देशों में जाकर रहने लगें या उन्हें बन्धुवा बनाकर दूर दराज जगहों पर ले जाया गया था। वहां जाकर उन्होंने परमेश्वर की आराधना करने तथा पुराने नियम का अध्ययन करने के लिए अराधनायलों का निर्माण किया। अन्यजातियों में से जो लोग एकेश्वरवाद की (जो

अन्यजातियों में बहुईश्वरीयवाद के बिल्कुल विपरीत था)आकर्षित हुए वे यहूदी मत को अपनाने लगे। अन्यजाति में से कईयों ने खतना करवाया और सम्पूर्ण व्यवस्था का पालन करने की प्रतिज्ञा की। वे यहूदी बन गये और यहूदियों की सारी जिम्मेदारियों और अवसरों के भागीदार हो गये। उन्हें "नवदीक्षित" कहा गया(प्रेरितों 2:11)। लेकिन उनके अलावा और भी गैर यहूदी लोग थे जिन्होंने खतना नहीं करवाया और उन्होंने यहूदी विधियों को भी नहीं माना उन्हें "परमेश्वर का भय मानने वाला" कहा गया(प्रेरितों 16:14)। उन्हें मन्दिर अर्थात अराधनालय में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं थी, लेकिन वे बाहरी आंगन तक जा सकते थे। अतः यीशु के समय तक,यहूदियों के रीति रिवाजों ने यहूदियों और गैर यहूदियों कें बीच में एक "विभाजन की दीवार" खड़ी करके रखी(इफिसियों 2:14-15)। बाद में पौलुस इफिसियों की कलीसिया में यहूदी मसीहियों और गैर यहूदियों के बीच "विभाजन लाने वाली बैर की दीवार" की उन धार्मिक विधियों के बारे में बताता है, जिसमें अनेको नियमों और कानूनों को पालन किया जाता है (इफिसियों 2:14-15)।

जो यूनानी, फसह के पर्व में भाग लेने के लिए आये थे वे पूरे हृदय से परमेश्वर का भय मानने वाले थे। हमें यह नहीं पता है कि वे यीशु से क्यों मिलना चाहते थे। हो सकता है कि उन्होंने यूनानियों के ज्ञान पर विश्वास करना छोड़ दिया हो और उन्हें यहूदी मत में आकर भी सच्ची शान्ति नहीं मिल रही थी(1 कुरिन्थियों 1:18-25)। यीशु का जवाब इस बात को प्रगट करता है कि वे यीशु से मिलकर *उद्धार* के बारे में चर्चा करना करना चाहते थे। इन यूनानियों ने अपनी फरियाद फिलिप और इन्द्रियास के द्वारा यीशु तक पहुंचाने का प्रयास किया, क्योंकि यीशु के चेलों वे ही दो ऐसे चेले थे जिनके नाम यूनानी थे। यीशु ने अपने चेलों को जवाब दिया, जिस जवाब को उन्होनें यूनानियों तक पहुंचा दिया।

12:23-24

प्रश्न 2. जब यीशु ने कहा कि जब तक गेहूँ का दाना मर नहीं जाता तो वह अकेला ही रहता है, तो उसका मतलब क्या था?

ध्यान दें। जब यीशु ने यूनानियों के प्रश्न का उत्तर दिया उस समय यीशु के चारों ओर यहूदियों की भीड़ खड़ी हुई थी। उनसे कहा "वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो। मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जब तक गेहूँ का दाना भूमि में पड़कर मन नहीं जाता, वह अकेला रहता है; परन्तु जब मर जाता है, तो बहुत फल लाता है"। यीशु ने कहा कि उसे "महिमान्वित" करने का समय आ गया है। यीशु क्रूस पर अपनी मृत्यु, उसके मृतकों में से जी उठने, स्वर्ग पर उसके उठा लिये जाने और अन्त में स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने के बारे में बात कर रहे थे जहां पर वह अपने पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है।

जिस समय यूनानी लोग प्रसिद्ध और जीवित राजा (मसीह) से मिलने आये, जिसने यरूशलेम में विजयी प्रवेश किया था, यीशु मसीह उसी समय पर अपनी मृत्यु के बारे में बातें कर रहे थे। उसने उनके सामने स्पष्ट कर दिया कि जमीनी मसीह से मिलकर उन्हें कुछ लाभ नहीं होगा। क्योंकि ज़मीनी मसीह को पहले मरना जरूरी है। केवल तभी व स्वर्गीय मसीह के रूप में, उनका उद्धार कर पाएगा। लेकिन अब उसके तकलीफों को सबसे भयानक दौर आ चुका है। यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के बारे में "एक बीज के भूमि पर पड़कर मरने की उपमा देते हुए" बताया।

हर एक किसान इस बात को जानता है कि यदि एक बीज भूमि पर पड़कर नहीं मरता, तो वह पौधा बनकर अपने समान और बीजों को उत्पन्न नहीं कर सकता। एक तरफ यीशु कहते हैं, उसके लिए मरना बहुत

जरूरी है। क्योंकि यदि वह क्रूस पर अपने प्राण नहीं देता है, तो किसी का उद्धार सम्भव नहीं है। और दूसरी तरफ यीशु कहते हैं कि, उसकी मृत्यु का परिणाम जगत में एक विशाल कटनी होगी। यदि वह अपने प्राण देता है तो जगत के बहुत से लोगों का उद्धार हो जाएगा। इसलिए जब यीशु ने बीज के ज़मीन पर गिरकर मरने का उदाहरण देते हुए अपने मरने की बात की, तो वह यह शिक्षा दे रहे थे कि क्रूस पर उसकी वैकल्पिक मृत्यु लोगों के उद्धार के लिए बहुत जरूरी है और इसका संसार के इतिहास पर भी गहरा प्रभाव पड़ेगा।

12:25-26

प्रश्न 3. एक मसीही को संसार में रहते हुए अपने प्राण को क्यों अप्रिय जानना चाहिए?

ध्यान दें। यीशु ने कहा, "जो अपने प्राण को अप्रिय जानता है, वह अनन्त जीवन के लिए उस की रक्षा करेगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले, और जहां मैं हूँ, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि कोई मेरी सेवा करें, तो पिता उसका आदर करेगा"।

एक मसीही को अपने प्राण को इसलिए अप्रिय जानना चाहिए क्योंकि केवल ऐसा करने पर ही उसके प्राण का उद्धार हो सकता है। क्योंकि जो व्यक्ति अपने प्राण को प्रिय जानता है वह अपने जीवन, अपने परिवार और अपने दोस्तों, भौतिक वस्तुओं और सम्पत्ति और अपनी सांसारिक महत्वाकांक्षाओं को यीशु मसीह से बढ़कर प्राथमिकता देता है। ऐसा व्यक्ति अपने प्राण का नुकसान उठायेगा अर्थात यीशु मसीह उसका इनकार कर देगा और वह अनन्त दण्ड भोगेगा।

इस पापमय संसार में अपने प्राण को अप्रिय जानने से संबन्धित तीन बातें अति महत्वपूर्ण हैं:

(1) अपने आपे का इनकार करने करना।

जब हमने मिलकर यूहन्ना 12:23-26 देखा, जब हम ने ध्यान दिया कि अपने आपे का इनकार करना यीशु और मसीहियों के लिए भी सत्य है। यूहन्ना 12:23-24 में, बहुत से लोगों को बचाने के लिए यीशु मसीह का *मरना बहुत जरूरी* था। और यूहन्ना 12:25-26 में हम ने देखा कि यीशु के खातिर मसीहियों को भी मरने के लिए तैयार रहना चाहिए। निश्चित तौर पर, मसीही लोग यह काम अपनी शक्ति से नहीं कर सकते। फिर भी यीशु मसीह और मसीहियों के लिए यह अपना इनकार करने का सिद्धान्त बहुत महत्वपूर्ण है!

(2) यीशु को प्रथम स्थान देने की शिक्षा।

दूसरे सुसमाचारों में भी यीशु को अपने जीवन में प्रथम स्थान देने की शिक्षा दी गयी है। यीशु की इसी शिक्षा को मत्ती 10:37-39, मरकुस 8:34-38 में और लूका 14:26-33 में कलमबन्द किया गया है। मत्ती 10:37-39 में यीशु ने कहा, "जो माता पिता को *मुझ से अधिक* प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक जानता है वह मेरे योग्य नहीं; और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा"। प्रेरितों 5:29 में पतरस ने अधिकारियों से कहा, "हमारे लिए अच्छा है कि हम मनुष्यों की बात मानने से अच्छा परमेश्वर की बात मानें"। एक मसीही जन को अपने व्यक्तिगत व सामाजिक जीवन में प्रभु यीशु का सर्वप्रथम स्थान देना चाहिए। उसे सर्वोच्च सम्मान अपने माता पिता, या शिक्षक, या अपनी कम्पनी, या सरकार को नहीं वरन यीशु मसीह को देना चाहिए। यदि कभी ऐसी परिस्थिति आ जाए जिसमें यीशु मसीह की आज्ञा और माता पिता, शिक्षकों, कम्पनी या सरकारी अधिकारियों की मांगे आमने सामने

आकर खड़ी हो जाएं तो मसीही जन को बाकि सबकी न मानते हुए यीशु मसीह की आज्ञाओं का चुनाव करना चाहिए।

(3) सेवा में कष्ट उठाना।

यूहन्ना 12:26 में यीशु ने कहा, "यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले, और जहां मैं हूँ, वहां मेरा सेवक भी होगा। यदि को मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।" यीशु मसीह का मतलब था कि यदि कोई उसकी सेवा करना चाहता है, तो उसे हर परिस्थिति में मसीह का अनुसरण करना चाहिए, चाहे वह परिस्थिति अपना इनकार करना या क्रूस उठाना ही क्यों न हो। मत्ती 10:39 में "अपना क्रूस लेकर यीशु के पीछे हो लेने" का अर्थ "संसार में परमेश्वर के राज्य और यीशु मसीह की खातिर कठिनाईयों, अस्विकृति, सताव और यहां तक कि मृत्यु सहने के लिए इच्छुक रहना" है। लेकिन मसीहियों को हमेशा अपने मन में रखना चाहिए कि क्रूस का रास्ता मुकुट की ओर जाता है। यीशु ने कहा,"जो कोई मेरे लिए अपने प्राण को खोता है वह उसे पाता है।" और वह यह भी कहता है," और जो मेरी सेवा करता है पिता उसका आदर करेगा"।

12:31-32

प्रश्न 4. इस संसार का सरदार कौन है? और उसे निकाल दिया जाएगा का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। "अब इस संसार का न्याय होता है, अब इस संसार का सरदार निकाल दिया जाएगा; और यदि मैं पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा तो सब को अपने पास खींच लूंगा।" यीशु मसीह ऊँचे पर उठाया जाने का अर्थ क्रूस पर उसकी मृत्यु,उसका पुनरूत्थान, स्वर्ग पर उठा लिया जाना और स्वर्ग में उसका विराजमान होना है। यीशु की क्रूस पर मृत्यु संसार का न्याय और शैतान से उसका संसार पर अधिकार छीन लेना है।

(1) संसार का न्याय।

जिस "संसार" के बारे में यीशु बात कर रहे हैं वह सम्पूर्ण धरती नहीं, वरन केवल संसार में उसे अस्विकार करने वाले लोग व उसकी निन्दा करने वाले उनके अगुवे हैं। वह संसार यहूदा का संसार है, जिसने उसके साथ विश्वासघात किया; वह उस सैनिक का संसार है, जिसने उसका मज़ाक बनाया; यह पिलातुस का संसार है, जिसने उसे मौत की सज़ा सुनाई और हेरोदेस का संसार था जिसने मसीह को ठट्ठों में उड़ाया। छोटे शब्दों में कहें तो, संसार, बुरे लोगों से मिलकर बना वह समाज है जो बाइबल के परमेश्वर (और शान्ति के राजकुमार) से दूर हैं और जिनका सरदार शैतान है। इस संसार के लोगों ने बिना यह सोचे हुए यीशु पर दोष लगाया और उसे बाहर निकाल दिया, कि उनका यह काम एक दिन खुद उन पर दण्ड लाएगा। अब उस संसार का न्याय होता है, अर्थात उसे अब नरक के अनन्त विनाश में डाल दिया जाता है (प्रकाशितवाक्य 21:8)।

(2) शैतान को बाहर निकालना।

इस संसार का सरदार शैतान है। यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पूर्व शैतान को इस संसार में बहुत शक्ति प्राप्त थी और उसने हमेशा कोशिश की कि परमेश्वर के संदेशवाहक व सेवक उसके कार्य क्षेत्र से दूर ही रहें (दानिय्येल 10:13,20,21)। लेकिन, यीशु मसीह ने अपने प्रथम आगमन पर ही शैतान के कामों को नष्ट कर दिया (1यूहन्ना 3:8) और उसने दुष्टआत्माओं को भगाने (मत्ती 12:28-30), उसकी मृत्यु के द्वारा (कुलुस्सियों 2:15; इब्रानियों 2:14) और पुनरूत्थान, और अपने स्वर्ग पर उठा लिये जाने और स्वर्ग में सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा (प्रकाशितवाक्य 12:5-9) शैतान को बांध दिया है। अत: वह शैतान का

न्याय करने और उसे दण्ड देने वाला है(यूहन्ना 12:31; 16:11)। शैतान का यीशु मसीह पर कोई अधिकार नहीं था(यूहन्ना 14:30)। शैतान आज भी अविश्वासियों के संसार पर राज्य करता है(1यूहन्ना 5:20), लेकिन उसका संसार के विश्वासियों पर कोई अधिकार नहीं है(1यूहन्ना 5:19)। मसीही लोग शैतान का विरोध कर सकते हैं(याकूब 4:7; 1 पतरस 5:8-9)। हालांकि आज भी मसीह आज भी शैतान और उसकी दुष्टात्माओं से लड़ाई लड़ रहे हैं(इफिसियों 6:10-12), लेकिन अब शैतान सुसमाचार को संसार भर के राष्ट्रों तक पहुंचाने से नहीं रोक सकता।(प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

यीशु कहते हैं कि क्रूस पर यीशु की मृत्यु से "संसार का सरदार संसार से बाहर निकाला जाएगा"। शैतान को इस संसार में उसके अधिकार व शासन से निकाले जाने के परिणाम स्वरूप संसार के लाखों करोड़ों ओर मसीह की ओर खिच कर आ जाएंगे। क्रूस पर यीशु की मृत्यु और उसके मृतकों में से पुन: जीवित होने, उठाये जाने तथा स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने के कारण, शैतान जाति जाति के लोगों पर अपना नियन्त्रण खो बैठा है और अब वह उन लोगों को सुसमाचार सुनने तथा उसे स्वीकार करने से नहीं रोक सकता। इस समय के बाद से यीशु धरती की सारी जातियों में से लोगों को शैतान के राज्य में से निकालकर अपने राज्य में प्रवेश करवाएगा(कुलुस्सियों 1:13)।

जो यूनानी यीशु से मिलने के लिए आये थे, उन अनगिनत लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो अन्यजातियों में से आयेगें और यीशु मसीह पर विश्वास करेगें। और यीशु मसीह के प्रथम आगमन से लेकर अब तक, करोड़ों की संख्या में लोग उसके राज्य में प्रवेश कर चुके हैं।

12:37-46

प्रश्न 5. बाइबल विश्वास और अविश्वास को किस तरह से देखती है?

ध्यान दें।

(1) बाइबल विश्वास को किस प्रकार देखती है।

फिलिप्पियों 1:29 हमें सिखाता है, "मसीह पर विश्वास करने का दान .... आपको दिया गया है"। और प्रेरितों 13:48 "जितनों को अनन्त जीवन के लिए ठहराया गया था उन्होंने विश्वास किया"। बाइबल हमें नियमित तौर पर सिखाती है कि विश्वास परमेश्वर की ओर से एक वरदान है। विश्वास मनुष्य को काम नहीं है। परमेश्वर हमें विश्वास प्रदान करते हैं और यह मनुष्य का कर्तव्य है कि जो विश्वास परमेश्वर ने उसे दिया है वह उसका इस्तेमाल करें। यूहन्ना 12:42-43 हमें सिखाता है कि सच्चा विश्वास केवल दिमागी सहमति नहीं है, वरन यह मन से विश्वास करने और विश्वास के साथ अपने मुँह से अंगीकार करने का समर्पण है।

(2) बाइबल अविश्वास को किस तरह से देखती है।

यूहन्ना 12:37-40 में यूहन्ना लिखता है, "उसने उनके सामने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होने उस पर विश्वास नहीं किया ... इस कारण वे विश्वास न कर सके, क्योंकि यशायाह ने यह भी कहा है: "परमेश्वर ने उनकी आँखें अंधी, और उनका मन कठोर कर दिया है; कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखे और मन से समझें और फिरें और मैं उन्हें चंगा करूँ"।

बाइबल का परमेश्वर लोगों को उनके अविश्वास के लिए ज़िम्मेदार ठहराता है। यशायाह 1:2-4 में हम पढ़ते हैं कि इस्राएल की सन्तानों ने परमेश्वर के खिलाफ बलवा किया और भ्रष्ट हो गये। इसलिए, यशायाह 6:9-10 में परमेश्वर ने उन्हें यह कहते हुए उनको दण्ड दिया कि,"तू इन लोगों के मन को मोटा और उनके

कानों को भारी कर, और उनकी आंखों को बन्द कर, ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से बूझें, और मन फिराएं और चंगे हो जाएं।" इस्राएलियों ने बहुत से चमत्कारों को देखा और भविष्यद्वक्ताओं के बहुत से सुन्दर वचनों को सुना था फिर भी, उन्होंने स्वेच्छा से परमेश्वर के प्रति अपनी आँखों को बन्द, कानों को बन्द और अपने अपने हृदयों को कठोर कर लिया। उन्होंने विश्वास करने से इनकार कर दिया। परमेश्वर ने उनकी आंखों और कानों को और कसकर बन्द कर दिया। आगे को वे न देखने और न ही कुछ सुनने के काबिल थे। उन्होंने जो कुछ अपने आप से बोया था वही उन्होंने काटा(गलातियों 6:7-8)!

ठीक इसी प्रकार से, फरीसियों और बहुत से अन्य यहूदियों ने भी यीशु के अनेकों चमत्कारों को देखा और उसकी शिक्षाओं को सुना, लेकिन फिर भी उन्होंने यीशु मसीह पर विश्वास करने से इनकार कर दिया। इसलिए वे भी दोषी ठहरे(मत्ती 13:11-17)।

इसलिए, आज हर एक जन की यह ज़िम्मेदारी है कि वह बाइबल में पाये जाने वाले परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर दे। उसकी यह ज़िम्मेदारी है कि वह यीशु मसीह की बातों, उसके जीवन,मृत्यु और पुनरूत्थान का प्रतिउत्तर दे। यदि किसी व्यक्ति का स्वभाव फरीसी की तरह है और वह लगातार मसीह की आलोचना करता है (मत्ती 12:2,7,10,14,24) तो उसका हृदय भी कठोर कर दिया जाएगा और वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाएगा।

लेकिन यदि कोई जन, ईमानदारी के साथ परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देता है, तो उसे किसी भी तरह डरने की ज़रूरत नहीं है। हर एक भला और शुद्ध हृदय परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देगा, बढ़ेगा और फलवन्त होगा(मत्ती 13:23; मरकुस 4:20; लूका 8:15)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोच विचार करके यूहन्ना 12:1-50 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 12:1-50 से सम्भव अनुप्रयोगों के उदारहण।

12:3। कई बार मरियम के समान बड़ी रकम के खर्च किये जाने से यीशु मसीह को आदर मिलता है।

12:6। सावधान रहें कि जब आपको धन या वाणिज्य विभाग की जिम्मेदारी सौंपी जाए तो आप यहूदा के समान बेईमान न बनें।

12:10। यदि यीशु मसीह के शत्रुओं ने उसे मारने के लिए षड्यन्त्र किया था, तो वह मसीहियों को मारने का भी षड्यन्त्र बनाएगा। तैयार रहें।

12:16। यीशु मसीह को उस नज़रिये से न देखें जिस नज़रिये से यहूदी अगुवों ने यीशु मसीह को देखा था। वे केवल अपने धर्मशास्त्र से ही अनजान थे(मत्ती 22:29; यूहन्ना 5:39), वरन उन्होंने अपनी ही रीतियों को नयी धार्मिक पुस्तक में तबदील कर दिया!

12:17,19। सामान्य तौर पर धार्मिक अगुवे नहीं वरन, साधारण लोग ही यीशु मसीह के वचनों को दूसरों में बांटते हैं। होने दें कि साधारण लोग सुसमाचार लोगों में फैलाने पाएं।

12:20-21। अगर धार्मिक अगुवे यीशु मसीह को स्वीकार न भी करें तौभी साधारण लोग उसे जरूर स्वीकार करेगें। साधारण लोगों को मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें।

12:24-25। अपना इनकार करना और मसीह के लिए कष्टों को सहना मसीहियों के दो महत्वपूर्ण सद्गुण हैं।

12:31-32। संसार भर में यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचार करें, क्योंकि मसीह उन्हें अपनी ओर खींच रहा है।

12:42-43 सच्चा विश्वास करने वाले लोग सताव सहने के बावजूद अपने मुंह से अंगीकार करेगें कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

12:48। अन्त के दिनों में सुसमाचार का सन्देश या तो लोगों को धर्मी ठहरायेगा या दोषी।

2. यूहन्ना 12:1-50 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं अपने जीवन में यीशु मसीह को पहला स्थान देना चाहता हूँ। मैंने अपने आप से यह प्रण किया है कि मैं अपने जीवन में यीशु को ही पहला स्थान दूंगा अपने माता पिता को, शिक्षक को, या कम्पनी को, या सरकार को, या सरकारी अगुवों को नहीं। यदि यीशु मसीह की आज्ञाओं को मेरे माता पिता, शिक्षकों,कम्पनी या सरकारी अधिकारियों की मांग में कोई विरोधाभास उत्पन्न होता है तो मैं यीशु की आज्ञा पालन करना पसन्द करूंगा।

मैं हर तरह से यीशु मसीह की सेवा करना चाहता हूँ, चाहे वह रास्ता अपने आप का इनकार करने और कष्टों को ही क्यों न हो। मैंने प्रण किया है कि मैं अपना क्रूस उठाकर यीशु का अनुसरण करूंगा। मैं इस संसार में रहते हुए यीशु मसीह और उसके राज्य के लिए कष्टों, तिरस्कार, सताव और मृत्यु तक सहने के लिए तैयार हूँ। लेकिन मैं हमेशा याद रखना चाहता हूँ कि क्रूस का रास्ता मुकुट की ओर जाता है। केवल सेवा करते हुए ही मेरे जीवन का उद्धार हो सकता है! केवल सेवा और कष्ट सहने की राह में पिता मेरा आदर करेगा!

कदम 5. प्रार्थना। प्रतिउत्तर

आइये यूहन्ना 12:1-50 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।

(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5 **प्रार्थना** (८ मिनट) *[मध्यस्थता]*
दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें(रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6 **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*
अगले अध्याय के लिए

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 12 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें,शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 15:1-18:17** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(5) विश्वासयोग्य बने रहो। नीतिवचन 3:3-4।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है(भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 29

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 15:1-18:17**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (लूका 15:1-18:17) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(5) नीतिवचन 3:3-4**

दो दो करके *पुनरावलोकन* करें।
(2) विश्वासयोग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4। कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हारा बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* **व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को प्रशिक्षण दें**

परिचय। यह प्रशिक्षण व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को प्रशिक्षित करने के बारे में हैं। हम एक ऐसा तरीका सिखाएंगे जिसके माध्यम से पुराना विश्वासी नये विश्वासी को बढ़ने में सहायता कर सकता है। ,

क. व्यक्ति सहायता का महत्व

1. व्यक्तिगत सहायता क्या है?

इस अध्ययन में "व्यक्तिगत सहायता" का अर्थ उस सहायता से है जिसके अन्तर्गत एक बुजुर्ग या परिपक्व मसीही(एक प्रशिक्षक या मार्गदर्शक) नये मसीही की सहायता करता है। पुराना मसीही, नये मसीही की आत्मिक रीति में बढ़ने तथा उसकी यीशु मसीह का चेला बनने में सहायता करता है। वह निम्नलिखित क्षेत्रों में सहायता पाता है:

- उसके व्यक्तित्व व ज़रूरतों में सहायता करने के द्वारा

- बाइबल का इस्तेमाल करने के द्वारा
- व्यक्तिगत सम्बन्ध, मसीही प्रेम और देखभाल द्वारा

2. बाइबल में दिये गये व्यक्तिगत सहायता के उदाहरण।

परिचय। हालांकि ये उदाहरण यीशु की व्यक्तिगत सेवाकाई के उदाहरण हैं, लेकिन इनके द्वारा यीशु ने अपने चेलों को अपने उदाहरण का अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया। इन उदाहरणों का इस्तेमाल कुछ व्यक्ति सहायता के कुछ क्षेत्रों में हमारे विचारों को उभारने के लिए किया गया है।

(1) एक व्यक्ति की यीशु मसीह पर विश्वास करने में सहायता करने के लिए व्यक्ति तौर पर सहायता करें।

पढ़ें लूका 19:1-10।
खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह की मुलाकात जब जक्कई से हुई तो उसने क्या किया?
ध्यान दें। यीशु मसीह इस दुनिया में खोये हुए का खोजने और उनका उद्धार करने के लिए आये। जक्कई एक खोया हुआ व्यक्ति था। लेकिन यीशु ने उसे ढूँढ़ लिया। जक्कई प्रमुख चुंगी लेने वाला था। वह लोगों को ठगता और उनसे ज्यादा कर वसूला करता था और इसीलिए वह बहुत अमीर था। जब यीशु उसके शहर में आया,तो जक्कई भी उससे मिलना चाहता था। हालांकि हमें यह पता नहीं है कि वह क्या मिलना चाहता था। हो सकता है कि उसका विवेक उसे लोगों को ठगने की वजह से कचोटता हो। लेकिन यीशु उस कारण को बहुत अच्छी तरह से जानते थे इसलिए उन्होंने उससे उसी के घर में मिलने की पहल की।

उन लोगों की बातचीत के दौरान जकक्ई ने यीशु के सामने अपने पापों को अंगीकार कर दिया, "हे प्रभु देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया हो तो उसे चौगुना फेर देता हूँ।" उसके बाद यीशु ने उसकी उद्धार पाने में सहायता की और कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है..क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनका उद्धार करने आया है"। सहायता करने का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि आप लोगों की सुसमाचार समझने तथा यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण करने में सहायता करते हैं।

(2) एक व्यक्ति की यीशु से शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर सहायता करें।

पढ़ें लूका 10:38-42; प्रेरितों 8:2 2 कुरिन्थियों 4:16-18।
खोजें और चर्चा करें। आपके विचार से "वह मुख्य बात क्या है" जिसकी लोगों को जरूरत हैं?
ध्यान दें। "मुख्य बात" जिसकी लोगों को सबसे ज़्यादा ज़रूरत है वह यीशु मसीह के कदमों में बैठकर उससे सीखना है। हमें नहीं पता कि मरियम की व्यक्तिगत जरूरत क्या थी और यीशु ने उसे क्या सिखाया। लेकिन हम यह जानते हैं कि यीशु ने इस घटना को बहुत महत्व दिया। उसने कहा कि मरियम ने जिस व्यक्तिगत सहायता का चुनाव किया वह उसके लिए रोजमर्रा के घरेलू कामों से अधिक महत्वपूर्ण थे। वह सच में ज्यादा महत्वपूर्ण थी,क्योंकि मसीहियों को अपनी दृष्टि प्रत्यक्ष चीज़ों (अस्थायी) पर नहीं वरन अप्रत्यक्ष चीजों (अनन्त चीजों) पर लगानी है।
अत: एक पुराना मसीही किसी नये मसीही को नियमित तौर पर (हर 14 दिनों में एक बार) मिलने के लिए "यीशु के कदमों में बैठकर सीखने के लिए" बुला सकता है। यीशु की शिक्षाएं चार सुसमाचारों में लिखी

गयी हैं: अर्थात मत्ती, मरकुस, लूका, यूहन्ना। व्यक्ति तौर पर सहायता करने का एक पहलू साथ मिलकर यीशु मसीह की शिक्षाओं का अध्ययन करना और उस पर चर्चा करना है।

(3) एक व्यक्ति के टूटे रिश्तों को बहाल करने के लिए व्यक्तिगत तौर पर सहायता करें।

पढ़ें यूहन्ना 13:37; 21:15-19।
खोजें और चर्चा करें। जब यीशु गलील की झील पर पतरस से मिला तो उसने क्या किया?
ध्यान दें। यीशु ने पतरस से मिलने की पहल की और उसने टूटे रिश्ते हो बहाल किया। यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले, पतरस ने बड़ी बड़ी डींगे मारी थीं कि वह चाहे मर जाए लेकिन वह कभी भी यीशु का इनकार नहीं करेगा। उसने कहां था कि " मैं तेरे लिए अपनी जान भी दे सकता हूँ।" लेकिन जिस समय यीशु को गिरफ्तार किया गया तब पतरस दूसरे चेलों के साथ यीशु को छोड़कर भाग गया। यीशु पर दोष लगाये जाने के दौरान पतरस ने तीन बाद यीशु और उसके चेलों को पहिचानने से इनकार किया था। पतरस के इस व्यवहार के कारण यीशु और पतरस के रिश्ते में दारार पड़ गयी थी।

यीशु मसीह के मुर्दों में से जी उठने के बाद, यीशु ने पतरस से व्यक्ति तौर पर बातचीत की और कहा, "पतरस क्या तू मुझे वास्तव में प्रेम करता है? तीन बार यीशु ने पतरस से एक ही सवाल पूछा और तीनों बार उसने पतरस को करने के लिए एक ही काम दिया, अर्थात " मेरी भेड़ों का चरा और उनकी रखवाली कर।" यीशु पतरस की प्रमुख जरूरत को जानते थे। पतरस ने यीशु की मृत्यु से पूर्व तीन बार उसका इनकार किया था। पतरस को क्षमा और यीशु के साथ उसके रिश्ते में बहाली की आवश्यकता थी। यीशु ने व्यक्ति जरूरत में पतरस की मदद करने के लिए पहल की। यीशु ने पतरस को क्षमा किया तथा उसके साथ रिश्ता बहाल करके उसे अपना चेला और प्रेरित बना लिया। व्यक्तिगत तौर पर सहायता करने का एक और पहलू व्यक्ति के निजी मामलों में सहायता करना है।

3. व्यक्ति तौर पर सहायता करने का व्यवहारिक पहलू।

(1) निजी सहायता के दौरान दावा करना, समझाना और शिक्षा देना।

पढ़ें कुलुस्सियों 1:28-29।
खोजें और चर्चा करें। पौलुस की व्यक्तिगत सहायता में कौन कौन सी चीजें शामिल थीं?
ध्यान दें। पौलुस कहता है,"जिसको प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं, और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिए मैं उसकी उस शक्ति के अनुसार जो मुझ में सामर्थ्य के साथ प्रभाव डालती है, तन मन लगाकर परिश्रम भी करता हूँ।" पौलुस हर एक व्यक्ति के साथ ऐसा ही करना चाहता था। पौलुस की व्यक्तिगत सहायता में निम्नलिखित बातें शामिल थीं।

पौलुस ने हर एक जन को यीशु मसीह का सुसमाचार **प्रचार किया।** उसने खुलेआम यह प्रचार (Greek: kataggelomai) किया कि यीशु मसीह ही एकमात्र उद्धारकर्ता और प्रभु है। जब कोई अनुभवी या पुराना मसीही नये विश्वासी को आत्मिक रूप से बढ़ने में सहायता कर रहा हो तो, वह उसे केवल और केवल यीशु मसीह को ही उद्धार और परिपक्वता के स्रोत, उद्धार और परिपक्वता का मध्यस्थ और उद्धार और परिपक्वता के लक्ष्य के रूप में प्रचार करना चाहिए(रोमियों 11:36)। निश्चय तौर पर, दोनो विश्वासी किसी भी ऐसे विषय पर चर्चा कर सकते हैं जो नये विश्वासी के लिए महत्वपूर्ण हो,उदाहरण के लिए मानवीय विचारों पर शास्त्रियों का प्रभाव। लेकिन यीशु से सम्बन्धित सुसमाचार से लोगों को उद्धार मिलता और मसीही की समानता प्राप्त होती है दर्शन से नहीं(1कुरिन्थियों 20:25)।

पौलुस ने हर एक जन को **समझाया।** ग्रीक भाषा में "समझाने" का अर्थ उसे शिक्षा, निन्दा करने ,चेतावनी, अनुरोध करने (उकसाने) और प्रोत्साहित करने के द्वारा किसी मनुष्य के मन में मूल तस्वीर को छाप देना है।

- कुरिन्थियों 5:20 में वह लोगों से निवेदन करता है कि वे परमेश्वर से मेल कर लें।
- प्रेरितों 20:30 में वह कहता है कि उसने इफिसुस के प्राचीनों को रात और दिन आंसू बहा बहा कर चितौनी देना न छोड़ा।
- 1 थिस्लुनिकियों 2:7, 11-12 में, पौलुस की व्यक्तिगत सहायता को सुन्दर ढंग से सारांशित किया गया है "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन पोषण करती है वैसे ही हम ने भी तुम्हारे बीच में रह कर कोमलता दिखाई है। जैसे तुम जानते हो, कि जैसा पिता अपने बालकों के साथ बर्ताव करता है, वैसे ही हम तुम में से हर एक को भी उपदेश करते, और शान्ति, और समझाते थे। कि तुम्हारा चाल चलन परमेश्वर के योग्य हो, जो तुम्हें अपने राज्य और महिमा में बुलाता है।

पौलुस ने हर एक जन को **शिक्षा दी।** ग्रीक भाषा में "शिक्षा देने" का अर्थ बाइबल के सच्चाईयों या मूल्यों को किसी जन को क्रमशः व व्यवहारिक रूप में बताना।
निम्नलिखित बातों के बीच के कोई खास फरक नहीं है:

- मसीहियों को क्या विश्वास करना चाहिये से सम्बन्धिक सिद्धान्तों और शिक्षाओं में।
- मसीहियों को कैसे व्यवहार करना चाहिए के सम्बन्ध में उसकी सलाह और आचार विचार
- पॉलुस लोगों को समझाते हुए शिक्षा देता था और उसका समझाना उसके सिद्धान्तों अर्थात मूल्यों पर आधारित होता था।

इसलिए पौलुस ने मसीह का यह होने का दावा किया:

- पापों से छुड़ाने वाला
- परमेश्वर जिसकी आज्ञा मानी गयी
- अनुसरण किया गया आदर्श।

हालांकि हकीकत तो यह है कि जो लोग यीशु मसीह को अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार करते हैं उन्हीं के लिए मसीह एक उदाहरण हो सकता है। जब गैर मसीही लोग यीशु मसीह की प्रसशां करते, लेकिन उसे अपना उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में स्वीकार नहीं करते, उन्हें उनके पापों की बन्धुवाई से आजादी प्राप्त नहीं होती और उन्हें पवित्र आत्मा भी प्राप्त नहीं होती जो उन्हें यीशु मसीह के समान बनने में मदद करता है।

(2) शिक्षा देने और समझाने के बीच सम्बन्ध

पौलुस समझाते हुए हमेशा अपनी शिक्षाओं को मसीह की व्यक्तित्व व कार्यो से जरूर जोड़ता है।
खोजें व चर्चा करें। इस बाइबल खण्ड में पौलुस लोगों को क्या समझाता और क्या शिक्षा प्रदान करता है?

- ***पढ़ें*** रोमियों 15:2-3। पौलुस सिखाता है कि,"मसीह ने कभी अपने आप को प्रसन्न करने का प्रयास नहीं किया।"
  इसलिए वह समझाता है,"हम में से हर एक को अपने पड़ोसी को प्रसन्न रखना चाहिए।"
- ***पढ़ें*** इफिसियों 5:2. वह शिक्षा देता है,"परमेश्वर ने हम से प्रेम किया और हमारे खातिर अपनी कुर्बानी दे दी"।
  इसलिए वह समझाता है कि, "प्रेम से भरा हुआ जीवन जियो (प्रेम में चलो)।"

- ***पढ़ें*** कुलुस्सियों 3:13। पौलुस शिक्षा देता है, "परमेश्वर ने आपको क्षमा कर दिया है।"

इसलिए वह उन्हें समझाता है कि,"एक दूसरे को क्षमा करो।"

पौलुस ने "सारी बुद्धि" के साथ लोगों में प्रचार किया, उन्हें शिक्षा प्रदान की और उन्हें समझाया। और "बुद्धि" का अर्थ है कि अपने सर्वोच्च लक्ष्य तक पहुंचने के लिए सबसे बेहतर उपाय या तरीके का इस्तेमाल करना। इसका अर्थ सही जानकारी का सही समय पर सही तरीके से सही व्यक्ति पर सही परिस्थितियों में प्रयोग करना है।

(3) एक दूसरे की ज़िम्मेदारी।

खोजें व चर्चा करें। वे कौन सी व्यक्गित सहायता हैं जिन्हें हर मसीही जन कर सकता है और उसे 6+देना चाहिए?

पढ़ें गलातियों 6:2; 1 थिस्लुनिकियों 5:11; इब्रानियों 10:25।

ध्यान दें। बाइबल में हम बहुत सी जगहों पर मसीहियों की, एक दूसरे के प्रति "जिम्मेदारियों के बारे में" पढ़ते हैं। उदाहरण के लिए,

- एक दूसरे के बोझ को उठाना
- एक दूसरे को प्रोत्साहित करना
- एक दूसरे से प्रेम करने तथा भले काम करने के लिए अनुरोध करना।

परिपक्व मसीहियों को नये मसीहियों की व्यक्तिगत तौर पर सहायता करने के साथ साथ एक दूसरे के प्रति ज़िम्मेदारियों को भी निभाना चाहिए।

4. व्यक्तिगत सहायता का उद्देश्य।

खोजें व चर्चा करें। सारी व्यक्तिगत या निजी सहायता का क्या उद्देश्य है?

पढ़ें कुलुस्सियों 1:28-29; 1 कुरिन्थियों 1:8-9; 3:5-7; फिलिप्पियों 1:6।

ध्यान दें। व्यक्तिगत सहायता का उद्देश्य नये मसीहियों को आत्मिक परिपक्वता में बढ़ौत्तरी करने तथा मसीह की कलीसिया में कार्य करने में सहायता करना है।

यह "सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाना है कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध (ग्रीक: टेलेइयोस)करके उपस्थित करें। " टेलेइयोस" शब्द का अर्थ "मंजिल" हो सकता जिसे हम समय या "सिद्धता" की श्रेणी से माप सकते हैं।

(1) अगर हम समय के सन्दर्भ में बात करें तो "टेलेइयोस" का अर्थ "अन्त तक" हो सकता है।

1 कुरिन्थियों 1:8 में, पौलुस कहता है,"वह तुम्हें अन्त तक दृढ़ करेगा।" परमेश्वर का कार्य मसीह के जीवन में अन्त तक बना रहेगा, अर्थात, मसीह के द्वितीय आगमन तक! परमेश्वर विश्वासयोग्य है और वह विश्वासयोग्यताओं के साथ उन बातों को पूरा करेगा जिनकी उसने प्रतिज्ञा की है।

(2) श्रेणी के सन्दर्भ में बात करें तो "टेलेइयोस" शब्दा का अर्थ "निर्दोष, सम्पूर्ण, परिपक्व और सिद्ध" होता है।"

एक मसीही जन के जीवन में परमेश्वर के काम उसे परिपक्व, सम्पूर्ण और निर्दोष बनाते हैं। व्यक्तिगत सहायता करने में बहुत समय,शक्ति और संघर्ष लगता है। फिर भी, परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा की है कि वह इसे सफल बनाएंगे। यह मसीहियों के लिए एक अद्भुत आश्वासन है। हालांकि कभी कभी ऐसा प्रतीत होता

है कि एक मसीही कभी परिपक्व या निर्दोष नहीं हो पाएगा, लेकिन परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि मसीह के द्वितिय आगमन पर, हर एक मसीही जन पूरी तरह से परिपक्व और पूरी तरह से निर्दोष हो जाएगा!

मसीही कार्यकर्ताओं को भी लक्ष्य वही है जो परमेश्वर का है। 1 कुरिन्थियों 3:6 में पौलुस कहता है, "मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।" परमेश्वर परिपक्व मसीहियों की सहायता से नये विश्वासियों को बढ़ाने में मदद करते हैं, लेकिन परमेश्वर स्वयं बढ़ाने वाले या बढ़ौत्तरी को सीमित करने वाले हैं। 1 कुरिन्थियों 3 में देखते हैं तो पाते हैं कि, पॉलुस ने कुरिन्थियों में प्रचार किया,अपुल्लोस ने उन्हें शिक्षा प्रदान की। लेकिन परमेश्वर ने ही उनकी सेवाकाई को सार्थक किया:परमेश्वर ने ही उन्हें नये जन्म की आशीष दी और उन्हें परिपक्व और सक्रिय मसीही बनाया। और परमेश्वर ने जिन भले कामों को उन में प्रारम्भ किया है वह उन्हें अपने दूसरे आगमन तक लगातार करता रहेगा(फिलिप्पियों 1:6)। तब वे पूरी तरह से सिद्ध हो जाएगें।

ख. व्यक्तिगत सहायता के तत्व

परिचय। जब आप किसी मसीही जन की व्यक्ति तौर पर सहायता करना चाहते हैं, तो आप निम्नलिखित पांच व्यवहारिक कदमों का अनुसरण कर सकते हैं।

कदम 1. नये मसीही विश्वासियों के लिए प्रार्थना करें।

खोजें व चर्चा करें। जब आप किसी मसीही जन की व्यक्तिगत तौर पर कुछ मदद करते हैं, तो आप उसकी उपस्थिति में उसके लिए क्या प्रार्थना कर सकते हैं?

- ***पढ़ें*** यूहन्ना 6:44। परमेश्वर का उसे मसीह के नज़दीक लाने तथा उसका उद्धार करने के लिए धन्यवाद करें।
- ***पढ़ें*** कुलुस्सियों 1:2-14। एक मसीही के रूप में उसमें होने वाली प्रगति के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें। उसके विश्वास,प्रेम और आशा के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दें। उन मसीहीयों के लिए भी परमेश्वर का धन्यवाद दें जिसने उन्हें सुसमाचार सुनाया और जो उसकी बढ़ने में सहायता कर रहे हैं। आप कुलुस्सियों 1:9-12 में दी गयी कुलुस्सियों की कलीसिया के लिए पौलुस की प्रार्थना को उस जन की बढ़ौत्तरी,उसके जीवन, कलीसिया के साथ उसके सम्बन्ध और कलीसिया में उसकी सेवा के लिए उसका धन्यवाद दे सकते हैं। इस प्रार्थना में,पौलुस उनके ज्ञान, व्यवहार, बढ़ौत्तरी और सेवा के लिए प्रार्थना करता है।
- ***पढ़ें*** लूका 22:31-32। यीशु के समान, आप भी उसकी व्यक्तिगत ज़रूरतों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं।
- ***पढ़ें*** मत्ती 6:9-10। प्रार्थना करें कि वह बाइबल से परमेश्वर की इच्छा को जान सके, प्रार्थना करें कि व पवित्र आत्मा की सहायता से मसीह को उसके जीवन को नियन्त्रित करने की अनुमति प्रदान करे, और मसीह को उसके जीवन में महिमा मिलने पाए। अपने आप से पूछें, "कि मैं उसकों प्रोत्साहित करने के लिए कैसी प्रार्थना कर सकता हूँ?

कदम 2. अपनी प्रगति को एक दूसरे के साथ न बांटें।

खोजें और चर्चा करें। जब आप नये मसीहियों की मदद करते हैं, तो आप उनके साथ किन किन बातों और चीज़ों को बांट सकते हैं?

- ***ध्यान दें।*** अपने जीवन की प्रगति और संघर्षों को एक दूसरे के साथ साझा करें। एक दूसरे को उत्साहित करें। पुराने मसीही भी अपनी बढ़ौत्तरी व प्रगति को मसीहियों के साथ साझा कर सकते हैं,ताकि नये मसीही लोग उनके आदर्शों का अनुसरण कर सकें।
- ***पढ़ें*** 1 तीमुथीयुस 4:15। एक दूसरे को उन कामों के बारे में बताएं जिन्हें आप बढ़ोत्तरी या प्रगति करने के लिए प्रयोग कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, आप उनको बता सकते हैं कि बीते सप्ताह में आपने बाइबल के अध्ययन और परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने पर क्या सीखा। आप एक दूसरे को पिछले सप्ताह सीखे हुए बाइबल पदों को सुना सकते हैं। आप आपस में साझा कर सकते हैं कि आपके परिवार, विवाह और कार्यों में क्या चल रहा है। कलीसिया और परमेश्वर के राज्य में अपनी सेवा के बार में चर्चा कर सकते हैं।
- ***पढ़ें*** रोमियों 1:12। यह हमें सिखाता है कि, “हमें आपस में एक दूसरे के विश्वास से उत्साहित होना चाहिए।” एक दूसरे को अपने विश्वास की बातें बताने के द्वारा प्रोत्साहित करे। उदारहण के लिए, बाइबल की एक प्रतिज्ञा को साझा करें। किसी ऐसी बात या घटना की चर्चा करें जिसके द्वारा परमेश्वर ने आपके विश्वास को उभारा हो। आपस में बाटें कि भविष्य के लिए आपका दर्शन और योजनाएं क्या हैं और भविष्य की उन योजनाओं के लिए आप परमेश्वर पर किस प्रकार निर्भर हैं। अपने आप से प्रश्न करें कि “मैं किस तरह से उसकी प्रगति को उभार सकता व उसके विश्वास को प्रेरित कर सकता हूँ?”

कदम 3. परमेश्वर के वचन की शिक्षा दें।

खोजें व चर्चा करें। नये विश्वासियों की व्यक्तिगत तौर पर सहायता करते हुए, आप उन्हें किन बातों की शिक्षा प्रदान कर सकते हैं?

- ***ध्यान दें।*** उसकी बाइबल को जानने तथा बाइबल को समझने में सहायता करें। यीशु ने अपने महान आदेश में कहा,“चेले बनाओ.....और जो कुछ मैंने तुम्हें आज्ञा दी है उन्हें भी मानना सिखाओ।”
- ***पढ़ें*** फिलिप्पियों 4:9। एक विशेष विषय पर बाइबल अध्ययन करें। उसे शिक्षा देने व प्रशिक्षित करने के लिए शिष्यता पाठयक्रम के किसी भी हिस्से का इस्तेमाल करें(उदारहण के तौर पर, www.dota.net or www.deltacourse.org)। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप एक दूसरे की बाइबल के शिक्षाओं को व्यक्तिगत तौर पर समझने तथा उसे अपने जीवन में इस्तेमाल करने में सहायता करें।
- ***पढ़ें*** 2 कुरिन्थियों 13:10। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि आप नये विश्वासियों की कमज़ोरियों पर चर्चा करने की बजाय उसकी क्षमता या शक्तिशाली क्षेत्रों पर ज्यादा ध्यान दें। उदाहरण के तौर पर, यदि वह विश्वासी बाइबल अध्ययन करने में अच्छा और वचन याद करने में कमज़ोर है तो उसको बाइबल अध्ययन करने के लिए प्रशिक्षित करें और जो भी थोड़ी बहुत प्रगति वह वचनों को याद करने में करता है उसके लिए उसे सराहें। उसकी कमजोंरियों पर ध्यान केन्द्रित न करें, क्योंकि ऐसा करने से वह असुरक्षित महसूस करेगा और किसी भी प्रकार की गलती करने या असफलता से डरेगा। वरन आप एक प्रोत्साहक बनें। किसी नये विश्वासी को बाइबल अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित करते समय, अपने आप से प्रश्न करें,“कि वह किन क्षेत्रों में सक्षम है और मैं उसकी किस प्रकार उन्नति करने में सहायता कर सकता हूँ? मैं कैसे एक प्रोत्साहक बन सकता हूँ?

कदम 4. उसके व्यक्तिगत प्रश्नों पर चर्चा करें।

खोजें व चर्चा करें। यीशु मसीह ने अपने चेलों के प्रश्नों का उत्तर किस प्रकार से दिया?

- ***पढ़ें*** मत्ती 19:3-6। कई बार यीशु मसीह ने बाइबल में लिखे वचनों का हवाला देकर लोगों के प्रश्नों का उत्तर दिया। उसने लोगों को याद दिलाया कि परमेश्वर ने क्या कहा है और फिर उसने अपने उत्तर को उस बार पर आधारित कर दिया।
- ***पढ़ें*** लूका 10:25-26। अन्य समयों में यीशु मसीह ने उनके प्रश्नों का जवाब पलटकर प्रश्न करने के द्वारा दिया। उसने उनसे पूछा वे क्या जानते हैं बाइबल उनके प्रश्न के सन्दर्भ में उनसे क्या कहती है। यदि वे सही जवाब देते थे तो वह उनकी तारीफ करता और उनसे उन शिक्षाओं को अपने व्यक्तिगत जीवन में लागू करने के लिए कहा करता था।

यदि आप किसी नये मसीही की सहायता करते हैं, तो उसे प्रश्न पूछने का अवसर प्रदान करें। उसके प्रश्नों को ध्यान से सुने,उसके सम्बन्ध में उससे प्रश्नों को पूछें और उसके जवाब को सुनें।

और यदि आप उसको सलाह दे रहे हैं, तो निम्नलिखित कामों को कर सकते हैं:

- बेहतर रहेगा कि आप उसे अपने उत्तर और अपने विचार न बताएं, क्योंकि आपके विचार और आपके उत्तर आपकी प्रतीति या दृढ़ विश्वास और आपका अनुप्रयोग है, उसका नहीं।
- यह ज्यादा बेहतर रहेगा कि आप उसे बाइबल में से स्वयं अपना जवाब खोजने दें और उससे प्राप्त प्रकाशन को अपने जीवन में इस्तेमाल करने के लिए कहें। आप उसे किसी बाइबल खण्ड का सुझाव दे सकते हैं लेकिन उसे अपने प्रश्न का उत्तर स्वयं ढूंढ़ने दें। जब कोई मसीही बाइबल में से किसी सत्य को अपने आप खोजता है तो वह उसका मत या प्रतीति बन जाती है। वह उस शिक्षा को जल्दी नहीं भूलेगा। अपने आप से पूछें कि, "बाइबल का कौन सा अंश उसकी अपने प्रश्न (समस्या) का उत्तर खोजने में ज़्यादा मदद करेगा।"?

कदम 5. मिलकर प्रार्थना करें।

सिखाएं। अन्त में साथ मिलकर प्रार्थना करें। नये विश्वासी से पहले प्रार्थना करने तथा बाद में उस दिन परमेश्वर द्वारा सिखाई गयी बातों के विषय में प्रतिउत्तर देने के लिए कहें। वह उस व्यक्तिगत सहायता के समय उन बातों के विषय में प्रार्थना करेगा जो वास्तव में उसके लिए सार्थक थीं। उसकी प्रार्थना से आपको यह जानने में मदद मिल जाएगी कि परमेश्वर उसके जीवन में क्या कर रहे हैं, ताकि आप उसके लिए लगातार प्रार्थना व व्यक्तिगत तौर पर उसकी सहायता कर सकें।

पुराने मसीही होने के नाते आपको भी परमेश्वर से प्रार्थना करती व उस दिन परमेश्वर द्वारा सिखायी गयी बातों के प्रति प्रतिउत्तर देना चाहिए। बाद में जब नया मसीही बढ़ोत्तरी कर लेता है,तो आप दोनों मिलकर अपने परिवार वालों, मित्रों और सहकर्मियों तथा अन्य लोगों के लिए प्रार्थना कर सकते हैं, ताकि वे भी सच्चाई को जानकर उद्धार पा सकें।

ग. व्यक्ति सहायता के लिए व्यवहारिक सुझाव

1. आप किसे व्यक्तिगत सहायता दे सकते हैं?

खोजें व चर्चा करें। व्यक्तिगत सहायता किसे दी जानी चाहिए?

ध्यान दें। हर मसीही कार्यकर्ता के पास सीमित समय होता है, इसलिए कोई भी जन अपनी देखभाल में रहने वाले हर सदस्य को नियमित तौर पर निजी सहायता प्रदान नहीं कर सकता। इस कारण, पुराने या परिपक्व मसीहीयों ने विशेष तौर पर उन लोगों की मदद करनी चाहिए जिन्हें बहुत ज़्यादा ज़रूरत हो।

(1) जो लोग व्यक्तिगत समस्याओं और प्रश्नों से संघर्ष कर रहे हों।

पढ़ें *1* थिस्लुनिकियों 5:14। यह हमें सिखाता है कि,"जो ठीक चाल नहीं चलते, उन को समझाओ,कायरों को ढाढस दो, निर्बलों को संभालो और सब की ओर सहनशीलता दिखाओ।" आपको व्यक्तिगत तौर पर उन लोगों की मदद करनी चाहिए जो व्यक्तिगत समस्याओं से संघर्ष कर रहे हैं या जिसके पास व्यक्गित प्रश्न हो जिन पर वह आपके साथ चर्चा करना चाहते हैं।

(2) जो सभाओं से दूर रहते या पिछड़ जाते हैं।

पढ़ें इब्रानियों 10:25। यह सिखाता है कि,"हम एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें, जेसे कि कितनों की रीति है, पर एक दूसरे को समझाते रहें; और ज्यों ज्यों उन दिन को निकट आते देखें, त्यों त्यों और भी अधिक यह किया करें। एक पुराने और परिपक्व मसीही को उन लोगों की सहायता करनी चाहिए जो सभाओं से दूर रहते या पिछड़ जाते हैं या जिन्हें किसी विशेष बाइबल अध्ययन या अध्याय को समझने में सहायता की जरूरत होती है।

(3) जो लोगे विश्वासयोग्य, ग्रहण करने वाले और शिक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हैं।

पढ़ें 2 तीमुथीयुस 2:1-7। पौलुस तीमुथीयुस से अनुरोध करता है:

- कि वह उस अनुग्रह से बलवन्त हो जाए, जो मसीह यीशु में है।
- जो बातें उसने पौलुस से सीखी है वह उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरो को भी सिखाने के योग्य हों।
- कि वह यीशु के अच्छे योद्धा की नाई दु:ख उठाए।
- केवल अपने भरती करने वाले अधिकारी अर्थात मसीह को प्रसन्न करने का प्रयास करे।
- एक धावक के समान बाइबल के नियमों के अनुसार अपनी दौड़ को पूरा करे।
- और एक किसाने के समान परमेश्वर के राज्य में परिश्रम करे।

पुराने और परिपक्व मसीहियों ने उन लोगों को व्यक्तिगत सहायता प्रदान करनी चाहिए जो विश्वासयोग्य, शिक्षा को ग्रहण करने वाला और अधिक जानकारियों और प्रशिक्षण को प्राप्त करने के लिए जिज्ञासु हो।

2. आपको कब व्यक्तिगत सहायता देनी चाहिए?

सिखाएं। व्यक्तिगत मदद कब देनी चाहिए? यह आपकी परिपक्वता, क्षमता,उपलब्धता और दूसरो को प्रशिक्षित करने की इच्छा और परमेश्वर द्वारा आपको प्रदान की गयी बुलाहट पर निर्भर करता है। लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप नये मसीहियों के जीवन से कितना जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, यदि उस व्यक्ति से मिलने वाले आप इकलौते मसीही हैं तो आपको उसके साथ मिलकर उपरोक्त 5 कदमों के पर काम करने के लिए प्रतिदिन 1½ से 2 घण्टे मिलना चाहिए।

लेकिन यदि नया मसीही जन पहले से ही कलीसिया की सभा, घरेलू सभा या शिष्यता समूह में जाता है तो जब कभी उसे या आपको लगे कि मिलना ज़रूरी है तो आप आपस में मिल सकते हैं।

3. आप किस प्रकार से दूसरों की व्यक्तिगत तौर पर मदद कर सकते हैं?

पढ़ें मत्ती 20:25-28; लूका 22:24-27; इब्रानियों 10:24-25।
खोजें व चर्चा करें। व्यक्ति सहायता किस तरह से दी जानी चाहिए?
ध्यान दें। यीशु ने हमें शिक्षा दी है कि पुराने और परिपक्व मसीह नये मसीहियों पर प्रभुता नहीं कर सकते हैं, क्योंकि ऐसा अन्यजातियों में होता है। वह नहीं चाहता कि कोई मसीही जन अन्य किसी नये मसीही पर प्रभुता करे। मसीही सेवक दूसरों को कुछ विशेष कामों को करने के लिए किसी पर ज़ोर ज़बरजस्ती नहीं कर सकते, लेकिन वह उसे सिखा सकते, चेतावनी दे सकते और प्रोत्साहित कर सकते हैं। "आईये हम विचार करें कि हम प्रेम(सम्बन्धों में) करने व भले काम करने (सेवाकाई)में एक दूसरे को कैसे प्रेरित कर सकते हैं।" व्यक्तिगत सहायता प्रोत्साहन तथा एक दूसरे की उन्नति को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. "व्यक्तिगत सहायता द्वारा नये मसीहियों को प्रशिक्षण देना " पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। पुराने और परिपक्व मसीहियों को नये विश्वासियों की सहायता करने के लिए प्रोत्साहित करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 18:18-21:38** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। श्रंखला छ: "मसीही विवाह" का पुनरावलोकन। (1) छोड़ना और बने रहना। उत्प.2:24. (2) प्रेम और अगुवाई करें। इफिसियों 5:23,25, (3) प्रेम और अधीनता। तीतुस 2:4-5, (4) झगड़ों को सुलझाना। मत्ती 5:23-24 (5) विश्वासयोग्य बने रहना। नीतिवचन 3:3-4।
5. बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 13 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 30

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]*

लूका 18:29-21:38

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 18:18-21:38) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 याद करना (5 मिनट) *[मसीही विवाह]*

(श्रंखला "छ" का पुनरावलोकन)

दो लोग साथ मिलकर श्रंखला छ: "मसीही विवाह" ***पुनरावलोकन*** करें।

(1) छोड़ना और मिलना। उत्पत्ति 2:24। इस कारण पुरूष अपने माता पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक तन बने रहेगें।
(2) प्रेम और अगुवाई, इफिसियों 5:23,25 क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही देह का उद्धारकता है। हे पतियों, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।
(3) प्रेम करें और अधीन हों। तीतुस 2:4-5। ताकि वे जवान स्त्रियों को चेतावनी देती रहें कि अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें; और संयमी, पतिव्रता, घर का कारबार करनेवाली, भली, और अपने-अपने पति के अधीन रहने वाली हों, ताकि परमेश्वर के वचन की निन्दा होने पाए।
(4) झगड़े सुलझाएं। मत्ती 5:23-24। इसलिए यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे कि तेरे भाई के मन में तेरे लिए कुछ विरोध है, तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।
(5) विश्वासयोग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4। कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हारा बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

4 बाइबल अध्ययन (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]*

यूहन्ना 13:1-38

परिचय। यहून्ना 13:1-38 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के 5 कदमों को इस्तेमाल करें। यूहन्ना 12 से 18 मे यीशु मसीह के क्रूसीकरण से पहले के अन्तिम सात सप्ताहों का वर्णन किया गया है (30 ईसा. पश्चात के लगभग 15 अप्रेल से लेकर 30 मई तक का वर्णन)। यूहन्ना अध्याय 19 से 21 यीशु के धरती पर अन्तिम 40 दिनों का वर्णन करते हैं। यूहन्ना 13 अध्याय में फसह के पर्व के दौरान यीशु अपनी शिक्षाओं का प्रारम्भ करते हैं। यीशु एक दूसरे को प्रेम करने की शिक्षा प्रदान करते हैं और उस प्रेम को समझाने व दर्शाने के लिए वे अपने चेलों के पैरों को धोते हैं।

लूका की लेखन शैली से यह प्रगट नहीं होता है कि वह कालक्रमबद्ध तरीके के साथ लिखता है। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि यूहन्ना ने अपने सुसमाचार को कालक्रमबद्ध तरीके से लिखा है (यूहन्ना 13:2,21,30,31)। निम्नलिखित घटनाएं फसह के पर्व के दौरान घटीं:

- यह प्रश्न कि चेलों में से कौन सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था (लूका 22:24-27)।
- चेलों के पैर धोना (यूहन्ना 13:1-17; मत्ती 26:20; मरकुस 14:17-18; लूका 22:14-16)।
- यीशु द्वारा विश्वासघात करने वाले चेले के बारे में पहले से बताना और उस पर चेलों की तीव्र प्रतिक्रिया (यूहन्ना 13:18-30; मत्ती 26:21-25; मरकुस 14:18-21; लूका 22:21-23)।
- नयी आज्ञा (यूहन्ना 13:31-35)।
- इनकार किये जाने के बारे में पूर्वानुमान (यूहन्ना 13:36-38; मत्ती 26:34-35; मरकुस 14:29-31; लूका 22:33-34)।
- प्रभु भोज का जन्म (मत्ती 26:26-30; मरकुस 14:22-26; लूका 22:17-20)। यूहन्ना इस भाग को इसलिए नहीं लिखता है क्योंकि बाकि सारे सुसमाचारों में इस घटना का जिक्र कर दिया गया है।
- विदाई सम्बोधन और महायाजकीय प्रार्थना (यूहन्ना अध्याय 14-17)।

कदम 1. पढ़ें। परमेश्वर का वचन

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 13:1-38 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। अवलोकन

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?
लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।
साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

खोज 1. यीशु और यहूदा के बीच सम्बन्ध।

(1) यहूदा एक ढोंगी था।

यूहन्ना 6:66–71 में, यीशु मसीह के बहुत से चेलों ने उसे छोड़ दिया और फिर मुड़कर नहीं देखा। लेकिन यहूदा यीशु के साथ बना रहा और उसने यीशु का सच्चा चेला होने का ढोंग किया। उससे पहले यीशु पहले ही कह चुके थे कि, "क्या मैंने तुम बारहों को नहीं चुना है? लेकिन तब भी तुम में से एक शैतान हैं! "शैतान" का अर्थ है "निन्दक", "झूठा आरोप लगाने वाला"। यीशु ने कहा कि यह व्यकित एक सेवक था या शैतान का औज़ार। उसका शैतानी चरित्र इस बात से साफ जाहिर होता है कि उसने यीशु का सबसे वफादार चेला होने का दिखावा किया। यीशु मसीह की शिक्षाओं और उसके आत्मिक अर्थ से असहमत होकर बहुत से लोग यीशु को छोड़कर चले गये, लेकिन यह आदमी यीशु के साथ बना रहा मानों वह यीशु की हर बात से सहमत था। यहूदा एक कपटी व्यक्ति था (उसने खतरनाक मज़ाक किया)। यीशु को तो पहले से ही पता था कि यहूदा एक न एक दिन ऐसा ही करने वाला है। यह उन लोगों के लिए एक चेतावनी है जो कलीसिया की विशेष या अलग शिक्षाओं से नफरत करते हैं, लेकिन वे उसी कलीसिया में बने रहते और उसके उजड़ने तक उसे खींचते रहते हैं। यूहन्ना ने जब कई वर्षों के बाद अपने इस सुसमाचार को लिखा, उसने एक विस्तृत व्याख्या करते हुए लिखा कि वह जन यहूदा इस्करियोती था।

(2) यहूदा लालची और एक चोर था।

यूहन्ना 12:4–6 बताता है कि यहूदा एक लालची और एक चोर व्यक्ति था। जब मरियम ने यीशु का अभिषेक करने के लिए महंगा इत्र खरीदकर उस पर उण्डेला, तो यहूदा ने उसके इस काम की आलोचना करते हुए इसे धन की बर्बादी करार दिया। उसने कहा, "यह इत्र तीन सौ दीनार में बेचकर कंगालों को क्यों नहीं दिया गया? यह इत्र एक व्यक्ति की पूरे एक वर्ष की कमाई थी।" यूहन्ना और भी आगे टिप्पणी करते हुए कहा कि "यहूदा ने यह बात इसलिये नहीं कहीं कि उसे कंगालों की चिन्ता थी परन्तु इसलिये कि वह चोर था और उसके पास पैसों की थैली रहती थी और उसमें जो कुछ होता था वह उसे निकाल लेता था। मरियम की उदारता और यहूदा का स्वार्थ दोनों हैरान कर देने वाले हैं।

(3) यहूदा एक विश्वासघाती था।

यूहन्ना 13:2 में वर्णन किया गया है कि किस तरह से यहूदा यीशु को त्यागने वाला था। वहां लिखा है कि, शैतान यहूदा इस्करियोती के मन में यह डाल चुका था, कि उसे पकड़वाए"। यीशु के बारह चेलों में से, केवल एक आदमी इतना चरित्रहीन था कि उसने पूरी तरह यीशु को पकड़वाने की अपने मन में ठान ली। महायाजक और फरीसियों ने पहले ही यह आदेश दे दिया था कि अगर किसी को भी यीशु के बारे में पता चल जाए, तो वह आकर उन्हें खबर दे ताकि वे जाकर उसे बन्दी बना सकें (यूहन्ना 11:57)। यहूदा ने पहले से इस बात को तय कर लिया था कि वह धोखे से यीशु को शत्रुओं के हाथों में सौंप देगा। उसने यह सौदा केवल 30 चांदी के सिक्कों में तय कर दिया था। चेलों में से किसी अन्य को इस बारे में कोई खबर नहीं थी और सम्भवतः किसी ने इस बात की कल्पना भी नहीं की होगी। शैतान ही ने इस दुष्ट योजना को यहूदा के मन में डाला था (इफिसियों 6:16)। कुछ समय तक यीशु मसीह का एक चेले के रूप में अनुसरण करने के बाद, यहूदा को ऐसा लगने लगा कि यीशु का चेला बने रहने से ही मेरा काम नहीं चलने वाला है। वह एक लालची व्यक्ति था उसने यीशु से बढ़कर पैसों को प्रेम किया। वह बहुत ज्यादा जोड़ भाग करने वाला जन था, वह नहीं चाहता था कि उसे किसी भी वजह से अराधनालय से निकाल दिया जाए (यूहन्ना 9:22), वरन वह यीशु का पता बता कर यहूदी अधिकारियों के मन में अपने लिए एक सुरक्षित स्थान बनाना चाहता था।

(4) यहूदा चुना हुआ तो था, लेकिन धन्य नहीं।

यूहन्ना 13:17-18 में, यीशु ने अपने चेलों से कहा, कि यदि वे यीशु की कही बातों पर चलें तो वे धन्य होगें। उसके बाद उसने कहा, “मैं तुम सब के विषय में नहीं कहता: जिन्हें मैं ने चुन लिया है, उन्हें मैं जानता हूँ परन्तु यह इसलिये है कि पवित्र शास्त्र का यह वचन पूरा हो कि, ‘जो मेरी रोटी खाता है, उस ने मुझ पर लात उठाई’।”

जब यीशु ने लूका 6:12-13 में प्रार्थना के साथ बारह चेलों का चुनाव किया, उस समय उसने यहूदा को चुनकर कोई गलती नहीं की थी। यीशु मसीह साफ साफ कहते हैं, कि “मैं जानता हूँ कि मैं ने किस प्रकार के जन को चुना है”। वह उन लोगों को जानता था कि उसने किन लोगों को अपने प्रेरित होने को चुना है, जिन्हें वह संसार भर में अपनी गवाही देने के लिए भेजने पर था। लेकिन वह यहूदा के हृदय और मन को भी जानता था। उसने यहूदा को एक विशेष मकसद से चुना था। उसने उसे उद्धार की योजना में एक भाग होने के लिए चुना था। वह पहले से ही जानता था कि यहूदा एक ढोंगी है और उस पर किसी भी तरह से भरोसा नहीं किया जा सकता। लेकिन उसने यहूदा को इसलिए चुना कि उसमें होकर पुराने नियम की एक भविष्यवाणी पूरी हो सकें।

यह भविष्यद्वाणी भजन संहिता 41:9 में लिखी हुई है। इसमें दाऊद अपने सलाहकार अहितोपेल, या उसके जैसे किसी अन्य व्यक्ति के बारे में लिखता है, जिसने उसी के विरूद्ध एक षड्यन्त्र रचा। 2 शमूएल 15-17 में हम पढ़ते हैं कि किस प्रकार अहितोपेल और अबशालोम ने मिलकर दाऊद को मारने का षड्यन्त्र तैयार किया। भजन 55:12-14 में, दाऊद ने कहा, कि उसकी नामधराई करने वाला और उसके विरूद्ध खड़ा होने वाला कोई उसका दुश्मन नहीं था, लेकिन खुद उसके सलाहकार और मित्र ने उसे से विश्वासघात किया है। वह “मेरा मित्र और मेरी जान पहिचान का था, हम दोनों आपस में कैसी मीठी मीठी बातें करते थे, हम भीड़ के साथ परमेश्वर के भवन को जाते थे।” दाऊद हमेशा इस व्यक्ति की भलाई चाहता था। इस आदमी ने दाऊद की रोटी खाई थी, फिर भी उसने अचानक से दाऊद को लात मार दी, जिस प्रकार से एक घोड़ा अपने मालिक को बिना बताएं लात मार देता है उसी प्रकार उसने उसे बुरी तरह लात मार दी। इसलिए दाऊद परमेश्वर से प्रार्थना करता है कि वह अहितोपेल के जैसे लोगों की सलाह को दुविधा में डालकर उनके मुंह की बातों को विफल कर दे। भजन 55:9-14 बताता है कि, अहितोपेल के जैसी सलाह कड़ा विरोध और आकस्मिक परिवर्तन की मांग करता है। यह भविष्यवाणी निश्चय तौर पर यहूदा के लिए उपयुक्त साबित होती है। उसने यीशु मसीह को अन्त में चूमने तक दोस्ती का मुखौटा चढ़ा कर रखा। चेलों में से किसी का शक यहूदा पर नहीं गया। यहूदा ढोंगी, अवसर वादी था जिसे दण्ड मिलना ही चाहिए था। यीशु मसीह ने उसे विश्वासघात की भविष्यद्वाणी को पूरा करने के लिए ही चुना था।

(5) यहूदा अपने कामों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार था।

यूहन्ना 13:19 में यीशु ने कहा, “मैं उसके होने से पहले तुम्हें जताए देता हूं कि जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूँ।” यीशु ने यह बात दो कारणों से कही: वह यहूदा को चेतावनी देना चाहता और दूसरे चेलों के विश्वास को और मज़बूती प्रदान करना चाहता था। यीशु ने यहूदा को पहले भी चिताया था और वह उसे एक बार फिर से चिताते हुए कहता है कि अगर वह अपने गुप्त व बुरी योजनाओं को पूरा करने में लगा रहेगा तो वह कभी धन्य नहीं होगा। यहूदा को यीशु की बातों पर विचार करना चाहिए था। यीशु ने यह बात उसके कामों की जिम्मेदारी पूरी तरह से उस पर डालने के लिए कही थी। लेकिन यीशु ने यह बात दूसरे चेलों के विश्वास का मज़बूत करने के लिए भी कहा। वह जानता था कि यहूदा के विश्वासघात के बारें में सुनकर सारे चेले विचलित हो जाएंगें जिससे उनका विश्वास कमजोर होगा। हो सकता

है कि वे यीशु पर और यीशु में पूरी होने वाली परमेश्वर पिता की योजना पर सन्देह करने लगें। लेकिन जब उनको पता चलेगा कि यहूदा एक विश्वासघाती था तो वे यह भी जान जाएगें कि इन सारी बातों का यीशु मसीह को पहले से ही पता था। वे यह भी जान जाएगें कि वहां पर कोई कुण्ठित नहीं हो रहा था वरन परमेश्वर की योजना पूरी हो रही थी। यीशु ने उनसे यह बात विश्वासघात, दोषारोपण और क्रूस दिये जाने से पहले कही थी, ताकि उसके चेले लगातार यह विश्वास करें कि उसने जो कुछ अपने बारे में कहा था वह सब सच था। यीशु मसीह महान मैं जो हूँ सो हूँ था!

(6) यहूदा दुष्टात्मा से ग्रसित हो गया।

यूहन्ना 13:27 में लिखा है, "शैतान यहूदा में प्रवेश कर गया"। शैतान ने इस समय तक यहूदा के हृदय और मन में पैसों के लिए यीशु को पकड़वाने का विचार डाल दिया था। यहूदा ने शैतान के विचारों का सामना नहीं किया, वरन वह उसके सुझावों पर अमल करने लगा। उसके बाद शैतान ने उसके हृदय में घर कर लिया। यह काम उन अविश्वासियों के साथ होता है जो शैतान का सामना नहीं करते। शैतान ने विश्वासघात करने वाले के प्राणों पर पूरी तरह से कब्ज़ा कर लिया। अब यहूदा एक कठोर दिल मनुष्य बन गया था। वह यीशु की चेतावनी सुनकर भी अपनी जगह से टस से मस नहीं हुआ। अब किसी भी प्रकार की कोई चेतावनी या नसीहत उसके लिए कोई मायने नहीं रखती थी। फसह के भोज के अन्त में, यीशु ने यहूदा से कहा, "जो करना है, जल्दी कर"। हालांकि यूहन्ना और पतरस इस खबर को सुनकर हैरान थे कि यहूदा एक विश्वासघाती है, लेकिन अब भी उन्हें इस बात का बिल्कुल अंदाज़ा नहीं था कि यहूदा वास्तव में क्या करने जा रहा है। यहूदा इतना शातिर ढोंगी था, कि किसी भी चेले को कभी उस पर शक ही नहीं हुआ। लेकिन यहूदा जानता था, कि उसकी चोरी पकड़ी गयी है और वह तुरन्त अपने काम को अन्ज़ाम देने के लिए चला गया (यूहन्ना 13:27-30)।

खोज 2. यीशु और पतरस के बीच सम्बन्ध।

यूहन्ना 13:33 में, यीशु ने कहा, "मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूँ... जहां मैं जाता हूँ, वहां तुम नहीं आ सकते हो"। पतरस इन बातों को सुनकर बड़ा परेशान हो गया और उसने यीशु से पूछा, "हे प्रभु, तू कहां जाता है?" यीशु ने पतरस को विस्तार पूर्वक बताया कि जहां वह जा रहा है पतरस वहां अभी उसके साथ नहीं जा सकता लेकिन बाद में वह भी वहां आ जाएगा। यीशु स्वर्ग में जाने की बात कर रहा था लेकिन, पतरस उसकी बात नहीं समझ पाया। परमेश्वर की योजना के हिसाब से अभी पतरस की मृत्यु का समय नहीं आया था। पतरस ने कहा, कि चाहे सारे चेले यीशु को छोड़कर चले जाएं लेकिन वह यीशु को छोड़कर कभी नहीं जाएगा (मरकुस 14:29)। उसने कहा,"मैं कभी तेरा इनकार नहीं करूंगा" (मरकुस 14:31), "मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे सकता हूँ (यूहन्ना 13:37)। पतरस अपने आप को नहीं जानता था। वह अधीर था और तुरन्त यीशु के कष्टों को सहभागी होना चाहता था! यीशु ने पतरस से कहा, कि घमण्ड करने के बाद भी परतस वही कामों को करेगा जिन कामों को न करने पर वह फूल रहा है। पतरस को अपने ऊपर बहुत विश्वास था इसलिए उसने यीशु की बातों पर कोई खास ध्यान नहीं दिया। पतरस सोचता था कि वह यीशु के लिए अपने प्राण दे देगा, लेकिन हकीकत यह थी कि यीशु पतरस के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाला था!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 13:1-38 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

13:1-2

प्रश्न 1. यहूदी फसह का भोज कब खाते हैं?

ध्यान दें। कई मसीही प्रश्न करते हैं: “कि फसह का भोज वीरवार की शाम को (15वीं निसान) को खाया यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने से पहले खाया गया था (15वी निसान शुक्रवार को) जैसा कि सिनोप्टिक सुसमाचार बताते हैं (मत्ती 26:17; मरकुस 14:12; लूका 22:11,24,15) या फसह का अन्तिम भोज यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाये जाने के *बाद* शुक्रवार की शाम (16वीं निसान) को खाया गया था जैसा कि यूहन्ना वर्णन करता है (यूहन्ना 18:28)? सिनोप्टिक सुसमाचार और यूहन्ना रचित सुसमाचार के बीच मतभेद नज़र आता है। और दोनों ही दृष्टिकोण एक समय पर ठीक नहीं हो सकते।

लेकिन अन्य मसीही लोग कहते हैं, यूहन्ना रचित सुसमाचार तथा अन्य सुसमाचारों में से कोई भी गलत नहीं था क्योंकि चारों सुसमाचार बताते हैं कि फसह का भोजन सभी यहूदियों द्वारा अपने नियमित समय और दिन में खाया गया था अर्थात 15वीं निसान की शाम को, जिसे खाने वालों में यीशु और उसके चेले भी शामिल थे, और “फसह के भोज” का विस्तृत वर्णन हम यूहन्ना 18:28 में पाते हैं।

पुराने नियम में दी गयी व्यवस्था में फसह और अखमीरी रोटी से सम्बन्धित शिक्षा प्रदान की गयी है (लैव्यव्यवस्था 23:5-6)।

- वीरवार के पूरे दिन (14वीं निसान) में फसह के भोजन से सम्बन्धित बहुत सी *तैयारियां* की जाती थी।
- अखमीरी रोटी का पर्व वास्तव में 15वीं से 21वीं निसान तक मनाया जाता था।
- एक नया दिन सूर्य अस्त होने से प्रारम्भ हो जाता है। सही मायनों में फसह का *भोज* हमेशा अखमीरी रोटी के पर्व के पहले दिन खाया जाता था, जो, सदैव 15वीं निसान को वीरवार की शाम हुआ करता था (निर्गमन 12:8; एज्रा 6:21-22)।

जो लोग हनन्याह, कैफा और महासभा के सामने वीरवार और शुक्रवार के बीच की रात पर यीशु पर दोष लगा रहे थे, वे शुक्रवार को तड़के ही यीशु को पिलातुस के पास ले आये। वे वीरवार और शुक्रवार के बीच की रात में यीशु पर दोष लगाने में इतने व्यस्त थे कि उन्हें वीरवार की शाम को फसह का भोज खाने का

समय ही नहीं मिला। उन्होंने पिलातुस के आंगन में इसलिए प्रवेश किया क्योंकि वे नियत विधान के तहत अशुद्ध नहीं ठहरना चाहते थे, क्योंकि ऐसा करने से वे शुक्रवार की शाम को फसह खा सकते थे (यूहन्ना 18:8)। हालांकि बाकि दूसरे यहूदियों, यीशु और चेलों ने नियत समय पर फसह को भोज 15वीं निसान अर्थात वीरवार की खाम को खा लिया था, लेकिन इन यहूदियों ने तब तक इन्तजार किया जब तक कि यहूदा ने यीशु को पकड़वा नही दिया और वे पूरी रात हनन्याह, कैफा और महासभा के सामने यीशु पर दोष लगाते रहे।

और शुक्रवार के दिन वे यीशु पर दोष लगाने के लिए पिलातुस, हेरोदेस के और अन्ततः पिलातुस के सामने ले गये। इन यहूदियों ने रोमियों के न्यायालय में जाने से इनकार कर दिया क्योंकि वे, शुक्रवार की शाम को फसह का भोज खाने से पहले, (जो एक दिन बाद था) "अपने आपको व्यवस्था के अनुसार शुद्ध" ठहराना चाहते थे! वे व्यवस्था के आधार पर अशुद्ध ठहरने को (लूका 11:39,44; प्रेरितों 10:28; 11:3) नैतिक अशुद्धता से बुरा माना करते थे (उदारहण के लिए, किसी निर्दोष को घात करना, निर्गमन 20:13)! उनका उद्देश्य केवल यीशु मसीह से पीछा छुड़ाना था (यूहन्ना 11:50,57)। यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़वाकर ही उन्होंने, अपना फसह खाया (फसह का मेम्ना)। उन यहूदियों को इस बात का बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि जो मेम्ना वह खा रहे हैं वह यीशु का ही प्रतीक है (1 कुरिन्थियों 5:7)!

13:4-17

प्रश्न 2. यीशु का अपने चेलों के पैर धोने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें।

(1) पैरों को धोना भविष्य में सेवा करने के लिए एक सबक बनने जा रहा था।

यीशु और उसके चेले बैतनिय्याह से होकर गुजरे थे और उनके पाँव मिटटी से गन्दे हो गये थे। ऐसी परिस्थितियों में, सामान्य तौर पर इस्राएल के घरों में सबसे तुच्छ समझा जाने वाला सेवक या दास सबसे गन्दे या घिन आने वाले कामों को करता था जिसमें खाने से पहले मेहमानों के गन्दे पैरों को धोना भी शामिल था। वर्षों पहले, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले एक तुच्छ दास के रूप में यीशु के सामने घुटने टेककर, उसके फीतों को खोला और उसके पैरों को धोया था! लेकिन अब उपरौठी कोठरी में कोई सेवक दूसरों के पांवों को धोने के लिए तैयार नहीं था जब चेले उस कमरे में घुसे होगें तो उन्होंने पानी का बर्तन और तौलिया जरूर देखा होगा, लेकिन कोई भी अपने आप को छोटा दास बनाने के लिये तैयार नहीं था! सभी चेलों को अपने ऊपर बहुत घमण्ड था। लूका 22 में, लूका बताता है कि किस प्रकार चेले आपस में बहस कर रहे कि उनमें सबसे बड़ा कौन है। और यह बहस शायद इसलिए भी चलती रही क्योंकि उन्हें भोजन की मेज पर क्रम में बैठना था। अतः यीशु और उसके सभी चेले टेक लगाकर मेज़ के चारों ओर बैठ गये और उनके पैर गन्दे था। और यद्यपि यीशु मसीह यह जानते थे कि वह परमेश्वर के इकलौते पुत्र है और वह सारे संसार के सृष्टिकर्ता हैं, फिर भी वह उठे, उन्होंने अंगोछे से अपनी कमर कसी, और चेलों के पांव धोने शुरू कर दिये।

(2) शरीर का धोना धर्मी ठहराये जाने का प्रतीक है।

शरीर को धोने का एक प्याले से पानी को किसी जन के ऊपर पानी डालने के द्वारा किया जाता था। पूरे शरीर का धोया जाना मसीह की निन्दा किये जाने के समय में मसीह द्वारा पूरे किये गये उद्धार के कामों को दर्शाता है, जिसकी वजह से सबको धार्मिकता (पापों से क्षमा प्राप्त हुई है)। मसीह की निन्दा में उसका देहधारण करना (अर्थात निष्पाप अवस्था में मनुष्य के समान मनुष्य बनना); उसकी नम्र सेवा (मरकुस

10:45); मनुष्य द्वारा उसको अस्विकृत किया जाना, उसके कष्ट और अन्त में क्रूस पर उसकी मृत्यु (फिलिप्पियों 2:8) शामिल हैं।

बाइबल में इस बात का जिक्र नहीं किया गया है कि उसने किस क्रम में चेलों के पैर धोये थे। उसमें केवल यह लिखा गया है कि जब वह पतरस के पास आया तब क्या हुआ। हो सकता है कि बाकि सारे चेलों को भी शर्मिन्दगी महसूस हुई हो कि यीशु उनके पांव धो रहा था, लेकिन पतरस, ने हमेशा की तरह अधीर होकर, हैरानी के साथ अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। यीशु ने केवल उनसे यह कहा कि वह जो काम अभी कर रहा है उसे वे बाद में समझेगें(यूहन्ना 13:7), अर्थात उसकी मृत्यु, उसके पुनरूत्थान और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद समझेगें। *और वास्तव में उसके द्वारा धोये जाने का अर्थ चेलों को बाद ही में समझ में आया।*

पहले तो पतरस ने अपने पांव धुलवाने से इनकार कर दिया। फिर यीशु ने उस से कहा, “अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कुछ भी साझा नहीं”(यूहन्ना 13:8)। यीशु का मतलब था, कि यदि वह पतरस को अपनी विनम्रता में होकर किये गये उद्धार के कामों द्वारा न धोये, जिसमें पांव धोना एक छोटा सा भाग था, तो पतरस उस उद्धार के परिणाम का भाग नहीं बन पाएगा। यीशु ने आगे कहा, जो व्यक्ति पहले से नहा चुका हो (ग्रीक: लोउओ) उसे सिर्फ अपने पैरों को (ग्रीक: निपटो) ही धोने की आवश्यकता है; क्योंकि उसका पूरा शरीर शुद्ध है”(यूहन्ना 13:10)। पूरे शरीर के धोये जाने का अर्थ उद्धार के निमित्त मसीह का सम्पूर्ण कार्य है, जिस नया जन्म या धर्मी ठहराया जाना भी कहा जाता है। मसीह का लहू एक विश्वासी के सारे पापों को धोता (1यूहन्ना 1:7; प्रेरितों 22:16) और उसे पूरी तरह से धर्मी ठहराता है (2 कुरिन्थियों 5:21; 1 पतरस 3:18)।

(3) पांव का धोना धर्मी ठहराये जाने को प्रगट करता है।

पूरा स्नान करना दास के रूप में यीशु मसीह द्वारा किये गये उद्धार के कामों को प्रतीक है, जिसे धर्मी ठहराया जाना भी कहा जाता है। पावों को धोया जाना किसी व्यक्ति के नया जन्म पाने या धर्मी ठहराये जाने के बाद उसके उद्धार के निमित्त किया जाने वाला नियमित काम है। जिसे पवित्रीकरण भी कहा जाता है। जैसे ही पतरस ने यीशु द्वारा उसके पैरों को धोये जाने का अर्थ बताया, पतरस तुरन्त उल्टी ही प्रतिक्रिया व्यक्त की और वह चाहता था कि यीशु उसे सिर से लेकर पैरों तक पूरा धो डाले। पतरस ने सोचा कि जिस्म का जितना ज्यादा हिस्सा धुलेगा, परमेश्वर से प्राप्त होने वाले आशीष उतनी ही बड़ी होगी।

हालांकि यीशु ने शारीरिक शुद्धिकरण की बात नहीं वरन *आत्मिक शुद्धिकरण* की बात की थी!

- यूहन्ना 3 में, यीशु ने *आत्मिक नये जन्म* के बारे में बताया
- यूहन्ना 4 में यीशु ने *आत्मिक जल* के बारे में बताया
- यूहन्ना 6 में *आत्मिक रोटी* के बारे में
- और अब यूहन्ना 13 में उसने *आत्मिक शुद्धिकरण* के बारे में बताया।

और यीशु लगातार बोले, “जो नहो चुका है उसे पाँव के सिवाय और कुछ धोने की आवश्यकता नहीं, परन्तु वह बिलकुल शुद्ध है; और तुम शुद्ध हो, परन्तु सब के सब नहीं।” इस्राएल में यदि किसी व्यक्ति ने भोज में जाने से पहले नहा लिया हो तो उसे भोज में पहुंचने पर दोबारा नहाने की जरूरत नहीं होती। वह केवल अपने पाँव धोकर भोजन कर सकता है।

यीशु आत्मिक स्नान के बारे में (नया जन्म या धर्मी ठहराये जाने के बारे में) तथा आत्मिक तौर पर पाँवों के धोये जाने के(पापों से शुद्धिकरण या पवित्रीकरण) बारे में बात कर रहा था। यहूदा को छोड़, बाकि सारे चेलों ने यीशु की बातों पर विश्वास किया और *वे सब पहले ही पूरी तरह से आत्मिक तौर पर शुद्ध हो चुके थे* अर्थात नया जन्म पा चुके थे(यूहन्ना 13:10; यूहन्ना 15:3)। ये यीशु द्वारा प्रदान किये गये उद्धार के *पहले से ही भागीदार बन चुके थे।* अब चेलों को केवल अपने “पाँवों को धुलवाने” की जरूरत थी। उनको नया जन्म प्राप्त करने तथा धर्मी ठहरने के बाद केवल बाद में किये गये पापों से क्षमा प्राप्त करने की जरूरत थी(1 यूहन्ना 1:9)। इस तरीके से वे और भी अधिक पवित्र बन जाते हैं।

(4) निष्कर्ष। उसका पाँव धोना तीन महत्वपूर्ण बातों को सिखाता है।

- पावों का धोया जाना यीशु मसीह की निन्दा और कष्टों को दर्शाता है, खास तौर पर उसकी ज़मीनी सेवाकाई के दौरान एक दास या नौकर के रूप में उसके कार्य और उसका क्रूस पर चढ़ाया जाना जिसने उसे अपराधी घोषित कर दिया। (यशायाह 53:12; लूका 22:37; फिलिप्पियों 2:5-8)।
- पाँवों को धोया जाना हमेशा के लिए किये गये प्रायश्चित का और सक्रिय पवित्रीकरण का प्रतीक है। यह कार्य दर्शाता है कि यीशु का जीवन व उसकी मृत्यु हमेशा के लिए अपने लागों के दोषों के लिए प्रायश्चित करता और पवित्र आत्मा की सहायता द्वारा पवित्रीकरण का काम लगातार करता है। (मरकुस 10:45; इब्रानियों 10:1.,14)।
- पावों का धोया जाना सेवाकाई के लिए एक सबक है। यह एक उदाहरण है जिसका सारे मसीहियों को अनुसरण करना चाहिए। चेले इस समय पर तीसरे मतलब को समझने लगे। लेकिन पहले दो मतलबों को वे केवल पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद ही समझ पाये। यीशु मसीह ने एक दूसरे के पैर धोने की किसी प्रथा, रीति या आज्ञा का आरम्भ नहीं किया था। उसने इस काम को सेवा करने का “नमूना” कहा, जिसे उसने अपने चेलों की आखों के सामने करके दिखाया था। परमेश्वर के राज्य में नम्र बनकर की गयी सेवाद्वारा ही किसी व्यक्ति की महानता को नापा जाता है-उसके पद, उसकी शक्ति या कीर्ति से नहीं, वरन उन कामों को करने की इच्छा से जो दूसरे करना नहीं चाहते या फिर कर नहीं सकते! विनम्रता के साथ सेवा महान आज्ञा “जिस तरह से मसीह ने हम से प्रेम किया है, उसी रीति से हम एक दूसरे को प्रेम करें” के लिए एक दृष्टान्त है। मैंने एक दास होने का संकल्प किया है। मैं गन्दे या तुच्छ कामों को करने में पहले व्यक्ति होना चाहता हूँ, जिन्हें कोई और करना पसन्द नहीं करता है। मैं यीशु के पदचिन्हों पर चलना चाहता हूँ।

13:34-35

प्रश्न 3. इस आज्ञा को “नयी” आज्ञा क्यों कहा गया?

ध्यान दें। परमेश्वर को अपने सारे मन और अपने सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना और अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम रखना, यह आज्ञा तो पहले से ही पुराने नियम में विद्यमान थी (व्यव 6:5; लैव्य 19:18)। लेकिन यह आज्ञा कहती है कि “जैसे मैंने तुम्हें प्रेम किया है, वैसे ही तुम भी एक दूसरे को प्रेम करो”। हालांकि इस आज्ञा की मूल विषय वस्तु नहीं बदली है, लेकिन प्रेम करने का एक आदर्श हमारे सामने रख दिया गया है। यह आज्ञा केवल इसलिए नयी है क्योंकि यीशु अपने चेलों से एक दूसरे को ठीक उसी तरह प्रेम करने की मांग कर रहा है *जैसे उसने उनसे प्रेम किया था*! जिस तरह उसने लगातार, आत्म-त्याग के साथ प्रेम करके नमूना दिखाया था ठीक वैसा ही स्वभाव और रिश्ता चेलों का एक दूसरे को प्रेम करते समय होना चाहिए।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 13:1-38 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 13:1-38 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

13:4-17। ऐसे काम करने के लिए समर्पण जो कोई और नहीं करना चाहता हो या कर न सकता हो।
13:4-17। वचनवद्ध हो कि जहां कहीं सेवा की जरूरत होगी वहां आप सबसे पहले उपलब्ध होगें।
13:34-35। परमेश्वर को प्रेम करने तथा मसीह के समान अपने पड़ोसी को प्रेम करने की आज्ञा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लें।

2. यूहन्ना 13:1-38 से व्यक्तिगत अनुप्रयोंगों के उदाहरण।

पतरस के समान, मैं कई बार बड़ी बड़ी योजनाएं बनाता और शेखी मारता हूँ, लेकिन वास्तविकता में मैं अपने आपको नहीं जानता! लेकिन मैं याद रखना चाहता हूँ कि जो *मैं* यीशु के लिए करूंगा वह महत्वपूर्ण नहीं है, वरन महत्वपूर्ण वह काम हैं जो *उसने* मेरे लिए किया है! वह मेरे लिए मरा! इस बात ने मुझे नम्र बनाना चाहिए और मुझे अहसास दिलाना चाहिए कि बिना यीशु के मैं कितना असहाय हूँ!

इस बात ने भी मुझ पर गहरी छाप छोड़ी है कि यहूदा द्वारा यीशु को पकड़वाये जाने, शत्रुओं के सामने बिना किसी कारण उसपे झूठे आरोप लगाये जाने और निर्दोष होने पर भी उसे क्रूस पर सजा दिये जाने से भी वह निराशा नहीं हुई, वरन इन सभी कामों के द्वारा परमेश्वर की योजना पूरी हुई! परमेश्वर अब भी हर चीज पर नियन्त्रण रखता है और इस संसार में कोई की चीज उसकी योजना को पूरा होने से नहीं रोक सकती। इसलिए मेरे साथ जो भी कुछ हो रहा है वह कोई हताशा नहीं वरन परमेश्वर की योजना है। मेरे साथ जो कुछ होता है वह मेरे जीवन में परमेश्वर की एक भली योजना का एक भाग है!

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 13:1-38 **में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।**
(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5 **प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]*
दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6 **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*
अगले अध्याय के लिए

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. यूहन्ना 13 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 22-24** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(11) यूहन्ना 11:25।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 31

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) ***[शान्त समय]*** **लूका 22-24**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** **(*या* अपने नोट्स को *पढ़ें*)** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (लूका 22-24) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) ***[यूहन्ना में मुख्य वचन]*** **(11) नीतिवचन 11:25**

दो दो करके *पुनरावलोकन* करें।
(2) विश्वासयोग्य बने रहें। नीतिवचन 3:3-4 । कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएं; वरन उन को अपने गले का हारा बनाना, और अपनी हृदय रूपी पटिया पर लिखना। और तू परमेश्वर और मनुष्य दोनों का अनुग्रह पाएगा, तू अति बुद्धिमान होगा।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]*** **मसीहियों और कलीसियाओं में बढ़ोतरी**

परिचय। यह शिक्षा मसीह के अनुयायियों की बढ़ोतरी के बारे में और मसीही समाज(मण्डली या घरेलू संगति) की बढ़ोतरी के बारे में है। हम बाइबल में बढ़ोतरी के सिद्धान्तों को देखेगें। और हम बाइबल से मसीही विश्वासियों, मसीही शिष्यों और मसीही कार्यकर्ताओं और मसीही कलीसियाओं (घरेलू कलीसियाओं,घरेलू संगति) की बढ़ोतरी के बारे में सीखेगें।

क. बाइबल में आत्मिक बढ़ोतरी का सिद्धान्त

परिचय दें। लोगों को बढ़ाने के लिए, पहले आपको उन्हें जीतने की आवश्यकता है।

शिष्यों को बढ़ाने के लिए, आपको शिष्य बनाने की आवश्यकता होगी।

1. पुराने नियम की सेवकाई बढ़ोतरी की सेवकाई थी।

परिचय दें। आत्मिक बढ़ोतरी का अर्थ है यीशु मसीह में उन विश्वासियों की संख्या में वृद्धि करना जो बाइबल के परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं और उसकी बातों को मानते हैं।

खोजें और चर्चा करें। पुराने नियम में आत्मिक बढ़ोतरी कैसे हुई?

पढ़िये भजन 78:3-7; योएल 1:3
ध्यान दें। पुराने नियम में आत्मिक बढ़ोतरी को परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा में अगली तीन पीढ़ियों तक ले जाना शामिल था! पुराने नियम में जब परमेश्वर ने इस्राएलियों को अपने लोगों के रूप में बुलाया, तो उसने उन्हें आत्मिक रूप से बढ़ने की आज्ञा दी।

(1) भजन 78:3-7।

इस भजन में यह बताया गया है कि कैसे इस्राएलियों ने जो कुछ उनके पूर्वजों ने उन्हें परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में बताया था, उसे अपनी अगली तीन पीढ़ियों तक पहुँचाया। हमने पढ़ा, "परमेश्वर ने इस्राएल में व्यवस्था चलाई, जिसके विषय में उसने हमारे पितरों को आज्ञा दी (पहली पीढ़ी), कि वह अपने-अपने बालबच्चों को इसके विषय में सिखाएँ (दूसरी पीढ़ी), कि आनेवाली पीढ़ी (तीसरी पीढ़ी) भी उन्हें जान सकें और वे बदले में इन्हें अपने-अपने बाल-बच्चों (चौथी पीढ़ी) को बताएँ। जिससे वे परमेश्वर पर भरोसा रखें और ईश्वर के कामों को न भूलें परन्तु उसकी आज्ञाओं का पालन करते रहें"। परमेश्वर ने पूर्वजों को अपनी समझ और उसके अद्भुत कामों और आज्ञाओं को उनकी अगली तीन पीढ़ियों, यानी उनके अपने बच्चों, उनके बच्चों के बच्चों और उनके पोतों को देने की जिम्मेदारी दी! इस प्रकार इस्राएल में लोगों की हर पीढ़ी को परमेश्वर और उसके अद्भुत कामों को जानने और उसकी आज्ञाओं का पालन करने का अवसर मिला।

(2) योएल 1:3।

परमेश्वर ने योएल (पहली पीढ़ी) को आज्ञा दी, "अपने बाल-बच्चों से (दूसरी पीढ़ी) इसका वर्णन करो, और वे अपने बाल-बच्चों से (तीसरी पीढ़ी), और वह अपनी आनेवाली पीढ़ी से (चौथी पीढ़ी) इसका वर्णन करें"। इस्राएल में हर पीढ़ी की यह ज़िम्मेदारी और कर्तव्य था कि वे परमेश्वर के ज्ञान और उसकी इच्छा को आनेवाली अगली तीन पीढ़ियों तक पहुँचायें। ऐसा तब हुआ जब पूर्वजों, पितरों, पिताओं और भविष्यद्वक्ताओं ने दूसरों तक परमेश्वर की बातों को पहुँचाया। हर पीढ़ी के प्रत्येक बच्चे (व्यवस्थाविवरण 6:1-9) और अन्य लोगों के बच्चे अपने होते हैं (भजन 78:71-72)।

1. यीशु मसीह की सेवकाई एक वृद्धि (बढ़ोतरी) की सेवकाई थी।

(1) यीशु और सुसमाचार।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह ने अपने लिए लोगों को कैसे जीता?

ध्यान दें। यीशु मसीह ने अपने लिए लोगों को जीता। उसने करीब दिसम्बर 26 ईसवीं में अपनी सेवकाई की शुरूआत की। उसने लोगों को या तो उन्हें अपने जीवन में शामिल करके या ("आओ और दखो") या स्वयं को उनके जीवन में शामिल करके (काना का विवाह) जीता।

- ***पढ़ें*** मरकुस 1:15; यूहन्ना 1:39-43 - यीशु ने अपने जीवन और अपनी सेवकाई में लोगों को शामिल

किया। वह गलील में गया और लोगों को परमेश्वर का सुसमाचार सुनाया, "परमेश्वर का राज्य निकट है। पश्चाताप करो और सुसमाचार पर विश्वास करो"। उसने लोगों को सुसमाचार का प्रचार करके और उन्हें "पश्चाताप करने या बदलने और सुसमाचार पर विश्वास करने" के लिए चुनौती देकर अपने जीवन में शामिल किया! उसने लोगों को आमंत्रित किया : "आकर देखो" (मैं कैसे रहता हूँ) और "मेरे पीछे हो लो" (मैं इस संसार में क्या कर रहा हूँ)।

- ***पढ़ें*** यूहन्ना 2:1-2 - यीशु ने स्वयं को आमतौर पर अन्य लोगों के जीवन में शामिल किया। उदाहरणस्वरूप, वह विवाह समारोह में गया, यरूशलेम में होने वाले यहूदी पर्वों और सभास्थलों में महासभा के लिए गया। वह लोगों के घरों में गया और उनके साथ खाना खाया। उन्होंने सड़क पर आम लोगों से बात की और लोगों से मछली पकड़ने या कर देने जैसी सामान्य दैनिक परिस्थितियों में भी लोगों से बात की। इस अवधि के दौरान, उसके चेले अकसर उसकी शिक्षा को सुनते थे, लेकिन उन्होंने फिर भी मछुआरों, चुंगी लेनेवालों और अन्य कार्यों के रूप में अपने दैनिक कार्य को बनाए रखा।

(2) यीशु और शिक्षा।

खोजें और चर्चा करें। *यीशु ने अपने चेलों को कैसे प्रशिक्षित किया?*

ध्यान दें। यीशु मसीह ने अपने चेलों को मसीही विश्वास में स्थापित करके और उन्हें एक कार्य के लिए तैयार करके प्रशिक्षित किया। लगभग एक वर्ष बाद, यीशु ने बारह पुरुषों को इसलिए बुलाया ताकि वह उन्हें तैयार करे और वे पूर्णकालिक उसका अनुसरण करें।

- ***पढ़ें*** मत्ती 4:19। उसने अपने कुछ चेलों से कहा, "आओ, मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुम्हे मनुष्यों के पकड़नेवाला बनाऊँगा"।
- ***पढ़ें*** लूका 6:12-13; मरकुस 3:13-14 - उसने प्रार्थना के साथ बारह लोगों को चुना जिन्हें उसने अपने चेलों के रूप में प्रशिक्षित किया। उसने उन्हें "अपने साथ" रखने के लिए प्रशिक्षित किया ताकि वे उसके जीवन और सेवकाई को देखें, उसकी शिक्षाओं और जवाबों को सुनें, और अनुभव करें कि किस प्रकार लोग परिवर्तित होते हैं और उनकी सहायता की जाती है। वे यीशु के साथ रहने के द्वारा गहराई से प्रभावित थे!
- ***पढ़ें*** लूका 10:1-16। उसने उन्हें परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार का प्रचार करने, लोगों को सिखाने, ज़रूरतमंदों की सहायता करने और बीमारों को चंगा करने के लिए दो-दो करके भेजने के लिए तैयार किया। उस समय के बाद से उसके चेले पूर्णरूप से उसके पीछे हो लिए।
- ***पढ़ें*** यूहन्ना 11:54। अपनी सेवकाई के आखिर के दो वर्षों के दौरान, यीशु ने अपने चेलों के साथ भविष्य में की जाने वाली सेवकाई को सिखाने और प्रशिक्षित करने के लिए अकेले बहुत समय बिताया।

(3) यीशु और भेजना।

खोजें और चर्चा करें। यीशु मसीह ने अपने चेलों को किस उद्देश्य के लिए प्रशिक्षित किया?

ध्यान दें। यीशु मसीह ने चेलों को पूरी दुनिया में सेवकों या सुसमाचारकों (मिश्नरियों) के रूप में भेजा।

- ***पढ़ें*** मत्ती 24:14। क्रूस पर अपनी मृत्यु से ठीक पहले। यीशु ने कहा कि परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार दुनिया की सभी जातियों के लिए किया जाएगा।
- ***पढ़ें*** मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15; लूका 24:44-49; यूहन्ना 20:21; प्रेरितों 1:8 - साढ़े तीन साल के शिक्षण और प्रशिक्षण (कार्य), और लोगों को प्रचार, शिक्षण और चंगाई में अपने चेलों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने के बाद, यीशु मसीह क्रूस पर मर गया और फिर से जी उठा।

- अपने पुनरुत्थान के बाद उसने अपने चेलों को **महान आज्ञा** दी। सभी चार सुसमाचार महान आज्ञा के विषय में बताते हैं और दिखाते हैं कि यीशु ने कई बार अलग-अलग जगहों में अपने चेलों के सामने इस महान आज्ञा को दोहराया। मत्ती 28:18-20 में उसने आज्ञा दी, "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाकर सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ, उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हे आज्ञा दी हैं, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे साथ हूँ"।
- ***पढ़ें*** प्रेरितों 17:6-7 - चेलों का यह छोटा समूह प्रत्येक स्थान पर गया और सचमुच इस समूह ने रोमन साम्राज्य को पलट कर रख दिया!

2. नए नियम की सेवकाई बढ़ोतरी की सेवकाई थी।

खोजें और चर्चा करें। नए नियम में आत्मिक बढ़ोतरी किस प्रकार हुई?

(1) यीशु ने मसीहियों, चेलों और सेवकों की *बढ़ो*तरी की।

पढ़ें मत्ती 28:19-20 - यीशु मसीह ने नए नियम में अपने चेलों और उनकी पीढ़ियों को आत्मिक बढ़ोतरी के विषय में शिक्षा दी! यीशु ने अपने चेलों को यह आज्ञा दी कि वे नए चेले बनाएँ और इन नए चेलों को महान आज्ञा सहित सभी आज्ञाओं का पालन करना सीखाएँ! चेलों की प्रत्येक नयी पीढ़ी को चेले बनाने थे और महान आज्ञा सहित यीशु मसीह की सभी आज्ञाओं को मानना सिखाना था! इस प्रकार, नए विश्वासियों, चेलों और चेले बनानेवालों की पीढ़ी कभी समाप्त नहीं हुई!

(2) पतरस ने परिवर्तित मसीहियों, मसीही चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की *बढ़ो*तरी की।

पढ़ें प्रेरितों 4:13 - पतरस यीशु मसीह के चेलों में से एक था। पतरस ने कई बार लोगों को सुसमाचार का प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया। शुरुआत में, उसने मुख्य रूप से यरूशलेम में काम किया, लेकिन बाद में उसने यात्रा की, नई कलीसियाओं की स्थापना की, कलीसियाओं का दौरा किया और उन्हें पत्र लिखे। उसकी सेवकाई निम्न लोगों के लिए थी:

- बड़े समूह (हजारों का)
- छोटे समूह (यरूशलेम में प्रेरितों के समूह)
- व्यक्तिगत (बरनबास और मरकुस)

(3) बरनबास ने परिवर्तित मसीहियों, मसीह के चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की बढ़ोतरी की।

पढ़ें प्रेरितों के काम 11:19-26 - बरनबास पतरस की सेवकाई के दौरान मसीह का अनुयायी बन गया। उसने कई लोगों को सुसमाचार का प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया। उसने सीरिया के अन्ताकिया की यात्रा की और वहाँ की नयी कलीसिया को बढ़ने में सहायता की। इसके अलावा उसकी सेवकाई में बड़े, छोटे और व्यक्तिगत समूह (पौलुस) शामिल थे।

(4) पौलुस ने परिवर्तित मसीहियों, मसीह के चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की बढ़ोतरी की।

पढ़ें 1 थिस्सलुनिकियों 1:5-8; 2 तीमुथियुस 3:10-14 बरनबास पौलुस को तुर्की के तरसुस में लाया और सीरिया के अन्ताकिया में उसे अपनी सेवकाई में शामिल किया। पौलुस ने कई लोगों को सुसमाचार का

प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया। उसने बहुत यात्रा की, कम से कम चार मिशनरी यात्राएँ की तथा एशिया और यूरोप में नयी कलीसियाओं की स्थापना की। उसने मसीही कलीसियाओं का दौरा किया, नए मसीही सेवकों को प्रशिक्षित किया, उन्हें चेला बनाने के लिए भेजा और कलीसियाओं को पत्र लिखे।

1 थिस्सलुनिकियों 1:5-8 में वह वर्णन करता है कि थिस्सलुनिके नामक एक शहर में आत्मिक बढ़ोतरी कैसे हुई। पौलुस ने अपने सहकर्मी, सीलास और तीमुथियुस के साथ मिलकर थिस्सलुनिके में सुसमाचार का प्रचार किया। वे उस समय उनके लिए उदाहरण बन गए जब लोगों ने यह सुना कि उन्होंने सुसमाचार को किस प्रकार सामर्थ्य और दृढ़ता के द्वारा प्रचार किया और यह भी देखा कि वे उन लोगों के बीच मसीहियों के रूप में किस प्रकार रहते थे। इसलिए जब उन मसीहियों को अपने साथी-नागरिकों के विरोध के बीच वचन प्राप्त हुआ, तब वे थिस्सलुनिके में पौलुस, सीलास और तीमुथियुस के चेले (अनुयायी) बन गए। फिर वे बदले में मकिदुनिया और यूनान में विश्वासियों के लिए उदाहरण (नमूना) बन गए। उनके विश्वास को हर जगह पहचाना गया।

(5) तीमुथियुस ने परिवर्तित मसीहियों, मसीह के चेलों, मसीही सेवकों और मसीही कलीसिया की बढ़ोतरी की।

पढ़ें 2 तीमुथियुस 2:2 - शुरुआत में, तीमुथियुस ने अपनी नानी और माँ से बहुत कुछ सीखा (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)। बाद में, उसने प्रेरित पौलुस से सबसे अधिक सीखा क्योंकि वह उसका अनुयायी था और लगभग 14 वर्षों तक उसने उसके साथ काम किया था। तीमुथियुस ने सुसमाचार का प्रचार किया और नए अनुयायियों को यीशु मसीह का चेला बनना सिखाया।

अपने जीवन के अन्त में पौलुस ने तीमुथियुस को स्वयं को आत्मिक तौर पर बढ़ाने की आज्ञा दी। "जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझसे सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों"। प्रेरित पौलुस कहता है कि तीमुथियुस इस बात के लिए ज़िम्मेदार है कि सुसमाचार का ज्ञान अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जाए! तीमुथियुस को इसे विश्वासी (भरोसेमन्द) पुरुषों को सौंपना पड़ा जो अगली पीढ़ी को सीखाने के योग्य थे!

ध्यान दें कि आत्मिक बढ़ोतरी किस प्रकार होती है : यीशु ने पतरस को शामिल किया। पतरस ने बरनबास को शामिल किया। बरनबास ने पौलुस को शामिल किया। पौलुस (पहली पीढ़ी) ने इसे अगली तीन पीढ़ियों तक पहुँचाया : उसने तीमुथियुस (दूसरी पीढ़ी) को शामिल किया। तीमुथियुस ने इसे विश्वसनीय और सक्षम पुरुषों (तीसरी पीढ़ी) तक पहुँचाया। उन्होंने इसे "अन्य" लोगों (चौथी पीढ़ी) तक पहुँचाया।

इस तरह सुसमाचार हमारे पास आया! अब भरोसेमंद (विश्वासयोग्य) और सक्षम लोगों की अगली तीन पीढ़ियों को सामर्थ्य और दृढ़ विश्वास के साथ सुसमाचार बताने की हमारी बारी है!

3. किस प्रकार के लोगों की बढ़ोतरी होनी चाहिए।

सिखाएँ। मसीहियों की बढ़ोतरी की सेवकाई में किस प्रकार के लोगों को बढ़ाना चाहिए?

- मत्ती 28 सिखाता है कि मसीहियों को यीशु मसीह के चेलों की बढ़ोतरी करनी चाहिए। चेले आसानी से परिवर्तित हुए लोग नहीं होते हैं, लेकिन परिपक्व, कामकाजी और दृढ़ मसीही होते हैं। वे मसीह के साथ चलते हैं और बाइबल की आज्ञाओं और शिक्षाओं का पालन करते हैं।
- 2 तीमुथियुस 2 सिखाता है कि मसीहियों को विश्वासयोग्य (भरोसेमंद) मसीहियों की बढ़ोतरी करनी

चाहिए जो दूसरों को सिखाने में योग्य या सक्षम भी हों।

- भजन 78 सिखाता है कि मसीहियों को स्वयं की पीढ़ी से ही नए विश्वासियों की बढ़ोतरी करनी चाहिए।
- 1 थिस्सलुनिकियों बताता है कि मसीही अपने स्वयं के प्रान्त और यहाँ तक कि अपने पड़ोसी प्रान्तों में भी चेलों की बढ़ोतरी करते हैं।
- मत्ती 24,28 और प्रेरितों के काम 1:8 सिखाते हैं कि मसीहियों को हर देश में और पूरी दुनिया में लोगों के हर समूह में चेलों की बढ़ोतरी करनी चाहिए : उदाहरण के लिए, टैक्सी ड्राइवर, हेयरड्रेसर, व्यवसायी श्रमिक, छात्र, शरण तलाशने वाले इत्यादि। (Greek: ethné) (तुलना करें प्रकाशितवाक्य 5:9)।

ख. मसीही कलीसियाओं (मण्डलियों) की बढ़ोतरी

परिचय दें। आत्मिक बढ़ोतरी का अर्थ है प्रत्येक स्थान में मसीही कलीसियाओं (मण्डलियों या घर की सभाओं) की संख्या में वृद्धि।

खोजें और चर्चा करें। नयी मसीही कलीसिया (मण्डलियों या घर-घर सहभागिता) किस प्रकार स्थापित होती हैं?

ध्यान दें:

1. परमेश्वर एक नयी मसीही कलीसिया स्थापित करने के लिए पहल करता है।

पढ़ें। प्रेरितों के काम 13:1-4 - पवित्र आत्मा एक विशेष कार्य के लिए एक स्थानीय मसीही कलीसिया में कुछ लोगों को अलग कर सकता है। इस प्रकार उसने पौलुस और बरनबास को अन्य शहरों, प्रान्तों और देशों को सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया। उसने स्थानीय कलीसिया को इन सेवकों को मुक्त करने की भी आज्ञा दी (अन्य सभी कर्तव्यों और कार्यों से)।

2. मसीही सेवक परिवर्तित लोगों पर विजय प्राप्त करते हैं और चेले बनाते हैं।

पढ़ें प्रेरितों के काम 13:5,13-52; प्रेरितों के काम 14:1-22 - पौलुस और बरनबास ने परमेश्वर के वचन का प्रचार किया। उन्होंने यीशु मसीह और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान का प्रचार किया। उन्होंने यीशु मसीह के माध्यम से पापों की क्षमा का प्रचार किया, यानी, लोगों का न्याय व्यवस्था के पालन के द्वारा नहीं बल्कि यीशु में विश्वास रखने से होता है। जब उन्हें सताया जाता था, वे दूसरे शहरों में चले गए और उन्होंने वहाँ सुसमाचार का प्रचार करना जारी रखा। उन्होंने लोगों को व्यर्थ की मूर्तिपूजा को छोड़कर जीवित परमेश्वर की ओर फिरने को कहा। और उन्होंने कई शहरों में बड़ी संख्या में चेलों को जीता। प्रेरितों के काम 14:21 में, हम पढ़ते हैं कि कुछ समय के बाद, मसीह के इन नए अनुयायियों को बढ़ने का अवसर मिला, वे उन्हें दृढ़ और प्रोत्साहित करने के लिए इन मसीही चेलों के समूहों के पास लौट आए।

3. मसीही सेवक प्रत्येक स्थानीय मसीही कलीसिया (मण्डली) में प्राचीनों की नियुक्ति करते हैं।

पढ़ें प्रेरितों के काम 14:23

(1) नई मण्डलियों की नींव रखने वाले।

पौलुस और बरनबास, जिन्होंने मसीहियों के इन नए समूहों को सुसमाचार सुनाया और चेले बनाये, प्रत्येक स्थानीय मसीही कलीसिया में उनके लिए प्राचीनों को नियुक्त या स्थापित किया और फिर उन्हें प्रभु यीशु मसीह के हाथों में और सुरक्षा में प्रार्थना के साथ सौंप दिया। "नियुक्त" और "स्थापित" शब्द का अर्थ "लोकतांत्रिक मतदान के माध्यम से चुनने" या "अन्य पासबान या बिशपों के माध्यम से उन्हें व्यवस्थित करने से नहीं है"। तब से, इन प्राचीनों या इन प्राचीनों के समूह (Greek: presbuterion) (1 तीमुथियुस 4:14) का उत्तरदायित्व स्थानीय मसीही कलीसिया का नेतृत्व करना था। इनमें से अधिकतर स्थानीय मसीही कलीसियाएँ घरों में मिला करती थीं और यह वास्तव में घर की सभा या कलसिया थीं (रोमियों 16:5)!

(2) नयी कलीसिया के प्राचीन।

प्राचीन (Greek: presbuteros, बहुवचन) समुदाय के भीतर शायद सबसे आत्मिक परिपक्व चेले और सक्षम पुरुष थे। यद्यपि उन्हें स्थानीय मसीही कलीसिया में अगुवाई की सेवकाई के लिए नियुक्त किया गया था, लेकिन वे आमतौर पर पूर्णकालिक नहीं थे और उन्हें इसके लिए कोई राशि भी नहीं मिला करती थी (तुलना करें 1 तीमुथियुस 5:17)।

(3) प्राचीनों के कार्य।

प्राचीनों के कार्य थे :

- कलीसिया में लोगों का चरवाहा (पासबान) और पर्यवेक्षक या रखवाला बनना
- कलीसिया की गतिविधियों और सम्पत्ति का भण्डारी (प्रबन्धक) और अधिकारी बनना
- कलीसिया में परमेश्वर के वचन का शिक्षक बनना
- और यह सब सेवक के रूप में है न कि लोगों पर अधिकार जमाने वाला

प्राचीन सीधे प्रभु यीशु मसीह के प्रति उत्तरदायी और लेखा देनेवाले थे (इब्रानियों 13:17), जो हर स्थानीय मसीही कलीसिया के प्रमुख और विश्वव्यापी मसीही कलीसिया के प्रमुख थे (प्रेरितों के काम 20:17-35; इफिसियों 1:22; 1 पतरस 5:1-4)।

आपके "अगुवे" कौन हैं? इब्रानियों 13:7 कहता है कि आपके अगुवे वे लोग (बहुवचन) हैं :

- जो आपको परमेश्वर का वचन सुनाते हैं
- जो अपने व्यक्तिगत जीवन में परमेश्वर के वचन का पालन करते हैं (जो इसे जीते हैं)
- जो विश्वास का एक उदाहरण हों जिसका अनुसरण किया जा सकें

4. मसीही सेवकों का नयी मसीही कलीसिया में प्रभाव होता है।

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 4:14-16; 1 तीमुथियुस 5:17।

पौलुस ने स्वयं द्वारा स्थापित की गयी कलीसियाओं का दौरा करना जारी रखा। उसने अपने कुछ सहकर्मियों को इन कलीसियाओं का दौरा करने के लिए भेजा, ताकि वे उन्हें प्रोत्साहित करें और उनकी सेवा करें, न की उन पर अधिकार जताएँ। उसने उन कलीसियाओं को पत्र लिखें जो आज बाइबल में पाई जाती हैं। लेकिन पौलुस ने इन सभी कलीसियाओं को एक संप्रदाय (संगठन) में एकजुट करने का प्रयास नहीं किया। उसने ऐसे संगठन (एक परिषद या धर्मसभा के रूप में) का भी निर्माण नहीं किया जिनकी छत्र-छाया में वे हर समय रहें! उसने कलीसिया के संगठन में हस्तक्षेप नहीं किया, सिवाय इसके

कि उसने उन्हें स्पष्टरूप से यह सिखाया कि प्राचीनों की आवश्यक योग्यताएँ और उनके क्या कार्य होने चाहिए। 1 तीमुथियुस 4:14 और 5:17 सिखाता है कि स्थानीय प्राचीनों ने (समूह या परिषद के रूप में) कलीसिया का नेतृत्व किया।

5. मसीही सेवक अपने काम का लेखा देते हैं।

पढ़ें प्रेरितों 14:27 – जब पौलुस और बरनबास ने अपना कार्य पूरा कर लिया, तो उन्होंने अपनी स्थानीय मसीही कलीसिया को एक साथ इकट्ठा किया और उन सभी बातों का लेखा दिया जो परमेश्वर ने उनके द्वारा किए थे। ध्यान दें कि उन्होंने केवल यह नहीं बताया कि उन्होंने क्या किया है, लेकिन उन्होंने यह बताया कि परमेश्वर ने अपने अनुग्रह और सामर्थ्य में होकर उनके द्वारा क्या किया। उन्होंने अपने कार्यों की सारी महिमा केवल परमेश्वर को दी!

ग. मसीहियों (मसीह का अनुसरण करने वालों) की बढ़ोतरी

परिचय दें। आत्मिक बढ़ोतरी का अर्थ है हर जगह मसीह के चेलों और मसीही सेवकों की संख्या में वृद्धि। मत्ती 9:35-38 में यीशु कहता है कि पके खेत तो बहुत हैं, लेकिन मजदूर थोड़े हैं! यीशु मसीह के अनुसार, उसके खेतों में मसीही मजदूरों की बढ़ोतरी होनी चाहिए! उनकी बढ़ोतरी कैसे होनी चाहिए?

- मत्ती 9 के अनुसार, परमेश्वर प्रार्थना के द्वारा मसीही सेवकों की बढ़ोतरी करता है!
- मत्ती 10 के अनुसार, परमेश्वर प्रशिक्षण के द्वारा मसीहियों की बढ़ोतरी करता है!
- और दुनिया में मसीहियों को भेजने के द्वारा!

1. मसीह में नए विश्वासियों की बढ़ोतरी (सुसमाचार के माध्यम से)।

पढ़ें यूहन्ना 4:35-38

खोजें और चर्चा करें। मसीह में नए विश्वासियों (परिवर्तित लोगों) की बढ़ोतरी कैसे होती है?

ध्यान दें।

मसीह में नए विश्वासियों (परिवर्तित लोगों) की बढ़ोतरी *सुसमाचार प्रचार* के माध्यम से होती है।

यीशु सिखाता है कि सुसमाचार प्रचार में विभिन्न प्रकार के मसीही सेवकों की आवश्यकता होती है। वह कहता है, "बोनेवाला और है, और काटनेवाला और"। कभी-कभी सुसमाचार प्रचार के कार्य में बहुत बोने की और कभी-कभी काटने की आवश्यकता होती है।

(1) बोनेवाले।

निश्चितरूप से मार्ग में बोनेवाले यीशु और सामरी स्त्री थे। यीशु ने सामरी स्त्री की आत्मा को जीता। इसके बदले में वह अपने शहर में रहने वाले लोगों की आत्मा जीतने निकल गई।

इसी दौरान, यीशु ने अपने चेलों से बात की और कहा, "क्या तुम नहीं कहते कि कटनी होने में अभी भी चार महीने पड़े हैं?" इस क्षेत्र में अनाज की फसल सामान्य तौर पर अप्रैल में हुई थी। इसलिए, जिस समय यीशु ने सामरी स्त्री से मुलाकात की थी वह दिसम्बर का महीना था। दिसम्बर के महीने में अनाज फसल काटने के लिए अभी तक पका नहीं था। लेकिन यीशु मसीह में विश्वास करने वाले लोगों की आत्मिक फसल का कोई विशिष्ट मौसम नहीं होता है! इस मामले में, सामरियों के बीच सुसमाचार

के बीज को बोना और अनन्त जीवन के लिए नए विश्वासियों की फसल काटने के बीच शायद ही अभी कोई समय बाकी था! यीशु ने अनाज के खेतों में से शहर से आने वाले सामरियों के जुलूस को अच्छी तरह से देखा और कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं।"

(2) काटनेवाले।

काटनेवाले यीशु के चेले थे। यीशु ने स्पष्टरूप से कहा कि वह अपने चेलों को इसीलिए भेजता है ताकि वे उसके राज्य के लिए इन लोगों की फसल को काटें। यूहन्ना 4:38 में, यीशु कहता है, "मैंने तुम्हे वह खेत काटने के लिए भेजा है जिसके लिए तुमने परिश्रम नहीं किया। ओरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए"। यीशु और सामरी स्त्री दोनों सामरियों के बीच काम कर रहे थे। यीशु ने सामरी स्त्री के साथ सीधे तौर पर काम किया और उसने सीधे अपने नगरवालों के बीच में काम किया। अब प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों को सामरियों के बीच नए विश्वासियों की फसल काटने के लिए भेजा था।

(3) एक बोता है, और दूसरा काटता है।

आत्मिक क्षेत्र में सामान्य बात यह है कि "एक व्यक्ति वहाँ काटता है जहाँ दूसरा व्यक्ति बोता है"। यूहन्ना 4:37 में, यीशु कहता है, "क्योंकि इस पर यह कहावत 'कि बोनेवाला और है और काटनेवाला और' ठीक बैठती है"। परमेश्वर के राज्य में प्रत्येक सेवक बोनेवाला और काटनेवाला दोनों होता है। वह दूसरों द्वारा बोई गयी फसल को काटता है और जो कुछ वह बोता है वह दूसरे काटते हैं। इसलिए, परमेश्वर की ईश्वरीय योजना में, हमेशा एक फसल होगी!

कुछ मसीही सेवक मुख्य रूप से सिर्फ बोते हैं। वह हर संभव तरीके से सुसमाचार का प्रचार करते हैं। अन्य मसीही सेवक मुख्य रूप से काटते हैं। वे लोगों की इस बात में सहायता करते हैं कि वे मसीह को अपने हृदय और जीवन में स्वीकार कर सकें। परमेश्वर की ईश्वरीय योजना में यह महत्वपूर्ण नहीं है कि कौन बोता है और कौन काटता है, क्योंकि हमेशा फसल रहेगी! और परमेश्वर के राज्य में मजदूर सदैव आनन्दित रह सकते हैं क्योंकि यहोवा में उनका परिश्रम कभी व्यर्थ नहीं जाता (1 कुरिन्थियों 15:58)! परमेश्वर का वचन कभी भी व्यर्थ ठहरकर उसके पास वापस नहीं लौटेगा परन्तु वह अपनी इच्छा को पूरी करेगा और जिस काम के लिए उसने उसे भेजा है उसे वह सफल करेगा (यशायाह 55:11)!

2. मसीह के चेलों की बढ़ोतरी (चेले बनाने के द्वारा)।

पढ़ें मत्ती 28:20; 1 कुरिन्थियों 3:-11; इफिसियों 4:11-16।
खोजें और चर्चा करें। चेलों की बढ़ोतरी कैसे होती है?
ध्यान दें। मसीही चेलों की संख्या चेले बनाने से बढ़ती है। यीशु मसीह में नए विश्वासियों की आत्मिक बढ़ोतरी तब होती है जब उन्हें मसीह की आज्ञा मानना सिखाया जाता है।

(1) सेवक और उसके सहयोगी-सेवक।

प्रेरित पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में विभिन्न प्रकार के सेवक पाए जाते हैं : परमेश्वर कुछ सेवकों को सुसमाचार के बीज बोने के लिए, यानी सुसमाचार प्रचार करने के लिए चुनता है। और वह अन्य सेवकों को इन पौधों में पानी देने के लिए चुनता है, अर्थात, नए मसीहों की देखभाल करने के

लिए, यानी उन्हें चेले बनाने के लिए। लेकिन इन सभी अलग-अलग कार्यों में, केवल परमेश्वर ही है जो विभिन्न कार्यों को निर्देशित करता है और केवल वही है जो विश्वासियों को मसीह का चेला बनने में सहायता करता है! इसलिए, परमेश्वर सेवक है और मसीही केवल उसके सहयोगी हैं। परमेश्वर पुनर्जन्म के माध्यम से नया जीवन देता है। परमेश्वर नए विश्वासियों को पवित्र आत्मा के माध्यम से बढ़ने और अन्य मसीहियों को उनके अनुसरण करने का कारण बनाता है। और वह प्रत्येक मसीही सेवक को अलग-अलग कार्य सौंपता है।

(2) नींव की परतें और नींव पर निर्माण करने वाले।

यद्यपि ये मसीही परमेश्वर के सहयोगी हैं, लेकिन उनके पास सिर्फ एक ही कार्य नहीं है। कुछ सेवकों का कार्य नींव (जो यीशु मसीह है) रखना है। वे बोने और काटने के द्वारा सुसमाचार का प्रचार करते हैं। अन्य सेवकों को इस नींव पर निर्माण करने का कार्य सौंपा गया है। वे इन युवा मसीहियों को परिपक्व और कार्यरत मसीही बनाते हैं। वे इन नए मसीहियों की यीशु मसीह के साथ निरन्तर व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखने, बाइबल के विषय में पूरा ज्ञान रखने और बाइबल की बातों की प्रतीति करने में मदद करते हैं, ताकि उनका स्वभाव और व्यवहार मसीह के समान बन सके और वे मसीह की सेवा कर सकें।

3. मसीह के लिए सेवकों की बढ़ोतरी (तैयार करने के द्वारा)।

पढ़ें इफिसियों 4:11-12

खोजें और चर्चा करें। मसीही सेवकों की बढ़ोतरी कैसे होती है?

ध्यान दें। सेवा के कार्यों के लिए मसीह के चेलों को तैयार करके मसीही सेवकों की संख्या में बढ़ोतरी की जाती है ताकि मसीह की देह को बनाया जा सके।

पौलुस सिखाता है कि यीशु मसीह ने कुछ मसीही सेवकों को विशेष आत्मिक वरदान और कार्य (प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं, प्रचारकों, चरवाहों और शिक्षकों के लिए) सौंपे हैं ताकि वे अन्य सभी मसीहियों को कलीसिया के कुछ स्थानों में सेवा के कार्यों के लिए तैयार करें और दुनिया भर में मसीही कलीसिया के निर्माण में हिस्सा बन सकें! वे कुछ मसीहियों को सुसमाचार प्रचार में और दूसरों को चेले बनाने में, या प्रचार, शिक्षण, पासबानी देखभाल इत्यादि के लिए या अन्यों मसीहियों को दूसरों को तैयार करने के लिए तैयार करते हैं। हर शहर में एक तैयार करने वाला होना चाहिए! परमेश्वर से पूछें कि क्या आपको भी ऐसा तैयार करने वाला बनना चाहिए!

प्रत्येक कलीसिया में कई अलग-अलग प्रकार की सेवाएँ होनी चाहिए। इन सेवाओं (सुसमाचार, चेला बनाने, और तैयार करने) के अलावा और भी बहुत सी सेवकाई हैं जैसे : बच्चों की सेवकाई, युवाओं, बीमारों, गरीबों, उत्पीड़ित लोगों की सेवकाई, प्रशासन में सेवकाई, मंत्रालयों को निर्देशित करने की सेवकाई, समाज और संसार में प्रभाव डालने की सेवकाई।

महत्वपूर्ण बात यह है कि प्राचीनों की ज़िम्मेदारी यह है वह इस बात पर ध्यान दें कि कलीसिया के सभी सदस्य मसीह के चेले बन जाएँ, यानी कि परिपक्व, कामकाजी और दृढ़ मसीही और कलीसिया (घर की कलीसिया), आस-पास (समाज) और दुनिया में सेवा के कार्य के लिए तैयार हों।

घ. चेले बनाने की सेवकाई का सारांश

1. चेले बनाने की सेवकाई मसीह के चेलों की संख्या और मसीह के लिए सेवकों की संख्या की बढ़ोतरी करती है।

सिखाएँ।

चेले बनाने की सेवकाई का सारांश

उन चेलों को बनाना है

जो बाद में स्वयं नए चेले बनायेंगे!

इसका अर्थ मसीही चेलों और मसीही सेवकों (चेले बनानेवालों)

दोनों को बढ़ाना (बढ़ोतरी करना) है!

यह निम्नलिखित की बढ़ोतरी करता है (वृद्धि):

- मसीह में नए विश्वासियों की संख्या की
- मसीह के नए चेलों की संख्या की
- मसीह के लिए नए सेवकों की संख्या (चेले बनानेवालों और तैयार करनेवालों)की
- और अन्त में मसीही कलीसिया (घर की कलिसिया) की संख्या की

बढ़ोतरी इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? मत्ती 9:36-38 में लिखा है, "जब उस ने भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाई जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। तब उस ने अपने चेलों से कहा, 'पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे'।"

2. चेले बनाने की सेवकाई एक प्रवृति बन गई।

सिखाएँ। एक सेवकाई जो नये मसीही चेलों और नये मसीही सेवकों दोनों की बढ़ोतरी करता है, एक प्रवृति बन गई!

यह प्रवृति परिवारों, मित्रगणों, कलीसियाओं (घर की कलीसियाओं), कार्यस्थलों, और यहाँ तक कि अन्य शहरों, प्रान्तों, अन्य देशों, संस्कृतियों और विश्वासों में फैल जाएगी!

यीशु ने यह आज्ञा दी, "जाओ और सभी जातियों के लोगों को चेला बनाओ।" यीशु मसीह को इस कार्य को पूरा करने के लिए स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है! यीशु मसीह दुनियाभर के देशों में आत्मिक बढ़ोतरी करने के लिए अपनी विश्वव्यापी कलीसिया को बुलाता है! और यीशु मसीह की करूणा और सामर्थ्य के द्वारा, वे इस कार्य को करेंगे!

बाइबल यह वादा नहीं करती है कि यह एक आसान विजय होगी। यीशु मसीह के समय से कई मसीहियों ने इस आत्मिक युद्ध में उत्पीड़न और यहाँ तक कि मृत्यु का भी सामना किया है। फिर भी, अंतिम विजय निश्चित है!

- यह रोमियों की पत्री का संदेश है। "हम उसके द्वारा जिस ने हम से प्रेम किया है, जयवन्त से भी

बढ़कर हैं" (रोमियों 8:28-39)।

यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का संदेश है। "ये (दुनिया के राजा अपने धार्मिक भविष्यद्वक्ताओं के साथ) मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना (यीशु मसीह) उन पर जय पाएगा, क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है (प्रकाशितवाक्य 17:14 है, तुलना करें प्रकाशितवाक्य 19:11-21)!

5 **प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]*
परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6 **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*
अगले अध्याय के लिए

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें)।

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. "मसीहियों और कलीसियाओ में बढ़ोतरी" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं। हर एक मसीही को शिष्य निर्माणकारी प्रक्रिया का एक हिस्सा सेवकाई में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें, जिससे विश्वासियों की संख्या, शिष्यों की संख्या और कार्यकर्ताओं की संख्या बढ़ती है।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **तीतुस 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी पांच आयतों को याद करें व दोहराएं। (12) **यूहन्ना 12:32**। रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।
5. बाइबल अध्ययन। **यूहन्ना 14** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है(भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 32

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **तीतुस 1-3**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि आपने दिये गये अनुच्छेद (तीतुस 1-3) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में मुख्य वचन]* **(12) यूहन्ना 12:32**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(12) यूहन्ना 12:32। यदि मैं पृथ्वी पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 14:1-31**

परिचय। यूहन्ना 14:1-31 का अध्ययन करने के लिए बाइबल के अध्ययन के पाँच कदमों का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 14-17 में प्रभु भोज पर की गयी यीशु की प्रार्थना और प्रवचन का वर्णन दिया गया है। यूहन्ना 14 में यीशु ने अपने चेलों को शान्ति दी। उसने प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा हमेशा उनके साथ रहेगा तथा चेले उससे भी बढ़कर काम करेगें।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 14:1-31 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

14:1-4

खोज 1. क्या कारण है कि मसीही लोग लगातार यीशु पर भरोसा कर सकते हैं।

यीशु ने सच में कहा, "तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो, मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं....और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।" चेलों के हृदयों में बहुत प्रकार के भाव भरे हुए थे। वे इसलिए दु:खी थे क्योंकि यीशु ने उनसे कहा था कि वह उन्हें छोड़कर जाने पर है। वे *शर्मिन्दा* भी थे क्योंकि वे बस इस बात को लेकर आपस में झगड़ने में लगे रहे कि उनमें कौन सबसे बड़ा है। वे *दुविधा* में थे क्योंकि यीशु मसीह ने उन्हें बताया था उन्हीं में से एक उसे पकड़वायेगा, उनमें से एक उसका इनकार कर देगा, और वे सारे लोग उसे अकेला छोड़कर चले जाएगें। उनका विश्वास यह सोचकर *डगमगा* रहा था कि यह कैसे सम्भव है कि कोई उसके साथ विश्वास घात कर सके। इसके साथ साथ वे यीशु से प्रेम व उस से आशा कर रहे थे कि वह परिस्थितियों को बदल देगा। उनके विश्वास की परख हो रही थी। इसलिए यीशु ने उन्हें लगातार विश्वास करने की आज्ञा दी थी। वे इसलिए *भरोसा कर सकते हैं* क्योंकि यीशु मसीह अपने पिता की समानता में हैं और वह उन्हें नये स्वर्ग और नयी धरती पर अपने साथ लेने के लिए पुन: आ रहा है! वह उनसे इसलिए दूर जा रहा है ताकि वह उनके साथ रहने के लिए एक स्थान को तैयार कर सके। इसलिए उसका जाना कोई संकट नहीं वरन एक आशीष है! पिता का घर स्वर्ग है और भविष्य में मसीही लोग वहां पर रहने जा रहे हैं। मसीही विश्वासी पुन: मसीह के साथ मिलने का विश्वास करते हैं इसलिए वे उस पर भरोसा कर सकते हैं।

14:5-6

खोज 2. प्रभु यीशु मसीह को किस कारण मार्ग, सत्य और जीवन कहा जाता है।

आयत 6 में यीशु ने कहा "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता"।

(1) यीशु मसीह मार्ग है।

वह केवल परमेश्वर के पास पहुँचने का रास्ता ही नहीं *दिखाता* (जैसा भविष्यद्वक्ता करते हैं)। केवल यीशु मसीह *अपने आप* ही परमेश्वर के पास जाने का रास्ता है। यीशु मसीह परमेश्वर है। वह अपनी ईश्वरीय प्रकृति में वह अपने प्रत्येक ईश्वरीय कामों के उत्तरदायित्व के बराबर है क्योंकि उसके अन्दर उन कामों के

उत्तरदायित्व अनन्त की हद तक है। उदाहरण के लिए वह केवल प्यार करता ही नहीं है, लेकिन वह प्यार है और कुछ नहीं केवल प्यार। इसी तरह केवल वह वही करता जो सही है, लेकिन वह धार्मिकता है और कुछ नहीं केवल धार्मिकता आदि। इसी तरह वह पवित्रता भी है और वफादार भी है (1 कुरिन्थियों 1:10)। वह रास्ता, सच्चाई और जीवन है और कुछ नहीं केवल रास्ता, सच्चाई और जीवन। अपने प्रत्येक कामों, शब्दों और कामों के प्रति उत्तरदायित्व में यीशु मसीह चुने हुए लोगों और परमेश्वर के बीच मार्ग है।

यीशु मसीह परमेश्वर से मानव तक रास्ता है। परमेश्वर पिता से परमेश्वर पुत्र के द्वारा ही सारी ईश्वरीय बरकतें नीचे आती है। यीशु मसीह इंसानों से परमेश्वर तक का रास्ता भी है। केवल वह ही इंसानों से परमेश्वर तक स्वर्ग में पहुँचने के लिए एक सीढ़ी का काम नहीं कर सकते। केवल वे ही परमेश्वर के निवास स्थान (स्वर्ग) में प्रवेश करेंगे जो प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं।

(2) परमेश्वर सत्य है।

यीशु मसीह अपने आप ही सत्य का जीता जागता नमूना है। पुराने नियम में पूरी तरह वास्तविकता की परछाई यीशु मसीह की तरफ इशारा करती है (कुल्लुसियों 2:17; इब्रनियों 10:1)। वह परमेश्वर के बारे में, मनुष्य के बारे में, उद्धार के बारे में और न्याय के बारे में छुपे हुए सत्य को प्रकट करता है। परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17) और हमारे ऊपर यीशु मसीह के द्वारा प्रकट किया गया। केवल यीशु मसीह सत्य के ऊपर निर्भर रहने का स्त्रोत भी है। परमेश्वर की अनन्त योजना मनुष्यों के लिए उद्धार भी केवल उसी के द्वारा दिखाया गया और कार्यान्वित किया गया (प्रकाशितवाक्य 5:5)। वह अदृश्य परमेश्वर की दिखाई देने वाली कल्पना (मानसिक चित्र) की अभिव्यक्ति है। (कुलुस्सियों 1:15; 2:9)। वह परमेश्वर की महिमा की दिखाई देने वाली चमक है और उसके ईश्वरीय होने का बिलकुल सही प्रतिनिधित्व है। (इब्रानियों 1:3)।

जो यीशु मसीह को जानता है वह परमेश्वर पिता को जानता है। (यूहन्ना 14:7)। यीशु स्वयं सत्य है जैसा झूठ(असत्य) विरोध। वह झूठ से घृणा करता है और झूठ का विरोध करता है। जो यीशु मसीह में विश्वास करता है वह सृष्टिकर्ता और बचाने वाले को ज्यादा से ज्यादा जानेगा जब तक कि वह उसे पूरी तरह न जान ले। सत्य उसे पूरी ताकत के साथ प्रभावित कर के उसके ऊपर पूरा नियंत्रण कर लेगा। सत्य उसे स्वतंत्र करेगा उसका मार्गदर्शन करेगा और उसे पूरी रीति से पवित्र करेगा (यूहन्ना 8:32; 16:13; 17:17)।

(3) यीशु मसीह जीवन है।

- “जीवन” यीशु मसीह में जीवन का अर्थ हैं कि परमेश्वर की सारी महिमा का चित्रण यीशु मसीह में हैं (यूहन्ना 1:4)। क्योंकि यीशु मसीह में जीवन है, वह मसीही लोगों के लिए जीवन का स्त्रोत है (यूहन्ना 1:4; 3:16)।
- जैसे “जीवन की रोशनी” यीशु मसीह परमेश्वर के ईश्वरीय चरित्र के लोगों को दिखाता है।
- जैसा “जीवन का शब्द” यीशु परमेश्वर की इच्छा को मसीहियों के ऊपर दर्शाता है ताकि वे परमेश्वर पिता के साथ संगती रखें (यूहन्ना 8:12; 6:68)।

वह संसार में इसलिये आया कि मसीही लोग जीवन पाएँ और बहुतायत का जीवन (यूहन्ना 10:10)। मसीह अपने आप में जीवन है जैसा कि उसने मृत्यु का विरोध किया। उसने शारीरिक मृत्यु, आत्मिक मृत्यु और नरक अनन्त मृत्यु पर विजय प्राप्त की। जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं वे आत्मिक जीवन पाएँगे शारीरिक मृत्यु से पुनरुत्थान पाएँगे और सदा की नरक की मृत्यु का दुख कभी नहीं उठायेंगे। यीशु मसीह में जीवन बदलेगा और उसे यीशु मसीह को विरासत जो कि नये स्वर्ग और नई पृथ्वी की है का वारिस होने के

लिये साझीदार बनाएगा। जैसा कि “मृत्यु” का अर्थ परमेश्वर से अलग होना। “जीवन” का अर्थ परमेश्वर के साथ सहभागिता! यीशु मसीह ने मुझे पापों से आजाद किया है और मुझे स्वच्छंद किया है ताकि मैं परमेश्वर से मिल सकूँ और परमेश्वर के साथ भरपूर संगति कर सकूँ।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 13:1-38 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछें जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

14:7-9

प्रश्न 1. परमेश्वर को वास्तव में जानने का क्या मतलब है?

ध्यान दें। यूहन्ना 14:7-9 में यीशु कहता है, “यदि तुमने मुझे जाना होता, तो मेरे पिता को जानते; और अब उसे *जानते* हो, और उसे *देखा* भी है।” जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है।” यीशु कहता है कि वह ही केवल मार्ग है जो परमेश्वर तक पहुँचाता हैं, वह ही सत्य है जो लोगों को परमेश्वर के लिये पवित्र बनाता है, वह जीवन है, जो परमेश्वर के साथ भरपूरी संगति देता है, इस बात को उसके चेले भी नहीं समझ सकें। यदि उन्होंने उसके वचन को ध्यान पूर्वक सोचा होता और कामों को देखा होता तो वे उसे यीशु को और अच्छे तरीके से जानते(ग्रीक: जीनोस्को)(परफेक्ट टैंस)। और तब वे पिता परमेश्वर को *लगातार* जानते (देखने, अध्ययन करने और अनुभव के द्वारा)(ग्रीक: जीनोस्को)। तब से उसके चेले उसे *लगातार* जानते रहें(ग्रीक: जिनोस्को)(प्रजेन्ट कन्टीनुअस टैंस) और उसे देखा ताकि उसकी आकृति उनकी आँखों के सामने *सदा* रहे(ग्रीक: हेयोराका)(परफेक्ट टैंस)!

परमेश्वर पिता को देखने, समझने, पहचानने का पक्का दिखने वाला अवसर व लाभ किसी को भी पुराने नियम में नहीं मिला जैसा कि अब नये नियम में यीशु मसीह के द्वारा हो रहा है। मूल भाषा में क्रिया (प्रफेक्ट टैंस) इशारा करता है कि यीशु मसीह में परमेश्वर पिता के आत्मिक ज्ञान व दर्शन के अनुबंधित परिणाम हैं। विश्वासी परमेश्वर पिता को यीशु मसीह में सदा देखता और जानता रहेगा!

पूरा गद्यांश साफ साफ इशारा करता है कि यीशु मसीह के बिना परमेश्वर को समझना और उद्धार असम्भव है। परमेश्वर का आखिरी दर्शन व उद्धार की योजना केवल यीशु मसीह में ही अनुभव की जाती है। (इब्रानियों 1:1-2) संसार में कोई भी धर्म प्रकति और मानव इतिहास में अदृश्य परमेश्वर को उजागर नहीं करता है। (परमेश्वर को यीशु मसीह में मानव की प्रक्रति लेने के द्वारा) इसलिये परमेश्वर को जानने का अर्थ है कि परमेश्वर को आत्मिक रूप में (आत्मिक आखों के द्वारा) यीशु मसीह में देखना है। उसने यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर को खोज लिया है। वह यीशु मसीह में बचाया गया और पवित्र किया गया है। अब वह मसीह के द्वारा परमेश्वर की भरपूरी सहभागिता में है।

14:12

प्रश्न 2. उससे बड़े काम कौन से हैं जो मसीही करेगें?

ध्यान दें। यूहन्ना 14:12 में यीशु अपने चेलों से वायदा करता है, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि जो मुझ पर विश्वास करता है; ये काम जो मैं करता हूँ वह भी करेगा; वरन इस से भी बड़े काम करेगा क्योंकि मैं पिता के पास जाता”। यह चेलों के लिये लाभ की बात है कि यीशु पिता के पास स्वर्ग में जा रहा है, क्योंकि इससे वे और ज्यादा प्रभावशाली हो जायेगें। वे उन को कर सकेगें जो यीशु कर रहा था वह भौतिक या सांसारिक अधिकार आश्चर्यकर्म हैं। लेकिन वे इससे भी बड़े बड़े काम करेगें वे आत्मिक अधिकार आश्चर्यकर्म हैं।

यूहन्ना 5:20-24 के अनुसार यीशु के काम एक निश्चित हद तक थे जो कि सांसारिक अधिकार के आश्चर्यकर्म थे जैसे कि बीमारों को चंगा करना, मुर्दा को जिलाना, और वे सब बड़े पैमाने पर यहूदियों के बीच में किये गये थे। चेलों के महान काम ऊंचे चरित्र और विशाल हद के होंगे। चेलों के बड़े बड़े कामों में खास तौर पर लोगों का परिवर्तन करना और उनको संसार की सभी जातियों ओर राज्यों में से चेलें बनाना होगा। यीशु अपने चेलों के द्वारा अपने काम को संसार में करने के लिये सोच रहा है। वह यूहन्ना 12:23-32 जैसे पैरा के विषय में सोच रहा थी। जहां वह सब लोगों को अपनी तरफ खींच सकेगा और यूहन्ना 17:20 के अनुसार वह सब लोगों के लिये प्रार्थना करेगा जो इस में चेलों के सुसमाचार के द्वारा विश्वास करेगें। लेकिन ये सब बड़े बड़े काम यीशु मसीह की मृत्यु के बाद और के पुनरुत्थान तथा यीशु की आत्मा को चेलों पर उण्डेलने के बाद किये जायेगें।

14:13-14

प्रश्न 3. क्या मसीही प्रार्थना में कुछ भी माँग सकते हैं।

ध्यान दें।

(1) प्रेरितों के काम में प्रार्थना और अद्‌भुत काम।

यूहन्ना 14:13 में यीशु अपने चेलों से वायदा करता है, “जो कुछ भी तुम मेरे नाम में माँगोगे मैं कर दूँगा” इस आयत को हमें हद के बाहर नहीं ले जाना चाहिए। अन्यथा लोग उसके वायदे का गलत इस्तेमाल करेगें और सब तरह की केवल अपनी ही चाहने की चीजों की माँगेंगे। यह पद 12 के बड़े बड़े कामों को बताता है। पद 12 के महान कामों के लिये पद 13 में चेलों को प्रार्थगओं की आवश्यकता है! प्रेरितों के काम में शारीरिक अधिकार तथा आत्मिक अधिकार दोनों तरह के काम प्रार्थना से जुड़े हुए थे। उदाहरण के लिये प्रेरितों 4:24 में प्रार्थना शारीरिक सुसमाचार की घोषणा की थी। प्रेरितों 6:4 में परमेश्वर का वचन फैलाने तथा जो मसीही विश्वास में आज्ञाकारी बनें उनकी संख्या तेजी से बढ़ने के लिये प्रार्थना करना। प्रेरितों 10:2,9 में पतरस तथा कुर्नेलियस की प्रार्थना के परिणाम स्वरूप प्रथम गैर यहूदी का मसीह विश्वास में परिवर्तन हुआ। प्रेरितों 12:5,12 में प्रार्थना के परिणाम स्वरूप पतरस कैद से छुड़ाया गया!

(2) यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना।

यीशु मसीह जिन प्रार्थानाओं का उत्तर देगा:- उसके नाम में प्रार्थना करनी चाहिये। “यीशु मसीह में” प्रार्थना का अर्थ है कि उद्धार के पूरे काम पर आधारित उसकी इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना। जो उसने दर्शाया है

वह बाइबल में लिखा है। क्योंकि उसने सभी गुप्त बातों को अपनी इच्छा में अनुसार नहीं दिखाया है। मसीही लोगों को विश्वास में प्रार्थना करने की आवश्यकता है विश्वास करना है कि उसका उत्तर हमेशा सबसे अच्छा है! मसीहियों को हमेशा प्रार्थना करनी चाहियें कि "मेरी इच्छा नहीं, लेकिन तेरी इच्छा पूरी हो"(लूका 22:42) यीशु का उत्तर "हाँ" कभी "नहीं" तथा कभी "इन्तजार" होगा। मसीही जो इस तरह प्रार्थना करते है वे विश्वास कर सकते हैं इस तरह प्रार्थना करते है वे विश्वास कर सकते हैं कि जो भी इसके बाद होगा वह परमेश्वर की बिलकुल सही इच्छा के अनुसार होगा।

14:16

प्रश्न 4. पवित्र आत्मा दूसरा सलाहकार क्यों कहलाता है?

ध्यान दें। ग्रीक भाषा में सलाहकार शब्द को "पराक्लीट"(पवित्र आत्मा)(ग्रीक पराक्लेटोस)कहते है। कर्मप्रधान भाषा में इसका अर्थ एक "वकील" या "एक सलाहकार" "कोई आपकी सहायता कहने वाला" नहीं है जैसा कि लेटिन भाषा की बाइबल के अनुवाद के अनुसार सलाहकार का अर्थ कर्मप्रधान नहीं है। जबकि इसका अर्थ दुसरे ग्रीक साहित्य के अनुसार कृतिवाचक "मददगार", "मध्यस्त करने वाला" या प्रतिनिधि है।

(1) यीशु मसीह परमेश्वर पिता के साथ जो स्वर्ग में हैं मसीही लोगों का प्रतिनिधि (ग्रीक पराक्लेटोस) है (1 यूहन्ना 2:1)।

यीशु मसीह परमेश्वर और मसीहियों के बीच मध्यस्थ है। उसने मसीहियों के लिये स्वर्ग में प्रवेश किया ताकि परमेश्वर की उपस्थिति में दिखें (इब्रानियों 9:24)। वह सक्रियता से स्वर्ग में मसीहियों के लिये विनती करता है।

(2) पवित्र आत्मा यीशु मसीह और मसीहियों का जो पृथ्वी पर है प्रतिनिधि (ग्रीक पराक्लेटोस) है (यूहन्ना 16:13-15)।

पवित्र आत्मा मसीह और मसीहियों के बीच मध्यस्थ है। वह सक्रियता से मसीह के वचनों का मसीहियों को वर्णन करता है जो संसार में हैं।(यूहन्ना 14:6; 15:26; 16:14)। पवित्र आत्मा मसीह के उद्धार के पूरे काम को पृथ्वी पर रहने वाले लोगों पर लागू करता है।

पवित्र आत्मा मध्यस्थ यीशु मसीह की तरह ही दूसरा प्रतिनिधि है। पवित्र आत्मा यीशु मसीह से सम्मानित है लेकिन फिर भी यीशु मसीह की तरह ईश्वरीय प्रकृति है और परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र परमेश्वर पुत्र के सातत्व में हैं।

14:25-26

प्रश्न 5. यीशु मसीह की शिक्षा और पवित्र आत्मा की शिक्षा में क्या अन्तर है?

ध्यान दें। यीशु कहता है, "यह सब जो मैंने तुमसे बोला जब मैं तुम्हारें साथ था पवित्र आत्मा तुम्हें सब चीजें सिखाएगा और सब बातों की याद दिलाएगा जो मैंने तुमसे कही है।" इन आयतों में यीशु मसीह अपनी शिक्षा जब वह पृथ्वी पर था और पवित्र आत्मा की शिक्षा जब वह भव्यतापूर्वक स्वर्ग में उन्नत किया गया में अन्तर बताता है। जब यीशु मसीह पृथ्वी पर था उसने उन्हें बहुत बातें सिखाई। पवित्र आत्मा यीशु मसीह की शिक्षा लगातार सिखाता है। चार सुसमाचार यीशु मसीह की शिक्षा से भरे हैं जब वह पृथ्वी पर था।

लेकिन कुछ सबसे खास घटनाएं अभी नहीं हुई थी। यीशु को मरना था, मुर्दों में से उठाया जाना था, स्वर्ग में उठाया जाना था, स्वर्ग में अपने सिंहासन पर बैठना था और पवित्र आत्मा उण्डेलना था। यीशु ने कहा पृथ्वी पर से उसके शारीरिक पुनरुत्थान के बाद आनेवाला पवित्र आत्मा बहुत सी बातों को और साफ तरीके से बताएगा। यीशु ने वायदा किया कि पवित्र आत्मा उसके चेलों को वह सब आवयश्क बातों को सिखाएगा जो कि उद्धार और मसीह की गवाही के उनके काम के लिये आवश्यक हैं। और उसने वायदा किया कि पवित्र आत्मा उन्हें हर बात का स्मर्ण दिलाएगा जो उस ने उन्हें सिखाई थी जब वह पृथ्वी पर था। पवित्र आत्मा की शिक्षा के द्वारा यीशु मसीह अपनी भविष्यद्वाणी की बातों को पूरा करता रहेगा। प्रेरितों की पुस्तक तथा प्रेरितों के पत्र यीशु मसीह के स्वर्गारोहण के बाद पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु मसीह की शिक्षाओं से भरे हैं।

(1) पवित्र आत्मा उन सत्यों का स्मरण दिलाएगा जो यीशु ने बोले थे जब वह पृथ्वी पर था।

वह पुराने सत्यों को क्यों स्मरण करेगा। क्योंकि पवित्र आत्मा के द्वारा यीशु मसीह अपने चेलों को उन सत्यों की जो उसने उन्हें जब वह पृथ्वी पर था सिखाया था गहरी समझ देगा। जब ये वचन पहली बार पृथ्वी पर बोले गये थे तब वे कठिनाई से लिखे गये थे। (यूहन्ना 2:22; 12:16)। इसलिये पौलुस कहता है (1 कुरिन्थियों 2:13)," यह जो हम बोलते हैं मनुष्यों के ज्ञान की बातों में नहीं परन्तु *आत्मा की सिखाई हुई बातों में,* आत्मिक वचनों में आत्मिक सत्यों को समझाते है"।

(2) पवित्र आत्मा चेलों को नये सत्य सिखाएगा।

वह नये सत्य क्यों सिखाएगा? इस वायदे और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बीच ये खास घटनाएँ होगी: मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना, मरने के बाद जी उठना, स्वर्गरोहण, सिंहासन पर बैठना और पवित्र आत्मा का उण्डेला जाना। ये घटनाएं समझाई जानी थी ताकि वे लोग जो पृथ्वी पर रहते हैं इन घटनाओं के महत्व को समझ सकें, खास तौर पर मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान के महत्व को समझें।

(3) प्रेरितों को पवित्र आत्मा की आवश्यकता थी।

यीशु मसीह के प्रेरितों को पवित्र आत्मा की आवयश्कता थी क्योंकि वे मसीह के आँखों देखे और कानों सुने गवाह थे।

- वे उसकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान की शिक्षाओं के अधिकृत गवाह होंगे।
- वे मसीह कलीसिया को यहूदियों, सामरियों तथा गैर यहूदियों में स्थापित करने में उसके यंत्र होंगे।
- वे नये नियम की पुस्तक को लिखने में उसके यंत्र होंगे।
- वे यीशु मसीह की शिक्षाओं के अधिकारिक तौर पर व्याख्या करने वाले होंगे इस तरह प्रथम मसीही मत को स्थापित करेगें।
- वे नये अगुवों (प्राचीन) नयी कलीसिया में नियुक्त करेगें (प्रेरितों 14:23)

(4) आज मसीहियों को पवित्र आत्मा की आवयश्कता है।

वही पवित्र आत्मा है:

- मसीहियों को बाइबल में खुदा(मसीह) का प्रकाशन समझने की शिक्षा देता है। (अनुचित या मनमाना नहीं नये प्रकाशन इच्छा पत्र से मनुष्य के मस्तिष्क में)(यूहन्ना 16:13; 1 यूहन्ना 2:27)।

- मसीहियों को याद दिलाता है कि प्रतिदिन की जीवन की परिस्थितियों में यीशु उनसे क्या चाहता है कि क्या करें।
- मसीहियों को प्यार, बुद्धिमानी, बहादुरी, और पृथ्वी पर यीशु मसीह की गवाही देने की शक्ति देता है।(मत्ती 10:19-20; 2 तीमुथियुस 1:7)।

14:27

प्रश्न 6. "शान्ति" शब्द का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। बाइबल में "शान्ति" शब्द के दो प्रथम अर्थ है।

- नकारात्मक, "शान्ति" का अर्थ है "नष्ट करने वाली बुरी चीजों की अनुपस्थिति" झगड़े, लड़ाई गुस्सा, ज़िद, चिन्ता, डर, दगैत, होने की भावना, नैतिक युद्ध आदि।
- सकारात्मक "शान्ति" का अर्थ है उन चीजों की उपस्थिति जो पहले टूटे हुओं को ठीक कर सकें: टूटे सम्बधों को फिर से ठीक करना, हो चुके उदेश्यों को फिर ले लेगा, चोट पहुँचाई हुई भावनाओं को ठीक करना, उन सारी चीज़ों को प्रदान करना जिन्हें परमेश्वर मसीही जीवन में देना चाहता है।

14:28-29

प्रश्न 7. किस तरह परमेश्वर पिता यीशु से बड़ा है?

ध्यान दें। यीशु कहता है, "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते तो इस बात से आनन्दित होते कि मैं पिता के पास जाता हूँ, क्योंकि पिता मुझ से बड़ा है। और मैं ने अब इसके होने से पहले तुम से कह दिया है, कि जब वह आए तो तुम विश्वास करो। पुराने और नये नियम प्रकट करते हैं कि यीशु मसीह की दो स्पष्ट तथा भिन्न प्रकति है। यीशु मसीह की मानव प्रकति के कारण परमेश्वर पिता यीशु मसीह बड़ा है।

(1) पुराने नियम में यीशु मसीह की मानव प्रकृति।

(यशायाह 740-680 बी.सी.) क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी (यशायाह 9:6; 7:14)।

(2) पुराने नियम में यीशु मसीह की ईश्वरीय प्रकृति।

यशायाह लगातार कहता है "और उसका नाम अद्धभुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा" (यशायाह 9:6) यशायाह 9:6 में यीशु मसीह को पराक्रमी परमेश्वर कहा गया है। (इब्रानी: जाह्वेह), यहोवा जो इस्राएल का पवित्र है उसे "पराक्रमी परमेश्वर" (इब्रानियों:एलगायीबोर) तथा "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" कहा गया है।

(इब्रानी:एडोवाई पाहेवह तशीनाओभ), वह हैं कि प्रभु स्वर्गीय फरिश्तों की सेनाओं का यहोवा है।

(3) यूहन्ना सुसमाचार में यीशु मसीह की मानव प्रकृति।

केवल जब यूहन्ना 14:28 को पूरी बाइबल से अलग करके अनुवाद किया गया तो यह निष्कर्ष निकाला गया कि यीशु मसीह परमेश्वर या सर्वशक्तिमान परमेश्वर नहीं है। यह निष्कर्ष गलत है!

यूहन्ना के सुसमाचार के इस पद के अनुसार इस उल्लेख से यह बात साफ होती है कि यहाँ उसकी बिना पैदा की हुई ईश्वरीय प्रकृति की चर्चा है, लेकिन उसकी पैदा की हुई मानव प्रकृति है। आदमी और परमेश्वर के बीच मध्यथ के अनुसार अपने आप एक मानव है इसलिए उसकी पैदा हुई मानव प्रकृति यीशु मसीह परमेश्वर पिता से कम या उसके अधीन है। जो कि आत्मा हैं और इसलिये जितने पैदा हुए हैं उनसे वह बहुत महान हैं। और यहाँ परमेश्वर पिता की ईश्वरीय प्रकृति को यीशु मसीह की मानव प्रकृति से तुलना करता है जबकि वह एक गड़रिये के रूप में पृथ्वी पर उपस्थित है (यूहन्ना 10:27)।

यूहन्ना 14:28 यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान से पहले के नियम में बताता है कि यीशु मसीह उस समय यीशु उन लोगों के लिए पापों के लिए दुख उठा रहा था और उनके बदल मर गया जो उस पर विश्वास करते हैं। जब यीशु मसीह ने कहा कि परमेश्वर पिता उसको अधिक है तब वह अपने चेलों को तैयार कर रहा था कि वह मरने जा रहा है (मरकुस 8:31; 9:31: 10:32-34)। इस तरह अपने आप को नम्र करने या अपमानित करने की दशा (उसके पैदा होने और मृतकों में से जी उठाना) में यीशु मसीह परमेश्वर के “अधीन” या उससे “कम” था।(फिलिप्पियों 2:6-8)।

(4) यूहन्ना रचित सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह का ईश्वरीय स्वभाव।

यीशु मसीह के मृतकों में से पुनरुत्थान, स्वर्ग पर उठा लिये जाने सिंहासन पर विराजमान होने के बाद वह कभी भी परमेश्वर पिता से कम या उसके अधीन नहीं है। (यशायाह 45:21-23; फिलिप्पियों 2:9-11)। उसे फिर से वही महिमा मिली जो उसके पास मानव प्रकृति को धारण करने से पहले थी (यूहन्ना 17:5)। तन परमेश्वर का स्वर्ग में सिंहासन परमेश्वर *और मेमने का* है (इब्रानियों 1:8; 12:2; प्रकाशितवाक्य 5:6;12:5;22:3)।

लूका 16:8 के अनुसार “संसार के बेटों (ग्रीक: हुईओई)” विचार की अभिव्यक्ति में वे लोग हैं जिनमे पाप की दुनिया के चरित्र है। और “रोशनी के बेटों (ग्रीक: हुईओई)” की अभिव्यक्ति उन लोगों से है जो रोशनी का चरित्र रखते हैं। इसी तरह जब यीशु कहता है “मैं परमेश्वर का बेटा हूँ (ग्रीक: हुईओई)” (यूहन्ना 10:36) वह सच्चाई की अभिव्यक्ति करता है कि वह परमेश्वर होने के सारे कारण (गुण) धारण किये हुए हैं यह कि वह परमेश्वर है। यह कि वह परमेश्वर है। इसलिये यीशु कहता है और मैं पिता में हूँ"(यूहन्ना 10:38)। “जिसने मुझे देखा है उसने पिता को देखा है"(यूहन्ना 14:9)। इसीलिये यूहन्ना का सुसमाचार इन शब्दों से शुरू होता है, “आदि में वचन था और वचन ही परमेश्वर था"(यूहन्ना 1:1)। और “वचन देहधारी हुआ” (यूहन्ना 1:14)। यीशु मसीह के ईश्वरीय महत्वपूर्ण गुणों के कारण वह परमेश्वर की पूरी समानता में हैं।

(5) प्रेरितों की पत्री के अनुसार यीशु मसीह का मानव चरित्र।

पृथ्वी पर एक विशिष्ट रूप मे देह धारण करके परमेश्वर ने यीशु मसीह में मानव प्रकृति को धारण किया, यीशु मसीह केवल अपने आप को मनुष्य ही नहीं बनाया परन्तु सभी मनुष्यों का सेवक भी बनाया (मरकुस 10:45) और खोए हुए लोगों को बचाने के लिये वह मृत्यु का आज्ञाकारी भी हो गया था (फिलिप्पियों 2-7-8)। और दूसरी आगमन पर यीशु मसीह परमेश्वर और मनुष्य के बीच एक मध्यस्थ के रूप में (यह कि मानव प्रकृति का काम है) अपने आप को परमेश्वर पिता के “अधीन” कर देगा ताकि “परमेश्वर ही सबकुछ हो जाये” (1 कुरिन्थियों 15:28)।

(6) प्रेरितों की पत्रियों के अनुसार यीशु मसीह का ईश्वरीय चरित्र।

यीशु मसीह परमेश्वर का स्वरूप है और परमेश्वर के बराबर है। (फिलिप्पियों 2-6)।

यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर की पूर्णता यीशु मसीह में निवास करती है।" (कुलुस्सियों 1:19 "शारीरिक रूप में यीशु मसीह में परमेश्वर की पूर्णता है" (कुलुस्सियों 2:9) "यीशु मसीह में परमेश्वर की महिमा की रोशनी तथा परमेश्वर होने का बिलकुल सही प्रतिनिधित्व है"(इब्रानियों 1:3)।

यीशु मसीह की दो प्रकृति है। जैसा कि परमेश्वर पिता के तुल्य है और जैसा कि मनुष्य (मानव शारीर धारण करने के दौरान) वह परमेश्वर पिता *के अधीन* है। लेकिन उसकी दो प्रकृति कभी अलग नहीं हुई क्योंकि वह कभी परमेश्वर पिता तथा पवित्र आत्मा से अलग नहीं हुआ। मसीहियों को यीशु मसीह में "अदृश्य सर्वशक्तिमान परमेश्वर का दृश्य प्रकटीकरण देखना चाहिये"(कुलुस्सियों 1:15)।

(7) यीशु मसीह परमेश्वर पिता की तरह आदर प्राप्त करता है।

यीशु कहता है "स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है"।(मत्ती 28:18)।

पौलुस कहता है कि परमेश्वर की योजना में पृथ्वी तथा स्वर्ग की सभी चीजें वह मसीह में एकत्र करें (इफिसियों 1:10) और "वह(यीशु) सारे आकाश से ऊपर चढ़ गया कि सब कुछ परिपूर्ण करें"(पूरी तरह परिपूर्ण)(ग्रीक:प्लेरो)(इफिसियों 4:10)। पतरस कहता है कि स्वर्गदूत और अधिकारी तथा सामर्थी उसके अधीन किये गये हैं"(1 पतरस 3:22)।

कोई भी यीशु मसीह को परमेश्वर पिता से कम समझकर उसका निरादर न करें। परमेश्वर ने सारा न्याय करने का काम पुत्र(यीशु मसीह) के अधीन किया है ताकि सब पिता की तरह पुत्र का भी आदर करें।" पुत्र का आदर नहीं करता वह पिता का जिसने उसे भेजा है आदर नहीं करता"(यूहन्ना 5:22-23)!

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?
साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 14:1-31 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।
ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?
लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।
(***याद रखें*** कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 14:1-31 से व्यक्तिगत व्यावहारिक उपयोग के सम्भव उदाहरण।

14:6,9। यीशु मसीह को अच्छे से जानने के द्वारा परमेश्वर पिता को जानें।

14:12। यह विश्वास करें कि यीशु मसीह के पास आपको इस दुनिया में निपुण करने के लिये महान काम है।

14:13। मजबूत बनें तथा प्रार्थना करें ताकि परमेश्वर आपके द्वारा संसार में महान काम कर सकें।

14:21,23। परमेश्वर यीशु मसीह की शिक्षा तथा उसकी आज्ञाएं अपने कर्मों में जायें। तब यीशु मसीह अपने आप को आप के ऊपर प्रगट करेगा और अपना घर आपके साथ बनाएगा।

14:26 पवित्र आत्मा को अनुमति दें ताकि वह आपको यीशु मसीह की शिक्षाओं का महत्व समझा सकें।

2. व्यक्तिगत व्यवहारिक उपयोग के उदाहरण यूहन्ना 14:1-31 से।

मैं इस बात की सच्चाई का आनन्द उठाना चाहता हूँ कि मैं परमेश्वर को जानता हूँ यीशु मसीह में परमेश्वर को जानता हूँ यीशु मसीह ने परमेश्वर पिता तथा उसके उद्धार को रहस्य मुझ पर खोला है। “परमेश्वर को जानने का मतलब मैंने परमेश्वर पिता को मसीह के द्वारा देख लिया है। इसका मतलब है कि मैं आजाद हो गया हूँ और यीशु मसीह के द्वारा पवित्र हो गया हूँ। और इसका मतलब है कि मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेरी हमेशा की संगति हो गयी है। मैंने मसीह को स्वीकार कर लिया है और इसलिए मैं परमेश्वर को देख सकता हूं। मैं यीशु मसीह के द्वारा बाइबल में सत्य का अध्ययन करता हूं और मैं ज्यादा से ज्यादा पाप हो गया हूं। बावजूद मैं यीशु मसीह में बने रहने का प्रयास करता हूं तथा उन्मुक्त होकर परमेश्वर की सहभागिता में रहूँगा।

मैं मसीह पर विश्वास करना तथा उसके महान कामों में सम्मिलत होना चाहता हूँ। *महान कार्य गैर यहूदी राष्ट्रों का परिवर्तन है!* और इन महान कार्यों को मेरी प्रार्थनाओं की आवश्यकता है। यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक(6:4) प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर का वचन तेजी से फैला तथा एक बड़ी संख्या में लोग मसीही विश्वास में आज्ञाकारी बनें। मैं भी परमेश्वर से प्रार्थना करना और परमेश्वर पर यकीन करना चाहता हूँ कि इसी तरह मेरी प्रार्थना के उत्तर में मेरा गाँव, मेरा प्रदेश तथा देश में भी परिवर्तन आ जाएगा।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 14:1-31 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में लगातार प्रार्थना करें। एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. यूहन्ना 14 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इब्रानियां 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4.याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(13) यूहन्ना 13:34-35।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 33

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* इब्रानियों 1-3

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (***या* अपने नोट्स को *पढ़ें***) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (इब्रानियों 1 से 3) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]* (13) यूहन्ना 13:34-35

दो-दो करके **पुनरावलोकन** करें।
(13) यूहन्ना 13:34-35 - मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो : जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम करो।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवकाई]* सलाह देना और निर्णय लेना

परिचय। यह शिक्षा सलाह देने तथा निर्णय लेने हेतु सिद्धान्तों और अभ्यास के सन्दर्भ में है। कृपया प्रश्न पूछें क्योंकि, उन्हें कुछ निर्णयों को लेना है। हम सीखेंगे कि किस प्रकार लोगों को सलाह दी जाये और किस प्रकार उनकी निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने में सहायता की जाये। हम यह भी सीखेगें कि किस प्रकार किसी प्राचीन या मसीही कलीसिया या मसीही संगठन के अगुवे को बोर्ड में या कलीसिया के परिषद् में निर्णन लेना, चुनाव करना और योजना बनानी चाहिए।

निम्नलिखित बातों पर भी गौर करें :

- मैनुएल 7 के परिशिष्ट 10 में “सलाह देने के लिए जानकारियों को इकट्ठा करना”।
- मैनुएल 7 के परिशिष्ट 11 में “उत्तम योजना तैयार करना”।

क. अपने निर्णयों, चुनावों और योजनाओं के सन्दर्भ में सलाह माँगना सीखें

परिचय। किसी मसीही को दूसरों को सलाह देने से पहले दूसरों से सलाह माँगना और उसे अपने जीवन में लागू करना सीखना चाहिए। नीतिवचन में बुद्धि से पूर्ण बहुत सी शिक्षाएँ लिखी गयी हैं। नीचे बताया गया है कि अच्छी सलाह माँगने और उसे ग्रहण करने से आपके जीवन में कौन-से तीन अच्छे प्रभाव

पड़ सकते हैं।

1. एक मसीही जन अच्छा निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने के लिए सलाह माँगता है।

पढ़ें नीतिवचन 15:22

खोजें और चर्चा करें। एक मसीही को सलाह लेना सीखना क्यों चाहिए?

ध्यान दें। एक मसीही को अच्छा निर्णय लेने, चुनाव करने और अच्छी योजना बनाने के लिए सलाह माँगना सीखना चाहिए।

नीतिवचन 15:22 में लिखा है, "बिना सम्मति की कल्पनाएँ निष्फल हुआ करती हैं। परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है।" सभी लोग निर्णय लेते, चुनाव करते और योजना बनाते हैं। लेकिन हर एक जन न अच्छे निर्णय लेते, न अच्छे चुनाव करते और न ही अच्छी योजना बनाते हैं, और ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वे इस विषय पर किसी की सलाह नहीं लेते (अर्थात अनुभवी लोगों, विशेषज्ञों और बुद्धिमान लोगों की सलाह)। वे सोचते हैं कि वे सब कुछ जानते हैं और उन्हें अपने जीवन में किसी की आवश्यकता नहीं है। जबकि, परमेश्वर कहता है कि ऐसे लोगों की युक्ति असफल हो जाएगी। अत: ध्यान दें कि दूसरों के प्रश्न और उनकी सलाह आपको अपने निर्णय, चुनाव और योजना के दूसरे पहलुओं पर विचार करने में सहायता करेगी।

हर एक निर्णय, चुनाव और योजना के कार्यन्वित होने पर उसके परिणाम सामने आते हैं। परिणाम अच्छे या बुरे या फिर आपकी अपेक्षा से पूरी तरह अलग हो सकते हैं। उस निर्णय, चुनाव और योजना के सम्भव परिणामों के बारे में दूसरे व्यक्ति के साथ बैठकर विचार करना, आपकी कुछ हकीकत से जुड़े या सोच विचार कर किये गये चुनाव और बेहतर योजना बनाने में सहायता करेगा।

(1) आत्मिक और नैतिक मामलों में, आपके सलाहकार मसीही होने चाहिए।

एक मसीही होने के नाते आप मसीह की देह का एक हिस्सा हैं और इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि शरीर के दूसरे अंग भी साथ मिलकर बेहतर ढंग से कार्य करें (1 कुरिन्थियों 12:21)। आपको अपने नियुक्त निर्णय, चुनाव और योजना और उनके परिणामों पर विचार करने में सहायता करने के लिए उनके प्रश्नों और उनकी सलाह की ज़रूरत है।

आपके सभी आत्मिक और नैतिक मामलों में, आपके सलाहकार नया जन्म पाये हुए मसीही, आत्मिक रूप में परिपक्व और भक्त होने चाहिए, क्योंकि :

- अविश्वासियों के पास मसीह का मन नहीं होता (1 कुरिन्थियों 2:12-16)
- अपरिपक्व विश्वासी भले और बुरे में अन्तर नहीं पहिचान सकते हैं (इब्रानियों 5:14)
- और परमेश्वर बुराई करने वालों की नहीं सुनता (1 पतरस 3:12)

(2) अन्य मामलों में आपके सलाहकार गैर मसीही विशेषज्ञ हो सकते हैं।

एक मसीही होने के नाते आप अपने समाज का भी एक हिस्सा हैं और यह जरूरी हैं कि समाज के अन्य सदस्य आपके लिए अपनी बेहतर सेवा प्रदान करें। आत्मिक और नैतिक मामलों को छोड़कर बाकि मामलों में आपके सलाहकारों में गैर मसीही भी शामिल होने चाहिए, क्योंकि कई क्षेत्रों में जो महारथ उन्हें हासिल है उसकी आपको बहुतायत से ज़रूरत होती है (जैसे कि, नयी कार खरीदने में)।

आपको बहुत से सलाहकारों या परामर्शदाताओं की सलाह की खोज करनी चाहिए, क्योंकि आपको सही निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने के लिए बहुत से तथ्यों की जानकारी चाहिए होती है, और आपको अपने निर्णय, चुनाव और योजना के साथ-साथ उनके परिणामों पर भी विचार करना ज़रूरी होता है।

जितनी अच्छी तरह से आपके सलाहकार आपको व आपकी परिस्थितियों को जानते हैं, उतनी ही अच्छी सलाह वे आपको दे पाएँगे (नीतिवचन 27:23)।

2. एक मसीही परमेश्वर के साथ और लोगों के साथ अपने सम्बन्ध को मज़बूत बनाने तथा परिस्थितियों में अपनी स्थिति बेहतर करने के लिए सलाह माँगता है।

खोजें और चर्चा करें। निम्नलिखित बाइबल के पदों के आधार पर, एक मसीही को क्यों दूसरों से सलाह माँगना सीखना चाहिए?

(1) आप परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को मज़बूत बनाने के लिए दूसरों से सलाह माँगते हैं।

पढ़ें यशायाह 30:1-2, में लिखा है, "हाय उन पर... जो युक्ति तो करते हैं परन्तु मेरी ओर से नहीं, वाचा तो बाँधते हैं परन्तु मेरी आत्मा के सिखाए नहीं... वे मुझ से पूछे बिना ही जाते हैं।" परमेश्वर चाहता है कि आप परमेश्वर पर निर्भर होकर अपने निर्णयों, चुनावों और योजना को साकार रूप प्रदान करें। परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उससे बूझें या सलाह ले, उसकी आत्मा की अगुवाई में होकर ही दूसरे लोगों से सम्बन्ध बनाएँ और उसकी ही योजना को पूरा करें। परमेश्वर की सलाह पूछने और उसे स्वीकार करने से आपको परमेश्वर की इच्छा और उसके उद्देश्य का पता चलेगा। इससे आपको परमेश्वर के साथ एक मज़बूत सम्बन्ध बनाने में सहायता मिलेगी।

(2) आप दूसरे लोगों के साथ अपने सम्बन्ध को मज़बूत बनाने के लिए दूसरों से सलाह माँगते हैं।

पढ़ें नीतिवचन 19:20-21; 14:22 - नीतिवचन 19:20-21 में लिखा है, "सम्मति को सुन ले, और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अनन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे। मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएँ होती हैं परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है वही स्थिर रहती है।" जो व्यक्ति किसी से सलाह नहीं लेता या सलाह को ग्रहण नहीं करता वह व्यक्ति परमेश्वर की दृष्टि में मूर्ख है। हर एक मसीही को सलाह सुननी चाहिए और निर्देशों को स्वीकार करना चाहिए। नीतिवचन 14:22 में लिखा है, "भली युक्ति निकालने वालों से करूणा और सच्चाई का व्यवहार किया जाता है।" दूसरों से भली युक्ति माँगने और उसे स्वीकार करने से आप बुद्धिमान, विश्वासयोग्य और प्रेम करने वाले बनेंगे। इस प्रकार आपको दूसरों से अच्छा सम्बन्ध बनाने में सहायता मिलेगी।

(3) आप कठिन परिस्थितियों में अपनी स्थिति सुधारने के लिए दूसरों से सलाह माँगते हैं।

पढ़ें नीतिवचन 28:14 - इसमें लिखा है, "जो मनुष्य निरन्तर प्रभु का भय मानता रहता है वह धन्य है; परन्तु जो अपना मन कठोर कर लेता है वह विपत्ति में पड़ता है।" किसी से सलाह माँगने तथा उसे ग्रहण करने के लिए मनुष्य को नम्र होना पड़ता है। जो व्यक्ति सलाह पाकर भी अपने हृदय को कठोर बनाये रखता है, वह निश्चित रूप से परेशानी में पड़ता है। परमेश्वर घमण्ड का सामना करता है (1 पतरस 5:5) और पतन से पहले घमण्ड होता है। आपको अपने हृदय को नम्र, सीखने योग्य और

परमेश्वर का भय मानने वाला बनाना है। जब आप दूसरे मसीहियों द्वारा दी जाने वाली सलाह को सुनते हैं, तो आप ऐसे निर्णय लेने, चुनाव करने और युक्ति बनाने में सक्षम हो जाते हैं जो बाइबल में लिखी परमेश्वर की इच्छा और उसके उद्देश्य पर आधारित होती है। जब आप भली युक्ति की माँग करते और उसे मानते हैं तो आप परेशानियों से बचे रहेंगे। आप मुश्किल परिस्थितियों का सामना करने में अपने आपको ज़्यादा सक्षम महसूस करेंगे।

3. एक मसीही अपने निर्णयों, चुनावों और अपनी योजनाओं के लिए परमेश्वर के सम्मुख ज़िम्मेदार ठहरता है।

पढ़ें 2 कुरिन्थियों 5:10
खोजें और चर्चा करें। एक मसीही को अपने निर्णयों, चुनावों, और अपनी योजनाओं के लिए ज़िम्मेदार होना क्यों सीखना चाहिए?
ध्यान दें। आपको कभी भी दूसरों की सलाह पर ही निर्भर होकर कोई भी निर्णय, चुनाव और योजना को अन्जाम नहीं देना चाहिए। क्योंकि अगर इस दशा में वह निर्णय, चुनाव या योजना असफल हो जाते हैं तो आप अपने सलाहकार को ही दोषी ठहराएँगे। आप किसी भी प्रकार का निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाने के लिए पूरी तरह से ज़िम्मेदार हैं। परमेश्वर आपको ही अपने निर्णय, चुनाव और योजना के लिए ज़िम्मेदार या उत्तरदायी ठहराएगा।

ख. किसी को सलाह देने से पहले तथ्यों या जानकारियों को एकत्रित करना सीखें

किसी को सलाह देने से पहले एक मसीही को, ध्यान देना, सुनना और प्रश्न पूछना सीखना चाहिए। पर्याप्त जानकारी हासिल करने के बाद ही वह किसी को बेहतर सलाह देते हुए लोगों की अच्छा निर्णय लेने में सहायता कर सकता है।
मैनुएल 7 के परिशिष्ट 10 में देखें, “सलाह देने से पहले जानकारी कैसे एकत्रित करें”।

ग. स्वयं अपने निर्णय लेना, चुनाव करना और योजना बनाना सीखें

परिचय। निर्णय लेने में चुनाव करना और योजनाएँ बनाना शामिल होता है। कुछ निर्णयों को बाइबल की स्पष्ट शिक्षाओं पर आधारित होना बहुत ज़रूरी है। उदाहरण के लिए, चोरी न करने और झूठ न बोलने का निर्णय दस आज्ञाओं पर आधारित है। दूसरे निर्णय बाइबल में प्रगट परमेश्वर की बुद्धि पर आधारित होने चाहिए, लेकिन इन्हें पूरा करने के लिए काफी प्रयास की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, विवाह करें या न करें या कौन सी नौकरी करें, बाइबल में नहीं बताया गया है। अन्त में कुछ ऐसे निर्णय हैं जिन्हें हमें उन परिस्थितियों के आधार पर लेना है जिन्हें परमेश्वर ने हर एक जन के लिए अद्भुत ढंग से तैयार कर रखे हैं। इस प्रकार के निर्णयों का सम्बन्ध उन परिस्थितियों में हमारी मनोदशा और प्रतिक्रिया से होता है, परिस्थितियों को चुनने की आज़ादी से नहीं।

1. बाइबल में परमेश्वर के प्रकाशनों को इसलिए दिया गया है कि ताकि परमेश्वर की इच्छा और उसके लक्ष्यों के अनुसार निर्णय लिये जा सकें।

परिचय। जिस किसी चीज़ के बारे में परमेश्वर सोचता है कि वह मसीहियों के लिए ज़रूरी है, उन्हें उसके बारे में जानना, उस पर विश्वास करना, वैसा बनना या वैसा ही करना चाहिए और उसे बाइबल में पहले से ही प्रगट कर दिया गया है। अतः निर्णय लेने, चुनाव करने और परमेश्वर को प्रसन्न करने

वाली योजनाओं को बनाने के लिए, एक मसीही को बाइबल का प्रयोग करना सीखना चाहिए और अपने निर्णयों, चुनावों और योजनाओं को परमेश्वर की प्रगट इच्छाओं पर आधारित करना चाहिए। *परमेश्वर के प्रकाशन में उसकी विशेष और सामान्य शिक्षाएँ (निर्देश) शामिल होती हैं।* ये शिक्षाएँ मिलकर एक ऐसा सीमित ढाँचा तैयार करती हैं जिसके अन्तर्गत रहते हुए एक मसीही को अपने निर्णय लेने, चुनाव करने और योजनाएँ बनानी पड़ती है।

(1) विशेष शिक्षाएँ (परमेश्वर की नैतिक इच्छा)।

सिखाएँ। परमेश्वर की विशेष शिक्षाओं में विशेष आज्ञाएँ, निषेध, और बाइबल की शिक्षाएँ शामिल हैं जिन्हें परमेश्वर की नैतिक इच्छाएँ भी कहा जाता है। ये शिक्षाएँ मसीहियों को बताती हैं कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या सही है और क्या गलत है। परमेश्वर की यह आज्ञा है कि सभी लोगों को इन विशेष आज्ञाओं, निषेध और शिक्षाओं को मानना चाहिए, फिर चाहे उनकी मानवीय प्रवृति, मानवीय सस्कृति, प्राथमिकताएँ, या भावनाएँ कैसी भी क्यों न हों। हर एक मनुष्य को इस बात का चुनाव ज़रूर करना चाहिए कि वह परमेश्वर की आज्ञाओं को मानेगा या नहीं।

कई बार एक मसीही परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना चाहता है, लेकिन वह अनिश्चित होता है कि यह आज्ञा सभी मसीहियों के लिए है या फिर किसी विशेष व्यक्ति के लिए या किसी समूह के लिए है।

विशेष शिक्षाओं के उदाहरण जो सभी मसीहियों के लिए हैं। "तू किसी सूरत या मूरत की पूजा न करना"। "तू खून न करना"। "तू व्यभिचार न करना"। "तू चोरी न करना"। "तू झूठ न बोलना" (निर्गमन 20; तुलना करें लैव्यव्यवस्था 18:6,20,22,23)। "मन फिराओ और सुसमाचार पर विश्वास करो" (मरकुस 1:15)। "मसीह को अपने प्रभु के रूप में ग्रहण करो"। "लगातार मसीह में जीवन व्यतीत करो"। "मसीह में जड़ पकड़ते और बढ़ते चले जाओ" (कुलुस्सियों 2:2-6)। "लोगों को अपने विरूद्ध बुरा करने पर क्षमा करो" (मत्ती 6:14)। "अपने शत्रु से प्रेम करो, जो तुमसे घृणा करते हैं उसके लिए भला करो, जो तुम्हे श्राप दें उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुम्हारा अपमान करे उनके लिए प्रार्थना करो" (लूका 6:27-28)। किसी गैर विश्वासी से विवाह न करो" (2 कुरिन्थियों 6:14)।
इन विशेष शिक्षाओं को परमेश्वर की नैतिक इच्छा भी कहा जाता है।

विशेष शिक्षाओं के वे उदाहरण जो विशेष लोगों या विशेष परिस्थिति में दिये गये हैं। पशुबलि और दशमांस देने की आज्ञाएँ केवल पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को अर्थात् इस्राएल को दी गयी थी (मलाकी 1:1,6-14; 3:6-12), नये नियम में परमेश्वर की निज प्रजा अर्थात् कलीसिया को नहीं। अपनी सारी धन सम्पत्ति को बेचकर गरीबों में बाँटने की आज्ञा केवल उस धनी युवक को दी गयी थी (मरकुस 10:21)। खतना करने की आज्ञा केवल पुराने नियम में ही परमेश्वर के लोगों को दी गयी थी (उत्पत्ति 17:9-14; गलातियों 5:3-4; 6:12-15)। सरकार केवल उन लोगों को मृत्यु दण्ड दे सकती है जिन्होंने जानबूझकर किसी की हत्या की हो (उत्पत्ति 9:6; निर्गमन 21:12; गिनती 35:16-30-33; व्यवस्थाविवरण 19:11-13; न्यायियों 9:24; 2 राजाओं 14:5-6; मत्ती 26:52; रोमियों 13:4)।

इसलिए एक मसीही को बाइबल का सही अर्थ निकालना आना चाहिए। यदि आप बाइबल का मतलब समझना चाहते हैं तो आपको अपने साथ किसी बुद्धिमान और परिपक्व मसीही को शामिल करना चाहिए।

कई बार एक मसीह इस बारे में अनिश्चित होता है कि वह किसी विशेष शिक्षा, आज्ञा या निषेध को अपने व्यवहारिक जीवन में किस प्रकार प्रयोग करे। इसके लिए उसे परमेश्वर के आत्मा से प्रार्थना करनी

चाहिए और सक्षम मसीही जन से सलाह लेनी चाहिए। परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा उसके मन, हृदय और उसके कामों में अगुवाई करेगा (भजन 143:8-10)।

(2) सामान्य शिक्षाएँ (परमेश्वर की बुद्धि)।

पढ़ें भजन 32:8-10; यशायाह 48:17; याकूब 1:5-8

सिखाएँ। सामान्य शिक्षाओं में सारी सामान्य आज्ञाएँ, निषेध और बाइबल की शिक्षाएँ शामिल हैं जिन्हें हम परमेश्वर का ज्ञान या बुद्धि भी कहते हैं। वे मसीहियों को बताती है कि परमेश्वर की दृष्टि में क्या बुद्धिमानी है और क्या मूर्खता है। परमेश्वर मसीहियों को आज्ञा देता है वह भले निर्णयों को लेने, चुनावों को करने और योजनाओं को बनाने के लिए उसके ज्ञान का प्रयोग करें।

कई बार एक मसीही को अपने जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय लेना पड़ता है। उसे बाइबल से कोई निर्देश नहीं मिलता फिर भी उसे दो विकल्पों में से किसी एक का चुनाव करना पड़ता है। इस प्रकार की परिस्थितियों में ही परमेश्वर यह वायदा है कि वह मसीही की सही मार्ग में अगुवाई करेगा। भजन 32:8-10 में, परमेश्वर का यह वायदा है, “मैं तुझे बुद्धि दूँगा, और जिस मार्ग में तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूँगा; मैं तुझ पर कृपा दृष्टि रखूँगा और सम्मत्ति दिया करूँगा।” यशायाह 48:17 में परमेश्वर का यह वायदा है, “मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ जो तुझे तेरे लाभ के लिए शिक्षा देता हूँ और जिस मार्ग से तुझे जाना है उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूँ।” और याकूब 1:5-8 में बाइबल मसीहियों से आग्रह करती है कि वे परमेश्वर से प्रार्थना करें और उससे मिलने वाली बुद्धि माँगें।

ऐसी परिस्थितियों के उदाहरण जिसमें एक निर्णय लिये जाने की ज़रूरत है। हमारे जीवन में ऐसे बहुत से क्षेत्र हैं जिसके लिए परमेश्वर ने कोई सीधी या विशेष आज्ञा या शिक्षा प्रदान नहीं की है। उदाहरण के तौर पर, हम निम्नलिखित प्रश्नों में किस प्रकार परमेश्वर की इच्छा को पा सकते हैं, “मुझे किस शिक्षा को मानना चाहिये?”, “मुझे किस नया जन्म पाये हुए मसीही (विशेष नाम) से विवाह करना चाहिए?” “मुझे यह वस्तु खरीदनी चाहिए या नहीं?” “मुझे किस प्रकार की जीवनशैली को अपनाना चाहिए?”

सामान्य शिक्षाओं (निर्देशों) के उदाहरण। प्रभु का धन्यवाद हो, कि परमेश्वर ने हमें अपनी इच्छा को समझने और सही निर्णय लेने, सही चुनाव करने और उचित योजना बनाने के लिए सामान्य आज्ञाएँ, निषेध व शिक्षाएँ और सिद्धान्त अर्थात् उसका ज्ञान प्रदान किया है जो बाइबल में लिखा है। उदाहरण के लिए :
“और यह परखो, कि प्रभु को क्या भाता है” (इफिसयों 5:10)।
“इसलिए ध्यान से देखो, कि कैसी चाल चलते हो; निर्बुद्धियों के समान नहीं पर बुद्धिमानों के समान चलो (इफिसियों 5:15-16)।
“इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल मिलाप और एक दूसरे का सुधार हो” (रोमियों 14:19)।

बहुत से मामलों में हमें बिल्कुल भी इस बात का पता नहीं होता है कि परमेश्वर को क्या भाता है, इन परिस्थियों में क्या बेहतर रहेगा, वास्तव में अवसर क्या है या कि काम के द्वारा शान्ति और पारस्परिक उन्नति होगी। परमेश्वर सभी लोगों को आज्ञा देते हैं कि वे परमेश्वर द्वारा प्रदान की गयी सामान्य शिक्षाओं के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी उठाएँ। अगर कोई मसीही जन इस बात को लेकर अनिश्चित हो कि किसी विशेष परिस्थिति में उसे परमेश्वर की किस शिक्षा या निर्देश का पालन करना चाहिए, तो उसे निर्णय लेने के लिए परमेश्वर की सामान्य शिक्षाओं और ज्ञान और सलाह

का प्रयोग करना चाहिए। मैनुएल 4 के, 43 अध्याय के परिशिष्ट 18 में "परमेश्वर की इच्छा को खोजना" को देख सकते हैं।

(3) परमेश्वर के ज्ञान का स्रोत।

सिखाएँ। परमेश्वर के ज्ञान के स्रोत निम्नलिखित है :

- ●बाइबल (भजन 119:97-100)
- ●प्रार्थना (याकूब 1:5)
- ●उसके सलाहकार (नीतिवचन 11:14)
- ●अनुसंधान (नहेम्याह 2)

(4) बुद्धि से पूर्ण प्रश्न।

सिखाएँ। परमेश्वर चाहता है कि उससे प्रेम करने वाले मसीही जन, निर्णय लेने के लिए बुद्धि का प्रयोग करें। मसीहियों को अपने विवेक का प्रयोग करने के द्वारा परमेश्वर से प्रेम करना चाहिए (मरकुस 12:30)। उन्हें प्रमाणों को परखना सीखना चाहिए : उदाहरण के लिए :

- ●***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 10:23 - इसमें सिखाया गया है कि बाइबल में जिन-जिन बातों के बारे में मना नहीं किया गया है उन्हें करने की अनुमति प्राप्त है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वे फायदेमन्द या उन्नतिदायक ही हों। इसलिए, मसीही जन को परख लेना चाहिए : "जिन बातों की अनुमति है, उनमें से कितनी लाभदायक व उन्नति करने वाली हैं।"
- ●***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 7:1,9 - इसमें सिखाया गया है कि एक मसीही उन सभी कामों को कर सकता है जिनकी बाइबल में मनाही नहीं है, लेकिन जिन कामों को करने की अनुमति उसे प्राप्त होती है वह सब उचित नहीं (लाभदायक या उन्नति करने वाले) होती। इसलिए एक मसीही को पहले यह परख लेना चाहिए कि : "कौन सी चीज़ों की अनुमति हैं और कौन सी चीज़ें वास्तव में उत्तम हैं?"
- ●***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 7:28,40 - इनमें सिखाया गया है कि जो बातें किसी व्यक्ति को प्रसन्न करती हैं, ज़रूरी नहीं है कि वही बातें किसी दूसरे को भी प्रसन्न करें। इसलिए एक मसीही को परख लेना चाहिए कि : "किन बातों से समस्या उत्पन्न होती है और किनसे प्रसन्नता मिलती है?"
- ●***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 16:4 और 2 कुरिन्थियों 9:5 - इनमें सिखाया गया है कि जिन-जिन कामों को करने की सलाह दी जाती है ज़रूरी नहीं है कि उन सभी कामों को किया जाए। इसलिए एक मसीही को परख लेना चाहिए कि : "किन चीजों की सलाह दी गयी है और उनमें से कोई सी चीज़ वास्तव में ज़रूरी है?"
- ●***पढ़ें*** मत्ती 6:33 - परमेश्वर ने हर मसीही के लिए एक प्राथमिकता को रखा है। इसलिए हर एक मसीही को निर्णय लेना चाहिए कि : "मेरे जीवन की कौन सी प्राथमिकताएँ परमेश्वर को प्रसन्न करेंगी?"
- ●***पढ़ें*** नीतिवचन 16:1-4,7,9,25,33 और रूत 2 - इनमें सिखाया गया है कि एक मसीही को हमेशा महत्वपूर्ण निर्णय लेने, चुनाव करने और योजना बनाते समय परमेश्वर की शिक्षाओं का प्रयोग करना चाहिए। एक मसीही को परख लेना चाहिए कि : "उचित क्या है" (ज़िम्मेदार या उत्तम)?

ईश्वरीय ज्ञान अधिकतर विकल्पों को कम करते हुए किसी एक दिशा की ओर अगुवाई करता है। जब ऐसा होता है, तो वह एक विकल्प या चुनाव परमेश्वर को भाता है। लेकिन एक से ज़्यादा विकल्प समान रूप से उत्तम, और परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहण योग्य प्रतीत होते हैं और मसीही जन उन विकल्पों

में से किसी एक विकल्प चुनने के लिए स्वतन्त्र होते हैं। इस दशा में परमेश्वर अपनी श्रेष्ठता के अनुसार बाकि का फैसला करेगा। परमेश्वर अपने बच्चों को कभी गलत मार्ग पर नहीं जाने देगा।

2. परमेश्वर मसीहियों को स्वयं कुछ विशेष निर्णय लेने की स्वतंत्रता और ज़िम्मेदारी सौंपता है।

सिखाएँ

(1) चुनाव करने की स्वतंत्रता ज़िम्मेदारी और जवाबदेही की माँग करती है।

परमेश्वर ने मनुष्य को एक रोबोट के रूप में नहीं, वरन् अपने स्वरूप में रचा है (उत्पत्ति 1:27)। फिर भी, परमेश्वर ने मनुष्य को हर एक काम के बारे में नहीं बताया है जो उसे करने चाहिए, लेकिन उसने मनुष्य को *आज्ञा* दी है कि वह परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण मन, सम्पूर्ण हृदय और अपने सारे कामों से प्रेम करे। मनुष्य के जीवन के जिन क्षेत्रों के लिए बाइबल में विशेष तौर पर प्रकाशन नहीं दिया गया है उन सभी क्षेत्रों में निर्णय लेने, चुनाव करने के लिए परमेश्वर ने उसे विवेक दिया है, ताकि वह सही निर्णय ले सके। उसने मसीही को एक हृदय और इच्छा प्रदान की है, जिससे वह स्वेच्छा और *पूर्ण हृदय के साथ परमेश्वर की इच्छा* का पालन कर सकता है और उसे करना चाहिए (मरकुस 12:30-31)। उसने मसीही को एक विवेक दिया है (प्रेरितों के काम 24:16; रोमियों 2:15) जिसके द्वारा वह महसूस कर सकता है और उसे महसूस करना चाहिए कि उसके निर्णय ठीक या परमेश्वर को प्रसन्न करने वाले हैं या नहीं। और उसने हर एक *मसीही को देह* इसलिए (रोमियों 6:13,19) प्रदान की है कि वह परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सके और उसे ऐसा करना चाहिए।

अत:, परमेश्वर ने मसीहियों को विशेष निर्णय लेने के लिए केवल *योग्यता व स्वतंत्रता* ही प्रदान नहीं की है, बल्कि वह उन्हें उनके निर्णय और उनके परिणामों के लिए *ज़िम्मेदार और उत्तरदायी* भी ठहरायेगा। एक मसीही अपने द्वारा लिए हुए निर्णयों के लिए किसी दूसरे को दोषी नहीं ठहरा सकता।

परमेश्वर के साथ, स्वतंत्रता हमेशा सीमित होती है! किसी को भी इतनी स्वतंत्रता नहीं है कि वह अपने जीवन में अपनी मन मानी कर सके। परमेश्वर ने बाइबल में हर विषय के लिए विशेष निर्देश दिये हैं ओर हर परिस्थियों के लिए एक सीमा ठहरायी है जिसके दायरे में होकर ही एक मसीही को अपने निर्णय लेने, चुनाव करने और अपनी योजना बनानी पड़ती है। अत: एक मसीही को परमेश्वर के विशेष निर्देशों या बाइबल में दिये गये परमेश्वर की बुद्धि से पूर्ण शिक्षाओं के आधार पर ही अपने निर्णयों को लेना, चुनाव करना और योजनाओं को बनाना है।

(2) परमेश्वर ने मनुष्य को निर्णय लेने की एक अद्भुत आजादी प्रदान की है।

बाइबल की एक महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि, हमारे दैनिक जीवन में जिन ज़्यादातर क्षेत्रों में हम निर्णय लेते, चुनाव करते और योजना बनाते हैं, उनके बारे में परमेश्वर ने हमें कोई विशेष निर्देश नहीं दिया है। परमेश्वर ने मसीहियों को अपने निर्णय लेने की स्वतंत्रता बहुतायत से दी है। ज़मीनी तौर पर यह बहुत "आत्मिक" नज़र आता है, कि एक मसीही अपने जीवन में किसी भी प्रकार के काम को करने से पहले परमेश्वर की अगुवाई की खोज करता है। लेकिन, केवल उन बातों को छोड़ कर जिन बातों पर अत्यधिक बल दिया गया है, जिन बातों की आज्ञा दी गयी या जिनके लिए बाइबल में मना किया गया है, बाकि सारे क्षेत्रों में परमेश्वर चाहते हैं कि मसीही जन अपनी बुद्धि, इच्छा और विवेक का प्रयोग करे। उसने आज्ञा दी है कि : "परमेश्वर को अपने सारे मन से प्रेम करो" (मरकुस 12:30)। उदाहरण के लिए, एक चरवाहा अपनी भेड़ों को चराता है, लेकिन वह इस बात का फैसला नहीं करता कि उसे दिन के किस समय में उसे कौन सी घास खानी चाहिए। दूसरा उदाहरण : यदि परमेश्वर ने आपको

प्रयोग करने के लिए एक घड़ी दी है तो, आप उसका आदर क्या बार-बार परमेश्वर से समय पूछकर करेंगे या फिर अपनी घड़ी में समय देखकर? ठीक इसी प्रकार से परमेश्वर ने आपको प्रयोग करने के लिए बुद्धि, इच्छा और विवेक दिया है।

(3) कई बार, अलग-अलग प्रकार के चुनाव परमेश्वर को प्रसन्न कर सकते हैं।

हो सकता है कि परमेश्वर को पसन्द आने वाला कोई एक विशेष चुनाव न हो, वरन् वह बहुत से चुनावों में से एक विकल्प हो। परमेश्वर को पसन्द आने वाले उन सम्भव चुनावों में से एक चुनाव सही चुनाव ठहर सकता है। एक मसीही जो अपने दैनिक जीवन को मसीह के हाथों में समर्पित नहीं करता वह गलत निर्णय ले सकता है वरन् गलत निर्णय ही लेगा। लेकिन एक मसीही, जिसने अपना जीवन मसीह को समर्पित किया हो, वह मसीह पर भरोसा कर सकता है कि वह कोई गलत निर्णय नहीं लेगा।

(4) कुछ ऐसे क्षेत्र जिसमें परमेश्वर मसीहियों को चुनाव करने की आजादी प्रदान करता है।

- ***पढ़ें*** रोमियों 14:1-5 - एक मसीही निर्णय ले सकता है कि उसे क्या खाना है, बशर्ते उसके खाने से किसी व्यक्ति को किसी प्रकार की ठोकर न लगे। वह जिस दिन को मानना चाहे मनाने के लिए स्वतन्त्र है, लेकिन उसे किसी मूर्तिपूजकों के उत्सव में भागीदारी करने की स्वतंत्रता नहीं है।
- ***पढ़ें*** 1 कुरिन्थियों 7:8-9 - एक मसीही को पूरी तरह से किसी स्त्री से विवाह करने या कुँवारा रहने की पूरी आज़ादी है।
- ***पढ़ें*** 7:39 - एक मसीही किसी भी युवती से विवाह करने के लिए स्वतन्त्र है, बशर्ते वह एक नया जन्म पायी हुई मसीही होनी चाहिए।
- ***पढ़ें*** 2 कुरिन्थियों 9:6-7 - एक मसीही इस बात का निर्णय लेने के लिए स्वतन्त्र है कि वह स्थानीय कलीसिया में परमेश्वर के कार्यों या विश्वव्यापी मिशन कार्य के लिए कितना धन दे।
- ***पढ़ें*** फिलिप्पियों 2:13; प्रेरितों के काम 16:8-10 - मसीह में बने रहने वाले मसीही को, कभी इस बात का भय खाने की ज़रूरत नहीं होती कि वह परमेश्वर की सर्वश्रेष्ठ इच्छा के विरूद्ध कोई निर्णय लेगा। फिलिप्पियों 2:13 और प्रेरितों के काम 16:6-10 बताते हैं कि परमेश्वर अपनी सिद्ध इच्छा और योजना के अनुसार ही मसीही जन के मन में इच्छा और काम करने के प्रभाव को डालता है।

  उत्पत्ति 24 में भी, बाइबल दर्शाती है कि परमेश्वर ने अलग-अलग स्थान पर रहने वाले लोगों की सही समय पर सही निर्णय लेने में किस प्रकार से अगुवाई की।

3. परमेश्वर मसीहियों को निर्णय लेने के लिए बहुतायत से अनुग्रह प्रदान करता है।

परिचय। निर्गमन 34:6-7 में लिखा है, "यहोवा उसके सामने होकर यों प्रचार करता हुआ चला, 'यहोवा, यहोवा ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य, हज़ारों पीढ़ियों तक निरन्तर करूणा करने वाला है परन्तु दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा, वह पितरों के अधर्म का दण्ड उनके बेटों वरन् पोतों और परपोतों को भी देने वाला है'।"

- परमेश्वर मसीहियों की *निर्बलताओं* में धीरजवन्त है।
- परमेश्वर उन लोगों पर दया करता है जो अपने *पापों* और गलत चुनावों और निर्णयों के लिए पश्चाताप करते हैं।
- परमेश्वर मसीही के जीवन में अपनी सिद्ध योजना को पूरा करने के लिए उसके जीवन की हर *परिस्थिति* में उसकी अगुवाई करता है।

(1) अनजाने में लिए गये गलत निर्णय।

अनजाने में गलत निर्णय लिये जाने पर एक मसीही को क्या करना चाहिए? जब किसी मसीही को पता चलता है कि अनजाने में उससे कोई गलती हो गयी है, और विशेष तौर पर जब उसे पता चलता है कि उसके किसी निर्णय से बहुत सी परेशानियाँ उत्पन्न हो गयी हैं तो वह सन्देह और चिन्ता करने लगता है। ऐसे समय पर उसे परमेश्वर की श्रेष्ठता और उसकी देखभाल पर भरोसा करना चाहिए (1 पतरस 5:7)! यदि किसी मसीही को ऐसा लगे कि यह ही परमेश्वर की इच्छा है और वह उस विचार के अनुसार काम करने लगे, लेकिन बाद में उसे पता चले कि उससे चूक हो गयी है, तो उसे परमेश्वर पर भरोसा करते हुए सारी परिस्थिति को परमेश्वर के हाथों में सौंप देना चाहिए। वह स्वयं से व उससे जुड़े सारे परिणामों को संभाल लेगा। एक मसीही को यह जानना ज़रूरी है कि वह सिद्ध या पूर्ण रूप से पवित्र नहीं है और वह अपने जीवन में गलतियाँ करेगा। लेकिन साथ ही साथ उसे यह भी अवश्य विश्वास करना है कि परमेश्वर सिद्ध है और परमेश्वर से प्रेम करने वालों के लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है (रोमियों 8:28)। हो सकता है कि एक मसीही को हमेशा परमेश्वर की सिद्ध इच्छा का पता न हो, लेकिन उसे हमेशा विश्वास के साथ काम करना चाहिए। “क्योंकि बिना विश्वास के परमेश्वर को प्रसन्न करना अनहोना है” (इब्रानियों 11:6)।

(2) जानबूझकर लिए गये गलत निर्णय।

जब कोई मसीही जानबूझकर गलत निर्णय लेता है तो उसे किस प्रकार के परिणामों की अपेक्षा करनी चाहिए? परमेश्वर ने योना को आज्ञा दी थी कि वह जाकर नीनवे के लोगों को परमेश्वर का वचन सुनाएँ (योना 1:2)। लेकिन योना नबी डरा हुआ था इसलिए उसने जानबूझकर किसी दूसरे स्थान में भाग जाने का विचार बनाया, और वह सोचता था कि परमेश्वर उसे वहाँ नहीं पकड़ पाएगा। लेकिन परमेश्वर ने योना से पश्चाताप करवाने के लिए एक बड़ी मछली का प्रयोग किया। जब योना नबी ने पश्चाताप कर लिया तब परमेश्वर ने योना को दोबारा नीनवे जाकर उसके वचन का प्रचार करने का अवसर दिया (योना 3:1-2)।

ठीक इसी तरह से, परमेश्वर आपको वापस लाने के लिए आपके जीवन की अनेक परिस्थितियों का प्रयोग करता है। इससे यह साबित होता है कि परमेश्वर के पास सारे मसीहियों के लिए केवल एक ही योजना नहीं है। परमेश्वर के पास हमेशा दूसरी योजना होती है जो उस परिस्थिति में सबसे अच्छी योजना साबित होती है! जब कोई मसीही परमेश्वर की पहली योजना की अवहेलना करने से पश्चाताप कर लेता है, तो परमेश्वर उस पर तरस खाएगा और उसे क्षमा करेगा (1 यूहन्ना 1:9) और उस पर दया करते हुए उसे अपनी दूसरी योजना प्रदान करेगा जो उसकी पहली योजना के समान ही उत्तम योजना होती है। क्योंकि परमेश्वर की जितनी सन्तानें गम्भीरता के साथ मन फिराकर परमेश्वर की ओर फिर गयी हैं, उनके लिए परमेश्वर के पास तीसरी, चौथी और पांचवीं योजना भी है और वे सभी योजनाएँ सिद्ध योजनाएँ हैं, क्योंकि परमेश्वर क्षमा व प्रेम करने में सिद्ध है (नीतिवचन 24:16)। परमेश्वर ने यह ठान लिया है और कोई भी शक्ति उसे अपनी सन्तानों के लिए तैयार की गयी योजना को पूरा करने से नहीं रोक सकती (यशायाह 14:24,27)।

(3) अनियंत्रित परिस्थितियाँ।

मसीहियों को अपनी व्यक्तिगत परिस्थितियों में परमेश्वर की गुप्त इच्छा का सम्मान कैसे करना चाहिए? केवल परमेश्वर ही अपनी गुप्त इच्छा को जानता है (व्यवस्थाविवरण 29:29)। परमेश्वर परमेश्वर है, और उसके विचार और उसकी गति मनुष्य के विचारों और उसकी गति से उत्तम होती है (यशायाह

55:8-11)। बाइबल में प्रगट परमेश्वर की इच्छा सिद्ध है और वह अपनी योजना को पूरा करता है। लेकिन परमेश्वर की गुप्त इच्छा भी सिद्ध है और इस क्षेत्र में भी परमेश्वर अपनी इच्छा को पूरा करता है! उदाहरण के लिए, परमेश्वर ने हम पर कभी यह प्रगट नहीं किया कि, उसने हमें उस विशेष परिवार और इतिहास के इस विशेष समयकाल में *क्यों* पैदा किया (प्रेरितों के काम 17:16)। उसने कभी हमें यह नहीं बताया कि इस पृथ्वी पर हमारी आयु कितनी होने वाली है (भजन 90:10-12)। उसने हम पर कभी यह प्रगट नहीं किया कि उसने हमें हमारे जीवन की उस विशेष कठिन परिस्थिति से होकर क्योंकि गुज़ारा (रोमियों 5:3-4)। लेकिन परमेश्वर ने हम पर यह ज़रूर प्रगट किया है कि, "उससे प्रेम करने वालों के लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती है, अर्थात् उन्हीं के लिए जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाये गये हैं। परमेश्वर की गुप्त इच्छा अपनी सन्तानों के लिए सिद्ध इच्छा है। इसलिए एक मसीही को निर्णय लेना चाहिए कि वह अपना जीवन परमेश्वर को सौंप दे और यह भरोसा रखे कि परमश्वेर इन सारी विशेष परिस्थितियों में उसके जीवन के लिए अति उत्तम योजना बना रहा है (1 पतरस 5:7)।

4. सामूहिक या संगठनीय निर्णय।

परिचय। कई बार हमें एक सामूहिक निर्णय लेना पड़ता है। इन निर्णयों को भी हमें बाइबल में दी गयी शिक्षाओं और नियमों के दायरे में रहते हुए ही लेना पड़ता है। परमेश्वर ने किसी को भी (चाहे वह मसीही हो या गैर मसीही) यह अधिकार (हक) नहीं दिया है कि वह स्वयं अपने नियम बना सके या बाइबल में लिखी हुई परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध निर्णय ले सके।

मसीहियों में प्राचीनों की सभा (कलीसिया परिषद्) निर्णय लेती है जिसका प्रभाव कलीसिया के सभी सदस्यों पर पड़ता है। बाइबल में, मसीही कलीसिया और मसीही संगठनों की निम्नलिखित जिम्मेदारियों का वर्णन किया गया है :

ध्यान दें।

(1) शिक्षा के क्षेत्र में लिये जाने वाले निर्णय जिन्हें मसीही कलीसियाओं में सिखाया जाता है।

पढ़ें तीतुस 1:9 – परमेश्वर ने मसीहियों को मानवीय विचारों और आचरण के लिए मानचित्र या मार्गदर्शक (मसीही शिक्षाओं और जीवन के लिए) के रूप में बाइबल सौंपी है। कलीसिया का कोई भी सिद्धान्त या उसके विश्वास का अंगीकार, मसीही सिद्धान्तों और जीवन के आधार के रूप में बाइबल की जगह नहीं ले सकता है! हर एक मसीही का यह नियमित कर्तव्य है कि वह बाइबल का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते हुए अपने विश्वास के अंगीकार का मूल्यांकन करे (तीतुस 1:9)।

(2) मसीही कलीसिया या मसीही संगठन में अगुवाई को लेकर लिये जाने वाले निर्णय।

पढ़ें इब्रानियों 13:17; 1 पतरस 5:3; प्रेरितों 5:29; 1 तीमुथियुस 5:20; 3 यूहन्ना 9:11; 1 कुरिन्थियों 5:12-13

मसीही अगुवे की आवश्यक योग्यताएँ। कलीसिया को बाइबल में दी गयी योग्यताओं के आधार पर प्राचीनों या अगुवों को नियुक्त करना चाहिए। कलीसिया अपनी तरफ से कोई ऐसा नियम या योग्यता को जोड़ नहीं सकता जो परमेश्वर द्वारा ठहराये गये नियमों के विरूद्ध हो।

मसीही अगुवे के लिए निर्धारित लक्ष्य। कलीसिया को बाइबल में सिखाये गये लक्ष्यों के आधार पर ही अगुवों के लिए लक्ष्यों को निर्धारित करना चाहिए : कि वह लोगों का चरवाहा हो, वह कलीसिया की

गतिविधियों का संचालक और संपत्ति का भण्डारी हो, वह परमेश्वर के वचनों का शिक्षक हो, और वह लोगों पर अधिकार जताने की बजाय उनकी सेवा करने वाला सेवक हो।

मसीही अगुवों का सीमित अधिकार। मण्डली को प्राचीनों के कार्यों के अधिकारों को भी सीमित कर देना चाहिए, जिसकी माँग बाइबल में की गयी है। मसीहियों को प्राचीनों को दी गयी ज़िम्मेदारी के क्षेत्र में उनका आदर करना चाहिए और उनकी आज्ञाओं को मानना चाहिए (इब्रानियों 13:17)। लेकिन, बाइबल में बतायी गयी ज़िम्मेदारियों के हिसाब से प्राचीनों के कार्यों के अधिकारों को भी सीमित किया गया है। प्राचीनों को उनके हाथों में सौपें गए विश्वासियों पर अधिकार जताने के लिए मना किया गया है (मत्ती 20:25-28; 1 पतरस 5:3)।

मसीही अगुवे अपने आप को "नबी", "एक महायाजक", और "बिशप" इत्यादि नहीं कह सकते। क्योंकि ऐसा करने के द्वारा वे मसीहियों में यह जताने की कोशिश करते हैं कि वे दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। प्राचीनों की पीठ अर्थात् परिषद् में किसी एक व्यक्ति को "याजक", "आदरणीय (रेवरेन्ट)", "पासबान (पास्टर)", "फादर", "सेवक", "अगुवा", "शिक्षक" इत्यादि पद देना उचित नहीं है (मत्ती 23:8-12)।

मसीही लोग कभी भी ऐसे किसी अगुवे के निर्णयों का पालन करने के दबाव में नहीं हैं जो बाइबल में लिखे परमेश्वर के वचनों का खण्डन करते हों (प्रेरितों के काम 4:19; 5:29)। मसीहियों को अपने अगुवों को कभी यह अनुमति नहीं प्रदान करनी चाहिए कि वे उनके निजी जीवन के बारे में कोई निर्णय लें, यह निर्णय लेने का हक़ परमेश्वर को या फिर उन्हें खुद है (उदाहरण के लिए : उन्हें किस कलीसिया की सदस्यता लेनी चाहिए, उन्हें कलीसिया में क्या काम करना चाहिए, उन्हें कितना धन देना चाहिए, किसके साथ उन्हें विवाह करना चाहिए, उनके कितने बच्चे होने चाहिए, उन्हें अपने बच्चों का पालन-पोषण कहाँ और कैसे करना चाहिए इत्यादि)। कोई प्राचीन या मसीही अगुवा एक मसीही के जीवन में पवित्र आत्मा या बाइबल का स्थान नहीं ले सकता।

मसीही अगुवों का अनुशासन और उन्हें हटाया जाना। मसीहियों को परमेश्वर की आज्ञाओं और बाइबल की अवहेलना करने वाले अगुवों को समझाना चाहिए (1 तीमुथियुस 5:20) और यदि ज़रूरत पड़े तो उन्हें उनके पद से हटा देना चाहिए (3 यूहन्ना 9-11; 1 कुरिन्थियों 5:12-13)।

(3) निर्णय-कारी प्रक्रिया और उस प्रक्रिया से जुड़े मसीही नियमों के सम्बन्ध में निर्णय।

प्रक्रिया के नियम। मण्डली को उन चीज़ों या क्षेत्रों को लेकर निर्धारित की जाने वाली प्रक्रिया के लिए कलीसिया में नियम सीमित कर देने चाहिए जिनकी माँग बाइबल में की गयी है। प्राचीन या अगुवे मसीहियों से उनकी स्वतंत्रता और उनकी जिम्मेदारियों को उनसे न छीनें, क्योंकि ऐसा करने से मसीही लोग विधि सम्मत बन जाएँगे। जिसके कारण मसीही अगुवे हाकिम बन जाएँगे और वे हमेशा मसीहियों को आत्मिक तौर पर अपरिपक्व बनाकर रखेंगे। परमेश्वर ने लोगों को चेतावनी दी कि वे "अनुग्रह से जीवन यापन करने को" "व्यवस्था व नियमों के अधीन जीवन व्यतीत" करने से न बदल दें (गलातियों 5:4)। परमेश्वर अधिकार जताने वाले अगुवों को तुच्छ जानता है (मत्ती 29:25-28)।

निणर्यकारी प्रक्रिया। एक मण्डली का संचालन हमेशा एक प्राचीनों की पीठ (परिषद्) के द्वारा होना चाहिए किसी एक अगुवे के द्वारा नहीं, चाहे उस अगुवे को जो कुछ भी कहा जाता हो (1 तीमुथियुस 4:14)। मण्डली के प्राचीन या मसीहियों के संगठन के अगुवों को उनके हाथों में सौंपे गये अगुवों पर अधिकार नहीं जताना चाहिए (1 पतरस 5:3)। क्योंकि कलीसिया में हर साधारण विश्वासी द्वारा लिया

जाने वाला निर्णय कलीसिया का महत्वपूर्ण भाग होता है, जैसे कि किसी नये प्रेरित का चुनाव किया जाना (प्रेरितों के काम 1:15-26) और किसी सेवक (डीकन) का चुनाव करना (प्रेरितों के काम 6:1-7), अत: उन्हें कलीसिया के प्राचीन या पासबान तथा अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों को लिये जाते समय शामिल किया जाना चाहिए। मसीही अगुवों को कलीसिया के सदस्यों को साथ लेकर ही कलीसिया से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों को लेना चाहिए।

अन्य महत्वूपर्ण निर्णयों को मण्डली की सभा आरम्भ होने से पहले ले लेना चाहिए। ऐसे कुछ निर्णयों के उदाहरण हैं : कलीसिया के सैद्धान्तिक अंगीकार से जुड़े निर्णय; कलीसिया के नैतिक आधार या नैतिक अंगीकार से सम्बन्धित निर्णय; पूर्व योजनाओं से सम्बन्धित निर्णय, कलीसिया में गतिविधियाँ और कार्यक्रम; या किसी अपराध करने वाले अगुवे के बारे में निर्णय लेना।

बाइबल आधारित कलीसियाओं में कोई भी निर्णय मत या चुनाव के माध्यम से नहीं किया गया था, परन्तु हर निर्णय का आधार एक तरफ बाइबल की शिक्षाएँ और दूसरी तरफ कलीसिया के सदस्यों की सहमति थी। यदि किसी महत्वपूर्ण मुद्दे पर प्राचीनों और कलीसिया के सदस्यों के बीच सहमति नहीं बन पाती है तो उस निर्णय को स्थगित कर देना चाहिए। इस दशा में कलीसिया को और अधिक अध्ययन करना चाहिए, उस मुद्दे पर अधिक चर्चा करनी चाहिए और उस विषय पर प्रार्थना करते हुए अधिक सलाहकारों को शामिल करना चाहिए (उदाहरण के लिए, शाखा कलीसियाओं से अन्य प्राचीनों को शामिल किया जाना चाहिए), और तब तक चर्चा करनी चाहिए जब तक कि बाइबल के आधार पर कोई आम सहमति न बन जाए। ऐसा होते हुए देखना प्राचीनों की ज़िम्मेदारी है।

घ. लोगों को अपने निर्णय लेना सिखाएँ

1. सलाह देना एक सलाहकार की जिम्मेदारी है, लेकिन निर्णय लेना पूछने वाले की जिम्मेदारी।

सिखाएँ! सवाल पूछने वाले को बाइबल में खोज कर उसकी सहायता करने की बजाय उसे अपनी राय बताने की परीक्षा या चुनौति हमेशा सामने खड़ी हो जाती है। सलाहकार को कभी भी प्रार्थी के बदले कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए! कभी ऐसा न कहें, "अगर मैं तुम्हारी जगह पर होता तो, मैं ऐसा या वैसा करता।" इसलिए हमेशा सलाह माँगने वाले को सिखाएँ कि वह बड़े ध्यान से सलाहकार की बातों को सुनें तथा दूसरी तरफ उसे बताएँ कि निर्णय उसे अपने आप ही लेना होगा।

सलाहकार के द्वारा दी गयी सलाह कभी भी प्रार्थी की तथ्यों को खोजने में सहायता करने और उसे यह समझाने से ज़्यादा और कुछ नहीं होगी कि उस स्थिति में उसके निर्णय लिये जाने का क्या परिणाम होगा।

निर्णय अन्त में निवेदक के द्वारा ही लिया जाना चाहिए। उसे ही अपने द्वारा लिये गये निर्णयों, चुनावों और बनायी गयी योजनाओं और उनके परिणामों का ज़िम्मेदारी भी उठानी चाहिए। सलाह देने वाला कभी निवेदक को यह न बताये कि उसे क्या करना चाहिए, नहीं तो निवेदक उस सुझाव के अच्छे नतीजे न आने पर सलाहकार पर दोष लगाने लगेगा। एक मसीही सलाहकार या परामर्शदाता कभी भी निवेदक और परमेश्वर के बीच में नहीं खड़ा होता। 2 कुरिन्थियों 1:24 में, प्रेरित पौलुस कहता है, "यह नहीं कि हम विश्वास के विषय में तुम पर प्रभुता जताना चाहते हैं; परन्तु तुम्हारे आनन्द में सहायक हैं, क्योंकि तुम विश्वास ही से स्थिर रहते हो।"

2. एक आदर्श बनना सलाहकार की ज़िम्मेदारी है, लेकिन उस आदर्श का अनुसरण करना एक निवेदक की ज़िम्मेदारी।

सिखाएँ। जब कोई सलाहकार निवेदक को बताता है कि उसने समान कठिन परिस्थितियों में क्या निर्णय लिया, चुनाव किया तो यह बात निवेदक के लिए बहुत मददगार साबित होती है। लेकिन, एक सलाहकार के लिए बेहतर यह है कि वह अपने निवेदक को कभी यह न बताए कि उसने उस प्रकार की परिस्थिति में क्या निर्णय लिया या चुनाव किया, क्योंकि वह सलाहकार के उस उदाहरण को परमेश्वर की इच्छा के रूप में ग्रहण कर सकता है। सलाहकार को अपने व्यक्तिगत अनुभव की बजाय बाइबल के हवाले व उदाहरण देते हुए उस निवेदक को प्रोत्साहित करना चाहिए। सलाहकार को निवेदक को अपना निर्णय लेने और उसके हिसाब से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। सलाहकार को निवेदक को यह समझने में सहायता करनी चाहिए कि निवेदक ही लिये जाने वाले सारे निर्णयों और चुनावों, कामों तथा उनके परिणामों के प्रति ज़िम्मेदार होगा।

3. किसी दूसरे सलाहकार की सलाह पर या निवेदक के निर्णय पर कोई टिप्पणी या आपत्ति दर्ज करना सलाहकार की ज़िम्मेदारी नहीं है।

सिखाएँ। अगर किसी दूसरे सलाहकार द्वारा दी जाने वाली सलाह सीधेतौर पर परमेश्वर के वचन अर्थात् बाइबल का खण्डन न करती हो, तो किसी सलाहकार की सलाह की आलोचना नहीं करनी चाहिए। इसके अलावा अगर निवेदक का लिया गया निर्णय या किया गया चुनाव, उसका काम स्पष्टतौर पर बाइबल का विरोध न करता हो तो उसके निर्णय पर किसी प्रकार की कोई टिप्पणी न करें। क्योंकि केवल निवेदक अपने कामों और निर्णयों के लिए परमेश्वर के सामने ज़िम्मेदार और उत्तरदायी है। कभी भी निवेदक की विश्वास के अभाव के लिए आलोचना न करें। परमेश्वर कलीसिया में सभी को एक स्तर का विश्वास नहीं प्रदान करता है। जो मसीही कमज़ोर महसूस करते हैं उल्टा उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए (1 थिस्सुनीकियों 5:14)!

निष्कर्ष। अतः एक सलाहकार का कर्तव्य निवेदक की जितना सम्भव हो सके उतना तथ्यों की खोज करने में सहायता करना, उसे अपने निर्णय लेने और चुनाव करने के लिए प्रोत्साहित करना, तथा प्रतिक्रिया व्यक्त करने व उन कामों के परिणामों की ज़िम्मेदारी लेने में सहायता करना है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बाँटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. “मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देना” पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को – **प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएँ**। यदि आपके पास कोई बच्चा है तो, उसे परमश्वेर के राज्य के सिद्धान्तों के आधार पर शिक्षा प्रदान करना शुरू कर दें जो बाइबल में लिखी हैं।
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। इब्रानियों 4-7** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का प्रयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **याद करें।** नयी पाँच आयतों को याद करें व दोहराएँ। **(14) यूहन्ना 14:6** – रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएँ।
5. **बाइबल अध्ययन। यूहन्ना 15** के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पाँच चरणों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का प्रयोग करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें**। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 34

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 **बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]*

इब्रानियों 4-7

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (इब्रानियों 4-7) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 **याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]*

(14) यूहन्ना 14:6

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(14) यूहन्ना 14:6। मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता।

4 **बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]*

यूहन्ना 15:1-27

परिचय। यूहन्ना 15:1-27 का एक साथ मिलकर अध्ययन करने के लिए पाचं चरण के तरीके का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 14-17 में यीशु की प्रार्थनाएं और प्रभु भोज पर उसके साथ होने वाली घटनाएं शामिल हैं। यूहन्ना 15 में, *यीशु ने* अपने चेलों को शिष्यता के विषय पर *प्रोत्साहित किया।* एक शिष्य की विशेषताएं हैं: मसीह में लगातार बने रहना, परमेश्वर के वचनों को अधिकाई से लगातार अपने में बसने देना, प्रार्थना करना, एक दूसरे से प्रेम करना, उसकी आज्ञाओं को सुनना और संसार में जाकर फल लाना और संसार भर में उसके गवाह बनना।

दाखलता और उसकी फलदायी डालियों **के रूपक।** यीशु के सताये जाने और उसके क्रूसीकरण से कुछ समय पहले ही उसने अपने चेलों से विश्वास में मजबूत बने रहने और फल लाने का आग्रह किया! इस्राएल में “दाखलता” अपने आप में फलदायी होने का एक प्रतीक है (भजन 80:9-16; यशायाह 5:1-7; यिर्मयाह 2:21; यहेजकेल 17:1-10; योएल 2:22; जर्कयाह 8:12; मलाकी 3:11)।

यीशु ने अपने चेलों के साथ अन्तिम फसह के भोज के दौरान प्रभु भोज की शुरूआत की और बहुत स्पष्ट रूप से दाख के फल के बारे में बताया (मत्ती 26:26-30, मरकुस 14:22-26; लूका 22:14-20)। अत: यह सम्भव है कि यीशु ने उन्हें दाखलता व उसकी डालियों के बारे में शिक्षा या निर्देश प्रभु भोज की संस्थापना को मन में रखते हुए दी हो। यीशु चाहते थे कि उसके चेले उस प्रभु भोज में इस्तेमाल किये गये प्रतीकों से आगे देख सकें: अर्थात रोटी का तोड़ा जाना और दाखरस का पिया जाना, और वास्तविकता को समझे: अर्थात यीशु मसीह में बने रहना और फल लाने वाली डालियां बनना।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 15:1-27 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगें)

15:4

खोज 1. प्रत्येक मसीही के तीन महत्वपूर्ण कर्तव्य।

यीशु ने तीन आज्ञाओं को इस्तेमाल किया: "मुझमें बने रहो" और "एक दूसरे से प्रेम करो" और "तुम्हें उसका साक्षी बनाना चाहिए"। ये तीन आज्ञाएं अध्याय 15 को तीन भागों में बांटती हैं और उन तीन महत्वपूर्ण बातों को सिखाती हैं जो हर एक विश्वासी कर सकता है:

- मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाना
- एक दूसरे के साथ प्रेम-व्यवहार को बनाये रखना
- सारे संसार में मसीह के साक्षी बनना।

(1) यूहन्ना 15:1-11। मसीह में बने रहें।

पद 4 में लिखा है, "मसीह में बने रहो" और 9 वचन में लिखा है कि, "मसीह के प्रेम में बने रहो"। लेकिन पद 5 कहता है, "मसीह हम में बना रहता है" और 7 पद बताता है "मसीह के वचन हम में बने रहते हैं"। मसीह मेरे लिए प्रेम में बने रहना सम्भव बनाते हैं, क्योंकि वह स्वयं मुझमें बने रहते हैं और उसका वचन मुझमें। लेकिन वह *पहले* मुझसे बात करना और अपने मुझ पर अपने प्रेम को प्रगट करना चाहता है, इसलिए मेरी यह जिम्मेदारी है कि मैं उसके साथ अपना व्यक्तिगत रिश्ता बना कर रखूं और उसके वचनों और उसके प्रेम का आदर करूं।

(2) यूहन्ना 15:12-17। एक दूसरे से प्रेम करो।
पद 13 में लिखा है कि "दूसरों से प्रेम करने" का अर्थ हर एक दिन दूसरों के लिए जीवन व्यतीत करना है। इस अर्थ दूसरों पर अपना समय खर्च करना, प्रयास करना और अपनी सम्पत्ति को दूसरे के लिए इस्तेमाल करना ताकि वे मेरे द्वारा परमेश्वर के प्रेम का अनुभव कर सकें। ये दो आज्ञाएं कभी अलग नहीं की जा सकती। पद 10 में लिखा है कि यदि मैं उसकी आज्ञाओं को मानता हूँ,, तो मैं उसके प्रेम में बना रहता हूँ। पद 14 में लिखा है कि यदि मैं वास्तव में मसीही की आज्ञाओं का पालन करता हूँ, तो मैं सच में उसका मित्र हूँ। इस अनुच्छेद से मैंने जो सबक सीखा है वह यह है कि मसीह से मेरा सम्बन्ध और मसीही भाई बहनों से मेरे सम्बन्ध को कभी अलग नहीं किया जा सकता। मसीह को प्रेम करने का अर्थ मेरे भाई बहनों को प्रेम करना है। और अगर मैं अपने भाई बहनों को प्रेम नहीं करता हूँ तो इसका अर्थ है कि मुझे मसीह से भी प्रेम नहीं है। "मसीह के प्रेम में बने रहना" और "एक दूसरे को प्रेम करना" दोनों अखण्ड हैं!

(3) यूहन्ना 15:18-27। मसीह के साक्षी बनें।
यीशु स्पष्ट रूप से अपने चेलों को आदेश दे रहे हैं कि वे संसार भर में जाकर उसकी गवाही दें। चेले ऐसा कर सकते थे, क्योंकि वे मसीह के ज़मीनी जीवनकाल में उसके साथ थे और क्योंकि पवित्र आत्मा उनके भीतर वास करने वाला था। ठीक इसी प्रकार से, पवित्र आत्मा मसीहियों को इस्तेमाल करके लोगों को गवाही देगा कि मसीह कौन है, उसने क्या किया, और लोग उसके साथ किस प्रकार एक व्यक्तिगत सम्बन्ध बना कर उद्धार पा सकते हैं।

15:5

खोज 2. स्वीकार करना कि यीशु मसीह के बिना एक मसीही कुछ भी नहीं कर सकता है।

यह कहता है, "जो मुझ में बना रहता है और मैं उस में, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।" मैं परमेश्वर के लिए फल लाने वाला जन बनना चाहता हूँ। यह वचन मुझे बताता है कि यह केवल तब ही सम्भव हो सकता है जब मैं उसमें बना रहूं और वह मुझ में। सच्चाई तो यह है कि बिना यीशु मसीह के मैं कुछ भी ऐसा काम नहीं कर सकता जिसका प्रभाव अनन्त तक बना रहे।

कई बार यह सत्य मुझे डरा देता है क्योंकि मैं एक अति सक्रिय मसीही हूँ। अब मैं अपने आप से प्रश्न करता हूँ, क्या मेरे सारे काम परमेश्वर की अनन्ता के लिए फल उत्पन्न करते हैं। मैं एक दिन अपने बारे में यह नहीं सुनना चाहता कि मैं जीवन भर परमेश्वर के कामों के लिए सक्रिय रहा, लेकिन मैंने परमेश्वर के लिए कोई उत्पन्न नहीं किया।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**
ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?
आईये यूहन्ना 15:1-27 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।
लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।
साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)
चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)
(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

15:1
प्रश्न 1. यूहन्ना 15:1-17 क्या है? क्या यह एक खरी शिक्षा है? क्या यह एक दृष्टान्त है? या फिर यह एक लाक्षणिक खण्ड है?

ध्यान दें।

एक खरी शिक्षा। बाइबल में खरी शिक्षा का एक उदारहण यूहन्ना 14:15-27 है। एक दृष्टान्त का उदाहरण लूका 10:30-35 है। और बाइबल में एक का उदाहरण यूहन्ना 10:1-16 और यूहन्ना 15:1-17 है।

एक दृष्टान्त में केवल एक ही मुख्य अनुच्छेद होता है। उदारहण के लिए, भले सामरी के दृष्टान्त में,प्रश्न यह नहीं है कि “मेरा पड़ोसी कौन है?” वरन “मैं किसके लिए एक पड़ोसी के समान हूँ?” और उसका मुख्य संदेश है: “आप जिस पर दया प्रगट करते हैं उसी के पड़ोसी हैं।”

एक रूपक विभिन्न बिन्दुओं पर एक *विस्तृत तुलना* होती है। उदारहण के लिए, इस तुलनात्मक खण्ड में “किसान” परमेश्वर को दर्शाता है, “दाखलता” यीशु मसीह को दर्शाती है, और “जिन दाखलताओं का यीशु मसीह के साथ जीवित समबन्ध होता है वे फल लाती हैं।” वे सच्चे मसीहियों को दर्शाती हैं। “जिन डालियों का यीशु मसीह के साथ जीवित या घनिष्ट सम्बन्ध नहीं होता वे कोई फल नहीं लातीं” जो नामधारी मसीहियों या गैर मसीहियों को प्रगट करती हैं। सच्चें मसीही हमेशा फल लाते हैं। लेकिन गैर मसीही या नामधारी मसीही यीशु से जुड़े होने के बावजूद अर्थात वर्षों से किसी कलीसियाई संगठन से जुड़े होने के बावजूद कोई फल नहीं लाते। क्योंकि “दाखलता” और “डालियां” लोगों को प्रदर्शित करती हैं, वे सबसे पहले तो नया जन्म पाये हुए लोगों, परिपक्व और सक्रिय मसीहियों और प्रभावशाली लोगों को दर्शाती हैं।

रूपक यह नही बताता है कि यीशु मसीह अंगूर से लदी हुई डालियों के साथ दाखलता है। यह तुलना दर्शाती है कि यीशु और लोगों के सम्बन्ध की तुलना दाखलता और उसकी डालियों और उसके फलों से की जा सकती है। हमें तुलना करते समय हर एक प्रतीक को अलग अर्थ के साथ प्रगट करने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

15:2 फल के बारे में प्रश्न।
प्रश्न 2. हम किसान द्वारा क्रूरता के साथ डालियों के काटे जाने का अभिप्राय समझाते हैं?

ध्यान दें। किसान परमेश्वर पिता का दर्शाता है। पद 2 में वह डालियों (विश्वासियों को) को छांटता है। वह पुराने स्वभाव और बुरी आदतों को काटता है, ताकि विश्वासी गण ज्यादा फल ला सकें। वह छटांई वर्तमान काल में “शुद्धिकरण” को प्रगट करती है।

लेकिन पद 6 में वह उन डालियों को काटता है जिनसे कभी कोई फल उत्पन्न नहीं हुआ (गैर-मसीही, नामधारी मसीही) और उन्हें जलाने के लिए भटटी में डाल देता है। 6 पद में काटा जाना यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर होने वाले अन्तिम न्याय को दर्शाता है(मत्ती 3:10,12)

15:2
प्रश्न 3. “फल” का वह कैसा स्वभाव है जिसे हम मसीहियों को धारण करना चाहिए?

ध्यान दें। बाइबल में “फल” के बहुत अलग अलग मायने हैं।

- कुलुस्यों 1:6 में सुसमाचार प्रचार करने वालों के द्वारा उत्पन्न किये गये फल नये विश्वासियों को दर्शाते हैं।
- यूहन्ना 15:16 में "बने रहने वाला फल" उन लोगों के द्वारा पैदा होते हैं जो उनकी परिपक्व और सक्रिय मसीही बनने तथा पुरानी जीवन शैली में फिर से वापस जाने से बचाने में मदद करते हैं, जो नये मसीही शिष्यों को दर्शाते हैं।
- लूका 3:8 में "पश्चाताप के संदर्भ में फल" भले कामों, अर्थात सच्चे पश्चाताप के फल को प्रदर्शित करते हैं।
- गलातियों 5:22-23 "आत्मा के फल" उस मसीही चरित्र को दर्शाते हैं जो पवित्र आत्मा मसीहियों में उत्पन्न करता है।

15:4
प्रश्न 4. फल लाने वाले लोग कौन हैं?

ध्यान दें। यूहन्ना 15:4 में लिखा है, "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते। फल लाने वाले वे लोग हैं जो यीशु मसीह के करीब आते, उसे अपने जीवन और अपने हृदय में स्वीकार करते और लगातार उससे बातचीत करते रहते हैं। मसीह के उनमें बने रहने के कारण, वे सावधान,प्रयत्नशील और फल लाने के लिए दृढ़ रहते हैं।

15:5
प्रश्न 5. विश्वासयोग्यता का क्या स्तर होना चाहिए?

ध्यान दें।

मसीहियों से *बहुतायत का फल* लाने की अपेक्षा की जाती है (15:5,8)। इसी कारण से परमेश्वर उन्हें छांटता है (यूहन्ना 15:2)। छांटना डांटने, सुधारने, अनुशासित करने और कठिनाईयों के द्वारा आकार देने को दर्शाता है। मसीहियों से *बने रहने वाले फल* लाने की भी अपेक्षा की जाती है (यूहन्ना 15:16)। इसलिए वे नये मसीहियों को मसीह का चेला (परिपक्व, सक्रिय और दृढ़) बनने में सहायता करते हैं (मत्ती 20:19-20)। वे उन्हें पुरानी जीवन शैली में फिर से वापस जाने से बचाने में उनकी मदद करते हैं।

कुछ मसीही लोग 100 गुना, कुछ 60 गुना और कुछ 30 गुना फल लाते है (मत्ती 13:23)। कुछ मसीहियों के दूसरों की तुलना में ज्यादा फल लाने के पीछे निम्नलिखित कारण हो सकते हैं:

- कुछ मसीही परमेश्वर के वचन को प्रतिउत्तर देने में ज्यादा धीरजवन्त, भरोसेमन्द, वफादार और प्रयत्नशील, साहसी और नम्र होते हैं।
- दूसरे मसीही अन्यों की तुलना में सुसमाचार प्रचार करने तथा चेला बनाने में ज्यादा माहिर होते हैं।
- या परमेश्वर ने उन्हें अलग व्यक्तित्व, अलग आत्मिक वरदान और अलग परिस्थितियां प्रदान की होती हैं। जिसका दाता और न्यायी दोनों ही केवल परमेश्वर होता है।

15:6

प्रश्न 6. फल न लाने वाले लोग कौन होते हैं?

ध्यान दें। यूहन्ना 15:1-17 में एक एलर्जी दी गयी है, जो अपने आप में एक विस्तृत तुलना है। इसमें ऐसा नहीं कहा गया है कि यीशु मसीह एक अगूंरों से लदी डालियों वाली दाखलता है। इसका अर्थ है कि यीशु मसीह और लोगों के जीवन के बीच किसी भी क्षण के सम्बन्ध की दाखलता और उसकी डालियों से की जा सकती है। लेकिन हमें हर एक चिन्ह की व्याख्या करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। जो डालियां फल लाती हैं वे सच्चे विश्वासी हैं।

लेकिन, जो डालियां फल नहीं लातीं वे उन लोगों को नहीं दर्शातीं जो पहले तो नया जन्म पाये हुए थे और फिर वे मसीही विश्वास से दूर हो गये। तुलना स्पष्ट तौर पर सिखाती है कि जिन डालियों को काटकर आग में डाला जाता है, वे उन लोगों को दर्शाती हैं जो अपने जीवन में कभी फल नहीं लाए, तब भी नहीं जब उनका रिश्ता मसीह के साथ करीबी था। वे कभी भी सच्चे मसीही नहीं थे (नया जन्म पाए) और उनका "मसीह के साथ सम्बन्ध" नज़दीक होने पर भी सिर्फ एक दिखावा था। निष्कर्ष यह हुआ कि यह रूपक हमें यह नहीं सिखाता है कि नया जीवन पाया हुआ मसीही अपना उद्धार फिर से खो सकता है।

रूपक हमें सिखाता है कि नामधारी मसीही सच्चे मसीहियों के साथ एक ही कलीसिया में रह सका है (मत्ती 13:24-30,36-43), लेकिन सच्चा मसीही तो फल उत्पन्न करता है जबकि नामधारी मसीही फलरहित ही रहता है। नामधारी मसीही मसीह के करीब तो आता है लेकिन उसे स्वीकार नहीं करता। मसीह के साथ उनका रिश्ता केवल दिखावटी, परम्परागत और सांस्कृतिक होता है। हो सकता है कि वे मसीही धर्म और गतिविधियों के भागी हों, लेकिन मसीह के उनके भीतर न रहने के कारण, वे अनन्त प्रभाव वाले फल नहीं लाते।

यीशु मसीह उसके साथ नज़दीकी रिश्ता बनाने वाले मसीहियों में से हर एक को जिम्मेदारी सौपते हैं: लेकिन यदि वह परमेश्वर के वचन और प्राप्त प्रकाश को अस्विकार कर देता है तो, परमेश्वर उस व्यक्ति के जीवन में आगे को कोई काम नहीं करते।

- पवित्र आत्मा उसके साथ वाद विवाद करता न रहेगा (उत्पत्ति 6:3)
- उसका विवेक उसे आगे को गर्म नहीं रखेगा (रोमियों 2:15; 1 तीमुथीयुस 1:19-20)
- उसका हृदय कठोर हो जाएगा (मत्ती 13:14-15)
- वह लगातार केवल ऊँट कटारे ही उत्पन्न करता है (इब्रानियों 4:7-8)
- अन्तत:, उसे नरक में डाल दिया जाएगा (मत्ती 3:10,12)।

15:7 मसीह में बने लोगों के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 7. मसीह में बने रहने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। यीशु ने कहा, "मुझ में बने रहो" (यूहन्ना 15:5) और "यदि मेरे वचन तुम में बने रहे..." (यूहन्ना 15:7)। मसीह में बने रहने का अर्थ मसीह के वचनों में बने रहना है। यीशु यह भी कहते हैं, "मेरे प्रेम में बने रहो, ... मेरी आज्ञाओं का पालन करो" (यूहन्ना 15:9-10)। यहां पर मसीह में बने रहने का अर्थ मसीह की आज्ञाओं को पालन करना है।

हालांकि मसीह अपने शब्दों को मसीहियों से बोलने और उन से प्रेम करने वालों में पहला है, लेकिन यह मसीहियों की *जिम्मेदारी* है कि वे उसके प्रेम और उसकी बातों या उपदेशों का सही रीति से प्रतिउत्तर दें। उसे मसीह के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाने और मसीह की आज्ञाओं को मानने का प्रयास करते रहना चाहिए। मसीहियों को मसीह से अपने सारे मन सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति से प्रेम करने का और मसीह की शिक्षाओं का पालन करने का प्रयास करना चाहिए। यदि कोई जन ऐसा सोचे कि वह मसीही है और मसीह को न प्रेम करे और न ही उसकी आज्ञाओं का पालन करे, तो वह जल्द ही सूखी डाली बनने के खतरे में है जिसे जल्द ही तुच्छ जानकर आग में डाल दिया जाएगा।

15:3 परमेश्वर के वचनों से जुड़े प्रश्न।

प्रश्न 8. मसीहियों के जीवन में मसीह के वचनों का क्या काम है?

ध्यान दें। मसीह का वचन मसीहियों को शुद्ध करता है। यूहन्न 15:3 के अनुसार, यीशु मसीह का वचन विश्वासियों को उनके पापों से शुद्ध करता है। इसका अर्थ है कि मसीसी लोग उसी घड़ी धर्मी ठहर जाते हैं, जब वे बाइबल से सहमत होकर यीशु मसीह पर तथा उद्धार के निमित्त उसके द्वारा किये गये कामों को पहली बार स्वीकार करते हैं।

15:7

प्रश्न 9. मसीह के वचनों के प्रति मसीही जन की क्या जिम्मेदारी है?

ध्यान दें। मसीहियों की जिम्मेदारी यह है कि मसीह का कलाम उसके विवेक और विचारों, उसके लक्ष्यों और इच्छाओं, उसके स्वभाव और भावनाओं और उसकी बोलचाल व व्यवहार को प्रभावित व नियन्त्रित करता है।
मसीहियों की जिम्मेदारी है कि वह बाइबल के साथ कुछ करे (अर्थात सुने, पढ़े, अध्ययन करे, मनन करे, स्मरण करे, इस्तेमाल करे और दूसरों को सिखाए)(यूहन्ना 8:31-32)
मसीहियों की जिम्मदारी होती है कि बाइबल उसमें कोई काम करे, अर्थात उसके जीवन में कोई बदलाव करे(अर्थात उसके विचारों, निर्णयों,लक्ष्यों, इच्छाओं, वचनों,कामों/व्यवहारों को)(यूहन्ना 15:7)

15:7 प्रार्थना के विषय में प्रश्न।

प्रश्न 10. मसीह के वचनों और प्रार्थना में क्या है?

ध्यान दें। यूहन्ना 15:7 में हम पढ़ते हैं कि, "यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें, तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिए हो जाएगा।" जब कोई मसीही मसीह के वचनों को अपने मन, विचारों, उद्देश्यों और कामों को नियन्त्रित व प्रभावित करने देगा, तो उसकी प्रार्थनाएं जरूर प्रभावशाली होगी। वह कभी मसीह के वचनों के विरूद्ध कुछ नहीं मागेंगा इसलिए उसकी ज्यादातर प्रार्थनाओं का जवाब मिलेगा। प्रार्थना के सम्बन्ध में यह एक बड़ी प्रतिज्ञा है।

15:16

प्रश्न 11. प्रार्थना और फल लाने के बीच में क्या रिश्ता है?

ध्यान दें। यूहन्ना 15:16 में हम पढ़ते हैं, "तुम ने मुझे नहीं चुना परन्तु मैं ने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ; और तुम्हारा फल बना रहे, कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से मांगो, वह

तुम्हें दे।” एक सच्चा मसीही फलों के लिए प्रार्थना करेगा और अपनी प्रार्थनाओं के अनुसार फल उत्पन्न भी करेगा। जब मसीह हम मसीहियों को संसार में जाकर फल लाने के लिए भेजता है, तो हम मसीहियों को महसूस हो जाता है कि हम यह काम केवल मसीह की शक्ति, ज्ञान और उसके प्रेम में ही यह काम कर सकते हैं। इसलिए हम मसीही लोग दूसरों के पास जाने की आज्ञा का पालन करने के लिए परमेश्वर से साहस, शक्ति और बुद्धि प्रेम के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि हम उन लोगों को अनन्त तक बने रहने वाले फल बनने में सहायता कर सकें। इसके अलावा मसीह प्रार्थना के सन्दर्भ में एक सुन्दर प्रतिज्ञा भी करता है कि, जब कोई मसीही बने रहने वाले फल के लिए प्रार्थना यीशु मसीह के नाम से करता है तो उसकी प्रार्थना के अनुसार उसे उत्तर मिल जाता है।

15:9,12 संगति से संबन्धित प्रश्न ।

प्रश्न 12. मसीही किस प्रकार से एक दूसरे को प्रेम कर सकते हैं?

ध्यान दें! यूहन्ना 15:1-11 में लिखा है, “मसीह और उसके प्रेम में बने रहो!” और पद 12-17 में लिखा है कि, “एक दूसरे को प्रेम करो!” इसलिए यह स्पष्ट हो जाता है कि मसीही लोग एक दूसरे को केवल तभी प्रेम कर सकते हैं जब वे मसीह और उसके प्रेम में बने रहते हैं। मसीही लोग जब मसीह के साथ व्यक्तिगत रिश्ता बनाने का प्रयत्न ओर मसीही की शिक्षाओं नियमित तौर पर पालन करने का प्रयास करते हैं तो ही मसीह उन्हें एक दूसरे को प्रेम करने की योग्यता प्रदान करेगा। मरकुस 12:30 में मसीह, मसीहियों को परमेश्वर से प्रेम करने तथा अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करने की आज्ञा देता है। लेकिन रोमियों 5:5 में वह मसीहियों के हृदयों में यह प्रेम पवित्र आत्मा की सहायता से डालता है। जब परमेश्वर मसीहियों को आदेश देता है, तो वह उन्हें उन आदेशों का पालन करने की ताकत भी प्रदान करता है! वह प्रेम करने की आज्ञा देता हैं तो साथ साथ प्रेम करने के लिए प्रेम भी देता है!

15:13

प्रश्न 13. पद 13 में बड़े प्रेम का क्या अभिप्राय है?

ध्यान दें! यूहन्ना 15:12-13 में हम पढ़ते हैं, “मेरी आज्ञा यह है कि जैसा मैंने तुम से प्रेम रखा, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्रों के लिए अपना प्राण दे।” सबसे बड़ा प्रेम वह प्रेम है जो अपने मित्रों के लिए अपने प्राण को देने के लिए भी तैयार हो जाए। इस महान या बढ़े प्रेम के दो पहलू हैं: हमारे पापों के लिए प्रायश्यित के रूप में उसकी मृत्यु अनोखी है और उसकी बराबरी किसी सूरत में नहीं की जा सकती है, लेकिन त्याग भावना के रूप में उसकी मृत्यु को देखते हुए हम भी ऐसा करने का प्रयास कर सकते हैं।

मसीह ने हमारे पापों के लिए क्रूस पर एक प्रायश्चित के रूप में अपनी जान दी। उसने हमारे पापों के लिए प्रायश्चित किया, अर्थात उसने हमारे पापों को दण्ड चुका दिया और हमारे प्रति परमेश्वर के पवित्र क्रोध को शान्त कर दिया। इस तरह का “बड़ा प्रेम” कोई और नहीं कर सकता है। हम दूसरों के पापों के लिए कभी नहीं मर सकते हैं।

लेकिन इसके साथ साथ यह प्रेम निःस्वार्थ प्रेम भी था, यह प्रेम त्यागपूर्ण प्रेम था, इस प्रेम ने हमें लाभ पहुंचाया और वह उत्तम इन्सान बनाया जो हम बन सकते थे! मसीहियों को निःस्वार्थ प्रेम, त्यागपूर्ण प्रेम और

उस प्रेम के द्वारा एक दूसरे को प्रेम करना चाहिए जिससे वे परमेश्वर व मनुष्यों के लिए सबसे बेहतर जन बन सकें।

15:14 आज्ञाकारिता के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 14. आज्ञाकारिता और प्रेम के बीच में क्या रिश्ता है?

ध्यान दें। व्यवहारिक तौर पर मसीह, मसीह के प्रेम और मसीह के साथ मित्रता में बने रहने का एकमात्र तरीका उसके वचनों को पालन करना है। लेकिन हमारा आज्ञा मानना पहले नहीं आता है। "तुम ने मुझे नहीं चुना, वरन मैं ने तुम्हें चुना है (यूहन्ना 15:16)। मसीह ने पहले हम से प्रेम किया और हमारे लिए मरा। फिर मसीह ने किसी को सुसमाचार सुनाने के लिए हमारे पास भेजा। और जब हमने उस पर विश्वास किया, तब मसीह ने अपना पवित्र आत्मा और उसका प्रेम हमारे हृदयों में उण्डेल दिया (रोमियों 5:5)। हमारे हृदयों में मसीह का प्रेम होने पर हम मसीही के वचन का पालन कर सकते हैं। लेकिन उसके वचनों का पालन करके, वह हमारे मनों में अपने प्रति अधिक प्रेम को उत्पन्न करता है (यूहन्ना 14:21,23) और इस तरह से अन्य और बेहतर प्रेम चक्र का प्रारम्भ हो जाता है। अत: हमारे हृदयों में उण्डेला गया मसीह का प्रेम हमें मसीह को अधिक प्रेम करने के लिए प्रेरित करता है। हमारी आज्ञाकारिता के कारण मसीह हमारे हृदयों में और ज्यादा प्रेम को उण्डेलता है। उसके लिए हमारा बड़ा प्रेम हमें उसकी आज्ञाओं को ज्यादा मानने के लिए प्रेरित करता है। और यह सिलसिला चलता रहता है।

15:18 संसार के बारे में प्रश्न।

प्रश्न 15. "संसार" कौन है?

ध्यान दें। "संसार" शब्द की व्याख्या हो यूहन्ना 1:10 में देखें। "संसार" यहां पर शैतान का कार्य क्षेत्र,दुष्ट लोगों और सस्थानों (राजनैतिक, सैन्य, सामाजिक, न्यायिक, धार्मिक) जो यीशु मसीह और उसके राज्य का विरोध करते हैं।

प्रेरितों के प्रारम्भिक दिनों में इस बुरे "संसार" को उन यहूदियों और उनके धार्मिक व राजनैतिक नेताओं द्वारा दर्शाया गया है जो परमेश्वर की निन्दा की, जिन्होंने यीशु को मसीह मानने से इनकार किया और जिन्होंने मसीही कलीसियाओं को सताया। इसलिए यीशु ने कहा कि यह बुरा "संसार" मसीहियों को अराधनालयों (उनके एकत्र होने का स्थान) से बाहर निकाल देगें और उन्हें मार देगें(यूहन्ना 16:2)। लेकिन जल्द ही यह "संसार" धरती के सारे देशों में रहने वाले ऐसे लोगों का संग्रह होगा, जो यीशु का इनकार करते और मसीहीयों को सताते हैं

15:18

प्रश्न 16. संसार मसीहियों कसे इतनी नफरत क्यों करता है?

ध्यान दें। संसार मसीहियों से इसलिए इतनी नफरत करता है क्योंकि मसीही इस संसार में तो हैं (यूहन्ना 17:11) लेकिन इस संसार के नहीं है (यूहन्ना 17:14)। संसार मसीहियों को इसलिए नफरत करता है क्योंकि उसने पहले यीशु मसीह को भी नफरत की है! यीशु मसीह ने मसीहियों को संसार से बाहर निकालकर और अपने ज्योति के राज्य में प्रवेश करवाने के द्वारा चुना है (कुलुस्सियों 1:13)। मसीही अब ने बुरा करना चाहते, न बुराई को माफ करते और न ही बुराई को नज़रअन्दाज करते हैं। मसीही लोग अपने बुराईयो से पश्चाताप करते, बुराई के खिलाफ प्रचार करते, बुराई का पर्दाफाश करते और उसके (अन्याय) खिलाफ लड़ते हैं। और यह बुरा संसार उसकी बुराई का विरोध करने के कारण मसीहियों से नफरत करता है। संसार अपने पापों के कारण दोषी है, क्योंकि मसीह के वचनों और उसके कार्यो ने स्पष्ट तौर पर सच्चे

परमेश्वर, अर्थात बाइबल के परमेश्वर, और उसकी आज्ञाओं को प्रगट कर दिया है (यूहन्ना 15:22)। संसार के लोगों ने ज्योति को देखा और उसकी बातों को सुना परन्तु भी उनका ह्रदय कठोर बना रहा। इसलिए उनके पास उनके पापों और उनकी नफरत के लिए कोई बहाना नहीं बचा है। "हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था कि आधीन हैं: इसलिए कि हर एक मुह बन्द किया जाए, और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड योग्य ठहरे।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 15:1-27 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।
(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 15:1-27 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदारहण।

15:2। परमेश्वर की उलाहना और उसके सुझाव को अपने जीवन को शुद्ध बनाने और अधिक फलदायी होने के एक तरीके के रूप में ग्रहण करें।
15:5। हर एक दिन मसीह के साथ घनिष्ठ और व्यक्तिगत रिश्ता बना कर रखें। वह आपको बहुतायत से फल लाने में मदद करेगा।
15:7। परमेश्वर के वचनों को अपने विचारों और व्यवहार, आपके स्वभाव और लक्ष्यों को प्रभावित करने और आपको बदलने के लिए अनुमति प्रदान करें।
15:9-10। मसीह के लिए सच्चा प्रेम आपको मसीह की शिक्षाओं और आज्ञाओं का पालन करने में सहायता करता है। और मसीह के प्रति आज्ञाकारिता मसीह के प्रति बड़ा प्रेम करने के लिए अगुवाई करती है। अत: मन लगाकर मसीह की आज्ञाओं का पालन करने के द्वारा, आपका प्रेम बढ़ता चला जाए।
15:13। विचार करके देखे कि आप मसीह और धरती पर उसके लक्ष्यों के लिए अपन जीवन दे सकते हैं।
15:16। ध्यान रखें कि मसीह ने आपको चुना और आपको ठहराया है कि आप जाकर उसके लिए स्थिर फल लाएं।
15:21-23। अगर संसार आपसे नफरत करता है तो हैरान न हों, क्योंकि उसने परमेश्वर और मसीह और ज्योति और सत्य से भी नफरत की है।

2. यूहन्ना 15:1-27 से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं परमेश्वर से प्रार्थना कर रहा हूँ कि वह मुझ पर अनुग्रह करे कि मैं उसके साथ अधिक से अधिक व्यक्तिगत सम्बन्ध बना सकूं। मैं पर्याप्त मात्रा में रोज अपना समय वचन पढ़ने तथा इस बात पर मनन करने

में खर्च करना चाहता हूँ कि मैं कैसे उसकी आज्ञाओं का पालन कर सकता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि मसीह की आज्ञा पालन करना आपकी मसीह को अधिक प्रेम करने तथा उसके लिए अधिक फल लाने में मदद करेगा।

मैं प्रभु से उसके अनुग्रह के लिए प्रार्थना कर रहा हूँ ताकि मैं उसके लिए अधिक फल और स्थिर फल ला सकूं। मसीह ने मुझे बचाया और मुझे अपनी दाखलता की एक डाली बनाया है। उसका जीवन पवित्र आत्मा की सहायता से मुझमें होकर बहता है और मेरी फल लाने में मदद करता है। मैं ज्यादा से ज्यादा फल लाना चाहता हूँ। मैं बने रहने वाला फल लाना चाहता हूँ। इसलिए मैं उसके वचनों को मानकर, प्रार्थना करके और उसकी अन्य सन्तानों को प्रेम करके मसीह के साथ अपना रिश्ता मज़बूत करते रहना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 15:1-27 **में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।** (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(समूह के अगुवे। समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण। चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 15 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इब्रानियों** 8-10 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(15) यूहन्ना 15:5।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें। जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 35

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने से सम्बन्धित इस पाठ्यक्रम को प्रार्थना के साथ परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 बाँटना (20 मिनट) *[शान्त समय]* इब्रानियों 8-10

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (***या* अपने नोट्स को पढ़ें**) कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (इब्रानियों 8 से 9) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 याद करना (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]* (15) यूहन्ना 15:5

दो दो करके *पुनरावलोकन करें।*
(2) यूहन्ना 15:5। मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

4 शिक्षा (85 मिनट) *[कलीसिया निर्माणकारी सेवाकाई]* आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना

निम्नलिखित शिक्षाएं पवित्र आत्मा के बारे में हैं।
मैनुएल 2, अध्याय 21। पवित्र आत्मा का स्वभाव, लोगों और कलीसिया में उसके कार्य।
मैनुएल 2, परिशिष्ट 9। पवित्र आत्मा क्लेश के बीच में भी मसीहियों को सुरक्षित रखता है।
मैनुएल 4, अध्याय 45। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा से भरा जाना और पवित्र आत्मा के फल।
मैनुएल 7, अध्याय 35। पवित्र आत्मा के आत्मिक वरदान।
मैनुएल 7 परिशिष्ट 12। अन्य आत्मिक वरदान।

क. पवित्र आत्मा का स्वरूप व उसके वरदान

1. आत्मिक वरदानों का स्वरूप।

(1) विशेष योग्यता या कार्य।

एक आत्मिक वरदान (ग्रीकः करिश्मा) ऐसी विशेष योग्यता (कौशल) क्षमता (कार्य, महारथ) जो परमेश्वर अपने अपने अनुग्रह या अपनी श्रेष्ठ इच्छा से किसी को देता है (1 पतरस 4:10; 1 कुरिन्थियों 12:4-6,11)। यह *मसीहियों के जीवन में एक साधारण व असाधारण गतिविधि है।* यह मसीहियों के कौशल या प्रवीणता का परिणाम नहीं है। यह तो *परमेश्वर के अनुग्रह का प्रगटीकरण है* जो मसीहीयों के विभिन्न कामों के द्वारा प्रगट होता है।

(2) परमेश्वर की शक्ति और बुद्धि का प्रगटीकरण।

एक आत्मिक वरदान हमेशा मसीहियों में परमेश्वर की शक्ति, बुद्धि और ज्ञान का प्रकाशन (प्रकटीकरण) है (1 कुरिन्थियों 12:7) और यह अनेक स्वरूपों में और अलग अलग प्रकार की सेवा में (सामान्य और आधिकारिक रूप में) प्रगट होते हैं (परमेश्वर की सामर्थ्य और बुद्धि का प्रभाव)।

(3) एक सीमित वरदान।

एक आत्मिक वरदान हमेशा सीमित वरदान होता है; उसकी कोई न कोई हद तय होती है "मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है (इफिसियों 4:7)। न तो किसी को सारे वरदान मिलते हैं और न ही किसी को किसी एक क्षेत्र में लिए ऐसा वरदान मिलता है (1 कुरिन्थियों 12:29-30) कि वह उस क्षेत्र के सारे काम अकेला कर सके (इफिसियों 4:7)।

2. अनेकों तरह के आत्मिक वरदान।

पढ़ें रोमियों 12:4-8, 1 कुरिन्थियों 7:1,7; 12:7-10,28-30; 14:6,26; इफिसियों 4:11; 1 पतरस 4:10-11।

(1) नये नियम में दिये गये आत्मिक वरदान।

नये नियम में करीब पच्चीस आत्मिक वरदानों के बारे में बताता है (जिसमें आधिकारिक वरदान भी शामिल हैं)। और वे वरदान हैं: भविष्यवाणी *और भविष्यद्वक्ता,* सेवा करना, शिक्षा देना *और शिक्षक,* प्रोत्साहित करना, लोगों की जरूरतों को पूरा करना या दान देना, अगुवाई, दया करना, संयम रखने का वरदान, बुद्धि का वचन, ज्ञान का वचन, विश्वास, चंगा करने का वरदान, सामर्थ्य का काम करने का वरदान, आत्माओं की परख, अन्यान्य भाषाएं, अन्यान्य भाषाओं का अनुवाद, *प्रेरित,* सहायक, प्रशासनिक वरदान, प्रकाशन, मार्गदशर्न करने वाले, भजनकार, *प्रचारक, पास्टर, शिक्षक* और बोलने वाले।

ध्यान दें कि इनमें से कुछ वरदान महज *योग्यताएं* (कौशल, क्षमताएं) ही नहीं हैं, वरन ये *कार्यालय* (कार्य, नियुक्त अधिकार) हैं। प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षकों ने आत्मिक वरदान प्राप्त किया है, लेकिन इसमें विशेष बात यह नहीं है कि उनके किसी *विशेष क्षेत्र में काम करने की योग्यता (कौशल) है,* वरन उन्हें ऐसा करने का *विशेष कार्यालय(अधिकार, नियुक्ति)* भी प्राप्त है।

यह सत्य नहीं है कि कलीसिया के प्रथम काल में कलीसिया के संचालन किसी कलीसिया कार्यालय के बिना केवल आत्मा के द्वारा संचालित हो रहा था। यरूशलेम की प्रारम्भिक कलीसिया में प्रेरित प्राचीनों (30 ई.प. प्रेरितों 2:42 और 4:33 में, 30-34 ई.प. प्रेरितों 8:1 में, 62-63 ई.प 1 पतरस 5:1 में) और डीकनों के रूप में (30 ई.प. प्रेरितों 4:34-35 में) इफिसियों 4:12 में आत्मिक वरदानों के रूप में दिये गये अधिकारों को अपने लक्ष्यों को प्राचीनों की पीठ की अगुवाई में होकर अपने काम करना चाहिए (प्रेरितों 20:17,28 और 1 पतरस 5:1-2)।

आत्मिक वरदानों की सूची में वे वरदान भी शामिल हैं जिन्हें कलीसिया की भलाई के लिए किया जाता है। कई आत्मिक वरदान अपने स्वरूप में *साधारण और कुछ अति असाधारण* होते हैं। ये सारे काम उन विशेष वरदानों के द्वारा किये जा सकते हैं (शिक्षा, रोमियों 12:7), लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है - इन सभी कामों को बिना आत्मिक वरदान पाये हुए भी किया जा सकता है (शिक्षा, मत्ती 28:20, कुलुस्सियों 3:16)। जो पौलुस यहां पर कहना चाहता है वह यह है कि सभी कामों और लक्ष्यों को पूरा करने के लिए आत्मिक वरदानों या किसी विशेष वरदान की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि कलीसिया में तो बहुत तरह के काम पाये जाते हैं!

(2) आत्मिक वरदानों की सूची थकाने वाली नहीं है।

इनमें से कुछ सूचियां एक समान वरदानों की चर्चा करती हैं, लेकिन इनमें से कोई सूची थकाने के लिए नहीं बनायी गयी है। कुरिन्थियों की पत्री में उस समय के लोगों के लिए और विशेष करके वहां की स्थानीय कलीसिया के लिए आत्मिक वरदानों का जिक्र किया गया है, जबकि रोमियों को लिखी पत्री में लिखे गये *वरदान महत्वपूर्ण हैं और उनके बारे में सभी कलीसियाओं को बताना चाहिए।*

(3) जिन आत्मिक वरदानों को सूची में शामिल नहीं किया गया।

इन भिन्न सूचियों का आशय यह है कि इनके अलावा और भी हैं, जिन्हें इस सूची में शामिल नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए, रचनात्मक और संगीत बजाने का वरदान (निर्गमन 28:3;31:1-6; 35:10,25,35; 36:1; भजन 33:2-3; 45:1; 78:72)।

इसके अलावा हर एक आत्मिक वरदान में अपने आपको प्रदर्शित करने के बहुत से तरीके हैं। उदारहण के तौर पर, शिक्षा देने के बहुत प्रकार के वरदान हैं, जैसे कि वचन द्वारा, या दृष्टान्तों द्वारा, या नाटक द्वारा सिखाने का वरदान, और विभिन्न प्रकार के लोगों के समूहों को शिक्षा देने का वरदान जैस व्यस्कों, बच्चों, दिव्यांगों का समूह इत्यादि। शिक्षा देने वाले इन वरदानों में विशेष योग्यताएं शामिल हो भी सकती हैं और नहीं भी। इन सभी वरदानों की कोई न कोई हद तय होती है(इफिसियों 4:7)।

3. आत्मिक वरदानों को प्राप्त करने वाले लोग।

(1) "प्रत्येक" शब्द का अर्थ कई बार विश्वव्यापक होता है।

"प्रत्येक" शब्द (ग्रीक: हेकास्तोस) का अर्थ ज्यादातर विश्वव्यापी होता है अर्थात "हर एक वह इन्सान हो आज तक धरती पर पैदा हुआ है" (रोमियों 2:6) या "आज तक धरती पर पैदा होने वाला मसीही" (प्रेरितों के काम 2:38; रोमियों 12:3; 14:12)। इसलिए कई मसीही विश्वास करते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7:7, 12:7, 14:26 और 1 पतरस 4:10 में पाया जाने वाला "प्रत्येक" शब्द सिखाता या बताता है कि "हर एक मसीही ने" आत्मिक वरदान पाया है।

(2) "प्रत्येक" शब्द का कई बार सीमित अर्थ होता है।

बाइबल में "प्रत्येक" शब्द हमेशा विश्वव्यापी अर्थ नहीं होता है अर्थात "धरती पर पैदा होने वाला हर व्यक्ति"। उदाहरण के तौर पर, "हर एक कपटी" (लूका 13:15), "भीड़ में हर एक जन" (यूहन्ना 6:7), "हर सैनिक" (यूहन्ना 19:23) और "प्रत्येक जरूरतमन्द मसीही" (प्रेरितों 4:35)। इसलिए अन्य मसीही लोग मानते हैं कि 1 कुरिन्थियों 7:7, 12:7, 14:26 और 1 पतरस 4:10 में पाया जाने वाला "प्रत्येक" शब्द का अर्थ हमेशा विश्वव्यापी नहीं होता।

इसके अलावा, जब कभी बाइबल "बिना किसी अपवाद के एक-एक व्यक्ति पर" ज़ोर देना चाहती है तो, वह "हर एक" (ग्रीक: इक हिकास्टोस या हेन हेकास्टोस) का इस्तेमाल करती है (प्रेरितों 20:31; 1 थिस्लुनिकियों 2:11)। इसलिए 1 कुरिन्थियों 7:7, 12:7, 14:26 और 1 पतरस 4:10 में पाया जाने वाला "प्रत्येक" शब्द का सीमित अर्थ *"इस सन्दर्भ में दर्शाया गया प्रत्येक मसीही"* हो सकता है। (रोमियों 5:17-19 में दिये गये शब्द "सभी" की तुलना करो)। इसलिए "प्रत्येक" शब्द का अर्थ बहुत सीमित हो सकता है अर्थात "मसीह की देह में प्रत्येक मसीही जिसे पवित्र आत्मा ने कोई काम करने का अधिकार, अधिकार या साधारण या असाधारण योग्यता (आत्मिक वरदान) प्रदान की है"(1 कुरिन्थियों 12:11,28-30)। इसलिए ऐसा कहना सही नहीं होगा कि पवित्र आत्मा ने हर एक मसीही को एक आत्मिक वरदान जरूर दिया है।

4. अनुग्रह और प्रेम, आत्मिक वरदानों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं।

(1) अनुग्रह आत्मिक वरदानों से बढ़कर है।

इफिसियों 4:7 में लिखा हैं कि "पर हम में से हर एक (मसीही) (ग्रीक: हेनी दे हेकास्तो) को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह (कृपा, करिश्मा = आत्मिक वरदान) मिला है। इसका अर्थ है परमेश्वर का अनुग्रह आत्मिक वरदान से भी बढ़कर है। हर एक मसीह को अनुग्रह प्राप्त हैं, लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हर एक मसीही को एक आत्मिक वरदान प्रदान किया गया है। हर एक मसीही को मसीह के दान के परिणाम के अनुसार अनुग्रह मिला है, जो हो सकता है कि वह किसी काम की शुरूआत करने की ईश्वरीय *कौशल* (1 कुरिन्थियों 3:10), कठिन परिश्रम करने के लिए ईश्वरीय *शक्ति* (1 कुरिन्थियों 15:10), दुर्बलता में *साहस* (2 कुरिन्थियों 12:9) या अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार करने की ईश्वरीय *योग्यता* (गलातियों 2:9) हो। और बहुत से मसीहियों को एक आत्मिक वरदान (ईश्वरीय कौशल या क्षमता) प्राप्त होता है (इफिसियों 4:11; 1 पतरस 4:10-11)।

(2) प्रेम किसी आत्मिक वरदान से बढ़कर है।

1 कुरिन्थियों 12:31क की 31ख से तुलना करने पर, पौलुस प्रेम के मार्ग को सर्वश्रेष्ठ मार्ग बताता है, वह कहता है कि प्रेम का मार्ग किसी भी आत्मिक वरदान से बढ़कर है। एक मसीह अगर किसी वरदान को हासिल करने का प्रयास करता है तो उसे कलीसिया की उन्नति करने के लिए आत्मिक वरदान हासिल करने का प्रयास करना चाहिए, उदाहरण के तौर पर भविष्यद्वाणी (परमेश्वर के वचन की घोषणा करना)। *लेकिन हर एक मसीही को बिना अपवाद के प्रेम करना चाहिए!* अत: निष्कर्ष यह निकलता है कि यद्यपि कलीसिया में कुछ वरदानों की कमी हो सकती है लेकिन प्रेम की कोई कमी नहीं होनी चाहिए! जबकि साधारण और असाधारण आत्मिक वरदान कुछ ही चुने हुए लोगों को दिये गये हैं, वही पवित्र आत्मा के वरदान के रूप में प्रेम बिना अपवाद के सभी को दिया गया है (रोमियों 5:5; तीतुस 3:5-6)। इसलिए प्रेम आत्मिक वरदान से बढ़कर है!

(3) आत्मिक जन होना केवल आत्मिक वरदानों को धारण करने से बढ़कर है।

आत्मिक वरदान (ग्रीक: करिश्मा) प्राप्त करने से कोई इन्सान ज़्यादा आत्मिक नहीं हो जाता! कुरिन्थियों की कलीसिया में लगभग सभी साधारण व असाधारण आत्मिक वरदान मौजूद थे, लेकिन फिर भी वे, "गैर-आत्मिक, सांसारिक और अपरिपक्व बने रहे" (1 कुरिन्थियों 1:7; 3:1)। वास्तव में "आत्मिक" होने की विशेषताएं निम्नलिखित हैं: आत्मिक परिपक्वता (1 कुरिन्थियों 3:1-4) और पवित्र आत्मा के फल उत्पन्न करना (गलातियों 5:22-24)। कुरिन्थियों की कलीयिसा को लिखे पहले पत्र सबसे महत्वपूर्ण शिक्षा

यह है कि हर एक मसीही जो कुछ उसके पास है इस्तेमाल करे और इस तरह से उसका इस्तेमाल करें जिससे परमेश्वर को महिमा मिले (1 कुरिन्थियों 10:31),केवल वे ही काम करें जिससे दूसरों की उन्नित हो (1 कुरिन्थियों 10:23) और किसी को ठोकर न पहुंचाए (1 कुरिन्थियों 10:32)।

5. आत्मिक वरदानों का उद्देश्य।

आत्मिक वरदानों के चार मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

- एक दूसरे की सेवा करना (1 पतरस 4:10-11)
- कलीसिया का निर्माण करना (1 कुरिन्थियों 12:7; 14:12)
- सेंवा करने के लिए मसीहियों को तैयार करना (इफिसियों 4:12)
- अन्त में सारी बातों के लिए परमेश्वर को महिमा देना (1पतरस 4:11)!

ख. खोजना, ग्रहण करना, स्वीकार करना और आत्मिक वरदानों को निर्धारित करना

1. आत्मिक वरदानों की खोज करना।

1 कुरिन्थियों 14:1 में पौलुस उन सभी विश्वासियों से आग्रह करता है जिन्हें पवित्र आत्मा ने अद्‌भुत तरीके से आत्मिक वरदान प्रदान किये हैं (1 कुरिन्थियों 12:11,28-30): “प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की धुन में रहो, विशेषकर के यह कि भविष्यद्वाणी करो।”

किस प्रकार के वरदानों की विश्वासियों ने (जिनके पास पहले से आत्मिक वरदान हैं) खोज या इच्छा करनी चाहिए?

कुरिन्थियों की मण्डली में तीन मुद्दे बहुत जरूरी थे: किसी विशेष वरदान प्राप्त करनी की इच्छा में परिवर्तन; लगातार प्रेम के मार्ग का अनुकरण करते रहना; और अपनी उन्नति से बढ़कर दूसरे की उन्नति की चाह करना।

(1) कुरिन्थियों की कलीसिया के सदस्यों को अपनी इच्छाओं को बदलने की जरूरत थी।

1 कुरिन्थियों अध्याय 12 से 14 में, प्रेरित पौलुस अन्यान्य भाषा में बोलने के वरदान का अनुचित ढंग से इस्तेमाल करने का विरोध करता है। कुरिन्थियों की मण्डली (1 कुरिन्थियों 12:27) अन्यान्य भाषा में बोलने का बहुत अधिक सम्मान दिया करते थे, इसी कारण से ऐसी आशा की जाती थी कि अन्यान्य भाषा में बोलने का वरदान बहुतायत से दिया जाएगा। इस “इच्छा” को बदलने की आवश्यकता है। इस विचार को बदलने की आवश्यकता है क्योंकि अन्यान्य भाषा में बोले जाने को अन्य वरदानों से अधिक महत्वपूर्ण ठहराना गलत है।

आत्मिक वरदानों के बीच फरक को परमेश्वर के वचन के आधार पर निर्धारित करना चाहिए, कुरिन्थियों की कलीसिया के आधार पर नहीं। दोनो बार पौलुस ने वरदानों सूची में पौलुस ने अन्यान्य भाषा में बात करने को सबसे नीचा स्थान दिया है। और 1 कुरिन्थियों 14:1-3,19 में उसने भविष्यद्वाणी को सर्वोच्च स्थान दिया (स्पष्ट शब्दों में परमेश्वर के वचन को बोलना)। कुरिन्थियों में, जिन्हें पवित्र आत्मा ने भविष्यद्वाणी करने का वरदान दिया है, उसे मन से स्पष्ट शब्दों में ज्ञानवर्धक बातों की उदघोषणा करनी चाहिए।

सन्दर्भ (1 कुरिन्थियों 12:28-30 और 14:1-3) हमें मना करता है कि हम 1 कुरिन्थियों 12:31 में दी गयी सलाह को इस तरह से न देखें कि वह प्रत्येक कुरिन्थ वासी को आत्मिक वरदान पाने की धुन में लगा रहने के लिए कह रहा है। जिन कुरिन्थ वासियों को पवित्र आत्मा द्वारा उसके सर्वश्रेष्ठ तरीके से आत्मिक वरदान दिया गया है (1 कुरिन्थियों 12:11) अन्यान्य भाषा में कुछ न समझ आने वाले आत्मिक वरदान की बजाय उनमें समझ के साथ परमेश्वर के वचनों को बताने का वरदान (भविष्यवाणी) पाने की धुन (Greek: zeloó) होनी चाहिए। यहां तक कि पौलुस उन्हें एक ऐसा मार्ग भी सुझाता है जो आत्मिक वरदान प्राप्त करने से भी उत्तम है: अर्थात प्रेम और वह मसीहियों को लगातार प्रेम (1 कुरिन्थियों 12:31ख-14:1) का अनुसरण करने (Greek: diókó) की आज्ञा देता है (वह यह आज्ञा नियमित काल में देता है)। वह वास्तव में यह कहना चाहता है कि प्रेम सारे आत्मिक वरदानों से भी बढ़कर है! खास तौर पर प्रेम लोगों की उन्नति करता है!

(2) कुरिन्थियों की कलीसिया के सदस्यों को सर्वोत्तम मार्ग का अनुकरण करना चाहिए।

"अनुकरण करना" (ग्रीक: डियोकेटे 14:1) शब्द "धुन में रहना" (ग्रीक: ज़िलौट 12:31; 14:1) से ज्यादा वज़नदार शब्द है, और ये दोनो ही आज्ञाएं नियमित काल में दी गयी है। "अनुकरण करना" *कभी न खत्म होने वाले काम को* दर्शाता है, जबकि "धुन में लगे रहना" कार्य की नियमितता के बजाय उसकी *गहनता* पर ज़ोर डालता है। 1 कुरिन्थियों 14 में जिन श्रोताओं को सम्बोधित किया गया है वे सब वे मसीही हैं जिन्हें पवित्र आत्मा ने वरदान दिये हैं। 1 कुरिन्थियों 13 उस प्रेम के बारे में बात करता है जिसका अनुकरण सारे मसीहियों को हर समय करना चाहिए, जबकि 1 कुरिन्थियों 14:2-3 भविष्यद्वाणी और अन्यान्य भाषा के बारे में चर्चा करता है *जिसका वरदान कुछ ही मसीहियों को प्राप्त है।* अत: सार यह निकाला जा सकता है कि "अनुकरण करना" सारी मण्डली के लिए आज्ञा या आदेश है, जबकि "धुन में लगे रहना" उन मसीहियों के लिए आज्ञा हैं जिन मसीहियों ने आत्मिक वरदान प्राप्त कर लिया है। जबकि सारे मसीहियों को *लगातार* प्रेम का अनुकरण करना चाहिए, वहीं दूसरी ओर जिन लोगों ने आत्मिक वरदान पाए हैं उन्हें बिना समझ के बोले जाने वाले वरदान अर्थात अन्यान्य भाषा के वरदान की बजाय समझ के साथ बोले जाने वाले वरदान अर्थात भविष्यद्वाणी को पाने की धुन में लगा रहना चाहिए।

इसके अलावा, हमें आत्मिक वरदान को प्राप्त करने और उसको इस्तेमाल करने के बीच अन्तर को पहिचानना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:26-33)। "धुन में लगे रहने" की आज्ञा (Greek: zéloute) का आशय आत्मिक वरदानों को *हासिल* करने से नहीं, वरन उस वरदान को एक जुबान अर्थात उसे कलीसिया में इस्तेमाल करने से है। "विशेषकर" (बेहतर शब्द: बल्कि)(ग्रीक: मैलोन डी)(1 कुरिन्थियों 14:1) शब्द, दर्शाता है कि आत्मिक वरदानों के प्रगटीकरण में बहुत फरक है। कई आत्मिक वरदान "बड़े वरदान" हैं (1 कुरिन्थियों 12:31)। पौलुस बताता है कि सबसे बड़ा वरदान परमेश्वर के वचनों की समझ के साथ उदघोषण करना है (भविष्यद्वाणी : जो प्रेरित, भविष्यद्वक्ता और शिक्षक करते हैं)(1 कुरिन्थियों 12:28), इस तरह से वह इशारों में साफ तौर पर बताता है कि कुरिन्थियों की कलीसिया गलत थी जो अन्यान्य भाषा में बात करने को ज्यादा महत्व दे रहे थे।

(3) कुरिन्थ की कलीसिया के सदस्यों को अपनी मनसा को बदलकर (अपनी उन्नति की चिन्ता को छोड़कर)दूसरों की उन्नति करने पर ज़्यादा जोर देना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 14:12 वास्तव में कहता है कि," इसलिये तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो। यह असम्भव नहीं है कि कुरिन्थियों के लोग, जो अभी अभी अन्यजातियों में से बाहर आये हैं, ऐसा माने कि हर आत्मिक वरदान उन्हें अलग अलग (अच्छी-कहलाने वाली) आत्माओं से मिलता है। पौलुस उनकी यह समझने में सहायता करता

है कि ये सारे वरदान उन्हें एक ही आत्मा अर्थात पवित्र आत्मा (1 कुरिन्थियों 12:4) से मिलते हैं किसी और आत्मा से नहीं। जबकि कुरिन्थ के लोग उन योग्यताओं को हासिल करने का प्रयास कर रहे थे जो योग्यताएं कुछ विशेष आत्माओं में पायी जाती हैं, पौलुस उनसे उन वरदानों (योग्यताओं, क्षमताओं, कौशल) को प्राप्त करने के लिए कहता है जो पवित्र आत्मा उन्हें देता है। पौलुस का यह मानता है कि कुरिन्थियों के लोगों ने पवित्र आत्मा का वरदान पाया है (1 कुरिन्थियों 2:12) और पवित्र आत्मा मनुष्य को साधारण व असाधारण दोनो ही प्रकार के वरदान प्रदान कर सकता है। जबकि कुरिन्थ वासी स्वयं अपनी उन्नति करने के लिए अन्यान्य भाषा में बोलने के वरदान को प्राप्त करने की धुन में लगे हुए थे, प्रेरित पौलुस उनसे उस वरदान को हासिल करने के लिए धुन लगाने या प्रयास करने के लिए कहता है जिससे कलीसिया की *उन्नति* हो! पौलुस आत्मिक वरदान पाएं हुए मसीहियों को प्रेरित करता है कि वे ऐसे वरदान हासिल करने का प्रयास करें जिससे कलीसिया की उन्नति हो।

निम्नलिखित खण्ड (1 कुरिन्थियों 14:13-19) दर्शाता है कि कुरिन्थियों को नियमितता में बने रहने वाले आत्मिक वरदानों को (अर्थात भविष्यद्वाणियां जिसमें समझने योग्य भाषा में परमेश्वर के वचन की उदघोषणा की जाती है) उन वरदानों से ज्यादा मान देना चाहिए जो अचानक से फूट पड़ते हैं अर्थात अन्यान्य भाषा का वरदान। पौलुस का नज़रिया यह देखना नहीं है कि कुरिन्थ की कलीसिया में क्या हुआ, लेकिन वह यह देख रहा है कि कुरिन्थ की कलीसिया और और संसार की बाकि कलीसियाओं की आत्मिक आधिकारिक सभाओं में क्या होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:33)।

2. आत्मिक वरदानों को प्राप्त करना।

कौन इस बात का फैसला करता है कि मसीहियों को कौन से वरदान दिया जाना चाहिए?

त्रीएक परमेश्वर (परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र और परमेश्वर पवित्र आत्मा) मसीहियों को अपने श्रेष्ठ और अनुग्रहकारी तरीके से आत्मिक वरदानों (योग्यताओं, क्षमताओं और कौशल) का देनेवाला और विशेष काम करने वालों या अधिकारियों को नियुक्त करने वाला जिनके पास कलीसिया में अधिकार हों (1 कुरिन्थियों 12:11,18,28; इफिसियों 4:7; इब्रानियों 2:4; 1 पतरस 4:10)। वह ही इस बात का निर्णय लेता है कि वह कौन सा काम या वरदान और देता है और किसको देता है। पौलुस उन मसीहियों को प्रोत्साहित करता है जिन्हें पहले से आत्मिक वरदान मिले हुए हैं कि वे आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल करने की धुन में रहें ताकि मण्डल की उन्नति हो, क्योंकि उन वरदानो के माध्यम से परमेश्वर का स्पष्ट प्रकाशन या वचन लोगों तक पहुंचता है (1 कुरिन्थियों 14:12,19)।

परमेश्वर ने मसीह की देह में हर एक मसीही के लिए एक विशेष स्थान नियुक्त किया है (1 कुरिन्थियों 12:12-18)। हालांकि वह हर एक मसीही को करने के लिए कोई विशेष काम नहीं देता, लेकिन हर एक मसीही को *सेवा करनी* चाहिए (1 पतरस 4:10-11)! और इसी तरह से वह हर एक मसीही जन को *आत्मिक वरदान* नहीं देता है (क्षमता/योग्यता या अधिकार के साथ कोई कार्य/कार्यक्षेत्र), मगर हर एक मसीही को प्रेम करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 13:1-13)!

3. आत्मिक वरदानों को पहिचानना।

किस तरह मसीही लोग पहिचान पाते हैं कि क्या परमेश्वर ने उन्हें कोई वरदान दिया है और वह वरदान क्या है? इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि वरदान साधारण है (जैसे कि शिक्षा देना) या असाधारण (जैसे चंगाई देने का वरदान) या कोई कार्य/अधिकार (जैसे, प्रचारक, पासबान या शिक्षक)।

(1) बाइबल का अध्ययन व प्रार्थना करके।

आत्मिक वरदानों, उनकी विशेषताओं और कार्यों के बारे में बाइबल की शिक्षाओं को समझें।

(2) मसीह की देह में सेवा करने के द्वारा।

विभिन्न तरह की मसीही सेवाकाईयों में जुट जाएं, जैसे कि बच्चों का शिक्षा देना, युवाओं की अगुवाई करना, असहायों पर दया करना, समस्या में पड़े लोगों को प्रोत्साहित करना, सुसमाचार प्रचार करना, शिष्यता समूहों में प्रतिभागिता करना इत्यादि। यदि परमेश्वर ने आपको आत्मिक वरदान दिया है तो वह वरदान दूसरों की सेवा करने और मसीही की कलीसिया का निर्माण करने के दौरान अपने आप प्रगट होने लग जाएगा। परमेश्वर हमें वरदान डींग मारने के लिए एक आभूषण के समान नहीं देता, वरन वह हमें यह योग्यता दूसरों की सेवा करने, मसीह की कलीसिया का निर्माण करने, सेवा के काम और परमेश्वर की महिमा के लिए (अपनी महिमा के लिए नहीं) दूसरों को तैयार करने के लिए देता है! जो मसीही सेवा नहीं करता, वह कभी नहीं जान पाएगा कि परमेश्वर ने उसे सेवा करने के लिए कोई विशेष वरदान दिया है कि नहीं।

(3) अपनी सेवा का मूल्यांकन का करके (केवल अपनी क्षमता का मूल्यांकन नहीं)।

एक आत्मिक वरदान एक ऐसी योग्यता (क्षमता) या अधिकार (अधिकार के साथ विभाग) है जो आपको उस वरदान के क्षेत्र में काम करने के लिए प्रेरित करता है। वह उसी क्षेत्र में सेवा करने की इच्छा के रूप में अपने आप को प्रगट करता है। आत्मिक वरदानों को सेवा, दूसरों को बनाने और उनको तैयार करने से अलग नहीं किया जा सकता, इसलिए जिस प्रकार का प्रभाव आपको दूसरों पर पड़ता है वह आपके आत्मिक वरदान का चिन्ह ठहरता है।

अपने आप से निम्न प्रश्नों को पूछें:

- “दूसरे मसीही मेरी सेवा के बारे में क्या कहते हैं?”
- “ज्यादातर लोग मुझसे क्या करने के लिए कहते हैं?”
- “उनके विचारों से मैं क्या काम अच्छी तरह से कर सकता हूँ?”
- “उनके हिसाब से मैंने ऐसा क्या काम किया जिससे उन्हें लाभ पहुंचा?”

फिर अपने आप से इन प्रश्नों को पूछें:
“मैं स्वयं अपनी सेवा के बारे में क्या कहता हूँ?”
“मैं किन कामों को आनन्द के साथ करता हूँ?”
“मैं किन कामों को करने में महारथी हूँ?”
“मैं कौन से ऐसे काम करता हूँ, जो दूसरे लोगों की सेवा, सहायता, उनका निर्माण व उनको तैयार करता है?”

4. आत्मिक वरदानों का सौंपा जाना।

एक मसीही को कलीसिया में अपने आपको किस प्रकार से देखना चाहिए? कलीसिया के भीतर अनेकों प्रकार के मसीही विद्यमान होते हैं जिन्हें परमेश्वर ने अपनी श्रेष्ठ योजना और अनुग्रह से कलीसिया में रखा है (रोमियों 12:3-6;1 कुरिन्थियों 12:4-7,14-27)। आत्मा के बहुत से प्रकाशन (प्रगटीकरण) हैं (1 कुरिन्थियों 12:7)। वे भिन्न होते हैं:

- अलग अलग प्रकार का अनुग्रह प्राप्त होता है (ग्रीक: चैरिश)
- परमेश्वर हर एक मसीही को अलग विश्वास की परिमाण देता है (इफिसियों 4:7)
- आत्मा अलग अलग प्रकार के आत्मिक वरदान (ग्रीक: करिश्मा) देता है (1 कुरिन्थियों 12:4), उदाहरण के लिए शिक्षा देना।
- परमेश्वर के राज्य में अलग अलग प्रकार की सेवा (सेवाकाई) होती है. उदाहरण के लिए, बच्चों को शिक्षा देना
- आत्मा का अलग तरीके से प्रभाव (1 कुरिन्थियों 12:6)। उदाहरण के लिए, कहानियों और चित्रकला के द्वारा शिक्षा देना।

परमेश्वर की योजना ही के द्वारा मसीहियों में यह अन्तर और विविधता पायी जाती है। वही है जो हर एक के जीवन को एक दिशा प्रदान करता है।

(1) आत्मिक वरदानों को सौंपने के लिए नम्रता की आवश्यकता होती है।

रोमियों 12:3 में लिखा है, “जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।” “खुद के बारे में वास्तविकता से बढ़कर सोच रखना” घमण्ड है। घमण्ड का अर्थ उस विशेष अधिकार (आत्मिक वरदान) की लालच या इस्तेमाल करना है, जो आपका है ही नहीं। कोई भी जन अपनी बढ़ाई करने से नहीं रूकता। लेकिन जो मसीही जन जो कलीसिया में किसी दूसरे जन को दिये गये उस अधिकार का प्राप्त करने के लिए लालायित है जो परमेश्वर द्वारा उसे दिये गये वरदान से अलग है, तो वह व्यक्ति निश्चित तौर पर अपनी बढ़ाई चाहता है। यह बात अन्यान्य भाषा के वरदान को हासिल करने में भी लागू होती है।

“उतना ही सोचना जितना अपने बारे में सोचना चाहिए” नम्रता है। मसीहियों को उस वरदान के अपने पास होने का दिखावा नहीं करना चाहिए जो उनके पास नहीं है। मसीहियों को इस बात से भी इनकार नहीं करना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें अपने अनुग्रह से यह या वह आत्मिक वरदान दिया है। झूठी बढ़ाई करना और झूठी नम्रता का प्रदर्शन करना दोनों ही गलत हैं। मसीहियों को अपना मूल्यांकन अपने ही पैमाने से नहीं करना चाहिए वरन विश्वास के उस परिमाण से करना चाहिए जो परमेश्वर ने उन्हें दिया है।

(2) आत्मिक वरदानों को सौंपनें में विश्वास की जरूरत होती है।

रोमियों 12:3 में दर्शाया गया “विश्वास” को साधारण विश्वास के रूप में दर्शाया गया है, जैसे कि परमेश्वर व उसकी प्रतिज्ञाओं पर “भरोसा करने” या “आस लगाये रखना”। लेकिन, “विश्वास का परिमाण” वाक्य यहां पर *विश्वास की गिनती* की बात नहीं कर रहा है वरन यहां पर *विश्वास की किस्म* की चर्चा हो रही है। पौलुस यहां पर बहुत से उन पहलुओं के बारे में सोच रहा है जिनमें एक मसीही जन अपने विश्वास से जुड़े आत्मिक वरदानों की सहायता से दूसरों और कलीसिया के लिए आशीष का कारण हो सकता है।

विश्वास के विभिन्न परिमाण, विश्वास के उन भिन्न तरीकों को प्रगट करता है जिनका इस्तेमाल कलीसिया में पाये जाने वाले विभिन्न आत्मिक वरदानों के साथ किया जाना चाहिए।

परमेश्वर के सर्वोत्तम अनुग्रह से, हर एक मसीही जन अर्थात मसीह की देह के अंगों को "विश्वास का परिमाण" दिया गया है, जिसके अन्तर्गत उसे:

- मसीह की देह में एक विशेष स्थान दिया गया है (1 कुरिन्थियों 12:18)
- सम्भवत: एक साधारण या असाधारण आत्मिक वरदान (अधिकार के साथ कोई जिम्मेदारी) (1 कुरिन्थियों 12:11)
- विश्वास का एक विशेष परिमाण जिसके द्वारा और जिसकी सीमा के अन्तर्गत रहते हुए हमें उसकी सेवा करनी चाहिए (रोमियों 12:3)।

विश्वास की जरूरत केवल कलीसिया के सदस्य बनने पर ही नहीं पड़ती। मसीह की देह के सदस्य होने के नाते हमें अपने आत्मिक वरदानों और विभिन्न प्रकार की सेवाओं को प्रदर्शित करने के लिए विश्वास की जरूरत होती है। सारे आत्मिक वरदानों को इस्तेमाल केवल मसीह में विश्वास और उसके द्वारा दिये गये प्रेम के द्वारा ही किया जा सकता है(1कुरिन्थियों 13)। अत: हर एक आत्मिक वरदान निम्नलिखित बातों से सीमित है:

- योग्यता या अधिकार की किस्म
- किसी स्थान पर नियुक्त की गयी सेवाकाई की किस्म
- और जिस विश्वास के साथ वह सेवाकाई की जा रही है

ग. आत्मिक वरदानों की विशेषताएं

उपखंड केवल एक चुना गया हिस्सा और एक अल्प सारांश है। "अधिक आत्मिक वरदान" आप मैनुएल 7, परिशिष्ठ 12 में देख सकते हैं।

1. प्रेरित।

(1) मसीह का प्रेरित (मरकुस 3:13-19; प्रेरित 1:21-22; 1कुरिन्थियों 9:1; प्रकाशितवाक्य 21:14)।

वे अनोखे थे। मसीह के प्रेरितों का कोई वारिस नहीं था। वे मसीह के आंखो देखे और कानों सुने गवाह थे (प्रेरितों 1:22), नये नियम के लेखक थे (2 पतरस 3:1-2,15-16) और संसार भर की ऐतिहासिक विश्वव्यापी मसीही कलीसिया के संस्थापक थे (मत्ती 16:18; इफिसियों 2:20)।

(2) मण्डलियों के प्रेरित (2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25)।

वे स्थानीय कलीसिया के प्रतिनिधि मण्डल या प्रतिभागी थे जिन्हें किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए भेजा गया था। वह शब्द आधुनिक मिश्नरियों के लिए भी इस्तेमाल किया जा सकता है जो जाकर सुसमाचार प्रचार करते, नयी मण्डलियों की स्थापना करते और इन मण्डलियों की स्थापना करते हैं (प्रेरितों 14:14; रोमियों 16:7; गलातियों 1:19)।

2. प्रकाशन, भविष्यद्वक्ता और भविष्यद्वाणी।

- "प्रकाशन" (1 कुरिन्थियों 14:6,26) में नये प्रकाशनों का खुलासा किया गया है खास तौर पर दर्शनों द्वारा (2 कुरिन्थियों 12:1; प्रकाशितवाक्य 1:1,10,12)।
- "एक भविष्यद्वाणी" परमेश्वर द्वारा प्रगट की गयी बातों का बताना या उसकी उदघोषणा करना। इसका अर्थ पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा बताना या प्रचार करना है। "यीशु मसीह की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है"(प्रकाशितवाक्य 19:10)। इसका अर्थ है कि जो कुछ मसीह की आत्मा ने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं (1 पतरस 1:10-12) और नये नियम के प्रेरितों द्वारा बोला (यूहन्ना 15:13-15) और जो अब बाइबल में लिखा हुआ है वह "आत्मा" या बाइबल की भविष्यद्वाणियों का निचोड़ है। इसे बाइबल तीन अभिप्रायों में इस्तेमाल किया जाता है।

(1) पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने पुराने नियम के प्रकाशन की घोषणा की।

ये भविष्यद्वक्ता नये नियम के प्रकाशन के उपकरण थे और उन्होंने स्वयं परमेश्वर के वचनों का प्रचार किया! वे परमेश्वर के मुंह ठहरे और उनके द्वारा बोले गये वचन सारे परमेश्वर की सामर्थ से भरे हुए थे। वे अनोखे थे। यह वरदान या अधिकार केवल पुराने नियम के दौर में ही सक्रिय था (मत्ती 11:13)। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता परमेश्वर द्वारा प्रेरित प्रवक्ता थे और उनके प्रकाशन संसार भरे के लोगों को लाभान्वित करने के लिए दिये गये थे।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का कोई उत्तराधिकारी नहीं था! आज कल इस योग्यता को धारण करने वाला कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है, क्योंकि अपने और अपनी योजना के सम्बन्धित परमेश्वर के प्रकाशन, जिनकी शुरूआत उसने पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के साथ की थी,मसीह में आकर(यूहन्ना 1:18; इब्रानियों 1:1-2)और मसीह के प्रेरितों की गवाही में पूरी हो गयी(यूहन्ना 16:13-15)। उनके प्रकाशनों को बाइबल "व्यवस्था" में अंकित किया गया है या तब से लेकर अब तक बाइबल की 66 पुस्तकों में बन्द कर दिया है। कोई भी जन अब बाइबल को "वचन" या "पुस्तक" को जोड़ नहीं सकता (प्रकाशितवाक्य 22:18-19)।

(2) नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने विशेष परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा को वयक्त किया।

वे अदभुत और अनोखे थे। यह आत्मिक वरदान और अधिकार (नियुक्त काम, प्रेरितों 15:32-33) केवल नये नियम की कलीसिया के प्रारम्भिक काल में ही सक्रिय थे। जब तक कि नये नियम की बातों को लिखित रूप नहीं प्रदान कर दिया गया तब तक वे समय समय पर या किसी विशेष परिस्थिति में बताते रहते थे कि परमेश्वर प्रारम्भिक कलीसिया से क्या कहना चाहता है। उनकी भविष्यद्वाणियां सीमित थीं।

हालांकि मसीह के प्रेरित सभी भविष्यद्वाणी कर सकते थे, लेकिन नये नियम के भविष्यद्वक्ता मसीह के प्रेरित नहीं थे। जबकि मसीह के प्रेरितों ने परमेश्वर से ऐसे प्रकाशनों को पाया जो बुनियादी तौर पर पूरे ससांर में नये नियम के काल की सारी कलीसियाओं के लिए अति महत्वपूर्ण थे (1 कुरिन्थियों 15:3; गलातियों 1:11-12,16), लेकिन नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं को जो प्रकाशन प्राप्त हुआ जिसका कोई सामान्य या स्थायी अभिप्राय नहीं था (प्रेरितों 11:27-28; 13:1-4; 21:10-11)। एक तरफ मसीह के प्रेरितों ने प्रकाशनों की उदघोषणा करते हुए कहा कि मसीह की पहले आगमन से लेकर दूसरे आगमन तक में जन्में संसार के सारे मसीहियों को मसीह को जानना, विश्वास करना और उसके अनुसार काम करना है, वहीं दूसरी तरफ नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने केवल सीमित प्रकाशन का प्रचार किया कि प्रारम्भिक मसीही

कलीसिया में केवल सीमित मसीही समूह को ही विशेष परिस्थितियों में जानना, विश्वास करना और कार्य करना है।

नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने लोगों से उनकी उन्नति (सशक्तिकरण), प्रोत्साहन और उनके आराम के लिए (1 कुरिन्थियों 14:3; प्रेरितों 15:30-32) या उन्हें चौकस करने के लिए बातचीत की (1 कुरिन्थियों 14:8; प्रेरितों 11:27-28; 21:10-11)। "भविष्यद्वाणी" प्राथमिक रूप में "उन्नति, प्रोत्साहन और विश्राम" को दर्शाता है (1 कुरिन्थियों 14:3) और "नये प्रकाशन" को नहीं (प्रेरितों 13:1-4)। बाइबल के अनुसार भविष्यद्वाणी की विषयवस्तु "यीशु मसीह की गवाही" (वही भविष्यद्वाणी का लेखक और विषयवस्तु है) (प्रकाशितवाक्य 19:10)। यह उन सारी बातों को दर्शाता है जिन्हें यीशु मसीह ने पुराने नियम (1 पतरस 1:10-12) और नये नियम में सिखाया था (यूहन्ना 16:13-15)।

मसीह के प्रेरित नये नियम को लिखने और उसे प्रगट करने के लिए मसीह के चुने हुए उपकरण थे(यूहन्ना 14:26; 16:13-15; 20:31)। इसके विपरीत, नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं की केवल कुछ ही भविष्यद्वाणियों को नये नियम में लिखा गया है(प्रेरितों 11:28; 21:11)। इससे यह बात साबित होती है कि नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं को उस तरीके से प्रकाशन प्राप्त नहीं हो रहा था जैसे कि मसीह के प्रेरितों को। जबकि यीशु मसीह के प्रथम आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन के बीच में प्रेरितों की शिक्षा और उनके प्रचार निर्विवाद, अचूक और अधिकार से पूर्ण हुआ करते थे(प्रेरितों 2:42;2 तीमुथीयुस 1:13; प्रेरितों 16:4 ; फिलिप्पियों 4:9), जबकि नये नियम के भविष्यद्वाणियों को दूसरे मसीहियों द्वारा तौला ओर परखा जाता था(1कुरिन्थियों 14:29-33)[1]। मसीह के प्रेरितों में से बहुतों को आत्मिक वरदान और अधिकार प्राप्त थे। यीशु मसीह के चेलों का कोई उत्तराधिकारी नहीं था!

(3) पवित्र आत्मा की प्रेरणा में होकर भविष्यद्वाणी का वरदान उन बातों की उदघोषणा करता है जिसे मसीह के प्रेरितों ने अपनी शिक्षाओं और प्रचारों में पहले ही प्रगट कर दिया है।

"भविष्यद्वाणी" शब्द का सामान्य मतलब यही है। "भविष्यद्वाणी करना" (रोमियों 12:7) वह विशेष योग्यता या काम है जिसका इस्तेमाल बाइबल आधारित सत्यों को प्रचार करने के द्वारा विशेष मसीहियों की उन्नति करने, प्रोत्साहित करने तथा उन्हें विश्राम देने के लिए (1 कुरिन्थियों 14:3; प्रेरितों 15:32) या विश्वासियों को विभिन्न प्रकार की सेवा (इफिसियों 4:12) हेतू तैयार करने के द्वारा मसीह की देह के रूप में कलीसिया की उन्नति करने के लिए किया जाता है। आत्मिक वरदान पाये हुए मसीही बाइबल में पहले से प्रगट परमेश्वर के वचनों को खुले आम प्रेरणा पाकर, दृढ़ता और लोगों को कायल करते हुए प्रचार करते है। वे साफ शब्दों में (1 कुरिन्थियों 14:8) और सामर्थ्य (प्रेरितों 6:10; 1 थिस्लुनिकियों 1:5) के साथ बोलते हैं।

"भविष्यद्वाणी करने में" लोगों के गुप्त विचार, उद्देश्यों, स्वभाव, बातें और कामों का खुलासा हो सकता है। पवित्र आत्मा मसीहियों के प्रचार, शिक्षा और उपदेश या सलाह का इस्तेमाल भविष्यद्वाणी के वरदान के साथ सुनने वाले के छुपे मुद्दों को प्रगट करने के आशय से करता है, ताकि उसे पश्चाताप करने या अपना जीवन परिवर्तन करने का अवसर मिल सके। इस प्रकार की भविष्यद्वाणी करने का प्रभाव यह होता है कि सुनने वाले के पाप या गलतियां पूरी तरह से प्रगट हो जाती है (1 कुरिन्थियों 14:24-25)। पापों को मान लेने या

"ex cathedra" 1 समेत सारे निर्णय व आदेशों को बाइबल में दिये गये प्रकाशन की ज्योति में परखा जाना चाहिए जिसमें कलीसियाई इतिहास में पोप द्वारा उठाये गये सारे कदमों और लिये गये निर्णय शामिल हैं!

स्वीकार करने का काम सार्वजनिक तौर पर मण्डली के सामने भी हो सकता है (प्रेरितों 5:3-4) या फिर वह अपने मन में ही अपने पापों को मान सकता है (प्रेरितों 3:37; यूहन्ना 16:8)।

3. शिक्षक और शिक्षा।

(1) शिक्षक होने का काम (न्यायाधिकार, अनुज्ञापत्र, अधिकार) या शिक्षा देने की योग्यता (क्षमता, कौशल)।

"शिक्षक" कलीसिया में एक *असाधारण क्षमता* (योग्यता)(रोमियों 12:7) या एक *साधारण अनुज्ञापत्र* (काम, कार्यालय, नियुक्त सेवा) है (1 कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 4:11; 2 तीमुथीयुस 1:11)। शिक्षक बाइबल की सच्चाई को विशेष तौर पर मसीहियो को समझाते हैं। वे नये नियम की कलीसिया में साधारण अधिकारों वाले जन या अधिकारी के रूप में गिने जाते हैं। जबकि भविष्यद्वक्ता अपने संदेश परमेश्वर की आत्मा द्वारा दिये गये प्रकाशन से (बाइबल से भी) प्राप्त करता है, शिक्षक पुराने नियम के अध्ययन, यीशु मसीह की शिक्षाओं, प्रेरितों की शिक्षाओं से, अर्थात बाइबल की 66 पुस्तकों से प्राप्त करता है। शिक्षक बनने का अधिकार हर एक जन की महत्वाकांक्षा पर निर्भर करता है, और ऐसा कहीं नहीं लिखा गया है कि एक शिक्षक बनने के लिए किस आत्मिक वरदान की जरूरत पड़ती है (याकूब 3:1)। शिक्षक बनने का अधिकार उसके आत्मिक वरदान की बजाय उसकी *बुलाहट* पर निर्भर करता है।

कुछ मसीही लोगों को शिक्षक या चरवाहे-शिक्षक का वरदान प्राप्त होती है (इफिसियों 4:11), लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि कलीसिया में शिक्षक या उपदेशक होना एक बहुत बड़ी बात होती है (याकूब 3:1)। लेकिन दूसरे मसीहियों को शिक्षा देने का वरदान (योग्यता) प्राप्त होती है (रोमियों 12:7)। लेकिन *सारे मसीहियों* को (शिक्षा देने के आत्मिक वरदान के साथ या उसके बिना) एक दूसरे को सिखाने और समझाने के लिए बुलाया गया है (मत्ती 28:20; कुलुस्सियों 3:16)।

(2) कलीसिया में एक शिक्षक का कार्य।

पढ़ें एज्रा 7:10।

- शिक्षक का प्रथम काम सत्य की परख करने, तथ्यों की खोज करने तथा बाइबल की सच्चाईयों को वर्गीकृत करने के लिए बाइबल का विस्तारपूर्वक वर्णन *अध्ययन करना* है (प्रेरितों 17:11)।
- शिक्षक का दूसरा काम होता है कि वह जिन बातों का प्रचार करता है उसका अपने जीवन में *अभ्यास करे।* वे सत्य का पालन करने में दूसरों के लिए आदर्श बनते हैं (मत्ती 23:2-4; रोमियों 2:21; 1 तीमुथीयुस 4:12; तीतुस 2:7-8)।
- शिक्षकों का तीसरा कार्य सत्य को *समझाने* और व्यवहारिक बनाने के लिए बाइबल के शिक्षाओं को अधिकार और इस तरह से सिखाना है जिससे उसका मूल अर्थ नष्ट न हो जाए (मरकुस 1:22; प्रेरितों 8:30-31; 20:20,27; 2 तीमुथीयुस 2:15)। शिक्षा नये मसीहियों को शिष्य बनाने के लिए दी जाती है ताकि वे अपने जीवन में मसीह की आज्ञाओं को मानना सीख सकें। इसके अलावा शिक्षा उन मसीहियों को दी जाती है जो सीखने की आत्मा रखते हैं, जो विश्वासयोग्य और दूसरों को शिक्षा देने में योग्य हों (मत्ती 28:20; लूका 6:40; 2 तीमुथीयुस 2:2)।

(3) कलीसिया में शिक्षक का स्थान।

भविष्यद्वक्ताओं (प्रचारकों) और शिक्षकों की सेवाकाईयां मसीह के प्रेरित की अधीनता में रहने वाली दो महत्वपूर्ण सेवाकाईयां हैं। क्योंकि नये नियम की कलीसिया के प्रारम्भिक काल में केवल मसीह के प्रेरित और नये नियम के भविष्यद्वक्ता की ही मुख्य भूमिका होती है:

- शिक्षक की सेवा (1 तीमुथीयुस 5:17)
- शिक्षा का साधारण काम या लक्ष्य (कुलुस्सियों 3:16)
- शिक्षक का आत्मिक वरदान (इफिसियों 4:11)

इसलिए विश्व व्यापक कलीसिया में इनको बहुत उच्च कोटि की प्राथमिकता दी जानी चाहिए। बाइबल में प्राप्त शिक्षाओं से ज्यादा बेहतर मसीह का निर्माण और कोई नहीं करता!

4. प्रचारक।

कलीसिया में “प्रचारक” एक *असाधारण क्षमता* (योग्यता) (प्रेरितों 11:24) या *साधारण अनुज्ञापत्र* (कार्य, अधिकार, नियुक्त सेवा) होता है (इफिसियों 4:11; 2 तीमुथीयुस 4:5)। प्रचारकों ने यीशु मसीह में उद्धार का शुभ सन्देश अन्यजातियों को इतने प्रभावशाली ढंग से सुनाते हैं कि लोगों का उद्धार होता है और कलीसिया में मसीहियों की संख्या बढ़ती चली जाती है। कुछ मसीहियों को प्रचारक के रूप में बुलाया गया है (2 तीमुथीयुस 4:5) जबकि कुछ लोगों ने सुसमाचार प्रचार करने का वरदान पाया है, लेकिन सभी मसीहियों को सुसमाचार प्रचार करने में भागीदार होने के लिए बुलाया गया है (बोने और काटने के लिए)(मत्ती 10:32-33; यूहन्ना 4:37)।

5. चरवाहा।

“चरवाहा” कलीसिया में एक असाधारण वरदान या योग्यता (इफिसियों 4:11) या साधारण अनुज्ञापत्र (कार्य, अधिकार, नियुक्त सेवा) है (प्रेरितों 20:28; 1 पतरस 5:1-4)। चरवाहे चराते, सुरक्षा करते, देखभाल करते और मसीहियों की आत्मिक बढ़ोतरी और भलाई करने में अगुवाई करते हैं। वे खोये हुओं को खोजते और भटके हुओं को फिर वापस ले आते हैं। वे छोटों, कमज़ोर और जरूरत मन्दों को खास प्रेम और देखभाल करते हैं। जबकि कुछ मसीहियों को चरवाहें के रूप में बुलाया और नियुक्त किया गया है, तो दूसरो ने चरवाही करने का आत्मिक वरदान पाया है लेकिन *सभी मसीहियों* को एक दूसरे की देखभाल करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है (1 कुरिन्थियों 12:24-26)।

घ. कलीसिया का निर्माण करने के लिए आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल करना

1. आत्मिक वरदान व कलीसिया की सेवाकाईयां।

एक मसीही को सारे मसीहियों को लाभ पहुँचाने के लिए किस प्रकार से अपने आत्मिक वरदान का इस्तेमाल करना चाहिए?

(1) मसीहियों को एक दूसरे की सेवा की जरूरत हैं।

मसीह की देह के हर एक अंग ने दूसरे अंग की सेवा करनी चाहिए। और हर एक सदस्य को दूसरे सदस्यों की सेवा की आवश्यकता होती है। अत: पवित्र आत्मा द्वारा प्रदान किये गये साधारण या असाधारण वरदान द्वारा एक दूसरे की सेवा करना एक दूसरे के प्रति प्रेम प्रगट करना भी है। जिस प्रकार से हाथ बिना पैर के

कुछ नहीं कर सकता और पैर बिना आंखों के कुछ नहीं कर सकता, इसी तरह से कोई भी एक सदस्य दूसरे सदस्य के बिना कुछ नहीं कर सकता। एक विश्वासी का सामान्य गुण या आत्मिक वरदान दूसरे विश्वासी के गुण और वरदान का पूरक है। इस तरह से मसीह की कलीसिया उत्तम तरीके से बनायी जा रही है।

(2) एक आदर्श के रूप में शिक्षक का आत्मिक वरदानों ।

आईये शिक्षक के आत्मिक वरदान को एक उदाहरण के रूप में ले लेते हैं। चाहे किसी के पास कोई आत्मिक वरदान हो या न हो लेकिन सारे मसीहियों को सामान्यत: एक दूसरे को शिक्षा देने की सेवाकाई में शामिल होना चाहिए। दूसरों को मसीही की आज्ञा मानना सिखाकार सारे मसीहियों को चेला बनाने की सेवा में शामिल होना चाहिए (मत्ती 28:19-20)! सारे मसीहियों को परमेश्वर के वचनों को अपने हृदयों में गहराई से बसने देना और सिद्ध ज्ञान से एक दूसरे को सिखाना चाहिए (कुलुस्सियों 3:16)! जबकि सब मसीहियों सिखाना चाहिए, लेकिन कुछ ही मसीहियों को *शिक्षक होने का आत्मिक वरदान* मिला है (1 कुरिन्थियों 12:29)।

जिन लोगों को शिक्षक के रूप में आत्मिक वरदान प्राप्त है, उनकी जिम्मेदारी है कि वे निम्नलिखित तीन कामों को अवश्य करें:

- शिक्षा देने के द्वारा दूसरे मसीही की सेवा जरूर करें।
- दूसरे मसीहियों के लिए शिक्षा देने के क्षेत्र में एक आदर्श बनें।
- यदि सम्भव हो तो वे किसी मसीही को सिखाएं कि कैसे शिक्षा प्रदान की जाती है।

इसी प्रकार से, मसीहियों को प्राप्त वरदानो के द्वारा दूसरों की सेवा करनी चाहिए, दूसरों के लिए सेवा करने के क्षेत्र में एक आदर्श बनना चाहिए और यदि सम्भव हो सके तो दूसरे को अपने वरदान के क्षेत्र में सेवा करने के लिए तैयार करना चाहिए।

(3) उदाहरण के तौर पर दया करने का वरदान।

हर एक मसीही को दया करने वाला बनना चाहिए। उन्हें भले सामरी के समान बनकर जरूरत मन्द लोगों की सेवा करने के लिए बुलाया गया है (लूका 10:37)। सभी मसीहियों का दया करनी चाहिए, लेकिन कुछ मसीहियों को *दया करने का विशेष वरदान* प्राप्त है (रोमियों 12:8)। इन मसीहियों ने दया करते हुए दूसरों की सेवा करनी चाहिए, दूसरों के लिए दया करने के मामले में आदर्श बनना चाहिए, और यदि सम्भव हो तो दूसरों को भी दया करना सिखाना चाहिए।

2. आत्मा के वरदान और आत्मा के फल।

पवित्र आत्मा द्वारा दिये गये आत्मिक वरदानों को प्राप्त करना *आत्मिक होने या परिपक्वता* का प्रमाण नहीं है। कुरिन्थियों की कलीसिया में सभी आत्मिक वरदान विद्यमान थे (1 कुरिन्थियों 1:7)। फिर भी वे आत्मिक व परिपक्व नहीं थे, बल्कि वे सांसारिक और मसीह में दूध पीते बच्चे थे (1 कुरिन्थियों 3:1-4)। बिना प्रेम के आत्मिक वरदानों का इस्तेमाल करना असम्भव और परमेश्वर की दृष्टि में पूरी तरह व्यर्थ है (1 कुरिन्थियों 13:1-3)।

आत्मा के अनुसार जीवन व्यतीत करने,आत्मा से परिपूर्ण होने, और आत्मा की अगुवाई में चलने का वास्तविक प्रमाण आत्मा के वरदानों को इस्तेमाल करना नहीं, परन्तु आपके जीवन में आत्मा के फलों का

प्रगट होना है (गलातियों 5:22-23)। हो सकता है कि आपके जीवन या आपकी कलीसिया में आत्मिक वरदानों की कमी हो, लेकिन प्रेम जैसे आत्मा के फलों की आपके जीवन में कोई कमी नहीं होनी चाहिए।

5 **प्रार्थना** (8 मिनट) *[प्रतिक्रिया]*

परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना

अपनी बारी आने पर जो कुछ आपने सीखा है ***उसके प्रतिउत्तर के रूप में समूह में प्रार्थना करें।*** या समूह को दो या तीन भागों में बांटकर आज प्राप्त शिक्षाओं के प्रतिउत्तर के रूप में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6 **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*

अगले अध्याय के लिए

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों
2. "आत्मिक वरदानों के अनुसार सेवा करना" पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को - प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **इब्रानियों** 11-13 में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। यूहन्ना में से रोज 5 याद की हुई आयतों को **दोहराएं।**
5. बाइबल अध्ययन। **यूहन्ना** 16 के आधार पर अगले बाइबल अध्ययन की तैयारी करें। पांच कदमों द्वारा बाइबल अध्ययन करने के तरीके का इस्तेमाल करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
7. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

कलीसिया अध्याय 36

1 प्रार्थना

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2 **बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]*

इब्रानियों 11-13

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (इब्रानियों 4-7) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3 **याद करना** (5 मिनट) *[यूहन्ना में प्रमुख वचन]*

यूहन्ना के प्रमुख वचनों का पुनरावलोकन

दो-दो लोग साथ मिलकर यूहन्ना रचित सुसमाचार से अन्तिम 5 याद की हुई वचनों का ***पुनरावलोकन*** करें।
(11) यूहन्ना 11:25-26। पुनरूत्थान और जीवन मैं हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्त काल त न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?
(12) यूहन्ना 12:32। और मैं यदि पृथ्वी पर से ऊँचे पर चढ़ाया जाऊँगा, तो सब को अपने पास खींच लूंगा।
(13) यूहन्ना 13:34-35। मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम एक दूसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे, तो इसी से सब जानेगें कि तुम मेरे चले हो।
(14) यूहन्ना 14:6 मार्ग सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास तक नहीं पहुंच सकता।
(15) यूहन्ना 15:5। मैं दाखलता हूँ; तुम डालियां हो जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

4 **बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]*

यूहन्ना 16:1-33

परिचय। **यूहन्ना 16:1-33** का एक साथ मिलकर अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययने के पांच तरीकों का इस्तेमाल करें। पद 14से 17 में यीशु मसीह के उपदेश व अन्तिम भोज पर की गयी प्रार्थना शामिल हैं।

15 अध्याय में चेलों को बताया गया था कि उन्हें क्या करना है, लेकिन अध्याय 16 में उसने बताया कि परमेश्वर अपने चेलों के लिए क्या करेगा।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 16:1-33 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

16:7-11
खोज 1. पवित्र आत्मा के काम।

पद 7. यीशु कहते हैं कि उसका जाना उसके चेलों के लिए अच्छा है, क्योंकि उसके जाने पर पवित्र आत्मा आएगा। यीशु मसीह का इस धरती से प्रस्थान को दुर्घटना नहीं थी, परन्तु वह एक विजय और बड़ा लाभ थी।

जब यीशु मसीह इस दुनिया में ही थे, वह अपने चेलों के साथ एक सीमित क्षेत्र में ही सक्रिय था। लेकिन उसके स्वर्ग में उठाये जाने और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद, यीशु मसीह सारी दुनिया में अपने चेलों के द्वारा रहने वाले थे!

इस समय में, मानव जाति के उद्धार के लिए यीशु को क्रूस को पर अपनी जान देना और मृतकों में से जीवित होना जरूरी था। उसके स्वर्गारोहण के बाद, यीशु अपने उद्धार की योजना के सम्पूर्ण कार्य को पवित्र आत्मा के द्वारा विश्वासियों हृदयों और उनके जीवन में कार्यान्वित करने वाला था।

पद 8. यीशु ने कहा, पवित्र आत्मा आकर, "*संसार को निम्नलिखित बातों के प्रति निरूत्तर* करेगा:

- पाप के विषय में, क्योंकि लोग यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करते
- मसीह की धार्मिकता के विषय में, जो स्वर्ग मे अपनी अदृश्य उपस्थिति से लोगों का उद्धार करता है।
- न्याय के विषय में क्योंकि लोग दुष्ट अर्थात शैतान के दोषी ठहरने पर भी अपने अविश्वास में बढ़ते चले जाते हैं।

यूहन्ना 16:8 में पाये जाने वाले "निरूत्तर" के मूल शब्द (ग्रीक: elenchó) के अनेकों अच्छे मतलब हैं। पवित्र आत्मा का काम लोगों को पापों को *प्रगट* करना, उन्हें सत्य के प्रति *कायल* करना, उनके दोष के प्रति *निरूत्तर* करना और सत्य के विरूद्ध उनके तर्क का *खण्डन* करना है।

(1) पवित्र आत्मा संसार के पापों को प्रगट करेगा (पद 9)।

वह संसार को उसके पापों के प्रति निरूत्तर करता है। वह *संसार के पापों का खुलासा* करेगा अर्थात वह उन्हें नंगा करेगा, विशेषकर के इस तथ्य को कि संसार ने यीशु मसीह को अस्वीकार करे उसे मार दिया। वह लोगों के दोष भाव के बोध को नाश नहीं करेगा, जैसा कि आज लोग करने का प्रयास करते हैं, वरन वह बुराई और पाप की नफरत के प्रति लोगों के विवेक को जागरूक करेगा। वह संसार को स्वयं उसके ही पापों के प्रति जागरूक करेगा। क्योंकि लोग अपने पापों को पहिचानकर और उसे स्वीकार करके ही, वास्तव में पश्चाताप करके बच सकते हैं।

(2) पवित्र आत्मा संसार को सत्य के प्रति निरूत्तर करेगा (पद 10)।

वह संसार को सही के लिए निरुत्तर करता है, और मसीह सही है। यहां पर इस्तेमाल किया गया "संसार" यहूदियों को दर्शाता है, जो कि यीशु को क्रूस पर मारकर हत्यारे ठहरने वाले थे, अर्थात *एक अधर्मी जन* (यूहन्ना 18:30)। लेकिन पुनरूत्थान के माध्यम से यीशु पिता के पास गया। उसके पुनरूत्थान साबित करता है कि परमेश्वर पिता ने उसके उद्धार के काम को स्वीकार करके उस पर अपनी स्वीकृति की मुहर लगाकर उसे *धर्मी* घोषित कर दिया है (प्रेरितों 3:14-15)। जब परमेश्वर संसार का निरूत्तर करते हैं कि वह और उसका मसीह दोनो "सही" हैं, उसी समय पर वह संसार को दोषी भी ठहराते हैं कि संसार "गलत" है।

वह संसार को धार्मिकता के प्रति निरूत्तर करता है, कि जो लोग गलत हैं उन्हें मसीह की सिद्ध धार्मिकता की आवश्यकता है, जिसे उसने अपनी मृत्यु और मृतकों में से जी उठने के कारण प्रदान किया है और वे इसे केवल मसीह द्वारा क्रूस पर पूरे किये गये उद्धार में होकर विश्वास के द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

(3) पवित्र आत्मा लोगों को उनके पापों के विषय में निरूत्तर करेगा (पद 11)।

वह संसार को परमेश्वर के सिद्ध न्याय के प्रति निरूत्तर करता है। पवित्र आत्मा हर एक जन को कायल करता है कि परमेश्वर का न्याय वास्तविक, धर्मी और एक गम्भीर मामला है। यीशु मसीह का अपने प्रथम आगमन के दौरान किया गया काम पाप, पापियों और पाप को बढ़ावा देने वालों (जैसे शैतान, जो संसार का सरदार है) के विरूद्ध न्याय है। यीशु इस संसार मे शैतान के कामों को खत्म करने के लिए आये (1 यूहन्ना 3:8)! उसके क्रूस पर उठाये जाने के द्वारा, उसके पुनरूत्थान के द्वारा, उसके स्वर्गारोहण और स्वर्ग में उसके सिंहासन पर विराजमान होन के द्वारा उसने संसार के सरदार को खदेड़ दिया है (यूहन्ना 12:31)! शैतान अब सदा काल के लिए दोषी ठहर चुका है!

पुराने नियम के दौरान, शैतान और उसकी दुष्टात्माओं की सेना को संसार के बहुत से देशों पर अंधिकार व शक्ति प्राप्त थी (दानिय्येल 10:13,20-21)।

मसीह के प्रथम आगमन के दौरान, क्रूस पर, दुष्ट संसार और शैतान को दोषी ठहराया जा चुका है! यीशु मसीह के पहले आगमन का परिणाम मसीह का विरोध करने वाले, अस्विकार करने, विश्वासघात करने वाले और मसीह की पेशी के समय उस पर दोष लगाने वाले संसार का दोषी ठहराया जाना था। इसके परिणाम स्वरूप इस जगत का सरदार निकाल दिया गया (यूहन्ना 12:31; प्रकाशितवाक्य 12:5-9)! यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान और उसकी प्रधानता में स्वर्ग से राज्य ने जगत के राष्ट्रो पर शैतान की प्रभुता का अन्त कर दिया (इफिसियों 1:20-21; 1 पतरस 3:22)। शैतान को इस जगत की प्रभुता से निकाल दिया है, का अर्थ यह है कि यीशु मसीह के पहले आगमन से लेकर उसके दूसरे आगमन के बीच संसार भर में लाखों करोड़ों लोग यीशु के पास आ रहे हैं (यूहन्ना 12:32)! शैतान अब संसार के किसी भी देश में परमेश्वर के वचन को सुनाने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता। वह संसार के किसी भी भाग में लोगों को यीशु मसीह के

द्वारा उद्धार प्राप्त करने से नहीं रोक सकता है। शैतान अब इस जगत में अपनी प्रभुता व अधिकार को खो चुका है और अब वह लाखों करोड़ों लोगों को उसके राज्य में से (1 यूहन्ना 5:18-19) निकालकर यीशु मसीह के राज्य में लाए जाने से नहीं रोक सकता (कुलुस्सियों 1:13; प्रकाशितवाक्य 20:1-3)।

यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर, शैतान का पाप व दण्ड नरक की आग में डाले जाने पर सारे जगत के सामने प्रगट हो जाएगा (मत्ती 25:41; प्रकाशितवाक्य 20:10)। हर एक जन जो अभी भी शैतान की सुनता और यीशु मसीह का इनकार करता है वह शैतान के साथ ही नरक में डाल दिया जाएगा।

16:12-15

खोज 2. पवित्र आत्मा के कार्य।

(1) उस समय तक सत्य के प्रकाशन से जुड़ा काम पूरा नहीं हुआ था (पद 12)।
यीशु ने कहा, "मुझे तुमसे और बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते।" यीशु मसीह ने अपने चेलों के सामने पूरा प्रकाशन नहीं बताया क्योंकि एक तरफ तो उनमें विश्वास की कमी थी और दूसरी ओर दूसरा अभी तस्वीर को पूरा करने के लिए कुछ घटनाओं को पूरा करना अभी बाकि था। चेलों को उसे छोड़कर जाना और उसका इनकार करना अभी बाकि था। यीशु पर अभी आरोप लगाया जाना, क्रूस पर चढ़ाया जाना और दफनाया जाना अभी बाकि था। उसके बाद, उसे मृतकों में से जीवित भी होना था, स्वर्ग में उठा लिया जाना और परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान होना और अपने लोगों पर पवित्र आत्मा को उण्डेला जाना बाकि था। वह केवल इन सारी घटनाओं के बाद पवित्र आत्मा को उन पर उण्डेल सकता था! यीशु मसीह का प्रकाशन उस समय तक पूरा नहीं हुआ था!

(2) सत्य का प्रकाशन यीशु मसीह की आत्मा के द्वारा पूरा हुआ (पद 13)।
यीशु ने कहा, "परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा।" पवित्र आत्मा उन पर कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं करेगा वरन वह एक मार्गदर्शक, एक गाइड के समान उनकी अगुवाई करेगा। वह उनके सामने सत्य का अंश नहीं वरन पूर्ण सत्य प्रगट करेगा। भविष्य में सत्य बताने या बाइबल में कोई प्रकाशन जोड़ने के लिए कोई भविष्यद्वक्ता नहीं आयेगा!

आज कल कुछ लोग आधी सच्चाई या किसी विशेष सच्चाई पर ही अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। पवित्र आत्मा एक सत्य की बलि चढ़ाकर दूसरे सत्य को स्थापित नहीं करता। पौलुस कहता है, "क्योंकि मैं परमेश्वर की सारी मनसा को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका" (प्रेरितों 20:27)!

(3) सत्य का प्रकाशन नया नियम लिखे जाने तक पूरा हो चुका था (पद 13-15)।
यीशु मसीह द्वारा की गयी भविष्यद्वाणी पूरी हो चुकी थी। उसके द्वारा की गयी प्रतिज्ञा कि पवित्र आत्मा आएगा प्रेरितों के काम में पूरी हो चुकी थी। "पूर्ण सत्य का प्रकाशन" चारों सुसमाचारों और नये नियम में प्रेरितों के काम लिखे जाने तक पूरा हो चुका था (1 पतरस 3:1-2,15-16)। और उसके द्वारा की गयी प्रतिज्ञा कि वह आकर भविष्य में होने वाली बातों को बताएगा, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में पूरी हो चुकी थी (प्रकाशितवाक्य 1:1)।

आज जब कभी पवित्र आत्मा मसीहियों की अगुवाई करता है, वह सदैव बाइबल से सहमत होता है उसके विरूद्ध नहीं! जब कभी शिक्षा दी जाती या प्रचार किया जाता है तो "पवित्र आत्मा की तलवार" हमेशा बाइबल ही होती है (इफिसियों 6:17)!

(4) पवित्र आत्मा मसीह की महिमा करता है (पद 14)।

पवित्र आत्मा लोगों का ध्यान कभी अपनी ओर नहीं खींचता। वह मसीहियों को मसीह का प्रचार करने की शक्ति प्रदान करता है। वह मसीहियों के जीवन में मसीह द्वारा किये गये उद्धार के काम का इस्तेमाल करता है। उसकी शिक्षाओं का विषय यीशु मसीह द्वारा किये गये काम, किये जा रहे काम और भविष्य में किये जाने वाले काम होता है। इसे मैंने अपने व्यक्तिगत जीवन में भी महसूस किया है कि पवित्र आत्मा मुझे बाइबल की बातों को समझने में सहायता करता और यीशु मसीह को ज्यादा से ज्यादा प्रेम करना सिखाता है।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 16:1-33 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें। अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें। समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

16:2-4

प्रश्न 1. **यूहन्ना 14,15,16 अध्याय में आपस में क्या सम्बन्ध है?**

ध्यान दें। यूहन्ना अध्याय 14 में, ज्यादा ज़ोर *आराम* (प्रोत्साहन) यूहन्ना अध्याय 15 में, ज्यादा ध्यान *चितौनी* देने में *(प्रेरणा व चेतावनी देने)* दिया गया है। लेकिन यूहन्ना 16 में, ज्यादा ज़ोर *अनुमान* लगाने में *(भविष्यद्वाणी)* लगाया गया है। यीशु ने संकेत दिया था कि यहूदी चेलों को सताएगें (यूहन्ना 16:2-4)। उसने इस बात का भी संकेत दिया था कि वह स्वयं उन्हें छोड़कर चला जाएगा (शारीरिक रूप में) (यूहन्ना 16:7,16,28)। उसने बताया था कि पवित्र आत्मा आएगा और वह संसार बहुतायत से प्रभावित करेगा (यूहन्ना 16:8-11) और मसीह के चेलों की सम्पूर्ण सत्य में अगुवाई करेगा (यूहन्ना 16:13-15)। उसने उन्हें बताया था कि ऐसा होने से पहले चेले कुछ समय के लिए विलाप करेगें और शोक मनाएंगे, लेकिन उनको शोक कुछ ही समय के बार आनन्द में बदल जाएगा (यूहन्ना 16:17-23)। और उसने यह भी भविष्यद्वाणी की थी कि उसी रात्र सारे चेले तितर बितर हो जाएगें (यूहन्ना 16:31-32)।

अध्याय 16 का चरित्र *भविष्यसूचक* था जिससे चेलों को आशा दिलाई गयी थी कि वे निराशा और दु:ख पर जयवन्त होगें। हो सकता है कि सताव के कारण, चेले ऐसा विचार करने लग जाएं कि क्या यह वास्तव में सत्य है कि यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार दिया गया है। इस प्रकार की निराशा और प्रश्न उनके विश्वास को खत्म कर सकते थे।

चेलों को यह समझकर अचम्भा नहीं करनी चाहिए कि कोई अनोखी बात उनके साथ हो रही है (1 पतरस 4:12)। यीशु मसीह अपने चेलों को नये नियम के काल के लिए तैयार कर रहे थे। नया नियम यीशु मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बीच का समय है। इस काल में मसीहियों पर दबाव और सताव होगा, लेकिन इसके साथ ही साथ अभक्ति से भरे इस संसार में गहरा प्रभाव पड़ेगा और पाप, धार्मिकता और न्याय

के प्रति निरूत्तर होगें। और अन्त में यह नये नियम का युग तब समाप्त हो जाएगा जब यीशु मसीह अपने दूसरे आगमन पर पूर्ण विजय का पताका फहराएंगे। “संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाधों, मैंने संसार को जीत लिया है (*और फिर संसार इसी जीती हुई अवस्था में बना रहेगा*)(परफेक्ट टेन्स में)।”(यूहन्ना 16:33)!

16:16-22

प्रश्न 2. वह “थोड़ी देर में” क्या है जिसमें यीशु मसीह चला जाएगा और उसके चेले रोएगें और विलाप करेगें?

ध्यान दें। वह समय कब था जब यीशु मसीह के चेले उसे नहीं देख पाए? चेले आपस में सोच विचार करने लगे कि यीशु मसीह की निम्नलिखित बातों का क्या मतलब है:

- इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूँ और तुम में कोई मुझे फिर न देखेगा” (यूहन्ना 16:10)।
- “थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे और फिर थोड़ी देर में देखोगे” (यूहन्ना 16:16)।
- क्योंकि मैं अपने पिता के पास जाता हूँ” (यूहन्ना 16:17)।
- “तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा; तुम्हें शोक होगा, परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द में बदल जाएगा” (यूहन्ना 16:20)।

यीशु मसीह ने स्वयं कहा कि उन्हें बुरे संसार के द्वारा जल्द ही तिरस्कार का सामना करना पड़ेगा। पहले तो उसके चेले उसे *अपनी शारीरिक आंखों से* तीन दिनो तक नहीं देख पाएंगे (अर्थात शुक्रवार की शाम से लेकर तड़के रविवार तक)। वह (उसकी देह) कब्र में पड़ी रहेगी। उसकी मानवीय आत्मा पिता के पास स्वर्ग में थी (लूका 23:43,46)।

उसने पुन: जीवित होने के बाद उन्होंने चालीस दिनों तक अपनी शारीरिक आंखों से देखा (प्रेरितों 1:3)। उसके बाद वे उसके स्वर्गारोहण से लेकर पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने तक पूरे दस दिन *अपनी आंखों से नहीं देखने वाले थे।* लेकिन यीशु मसीह ने प्रतिज्ञा की थी, “मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा; मैं (यीशु मसीह) तुम्हारे पास वापस आऊंगा” (यूहन्ना 14:18)। उसके स्वर्गारोहण के बाद पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने पर वे *उसे पुन: अपनी आत्मिक आंखों से देखेगें,* क्योंकि “वह जगत के अन्त तक सदैव उनके साथ रहेगा (वर्तमान संसार में)” (मत्ती 28:20)।

बहुत से ऐसे मसीही हैं जो यह सोचते हैं कि उन्हें पूरे नये नियम काल में उपवास करके ही रहना चाहिए। यीशु ने कहा, “क्या बाराती, जब तक कि दूल्हा उनके साथ है, शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएगें जब दूल्हा उनसे अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेगें।”(मरकुस 2:19-20; मत्ती 9:15-17)। केवल उन्हीं दिनों में यीशु अपने चेलों के साथ नहीं था, वे रोये और उन्होंने शोक किया और उपवास किया। लेकिन उसके मृतकों में से जीवित होने के बाद और खास तौर पर पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बाद से यीशु लगातार उनके साथ था। नये नियम का युग विलाप करने या उपवास करने का युग नहीं वरन आनन्द और उत्सव मनाने का युग है!

---

[1] बाइबल में इलिमास टोन्हे जैसे भावी कहने वाले (प्रेरितों13:6-8), इस्लाम में मुहम्मद और मोर्मोनवाद में जोसफ स्मिथ सत्य में कुछ बढ़ा नहीं सकते। जो लोग इस बात का दावा करते हैं कि बाइबल में पाया जाने वाला सहायक (यूहन्ना 14:16-17) मुहम्मद है, तो वह गलत हैं, क्योंकि सहायक का अर्थ बाइबल में स्पष्ट तौर पर **पवित्र आत्मा को दर्शाता है जो यीशु मसीह की गवाही देता है** (यूहन्ना 15:13-15)। यहां तक कि मुहम्मद ने भी खुद कहा है कि यीशु(ईसा) “अल्लाह का कलाम है” (सूरा 4:171)। इसकी तुलना बाइबल में यीशु के बारे में मुहम्मद से भी 700 वर्ष पहले कही बातों से करें। **“यीशु मसीह ही परमेश्वर का वचन है**”(यूहन्ना 1:1) और “**यीशु मसीह परमेश्वर का आत्मा है”** (यूहन्ना 14:18; रोमियों 8:9-10)।

जकर्याह 8:19 में 420 ई.पू पहले ही भविष्यद्वाणी कर दी गयी थी, "चौथे, पांचवें, सातवें, और दसवें, महीने में जो जो उपवास के दिन होते हैं, वे यहूदा के घराने के लिए हर्ष और आनन्द और उत्सव क पर्वों के दिन हो जाएंगे।"(ईस्टर के बारे में सोचें, जो स्वर्गारोहण और पिन्तेकुस्त का दिन है!)। अत: "थोड़ी देर" यीशु मसीह की मृत्यु और पवित्र आत्मा के उण्डेले जाने के बीच समयान्तराल का हवाला देता है (यह हवाला यीशु मसीह के दूसरे आगमन तक पूरे नये नियम के युग की ओर इशारा नहीं करता है)! उसके मृतकों में से जी उठने से लेकर पवित्र आत्मा (जो यीशु मसीह का आत्मा है)(1 पतरस 1:11) के उण्डेले जाने तक कोई भी चीज़ उनके आनन्द को उनसे नहीं छीन सकती (प्रेरितों 13:52; गलातियों 5:22)।

16:23-24

प्रश्न 3. यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। यीशु मसीह के नाम करने के दो पक्ष हैं:

(1) यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ मसीह के कामों के आधार पर प्रार्थना करना है।

परमेश्वर यीशु मसीह द्वारा किये गये कामों के आधार पर हमारी प्रार्थनाओं के आधार पर *देता है।* यूहन्ना 16:23 का और भी ज़्यादा सटिक अनुवाद होगा, "उस दिन तुम मुझसे (यीशु से) कुछ नहीं मांगोगे। मैं तुम से सच सच कहता हूँ, जो भी कुछ तुम मेरे नाम से पिता (परमेश्वर) से मांगोगे वह तुम्हें देगा। यीशु मसीह ने उनसे प्रतिज्ञा की कि परमेश्वर उन्हें वह उद्धार प्रदान करेगा जिसका केन्द्र बिन्दु यीशु मसीह होगा! परमेश्वर पिता, यीशु मसीह के प्रेम व यीशु मसीह द्वारा हमारे पापों के लिए किये गये प्रायश्चित की वजह से हमें पापों की क्षमा और हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर प्रदान करते हैं।

यीशु मसीह क्रूस पर किये गये अपने कार्यों के माध्यम से परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक मध्यस्थ है। मध्यस्थ के रूप में यीशु मसीह ने परमेश्वर की ओर से लोगों के लिए रास्ता खोल दिया। मनुष्य और परमेश्वर के बीच में अब कोई दूसरा मध्यस्थ नहीं है (1 तीमुथीयुस 2:5)! दूसरे धर्म के लोगों के लिए परमेश्वर की ओर से खुला हुआ कोई रास्ता नहीं है। दूसरे धर्मों मे पापों का प्रायश्चित नहीं किया गया है और परमेश्वर से अलगाव को दूर करने के लिए कोई प्रार्थना नहीं की गयी है (यशयाह 59:1-2)! परमेश्वर उन पाापियों की प्रार्थनाओं को नहीं सुनता जिनके पाप क्षमा नहीं किये गये हैं (भजन 66:18, नीतिवचन 1:23-33, यशायाह 1:15; 59:1-2)! उनके पाप आज भी बाइबल के परमेश्वर व मनुष्यों के बीच में दीवार खड़ी करके रखे हुए हैं। यदि यीशु मसीह पापों के लिए नहीं मरा है, तो परमेश्वर की सिद्ध पवित्रता और धार्मिकता उसे अपवित्र और अधार्मिक लोगों को क्षमा करने तथा उनकी प्रार्थनाओं को सुनने से रोकेगी।[2]

मसीही लोग यीशु मसीह द्वारा किये गये कामों के आधार पर ही प्रार्थना करते हैं। यूहन्ना 16:24 में लिखा है, "अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" चेलों के मसीही बनने से पहले, वे पुराने नियम में प्रभु की निज प्रजा कहलाते थे, अर्थात, इस्राएल और जब वे प्रार्थना किया करते थे तो सीधा परमेश्वर से प्रार्थना किया करते थे। उदाहरण के लिए, भजन 17 में दाऊद ने अपनी प्रार्थना यह कहते हुए शुरू की, "हे यहोवा परमेश्वर, सच्चाई के वचन सुन, मेरी पुकार

---

[2] परमेश्वर उनकी प्रार्थनाएं सुनता है, लेकिन तब तक उनका जवाब नहीं देता, जब तक कि वे पश्चाताप करके यीशु की ओर नहीं फिर जाते।

की ओर ध्यान दे।" पुराने नियम में परमेश्वर लोगे परमेश्वर को "यहोवा परमेश्वर" या केवल "परमेश्वर" कह कर सम्बोधित किया करते थे। उन्होंने कभी अपनी प्रार्थनाओं को यीशु मसीह के नाम से समाप्त नहीं किया। वे मसीह अर्थात यीशु मसीह की बाट जोह रहे थे, जिसमें होकर परमेश्वर सारी मानवजाति को आशीष देने वाला था (उत्पत्ति 22:18)।
लेकिन अब मसीहा आ चुका था। वह पापों का प्रायश्चित करने के लिए क्रूस पर अपनी जान देने के अन्तिम क्षण पर था। उसकी मृत्यु और पुनरूत्थान वह रास्ता ठहरने वाला था जिसके द्वारा परमेश्वर देश देश के लोगों को आशीष देगा। एक मध्यस्थ होने के नाते यीशु मसीह ने मनुष्यों से परमेश्वर के पास जाने का रास्ता खोल दिया। यदि यीशु मसीह पापों के लिए अपनी जान नहीं देते, तो अपवित्र और अधार्मिक लोगों को कभी भी पवित्र और धर्मी परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी जाती (यशायाह 59:1-3; 1 तीमुथीयुस 6:16)! लेकिन इफिसियों 2:18 और 3:12 के अनुसार मसीहियों को अब परमेश्वर पिता के पास जाने की अनुमति है और वे आज़ादी और भरोसे के साथ उसके सम्मुख आ सकते हैं। इब्रानियों 4:16 में लिखा है, "इसलिए आओ हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकार चलें, कि हम पर दसया हो, और वह अनुग्रह पाएं जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।"

(2) यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ परमेश्वर की इच्छा में होकर प्रार्थना करना है।

1 यूहन्ना 5:14 में लिखा है, "और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह हैं ; कि यदि हम उस की इच के अनुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमारी सुनता है।

एक मध्यस्थ के रूप में, यीशु मसीह ने परमेश्वर के चरित्र और स्वभाव को प्रगट किया। प्रार्थना करने के लिए परमेश्वर की इच्छा और उसके चरित्र को जानना जरूरी क्यों है। कई लोग मूर्तियों पर विश्वास करते हैं। इन मूर्तियों चरित्र यह है कि वे इन्सानों के द्वारा बनायी गयी और मृतक हैं। वे प्रार्थना (भजन 115:6) को सुन और उसका जवाब नहीं दे सकती और वे इन्सानों के लिए कुछ भला (या बुरा) नहीं कर सकती (यिर्मयाह 10:5)। दूसरे लोग एक देवी देवताओं पर विश्वास करते हैं जिनके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। कोई नहीं जानता कि उनसे किस तरह की जाती है। लेकिन बाइबल के जीवते परमेश्वर ने अपने चरित्र को प्रगट किया है। उदारहण के लिए, उसके पवित्र होने के कारण हम जानते हैं कि हम अपवित्र चीज़ों के लिए उससे प्रार्थना नहीं कर सकते। हम जानते हैं कि हम उससे क्षमा मांग सकते हैं। वह दयावन्त है, इसलिए हम उससे क्षमा मांग सकते हैं। वह विश्वासयोग्य है, इसलिए हम जानते हैं कि हम उससे सहायता मांग सकते हैं। इसलिए जितना बेहतर हम परमेश्वर के चरित्र को जानते है, उतना ही बेहतर ढंग से हम प्रार्थना कर सकते हैं!

एक मध्यस्थ के रूप में, यीशु मसीह ने भी परमेश्वर की इच्छा को प्रगट किया। यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने के लिए, हमें मसीह की प्रगट इच्छा में होकर प्रार्थना करना ज़रूरी है। बाइबल में प्रगट *उसकी इच्छा* के अनुसार प्रार्थना करें और उसकी इच्छा से जुड़ी सारी चीजों के लिए उस पर विश्वास करते हुए प्रार्थना करें। यदि प्रभु यीशु मसीह प्रभु और स्वामी है, तो मसीही लोग किसी भी ऐसी वस्तु के लिए प्रार्थना नहीं करेगें जो उसकी इच्छा के विरूद्ध हो, क्योंकि उन प्रार्थनाओं से वह खुश नहीं होगा।

इसलिए, यीशु मसीह के नाम में प्रार्थना करने का अर्थ मसीह द्वारा प्रगट की गयी परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आत्मविश्वास के साथ प्रार्थना करना और हर एक उस बात के लिए प्रार्थना करना जिससे परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर की महिमा में वृद्धि होती हो!

कदम 4. प्रयोग करें। अनुप्रयोग

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवतः अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 16:1-33 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 16:1-33 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

16:8-10। सुसमाचार साझा या प्रचार करते समय इस बात के लिए पूरी तरह से आश्वस्त रहें कि परमेश्वर स्वयं पवित्र आत्मा के द्वारा लोगों के पापों का खुलासा करेंगें, उन्हें बाइबल की सच्चाई को समझाएगें और अगर वे प्रतिउत्तर देने में असफल होते हैं तो उन्हें निरूत्तर करेंगें।

16:12-15। यीशु मसीह के पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और स्वर्गीय सिंहासन पर विराजमान होने के बाद भी, यीशु ने अपने प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के द्वारा बहुत सी बातों को प्रगट किया। इन सारी बातों को नये नियम में लिखा गया और उन्हीं के साथ उसे समाप्त भी किया गया है।

16:13। पवित्र आत्मा आज भी आपकी सत्य में अगुवाई करता है, लेकिन मान्यता दी जाने वाली उन सच्चाईयों में नहीं जो पहले से ही बाइबल में प्रगट सच्चाई के खिलाफ हो! इसके अलावा वह आप पर कोई भी ऐसे सत्य को प्रगट नहीं करता जिसे आप बाइबल में जोड़ सकें।

16:19-22। आप आनन्द के जीवन को जी सकते हैं, क्योंकि यीशु मसीह जी उठा और जीवित और उपस्थित है।

16:24। आप भरोसे के साथ प्रार्थना कर सकते हैं, क्योंकि यीशु परमेश्वर और आपके व आपके और परमेश्वर के बीच में एक मध्यस्थ है।

16:33। यह न भूलें कि आपको इस संसार में क्लेश होगें, लेकिन यीशु मसीह ने इस संसार को जीत लिया है और अब सारा संसार उसकी अधीनता में है। इसी कारण आप यीशु मसीह की शक्ति और उसकी प्रतिज्ञा से महान कार्य कर पा रहे हैं (यूहन्ना 14:12)।

2. यूहन्ना 16:1-33 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं इस बात को जानकर बहुत खुश और उत्साहित हूँ कि सताव और कष्टों का मतलब जरूरी तौर पर यह नहीं है कि मैंने परमेश्वर के विरूद्ध कुछ गलत किया है और परमेश्वर मुझे दण्ड दे रहे हैं। अब मैं इस बात को जान गया हूं कि सताव और क्लेश एक मसीही जीवन का हिस्सा है। यीशु मसीह ने पहले ही बता दिया था कि ऐसा होगा। इसलिए जब लोग मुझे सताते या मुझसे नफरत करते हैं तो मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए

---

[3] सूराह 74:31 में लिखा है, “कि अल्लाह जिसको चाहें उसे दूर कर देता है, और जिसे चाहे उसकी अगुवाई करता है।

कि मेरे साथ कुछ अलग या अनोखा हो रहा है। मैं यीशु मसीह के दूसरे आगमन और धरती के नये होने का इन्तज़ार कर रहा हूं, जब सारे बुरे लोगों पर उसकी विजय खुले तौर पर सबके सामने प्रगट हो जाएगी!

मैं पूरी तरह समझ गया हूँ कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में यीशु द्वारा पवित्र आत्मा के कलीसिया पर उण्डेले जाने और धरती पर उसके प्रभाव की भविष्यद्वाणी पूरी हो गयी थी। मैं पूरी तरह से मानता हूँ कि पवित्र आत्मा ने मसीह के चेलों की सभी सत्यों में अगुवाई की, जिससे कि वे यीशु के जीवन व उसकी शिक्षाओं को लिख सकें और नये नियम में लिखी गयी पत्रियों के द्वारा हमें उद्धार के निमित्त मसीह के सम्पूर्ण कार्यों के बारे में सिखा सकें। मैं मानता हूं कि पवित्र आत्मा ने मसीह के चेलों को भविष्य में होने वाली बातों के बारे में बताया होगा और उन बातों को पौलुस, पतरस और यूहन्ना की पत्रियों और विशेषतौर पर प्रकाशितवाक्य में लिखा गया।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 16:1-33 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5 **प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]*

दूसरों के लिए प्रार्थना करें

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6 **तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]*

अगले अध्याय के लिए

(समूह के अगुवे. समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 16 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **याकूब 1-3** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(1) खर्च करने के द्वारा प्रेम करें: 2 कुरिन्थियों 12:14-15।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]

मसीही परिवार में बच्चों को अनुशासित करना

परिचय दें। मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अनुशासन है। इब्रानियों 12:5-6 कहता है, "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है।" और नीतिवचन 3:12 कहता है, "क्योंकि यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसको डाँटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।" परमेश्वर के वचन के अनुसार, अनुशासन प्रेम की अभिव्यक्ति है। इसलिए, अनुशासन को कभी अनियंत्रित क्रोध या अन्यायपूर्ण दण्ड की अभिव्यक्ति नहीं बनाना चाहिए। अनुशासन का प्रयोग हमेशा सच्चाई और प्रेम के वातावरण में किया जाना चाहिए।

1. अनुशासन प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

खोजें और चर्चा करें। अनुशासन प्रशिक्षण का एक हिस्सा किस प्रकार से है?

- ***पढ़ें*** नीतिवचन 22:6 - नीतिवचन 22: 6 में "शिक्षा" (Hebrew: chanak) शब्द और इफिसियों 6:4 में "शिक्षा और चेतावनी" शब्द (Greek: paideia, nouthesia) का अर्थ विशेष रूप से, *अनुशासन और सुधार के माध्यम से अच्छी आदतों को हासिल करना है।*
- ***पढ़ें*** इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21 - ध्यान दें कि परमेश्वर के वचन के अनुसार, पिता अपने बच्चों के अनुशासन और प्रशिक्षण के लिए उत्तरदायी हैं। यद्यपि माताएँ इस क्षेत्र में पिताओं की सहायता करती हैं, लेकिन पिता परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने इस उत्तरदायित्व को अनदेखा नहीं कर सकते!
- ***पढ़ें*** इब्रानियों 12:10-11 - "वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ। और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।" अनुशासन का मुख्य रूप से अर्थ, बच्चे को बात का उल्लंघन करने के लिए दण्डित करने से नहीं है। इसका मतलब है कि *उस बच्चे को उस बात की शिक्षा देनी चाहिए जिस पर उसे चलना है* (नीतिवचन 22:6)। इसलिए, सच्चा प्रेम एक बच्चे को वैसी ही शिक्षा देगा जिस पर उसे चलना चाहिए। लेकिन प्रेम एक बच्चे को कठोरता से अनुशासित नहीं करेगा, क्योंकि परमेश्वर पिता अपने बच्चों को रिस या क्रोध दिलाने से मना करता है। रिस दिलाने का अर्थ क्रोध को उत्तेजित करना है। क्रोध दिलाने से चिड़चिड़ाहट होती है। माता-पिता का इस प्रकार का व्यवहार एक बच्चे को हतोत्साहित करता है। यदि माता-पिता अपने बच्चे से प्रेम करते हैं, तो वे उसे अनुशासित करेंगे, लेकिन वे उसे हतोत्साहित नहीं करेंगे। अनुशासन का बड़ा लाभ यह है कि यह बच्चे को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में पवित्र होने के लिए प्रशिक्षित करता है, ताकि वह अपने जीवन में अन्य लोगों के साथ सही सम्बन्ध बना सके और अपने हृदय में शान्ति ला सके।

2. अनुशासन का अर्थ रेखाओं या सीमाओं को निर्धारित करना है।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर और माता-पिता किन क्षेत्रों में सीमाओं को निर्धारित करते हैं?

(1) परमेश्वर और माता-पिता विभिन्न प्रकार की सीमाएँ निर्धारित करते हैं।

- ***पढ़ें*** व्यवस्थाविवरण 5:17-21 - दस आज्ञाएँ दस महत्वपूर्ण सीमाएँ हैं। उनके बिना, समाज का परमेश्वर और

अपने पड़ोसी से सम्बन्ध टूट सकता है!

- ***पढ़ें*** मत्ती 5:13-16; भजन 1:1; भजन 119:37; नीतिवचन 1:10-15; 4: 14-15,23-27; 5:1-8; 6:20-29; 7:24-27; 1 कुरिन्थियों 15:33 "बुरी संगति अच्छे चरित्र को खराब कर देती है"। यद्यपि मसीहियों को दूसरों लोगों पर अपना प्रभाव डालना बन्द नहीं करना चाहिए और इसलिए उन्हें समाज में सम्मिलित होने से पीछे नहीं हटना चाहिए, इसलिए परमेश्वर और माता-पिता क़रीबी लोगों से जुड़े सम्बन्धों में एक सीमा को निर्धारित करते हैं। मसीहियों को दुष्टों, मजाक उड़ाने वालो, बुरे काम करने के लिए मजबूर करनेवालो, जुआरी, अपराधियों, व्यभिचारियों, आदि जैसे लोगों के साथ क़रीबी सम्बन्ध बनाने से बचना चाहिए। मसीहियों को स्वयं यह नहीं सोचना चाहिए कि बुरी संगति उनके चरित्र को खराब नहीं करेगी!

(2) सीमाएँ निर्धारित करने के कारण।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर और माता-पिता इन सीमाओं को क्यों निर्धारित करते हैं?

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 8:9; गलातियों 5:1,13,24; 1 पतरस 2:16

ध्यान दें। अगर माता-पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, तो वे उन्हें अनियंत्रित स्वतंत्रता नहीं देंगे! असली प्रेम एक बच्चे के चारों ओर एक रेखा को खींचता है ताकि वह सही व गलत, और अच्छे व बुरे के बीच का अन्तर जान सकें। एक बच्चे के चारों ओर स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना उनकी इन सीमाओं के भीतर सुरक्षित महसूस करने में मदद करता है। सीमाएँ उसे बुरे परिणामों को समझने में सहायता करती हैं और अगर वह उस सीमा के बाहर जाता है तो उससे वह स्वयं और अन्य लोग दु:खी होते हैं! उन सीमाओं के बिना, एक बच्चे को यह पता नहीं चलेगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा और इसके परिणामस्वरूप वह अपने कार्यों के परिणामों का मूल्याँकन नहीं कर पाएगा। सीमाएँ बाड़े के रूप में कार्य करती हैं। वे एक बच्चे की रक्षा करती हैं। वे उसे जानने और महसूस करने में सहायता करती हैं कि जब वह इन बाड़ों के भीतर रहता है, तो वह उन बातों को करता है जिससे परमेश्वर और उसके माता-पिता खुश होते हैं।

सीमाओं को अक्सर परिवार के घर के नियमों में सारांशित किया जाता है। माता-पिता स्पष्ट रूप से अपने बच्चों को यह बताते हैं कि उनके घर के नियम क्या हैं, और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं। माता-पिता के पास अनावश्यक नियम नहीं होने चाहिए, लेकिन उन्हें एक स्पष्ट सीमा निर्धारित करनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर, माता-पिता को विशेष रूप से बेईमानी (झूठ बोलने आदि), अपमान करने और अनाज्ञाकारिता के प्रति अपने बच्चों को अनुशासित करना चाहिए। बच्चे के लिए स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना उनके लिए सुरक्षा प्रदान करने का एकमात्र तरीक़ा है, ताकि उसे इस बात का पता रहेगा कि वह हर समय क्या कर सकता है या क्या नहीं कर सकता। जब कोई बच्चा अपने घर में रेखाओं या सीमाओं का सम्मान करना सीख जाता है, तो वह शायद समाज में पाई जाने वाली सीमाओं के साथ-साथ परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं का भी सम्मान करेगा।

3. अनुशासन का मतलब डाँटना और सुधार करना है।

(1) डाँटने की आवश्यकता।

पढ़ें 1 शमूएल 2:22-24; 3:12-13; नीतिवचन 27:5।

खोजें और चर्चा करें। एली नामक पिता अपने बच्चों को अनुशासित करने में किस प्रकार असफल रहा?

ध्यान दें। एली के दो बेटे थे जिन्होंने बहुत बुरे काम किये थे। उसने अपने दोनों बेटों से *बहुत बातें की*, लेकिन वह उन्हें *दण्डित करने* और *रोकने मे नाकाम रहा।* उसने उनसे कहा, "तुम ऐसे-ऐसे काम *क्यों* करते हो?" यह ताड़ना देना नहीं है, बल्कि किसी काम को करने से रोकने के लिए आग्रह करना है। इसकी बजाय, उसे अपने दुष्ट बेटों से यह पूछना चाहिए था, "तुमने यह *क्या* किया?" उसे उन्हें उनकी दुष्टता और उनके परिणामों से उनका सामना करवाना चाहिए था। उसे उन्हें उनके द्वारा किये गये पाप के लिए दण्डित करना चाहिए था!

(2) डाँटने के विभिन्न पहलु।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अनुसार, एक बच्चे को डाँटने (Greek: elenchó) के विभिन्न पहलु क्या हैं?

- ***पढ़ें*** इफिसियों 5:11 – माता-पिता अपने बच्चे द्वारा किये गए उस विशेष पाप को उजागर (Greek: elenchó) करते हैं। उनके बच्चे को स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि उसने क्या अपराध किया है। माता-पिता को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे को यह मालूम हो कि परमेश्वर और उसके माता पिता, दोनों की दृष्टि में वह कार्य गलत *क्यों* था।
- ***पढ़ें*** नीतिवचन 27:5-6; 28:23 – तब माता-पिता अपने बच्चे को डाँटकर या उसके द्वारा किये गए कार्य को अस्वीकार करके उसकी ताड़ना (Greek: elenchó) करते हैं।
- ***पढ़ें*** तीतुस 1:9 – यदि आवश्यक हो, तो माता-पिता उस समय अपने बच्चे के उन तर्कों को अस्वीकार करें (Greek: elenchó) जब वे बिना किसी अच्छे कारण के स्वयं को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, माता-पिता को अपने बच्चे द्वारा किये गए कार्य को समझाने का एक अवसर प्रदान करना चाहिए। उनके बच्चे के पास एक अच्छा तर्क या कारण भी हो सकता है जिसे शायद माता-पिता ने अनदेखा कर दिया हो। यदि कभी भी माता-पिता अपने बच्चे पर गलत अनुमान या अवाँछित आरोप लगाते हैं तो उन्हें उससे क्षमा माँगनी चाहिए।
- ***पढ़ें*** यूहन्ना 16:8 – इस बीच माता-पिता चुपचाप प्रार्थना करें ताकि पवित्र आत्मा स्वयं बच्चे को उसके द्वारा किये गए गलत कार्य को मानने के लिए तैयार करे (Greek: elenchó) और उस अपराध की गंभीरता (Greek: elenchó) को वह समझे, ताकि वह दोषी ठहरे या अपने उस अपराध के कारण शर्मिंदगी को महसूस करे और उस कार्य के लिए पश्चाताप करे।
- ***पढ़ें*** 2 तीमुथियुस 3:16 – अन्त में, माता-पिता अपने बच्चे को उसी मार्ग पर चलने में सहायता करें जिस पर उसे चलना हो और उसे सुधारें (Greek: elenchó)।
- ***पढ़ें*** इब्रानियों 12:6; नीतिवचन 22:15 – और यदि उनका बच्चा मूर्खतापूर्ण, घमण्डी या झगड़ालू होने के कारण आज्ञा नहीं मानता है, और अपने माता-पिता के विरूद्ध अपने हृदय को कठोर कर लेता है या अपने माता-पिता के अधिकार को चुनौती देता है, तो माता-पिता को अपने बच्चे को उचित तरीक़े से दण्डित करना चाहिए (Greek: elenchó)।

4. अनुशासन का मतलब उचित पुरस्कार देना है।

खोजें और चर्चा करें। उचित पुरस्कार और दण्ड क्या हैं?

(1) उचित रूप से पुरस्कार।

माता-पिता को अपने बच्चों को सही तरीक़े से रहने के लिए प्रोत्साहित करने और उन्हें पुरस्कृत करने के विभिन्न तरीकों को तैयार करना चाहिए।

(2) सम्भावित पुरस्कार जो बच्चे को सही तरीके से चलना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं :

- सही काम करने के लिए बच्चे को धन्यवाद दें और उसकी प्रशंसा करें (सराहें)।
- बच्चे को गले लगाएँ और उस पर पूरा ध्यान दें।
- बच्चे को बाहर घुमाने के लिए ले जाएँ जिसकी वह कामना करता है।
- बच्चे को अपने मित्रों से मिलने की और अधिक स्वतंत्रता दें।
- बच्चे को किसी तरह का पुरस्कार दें।

5. अनुशासन का मतलब उचित दण्ड देना है।

खोजें और चर्चा करें। उचित पुरस्कार और दण्ड क्या हैं?

(1) उचित रूप से दण्डित करें।

माता-पिता को अपने बच्चों को गलत कार्यों से पश्चाताप करने के बाद सही मार्ग पर वापस आने के लिए प्रेरित करने के लिए विभिन्न प्रकार के दण्ड की भी तैयारी करनी चाहिए।

(2) सम्भावित दण्ड जो बच्चे को अपने गलत तरीक़े को बदलने के लिए प्रेरित करते हैं :

- बच्चे को उसके अपराध के लिए डाँटें, लेकिन उसके चरित्र को बुरा भला न कहें (मारे न)।
- उसे अपने से अलग करके (अलग कमरे में) अपने अपराध के बारे में सोचने का अवसर दें।
- बच्चे के साथ बाहर जाने की बनायी गयी योजना को रद्द करें।
- मित्रों से मिलने की उसकी स्वतंत्रता को कम करें।
- उसके कुछ जेब खर्च को देना बन्द करें।
- उसे घर के कुछ कार्यों को सौंपें।
- जब वास्तव में ज़रूरी हो, तो बच्चे को छड़ी से दण्डित करें।

(3) बचाने के उद्देश्य से दण्डित करें।

पढ़ें आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:2-11; लूका 12:47-48; गलातियों 6:7-8

ध्यान दें। परमेश्वर वर्तमान समय में लोगों को अनन्त दण्ड से बचाने के लिए अस्थायी दण्ड के साथ दण्डित करता है (मत्ती 25:46)।

- परमेश्वर अपने लोगों को बुराई से फिरने और स्वयं को परमेश्वर के अधीन करने के लिए राष्ट्र को भी जड़ से उखाड़ फेंकेगा (यिर्मयाह 18:5-17)। जीवित परमेश्वर लोगों को भूख, सूखे, फसल के न पकने, बीमारी या महामारी, युद्ध में हार और उनके नगरों के विनाश के द्वारा लोगों को दण्डित करता है ताकि वह उन्हें अपनी ओर फिरने के लिए प्रेरित कर सके (यहेजकेल 14:21; आमोस 4:6-12)।
- परमेश्वर फसल के खराब होने, धन के समाप्त होने और सब कुछ नाश करने के द्वारा अपने लोगों को दण्डित करता है ताकि वह इन विफलताओं के द्वारा उनके दैनिक जीवन में परमेश्वर के विरुद्ध पापी अवहेलना को करने से रोकने के लिए प्रेरित कर सके (हाग्गै 1:2-11)।
- "प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।" (1 कुरिन्थियों 11:32)। परमेश्वर वर्तमान में अपने लोगों को नरक के अनन्त दण्ड से बचाने के लिए अस्थायी दण्ड देकर दण्डित करता है। परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र और न्यायी है और उसका दण्ड भी हमेशा पूरी तरह से निष्पक्ष और न्यायी होता है (लूका 12:47-48)। परमेश्वर चाहता है कि सब उसे गंभीरता से लें और वह यह इच्छा करता है कि पृथ्वी पर लोग अपना जीवन पवित्रता के साथ व्यतीत करें (गलातियों 6:7-8)।

(4) तुरन्त दण्डित करें।

- ***पढ़ें*** सभोपदेशक 8:11 - बाइबल बताती है, "बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है" (वे हर बार गलत कार्य करने के वे नये-नये तरीके अपनाते हैं)।
- ***ध्यान दें।*** जब किसी देश की सरकार अपराधियों को उसी समय दण्डित नहीं करती है, तो अपराधी और भी अहंकारी हो जाते हैं और वे बहुत से अपराध करते हैं! इसी तरह, जब माता-पिता अपने बच्चे को उसी समय और स्पष्टता से अनुशासित नहीं करते हैं, तो बच्चा आश्चर्यचकित होकर यह सोचता है कि उनके माता-पिता उनके प्रति गंभीर हैं भी या नहीं। इसकी वजह से वह बच्चा और भी अहंकारी होकर और अधिक गलत कामों को करेगा। और इससे दूसरा बच्चा और अधिक असुरक्षित हो जाएगा जिससे मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न हो

सकती हैं।

(5) प्रेम से दण्डित करें।

- ***पढ़ें*** भजन 89:30-34
- ***ध्यान दें।*** जब भी परमेश्वर की वाचा की सन्तानें उसकी आज्ञाओं को मानने में असफल होती हैं, तब वह उन्हें दण्डित करता है। फिर भी, वह कभी उनसे प्रेम करना नहीं छोड़ता! "जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है" (नीतिवचन 13:24)।

(6) यदि आवश्यक हो तो छड़ी से दण्डित करें।

पढ़ें नीतिवचन 13:24; 19:18; 20:30; 22:15; 23:13-14; 29:15,17
ध्यान दें। दुनिया की किसी भी सरकार के पास यह अधिकार नहीं है कि वह किसी के बच्चों को अनुशासन का उपयोग करने के सम्बन्ध में परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञाओं को मानने से रोके। प्रत्येक सरकार जो बाइबल में पाई जाने वाली परमेश्वर की शिक्षाओं तथा आज्ञाओं को त्यागती हैं, और परमेश्वर का इंकार करती हैं, अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर भी उनका इंकार करेगा (भजन 2; नीतिवचन 1:28-33; प्रेरितों के काम 4:19-20; 5:29; 1 थिस्सलुनिकियों 4:8; 2 थिस्सलुनिकियों 1:8-10)!

बाइबल इस बात के कई महत्वपूर्ण कारण बताती है कि कभी-कभी बच्चे को छड़ी से क्यों दण्डित करना चाहिए। पेड़ की लचीली शाखा से काटी गयी "एक छड़ी" से। यह कोड़े मारना नहीं है। जब एक बच्चा अपने स्वयं के मार्ग पर चलने लगता है, तो वह अपराध में पड़ सकता है (नीतिवचन 4:14-15) या अपने बुरे व्यवहार के द्वारा कुछ और गंभीर परिणामों को अपने ऊपर ला सकता है (1 कुरिन्थियों 11:30)। लेकिन जब उसे उसके आज्ञा न मानने वाले या हठीले व्यवहार के लिए उसी समय दण्डित किया जाता है, तो वह संभवत: अपराधी नहीं बनेगा या अपने व्यवहार के बुरे परिणामों के कारण न मारेगा। बाइबल सिखाती है, "लड़के की ताड़ना करना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा" (या : उसकी आत्मा को नरक से बचाएगा") (नीतिवचन 23:13-14)। और, "चोट लगने से जो घाव होते हैं, वह बुराई दूर करते हैं; और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है" (नीतिवचन 20:30)। कभी-कभी किसी बच्चे को छड़ी का उपयोग करके दण्डित करना आवश्यक होता है, क्योंकि इसके द्वारा उसका अन्दरूनी मनुष्यत्व शुद्ध होगा और उसकी आत्मा को बचाने का यही एकमात्र तरीक़ा है।

हालाँकि, बच्चे को ऐसी किसी भी जगह न मारें जो स्थायी क्षति का कारण बन जाए। इसके अलावा बच्चे को अपने हाथ से मारना भी अच्छा नहीं है, क्योंकि अगली बार वह आपके हाथों से भी डरना शुरू कर सकता है। बल्कि हमेशा छड़ी का उपयोग दण्ड के प्रतीक और सजा के साधन के रूप में करें। यदि बच्चा किसी भी प्रकार का अपराध करता है तो उसे छड़ी से डरना चाहिए, लेकिन उसे अपने माता-पिता या उनके हाथों के प्रति भय को उत्पन्न नही करना चाहिए।

कुछ अन्य ऐसे कारण जब समय आने पर छड़ी से मारना आवश्यक है। बाइबल सिखाती है, "लड़के के मन में मूढ़ता बन्धी रहती है, परन्तु छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उससे दूर की जाती है" (नीतिवचन 22:15)। और, "छड़ी और डाँट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का योंही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है। अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उससे तुझे चैन मिलेगा; और तेरा मन सुखी हो जाएगा" (नीतिवचन 29:15,17)। बच्चे कभी-कभी मूर्खता के कार्य करते हैं, अपने माता-पिता के प्रति अपमानजनक व्यवहार करते हैं, बुरे कार्य या अपराध करते हैं। नीतिवचन के विभिन्न वचन सिखाते हैं कि बच्चे को एक शुद्ध विवेक देने और घर में शान्ति बनाये रखने के लिए कभी-कभी छड़ी से दण्डित करना आवश्यक है। उसे बुराई और मूर्खता से दूर करने के लिए, और उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाने के लिए यह आवश्यक है! जब एक माता-पिता अपने बच्चों को तुरन्त दण्डित करते हैं, तो बच्चा संभवत: बुद्धिमान बनेगा तथा घर और बच्चों व माता-पिता के हृदय में शान्ति वापस लौट आएगी!

आमतौर पर, जब बच्चे किशोरावस्था में आते हैं, तो माता-पिता को उन्हें छड़ी से मारकर दण्डित नहीं करना

चाहिए। तब अनुशासन का प्रयोग ठीक उसी प्रकार किया जाना चाहिए जैसा कि अपराध करने वाले वयस्कों के साथ किया जाता है।

6. अनुशासन का अर्थ है लगातार आज्ञाकारिता की अपेक्षा करना।

पढ़ें सभोपदेशक 5:5

खोजें और चर्चा करें। यदि कोई माता-पिता अपने बच्चे को सिर्फ डराते रहते हैं कि वह उन्हें दण्डित करेंगे, लेकिन वह उन्हें दण्डित नहीं करते, तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं?

ध्यान दें। सभोपदेशक 5:5 सिखाता है, "मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है"। केवल डराना ही अच्छा विकल्प नहीं है, उदाहरण के लिए, "यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मैं तुम्हे दण्ड दूँगा!" डराने से बच्चे के अन्दर दण्ड के साथ जीने का भय पैदा हो सकता है, या वो दण्ड से बचने के लिए झूठ बोलना आरम्भ कर सकता है, या गुप्त रूप से दण्ड से बचने के लिए साजिश रच सकता है। यही कारण है कि दण्डित करने का भय उत्पन्न करना आमतौर पर एक बच्चे को अनुशासित करने का एक उपयोगी तरीक़ा नहीं है। दण्डित करने का भय उत्पन्न करने के बजाय, माता-पिता अपने बच्चे को उसके गलत व्यवहार के परिणामों के बारे में सोचने में उसकी सहायता कर सकते हैं। हालाँकि, अगर कोई माता-पिता इस प्रकार का भय पैदा करता है, तो उसे इस भय को बाहर भी निकालना चाहिए! अगर माता-पिता उस भय को दिखाने में नाकाम रहते हैं, तो बच्चा इस बात से आश्वस्त हो जाता है कि वह अपने माता-पिता पर भरोसा या विश्वास नहीं कर सकता।

लगातार आज्ञाकारिता की अपेक्षा रखना भय उत्पन्न करने की तुलना में काफी बेहतर है। माता-पिता को अपने बच्चे के पालन-पोषण को लेकर परेशान नहीं होना चाहिए। उन्हें अपने बच्चे को मनमानी भी नहीं करनी देनी चाहिए। अगर माता-पिता अपने बच्चे की आज्ञा मानने या उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए तैयार रहते हैं, तो उनके बच्चे हमेशा आज्ञा का पालन करने या सजा से बचने के लिए इस प्रकार की योजना बनाएँगे! आज्ञाकारिता के क्षेत्र में, माता-पिता को अपने बच्चे को कोई विकल्प नहीं देना चाहिए, लेकिन बच्चे की अनुचित माँग भी पूरी नहीं करनी चाहिए! अनुशासन का मतलब लगातार आज्ञाकारिता की अपेक्षा करना है!

7. अनुशासन का अर्थ पश्चाताप या दण्ड के बाद बच्चे को सांत्वना देना है।

खोजें और चर्चा करें। बच्चे के लिए क्षमा और आश्वासन क्यों महत्वपूर्ण है?
पढ़ें लूका 17:3; 2 कुरिन्थियों 2:5-8
ध्यान दें। बच्चे के स्वयं के पाप से पश्चाताप या माता-पिता को उसके अपराध के लिए दण्डित करने के बाद, उसे क्षमा कर देना चाहिए, उसे सांत्वना देनी चाहिए और उसे अपने प्रेम से आश्वस्त करना चाहिए! यदि माता-पिता ऐसा नहीं करते हैं, तो वह शैतान को अपने बच्चे के जीवन में क़दम रखने का अवसर देते हैं और उनका बच्चा द्वेष से भरकर बदला लेने वाला बन सकता है। यदि माता-पिता पश्चाताप करने और दण्ड देने के बाद अपने बच्चे को क्षमा करने और आश्वस्त करने में विफल रहते हैं, तो फिर बच्चे के लिए यह विश्वास करना बहुत मुश्किल हो जाता है कि परमेश्वर पाप से पश्चाताप करने के बाद उन्हें क्षमा, शान्ति और आश्वासन देगा! बाइबल सिखाती है कि, दण्ड के बाद, माता-पिता को अपने बच्चे को क्षमा कर देना चाहिए और उन्हें शान्ति देनी चाहिए, ताकि वह अत्यधिक दु:ख से व्याकुल न हो। माता-पिता को यह पुष्टि करनी चाहिए की वह अपने बच्चे से प्रेम करते हैं। अपने बच्चे के साथ प्रार्थना करें, और उसे गले लगायें तथा उसे यह बतायें कि उसके माता-पिता उससे प्रेम करते हैं यह पुष्टिकरण का सबसे अच्छा तरीक़ा है।

पढ़ें नीतिवचन 17:9; इब्रानियों 8:12; मत्ती 18:35
ध्यान दें। पाप को 'भूलना' और 'पाप को स्मरण न दिलाने' के बीच पाए जाने वाले अन्तर का ध्यान रखें। दूसरी बात की अपेक्षा करते हुए परमेश्वर यह अपेक्षा करता है कि उसके अनुयायी भी ऐसा ही करें। जब माता-पिता अपने बच्चे को किसी विशेष अपराध के लिए क्षमा कर देते हैं, तो उन्हें फिर से इस मुद्दे को अन्य परिस्थितियों

में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे को यह लगेगा कि उसके माता-पिता ने उसके पिछले अपराध के बाद उसे वास्तव में क्षमा नहीं किया! परमेश्वर के समान, माता-पिता को पिछले अपराधों का ज़िक्र नहीं करना चाहिए। यदि भविष्य में, माता-पिता के मन में अभी भी उस पिछले अपराध के प्रति कोई नाराज़गी होती है, तो उसे पहले अपने बच्चे को अपने हृदय में क्षमा करने की आवश्यकता है।

8. अनुशासन का मतलब बच्चे को प्रोत्साहित करना है।

पढ़ें कुलुस्सियों 3:21; नीतिवचन 15:1

खोजें और चर्चा करें। पिता अपने बच्चों को किस प्रकार रिस (क्रोध) दिलाते हैं? और वे कौन-से तरीके हैं जिनमें पिता अपने बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं?

ध्यान दें।

(1) बच्चों को रिस (क्रोध) दिलाने के तरीके।

माता-पिता को अपने बच्चे को बहुत अधिक या बहुत कम अनुशासन में रखकर रिस या क्रोध नहीं दिलाना चाहिए। कुलुस्सियों 3:21 कहता है, "हे बच्चेवालों, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए"। "रिस दिलाने" का अर्थ है तंग करना, परेशान करना या क्रोध दिलाने का कारण बनना। माता-पिताओं को अपने बच्चे को दृढ़ता से अनुशासित करना चाहिए, न कि गुस्से से। उन्हें अपने बच्चे के चरित्र के विषय में आलोचनात्मक या नकारात्मक बातें नहीं बोलनी चाहिए, उदाहरण के लिए बच्चे को यह न कहे कि, *"तुम बेवकूफ हो!" "तुम बदसूरत हो!" "तुम कभी समय पर नहीं आते!" "तुम आलसी हो!"* इसे चरित्र को मारना कहा जाता है और इससे बाद में बच्चे के व्यक्तित्व में गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। ऐसे कई तरीक़े हैं जिनमें माता-पिता अपने बच्चों को हतोत्साहित कर सकते हैं। बच्चों को हतोत्साहित करने का एक तरीक़ा उन पर क्रोधित होकर चिल्लाना और उनके चरित्र के बारे में बहुत बुरी बातें कहना है, खासकर अन्य लोगों के सामने उन्हें शर्मिन्दा करना! नीतिवचन 15:1 सिखाता है, "कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है"। माता-पिता के प्रति अपने बच्चों की प्रतिक्रियाओं को देखकर, वह यह जान सकते हैं कि कौन-सी बातें उनके बच्चों को हतोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए बच्चों का परेशान हो जाना, गुस्से हो जाना, उदास हो जाना, अपने माता-पिता को छोड़ देना आदि। ये प्रतिक्रियाएँ एक संकेत हैं कि माता-पिता को अपने बच्चों के साथ *अपने व्यवहार के दृष्टिकोण को बदलना चाहिए।* अनुशासन के द्वारा बच्चा सही दिशा में मुड़ना चाहिए, लेकिन उससे उसकी आत्मा को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए!

(2) बच्चों को प्रोत्साहित करने के तरीके।

बच्चों के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखें। उनके साथ उन चीज़ों या वस्तुओं के रूप में व्यवहार न करें जिसके द्वारा केवल उन्हें देखा जाए, लेकिन उनकी कोई सुनने वाला न हो। जो कुछ माता-पिता और शिक्षक बचपन के दौरान उनके जीवन में बोते हैं, वही बातें वयस्क होने पर इन बच्चों की फसल का हिस्सा बन जाएँगी (गलातियों 6:7-8)। प्रत्येक बच्चे को अपने माता-पिता और शिक्षकों के साथ व्यक्तिगत, मित्रभाव, प्रेमपूर्ण और नियमित सम्बन्ध बनाये रखने की आवश्यकता होती है। इसलिए, भले ही आपके पास समय न हो, तो भी समय निकालकर बच्चों व विशेष रूप से किशोरों और युवा वयस्कों के साथ समय को रचनात्मक रूप से बिताएँ। प्रत्येक बच्चा, किशोर और युवा वयस्क चाहता है कि उसकी पहचान हो, उसका महत्व हो और सब उससे प्रेम करें।

बच्चे, किशोर या युवा वयस्क को नियमित रूप से यह बताएँ कि आप उससे प्रेम करते हैं! विशेषरूप से कुछ संस्कृतियों में पिता को अपने बच्चों के साथ समय बिताना, अपने बच्चों से बात करना और अपने बच्चों को स्नेह करना, यानी उन्हें गले लगाना सीखना चाहिए। कई किशोर और युवा वयस्क शिकायत करते हैं कि उनके पिता के साथ उनका कोई सम्बन्ध या बातचीत नहीं है! उनके सांसारिक पिता के साथ उनकी निराशा उनके स्वर्गीय पिता पर भरोसा न करने का कारण बन सकती है। और उनके सांसारिक पिता के साथ उनका एक अच्छा सम्बन्ध उन्हें पिता परमेश्वर के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करेगा। बातचीत में न केवल

स्कूल और धन के मामले होने चाहिए, बल्कि दुनिया के हर महत्वपूर्ण और दिलचस्प विषय भी शामिल होने चाहिए। बच्चों के साथ मिलकर दिलचस्प, रचनात्मक और चुनौतीपूर्ण बातें भी करें।

उनके मित्रों में वास्तविक रुचि को दिखाएँ। उन्हें अपने दोस्तों के बारे में बात करने दें। उनके दोस्तों को अपने घर में आमंत्रित करें। उनके दोस्तों के साथ भोजन करें और उनके साथ बाहर घूमने जाएँ। बच्चे तब प्रोत्साहित होते हैं जब उनके माता-पिता और शिक्षक उनके मित्रों को स्वीकार करते हैं और उनका स्वागत करते हैं।

बच्चों, किशोरों और युवा वयस्कों को उनके गृहकार्य और पढ़ाई में सहायता करें। उन्हें सलाहकारों और मार्गदर्शकों की आवश्यकता होती है और अक्सर उन्हें उनकी पढ़ाई में दृढ़ता से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है।

जब बच्चे छोटे हों तो कभी-कभी उन्हें पुरस्कृत करें। बच्चों और किशोरों की उन बातों में प्रशंसा करें जिन्हें वे अच्छी तरह से करते हैं। और जब भी वे इसके लायक हों, तो किशोरों और युवा वयस्कों को यह बताएँ कि आपको उन पर और उनके द्वारा किए गए कामों पर गर्व है।

बच्चों और किशोरों को यह विश्वास दिलाएँ कि आप उन पर भरोसा करते हैं। उन्हें ज़िम्मेदारियाँ दें और जब वे अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर लें तब उनकी प्रशंसा करें।

कलीसिया परिशिष्ट 10

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]

सलाह देने के लिए तथ्यों को एकत्रित करना

परिचय। एक मसीही को दूसरों को सलाह देने से पहले अवलोकन करना, सुनना और प्रश्न पूछना सीखना चाहिए। पर्याप्त मात्रा में जानकारी हासिल करने के बाद ही, वह दूसरों को अच्छी सलाह दे सकता और दूसरों को सही निर्णय लेने में मदद कर सकता है।

नीतिवचन की पुस्तक में अवलोकन करने, सुनने और प्रश्न पूछने के लिए निम्नलिखित अच्छी शिक्षाएं प्रदान की गयी हैं:

1. लोगों का अवलोकन करना सीखें।

खोजें व चर्चा करें। अवलोकन करने वाली बातें कैसे आपकी जानकारियां हासिल करने तथा दूसरों को सलाह देने में मदद कर सकती हैं?

(1) लोगों की जीवन शैली और उनके व्यवहार का मूल्यांकन करें।

पढ़ें नीतिवचन 24:30-34 तक। वहां लिखा है कि,"मैं आलसी के खेत के पास से और निर्बुद्धि मनुष्य की दाख की बारी के पास से होकर जाता था, तो क्या देखा कि, वहां सब कहीं कटीले पेड़ भर गए हैं; और वह बिच्छू पेड़ों से ढंप गयी है, और उसके पत्थर का बाड़ा गिर गया है। तब मैं ने देखा और उस पर ध्यान पूर्वक विचार किया; हो मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की। छोटी सी नींद, एक और झपकी, थोड़ी देर हाथ पर हाथ रख के और लेटे रहना, तब तेरा कंगालपन डाकू की नाई और तेरी घटी हथियार बन्द के समान आ पड़ेगी। लोगों की जिन्दगियों से शिक्षा से प्राप्त करने के लिए आपको यह निरीक्षण या मूल्यांकन करना जरूरी है कि वे कैसे जीवन व्यतीत करते हैं। उदारहण के लिए, एक आलसी व्यक्ति के जीवन पर ध्यान करके आप सीख या समझ सकते हैं कि वह कंगाल कैसे होता है।

(2) लोगों की सुखद अवस्था पर अवलोकन करना।

पढ़ें नीतिवचन 27:23। वहां पर लिखा है, "अपनी भेड़ बकरियों की दशा भली-भांति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर"। जितने भी मसीही आपके हाथों में सौंपे गये हैं आपको ध्यानपूर्वक उनकी शारीरिक,भावनात्मक, सामाजिक और आत्मिक स्थिति का अवलोकन करना चाहिए। आपको अपने आप से कुछ निम्नलिखित प्रश्न करने चाहिए:

- "नियमित तौर पर चलने वाली बीमारी दूसरे मसीही व उसके परिवार को प्रभावित कर रही है?"
- "उस व्यक्ति को भावनात्मक आघात क्यों लगा?"
- "लोगों के लिए उससे सम्बन्ध बनाया क्यों मुश्किल है?"
- "वह कलीसियाओं की सभाओं से दूर क्यों रहता है?"

आपके हाथों में सौंपे गये मसीहियों की स्थिति का सही अवलोकन करने पर आप उन्हें बेहतर सलाह देने और उनकी सहायता करने में सक्षम बन जाते हैं।

(3) लोगों की नि:शब्द बातों को अवलोकन करें।

पढ़ें मरकुस 3:4-5।

नि:शब्द बातों का मलतब बिना कुछ कहे अपनी क्रियाओं और अपने भावों के द्वारा अपनी बात व्यक्त करना।

- व्यक्ति के चेहरे के हाव भाव पर ध्यान दें। लोग अलग अलग परिस्थितियों में अलग अलग प्रकार के भाव प्रगट करते हैं। वे गुस्सा, नफरत, जिद, विरोध, भय, चिन्ता, हैरानी, असुरक्षा, उदासी, तनाव, असहमती, अचम्भा और आनन्द इत्यादि प्रगट करते हैं।
- हाथों, कन्धों और पैरों की हरकतों पर ध्यान दें।
- ध्यान दें कि वह कैसे बैठता,खड़ा होता या चलता है?
- भिन्न परिस्थितियों में वह कैसी क्रिया या प्रतिक्रिया प्रगट करता है?
- उसके आवाज के लहज़े पर गौर करें। लहज़ा भिन्न विचारों,भावनाओं और स्वभाव को प्रगट करता है।
- हो सकता है कि उस व्यक्ति ने बात करते समय अपनी आंखों को ज़मीन की ओर झुकाया हो या दाये से बायें घुमाया हो।
- कन्धो के द्वारा नज़रअन्दाज किये जाने को पहिचाना जा सकता है।
- हाथों के द्वारा हम धबराहट या प्रबलता को जान सकते हैं।
- कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है मानो उसका शरीर किसी हैंगर टंगा हो।
- कई बार आप डर, चिन्ता या घबराहट के मारे निकलने वाले पसीने की दुर्गन्ध को महसूस कर सकते हैं।
- उसके व्यवहार में उदासीनता, लापरवाहीं, उतावलापन, अनिच्छा, या चिन्ता प्रगट होती है।
- उसके काम या काम का अभाव उसकी स्वीकृति या अस्वीकृति को प्रगट कर देते हैं।

नि:शब्द बातचीत का अवलोकन करने का उद्देश्य। ध्यान दें कि आप किसी पर दोष लगाने के लिए निशब्द बातचीत का प्रयोग नहीं कर सकते। *उसकी नि:शब्द बातचीत के प्रति आपके विचारों या सोच को निर्णायक तौर पर ठीक नहीं माना जा सकता है।* आपके अपने विचार या सोच से केवल आपको यह पता करने के लिए सही प्रश्न पूछने में सहायता मिलती है कि वास्तव में उस व्यक्ति के मन में वैसी भावनाएं और सोच है कि नहीं।

नि:शब्द बातचीत प्रयोग करने का उद्देश्य। ध्यान दें कि आपकी नि:शब्द बात दूसरे व्यक्ति को दुविधा में न डाल दे या उसे असुरक्षित न बना दे। इसकी बजाय उस व्यक्ति को आपसे खुलकर बातचीत करने में सहायता और प्रोत्साहन मिलना चाहिए। आपके चेहरे की सैंकड़ों मांसपेशिया, घमण्ड,पूर्वधारणा, अस्वीकृति,नापसन्दी इत्यादि को दिखाा सकते हैं। इसलिए आपको अपनी बात को रखने के लिए कभी नि:शब्द भाषा का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

2. लोगों की बात सुनना सीखें।

खोजें व चर्चा करें। सुनी हुई बातें किस प्रकार से आपकी जानकारियों को इकट्ठा करने और दूसरों को सलाह देने में मदद कर सकती हैं?

(1) बात को समझने के लिए ध्यान से सुने।

नीतिवचन 13:15; 27:25। वहां पर लिखा है,"सुबुद्धि के कारण अनुग्रह होता है"। जितना हम सुनते हैं उतना ही हम समझते हैं। जितना ज्यादा आप सुनते हैं, उतना ही ज्यादा दूसरे व्यक्ति को यह आभास होता है कि आप उसकी पूरी बात को सुनने के इच्छुक हैं। जितना ज्यादा आप उसके सुनते हैं उतना ज़्यादा उस व्यक्ति को यह पता चलता है कि आप उसकी बातों को गम्भीरता से ले रहे हैं,उसे समझ रहे हैं और उसे स्वीकार कर रहे हैं।

किसी की बात को सुनने और उसकी बात को समझने या उस बात की तह में छुपी समस्यों को पहचानने में बहुत अन्तर होता है। एक जन अपनी समस्याओं को छुपाने के लिए शब्दों का जाल बुन सकता है,क्योंकि वह डरा हुआ होता है या फिर उसके इरादे गुप्त होते हैं। आपके सुनने का मकसद दूसरे जन की परिस्थितियों या उसकी समस्याओं को समझना है।

(2) बोलने से पहले सुनें।

पढ़ें नीतिवचन 18:13,15 में लिखा है,"जो बिना बात सुने उत्तर देता है, वह मूर्ख ठहरता और उसका अनादर होता है। समझ वाले का मन ज्ञान प्राप्त करता है; और बुद्धिमान ज्ञान की बात की खोज में रहते हैं।" किसी की बात को पूरी तरह सुने बिना, न तो आप बात करें और न ही किसी को कोई सलाह दें। सबसे पहले सुने कि दूसरा व्यक्ति क्या कह रहा है, उस मुद्दे के हर पहलू को समझें और उसके जीवन के बारे में प्रकाशन प्राप्त करें। आप कुछ कहने से पहले उसकी बात को सुनें।

(3) मुकद्दमें के दोनों पक्षों की बात सुनें

पढ़ें नीतिवचन 18:17। वहां लिखा है, "मुकद्दमें में जो पहले बोलता, वही सच्चा जान पड़ता है, परन्तु बाद में दूसरे पक्ष वाला आकर उसे जाचं लेता है। " अगर दो लोगों को बीच कोई झगड़ा हो गया है तो किसी एक ही पक्ष की बात को सुनना मूर्खता है। हो सकता है कि उसकी बताई कहानी सच्ची न हो या मनगढ़ंत या बढ़ाचढ़ाकर बताई गयी बात हो। जिस तरीके से वह घटित घटना का वर्णन करेगा वह झगड़े में शामिल दूसरे पक्ष के लिए बिल्कुल अनुचित होगा। लेकिन जब आप दूसरे पक्ष की बातों को सुनेगें,तो आपको अधिक जानकारी हासिल होगी, आपको बात ठीक ढंग से समझ आएगी और आप उन्हें उचित सलाह प्रदान कर पाएंगे। इसलिए आपको सलाह देने से पहले दोनों पक्षों की बात सुनना ज़रूरी है।

(4) सुनें ज़रूर, लेकिन सुनी हुई हर बात पर विश्वास न करें।

पढ़ें नीतिवचन 14:15। वहां लिखा है, "भोला तो हर एक बात को सच मानता है, परन्तु चतुर मनुष्य समझबूझकर चलता है।" जब झगड़े होते हैं तो दोनो पक्ष एक दूसरे की बुराई या चुगली करते हैं। इसलिए केवल सुनी हुई बातों या अवलोकन की हुई बातों को सत्य मान लेना एक भूल है। आपको लोगों की बुराईयों या चुगलियों पर कान नहीं लगाना चाहिए वरन झगड़े में शामिल लोगों से बात करनी व उनकी सुनकर यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि वास्तव में समस्या क्या है।

कुछ ही तथ्यों के आधार पर दूसरे व्यक्ति के मकसद को अपनी धारणा बना लेना भी एक मूर्खता है। आपको पर्याप्त मात्रा में सुनना, मूल्यांकन करना और प्रश्न करना ज़रूरी है, ताकि आप किसी को भी सलाह देने से पहले अधिक से अधिक तथ्यों व जानकारियों को हासिल कर सकें।

3. प्रश्न पूछना सीखें।

परिचय। कई बार लोगों को अपने विचारों, योजनाओं और दु:खद अनुभवों को साझा करने में काफी तकलीफ होती है। इसलिए मसीहियों के लिए यह सीखना बहुत जरूरी है कि वे उचित प्रश्न पूछना सीखें जिससे उस व्यक्ति को अपने दिल की बात सामने रखने में आसानी हो सके।

खोजें व चर्चा करें। आप प्रश्न किस तरह से जानकारी हासिल करने और सलाह देने में आपकी सहायता कर सकते है?

ध्यान दें।

(1) अधिक जानकारी हासिल करने के लिए प्रश्न पूछें।

पढ़ें नीतिवचन 25:2। वहां पर लिखा है, "राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है"। आप तब तक प्रश्न पूछते रहें जब तक कि आपको एक सिद्ध सलाह देने लायक तथ्या व जानकारियां हासिल न हो जाएं।

(2) कुटिलता का पर्दाफाश करने के लिए प्रश्न के बदले प्रश्न पूछें।

पढ़ें मत्ती 21:24। यीशु ने उत्तर दिया, "मैं भी तुम से एक बात पूछता हूँ, यदि वह मुझे बताओगे, तो मैं भी तुम्हे बताऊंगा कि मैं ये काम किस अधिकार से करता हूँ..." कई बार सबसे अच्छा तरीका किसी के प्रश्न के बदले में प्रश्न पूछना होता है। यीशु मसीह ने फरीसियों के प्रश्न का उत्तर उनसे उलटा एक प्रश्न पूछकर दिया, क्योंकि वे यीशु को उसकी ही बातों के द्वारा दोषी ठहराना चाहते थे। वह उनके मन की बातों व विचारों को जानता था और उसने अपने विरूद्ध बिछाये जाल से बचने के लिए स्वयं ऐसा जाल तैयार कि वे खुद ही उस जाल में फंस जाएं। उसने उन्हें उसके प्रश्न का उत्तर देने पर मज़बूर किया ताकि उनकी कुटिलता सबके सामने प्रगट हो जाए।

(3) लोगों की सोचने में सहायता करने के लिए प्रश्न पूछें।

पढ़ें लूका 10:26-28। यीशु ने कहा,"बाइबल में क्या लिखा है? तू कैसे पढ़ता है?" हम ज्यादातर लोगों की सोचने में मदद करने की बजाय उन्हें अपनी सलाह या सुझाव देने लग जाते हैं। यीशु ने लोगों के सम्मुख यह चुनौति रखी कि वे बाइबल पढ़कर स्वयं सत्य या उत्तरों की खोज करें। उसने उनके सामने बाइबल पढ़ने, अपने आप सोचने और अपने आप बाइबल में से जवाब ढूढ़कर एक नतीजे तक पहुंचने की चुनौति रखी। परमेश्वर का वचन आपकी सलाह से ज्यादा दूसरों का कायल करता है। अपने आप खोजी गयी सच्चाई को बेहतर ढंग से समझा और याद रखा जाता है।

4. बाइबल पढ़ने और उसका अध्ययन के द्वारा बुद्धि प्राप्त करना सीखें।

सिखाएं। बाइबल परमेश्वर की महानता और परमेश्वर की इच्छा के प्रकाशन के बारे में क्या सिखाती है?
एक मसीही विश्वास करता है कि परमेश्वर अपनी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है और परमेश्वर के पास अपनी सृष्टि, उसके लोगों और उसमें घटने वाली घटनाओं के लिए एक योजना है। लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी जगत की और मानवजाति के इतिहास की सम्पूर्ण योजना को मनुष्य पर प्रगट नहीं किया है। यशायाह 55:9 में लिखा है,"क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति मे और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।" बहुत सी ऐसी चीजे़ं है जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यों पर प्रगट नहीं किया है और वह न ही उनको प्रगट करेगा। सामान्य तौर पर, परमेश्वर हम पर यह व्यक्त नहीं करते कि हमारे भविष्य में क्या होने वाला है। लेकिन हमें उन अनजान परिस्थितियों से घबराने की कोई जरूरत नहीं है क्योंकि जितने लोग परमेश्वर से प्रेम करते हैं उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई को उत्पन्न करती हैं(रोमियों 8:28)। परमेश्वर अपनी शक्ति और अपने प्रेम दोनों में महान है।

जिन बातों को वह लोगों के लिए जरूरी समझता है उन्हें, परमेश्वर ने पहले ही पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं, यीशु मसीह और नये नियम के भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट कर दिया है। व्यवस्थाविवरण 29:29 में लिखा है, "गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं; परन्तु जो प्रगट की गई हैं वे सदा के लिए हमारे और हमारे वंश में रहेंगी, इसलिए कि इस व्यवस्था की सारी बातें पूरी हो जाएं। परमेश्वर की प्रगट इच्छा में विशेष शिक्षाएं और सामान्य शिक्षाएं शामिल होती हैं।

5. सलाह देना सीखें।

सिखाएं। सलाह देने का अर्थ दूसरों को ऐसी जानकारी या तथ्य प्राप्त करने में सहायता करना है जिससे उस व्यक्ति को स्वयं अपने निर्णय लेने में सहायता मिल सके।

दूसरे व्यक्ति को सक्रिय चर्चा के सम्बन्धित सत्यों और बाइबल में लिखे सिद्धान्तो को समझने में सहायता मिल सके। दूसरे व्यक्ति की यह भी समझने में सहायता करें कि इस निर्णय में कौन कौन सी मुद्दे शामिल हैं। दूसरे व्यक्ति की दो अलग अलग निर्णयों के परिणामों पर गौर करने में सहायता करें: "यदि आप पहले विकल्प को चुनते हैं तो उसका सम्भावित परिणाम क्या होगा।" "यदि आप दूसरे को चुनते हैं तो उसका सम्भावित परिणाम क्या होगा?"

सलाह देने का अर्थ यह नहीं है कि आप लोगों को वहीं बताएं जो *आप* स्वयं उस परिस्थिति में करते। इसलिए कभी यह न कहें," कि अगर मैं इस जगह होता तो, यह या वह करता।" कभी उन्हें यह न बताएं कि आपका चुनाव या निर्णय क्या होता! क्योंकि आप एक अगुवे हैं, और जैसे ही उन्हें आपका चुनाव पता चलेगा वे केवल आपका ही अनुसरण करेंगें। लेकिन उनके लिए आपका सुझाव परमेश्वर की इच्छा नहीं भी हो सकती है। और सकता है कि आपका निर्णय उन व्यक्ति के लिए परमेश्वर का निर्णय न हो! सलाह प्राप्त करने वाले व्यक्ति को अन्त में लिये गये निर्णयों के परिणामों की पूरी जिम्मेदारी लेना चाहिए। नहीं तो, अगर उसके साथ कुछ भी गलत हुआ तो वह *आप* पर "गलत" सलाह देने का दोष लगा देगा!

सलाह देने का अर्थ है कि आप पूरी तरह स्वीकार करते हैं कि अन्तिम निर्णय लेने की ज़िम्मेदारी पूरी तरह सिर्फ प्रार्थी की है और निर्णायक तौर पर प्राथी करने का मार्गदर्शन करने का पूरा अधिकार सिर्फ परमेश्वर को है। अच्छी सलाह देना और तथ्यों व उनके परिणामों पर विचार करने में सहायता करना आपकी ज़िम्मेदारी है, लेकिन चुनाव करना या निर्णय लेना पूरी तरह से उसकी ज़िम्मेदारी है। यदि वह आपके निर्णयों से अलग चुनाव करता या निर्णय लेता है तब भी, आपको उसे परमेश्वर के अधिकार में होकर अपने भाई की तरह स्वीकार करना है।

परिशिष्ट 11

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]

उत्तम योजनाएं बनाना

परिचय। सर्वप्रथम मसीही कलीसिया एक जीव है जो ऐसे लोगों से मिलकर बना समूह जिनमें परमेश्वर का आत्मा वास करता है। लेकिन इस समाज को अन्य सामान्य संगठनों के जैसे ही काम करना चाहिए(1कुरिन्थियों 14:33.40)। इसलिए मसीहियों को योजना बनाने, आयोजन करने, अगुवाई और समीक्षा करने को गम्भीरता से लेना चाहिए।

क. अच्छी योजनाएं

1. अच्छी योजनाएं बनाने का कारण।

अच्छी योजनाओं का उत्तम परिणाम होता है(नीतिवचन 21:5)।
अच्छी योजनाओं के परिणाम स्वरूप दूसरों के साथ हमारे बेहतर रिश्ते बनते है(नीतिवचन 14:22)।
अच्छी योजनाओं के परिणाम स्वरूप परमेश्वर के साथ हमारा उत्तम रिश्ता बनता है(यशायाह 30:1-2)

2. अच्छी योजनाएं बनाने के लिए आवश्यक चीजें।

(1) अच्छी योजना बनाने के लिए सही समय पर कठिन परिश्रम करने की ज़रूरत होती है।

- जो काम में ढिलाई करता है वह निर्धन हो जाता है, परन्तु कामकाजी लोग अपने हाथों के द्वारा धनी होते हैं। जो बेटा धूपकाल में बटोरता है वह बुद्धि से काम करने वाला है, परन्तु जो बेटा कटनी के समय भारी नींद में पड़ा रहता है वह लज्जा का कारण होता है(नीतिवचन 10:4-5;20:4;28:19; 30:25)।
- कल के दिन के विषय में डींग मत मार, क्योंकि तू नहीं जानता कि दिन भर में क्या होगा(नीतिवचन 27:1)।

(2) योजना बनाने के लिए अच्छे सलाहकारों की आवश्यकता होती है।

- जहां बुद्धि की युथ्क्त नहीं, वहां प्रजा विपत्ति में पड़ती है, परन्तु सम्मति देने वालों की बहुतायत के कारण बचाव होता है(नीतिवचन 11:14)।
- बिना सम्मति की कल्पनाए निष्फल हुआ करती हैं, परन्तु बहुत से मंत्रियों की सम्मति से बात ठहरती है (नीतिवचन 19:20)।
- सम्मति को सुन ले और शिक्षा को ग्रहण कर, कि तू अन्तकाल में बुद्धिमान ठहरे (नीतिवचन 19:20)।
- सब कल्पनाएं सम्मति से ही स्थिर होती हैं, और युक्ति के साथ युद्ध करना चाहिए (नीतिवचन 20:18)।

(3) योजना में प्रार्थना शामिल होती है।

- अपने कामों को यहोवा पर डाल दे,इस से तेरी कल्पनाएं सिद्ध होंगी (नीतिवचन 16:3)।
- मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूँढ़ों तो पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिए खोला जाएगा (मत्ती 7:7)।
- तुम्हारे पास है नहीं, क्योंकि तुम ने कभी मांगा नहीं (याकूब 4:2)।

(4) योजना बनाने में परमेश्वर की प्रधानता के प्रति प्रतिबद्धता शामिल होती है।

- मनुष्य मन में अपने मार्ग पर विचार करता है, परन्तु यहोवा ही उसके पैरों को स्थिर करता है(नीतिवचन 16:9)।
- ऐसा भी मार्ग हैं जो मनुष्य को सीधा ही जान पड़ता है परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है(नीतिवचन 16:25)।

- मनुष्य के मन में बहुत सी कल्पनाएं होती है, परन्तु जो युक्ति यहोवा करता है वही स्थिर रहती है (नीतिवचन 19:21)।
- युद्ध के दिन के लिए घोड़ा तैयार तो होता है परन्तु जय यहोवा से ही मिलती है (नीतिवचन 21:31)।

(5) योजना बनानें में प्राथमिकता तय करना शामिल होता है।

- अपना बाहर का कामकाज ठीक करना,और खेत का काम तैयार कर लेना(यह बहुत जरूरी काम हैं और इसे स्थगित नहीं किया जा सकता); और उसके बाद अपना घर तैयार करना(कम जरूरी काम है क्योंकि इसे स्थगित किया जा सकता है।)(नीतिवचन 24:27)।
- जो आज्ञा को मानता है वह जोखिम से बचेगा, और बुद्धिमान का मन समय और न्याय का भेद जानता है(सभोपदेशक 8:5-6)।
- और तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन से , और अपने सारे प्राण से, और अपनी सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना। और दूसरी यह है, 'तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना।(मरकुस 12:30-31)।

(6) योजना बनाने में जानकारियों को एकत्र करना शामिल होता है।

- तब मैंने देखा और उस पर ध्यानपूर्वक विचार किया; हां मैंने देखकर शिक्षा प्राप्त की (नीतिवचन 24:32)।
- परमेश्वर की महिमा , गुप्त रखने में हैं, परन्तु राजाओं की महिमा गुप्त बात का पता लगाने से होती है(नीतिवचन 25:2)।
- अपनी भेड़ों की दशा भली भांति मन लगाकर जान ले, और अपने सब पशुओं के झुण्डों की देखभाल उचित रीति से कर (नीतिवचन 27:23)।
- जहां दर्शन की बात नहीं होती, वहां लोग निरंकुश हो जाते हैं, और जो व्यवस्था को मानता है वह धन्य होता है (नीतिवचन 29:18)।

(7) योजना बनाने में विश्वासयोग्यता की जरूरत होती है।

- जो अंजीर के पेड़ ही रक्षा करता है वह उसका फल खाता है, इसी रीति से जो अपने स्वामी की सेवा करता है उसकी महिमा होती है (नीतिवचन 27:18)।

(8) योजना में एक क्रम का होना जरूरी है।

- नीतिवचन 28:2। देश में पाप होने के कारण उसके हाकिम बदलते जाते हैं; परन्तु समझदार और ज्ञानी मनुष्य के द्वारा सुप्रबन्ध बहुत दिनों के लिए बना रहेगा।
- नीतिवचन 30:27। टिड्डियों के राजा तो नहीं होता, तौभी वे सब की सब दल बांध बांधकर चलती हैं।
- 1 कुरिन्थियों 14:33। क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं वरन शान्ति का परमेश्वर है।
- 1 कुरिन्थियों 14:40। पर सारी बातें शालीनता और व्यसस्थित रूप से की जाएं।

3. एक अच्छी योजना की विषय वस्तु।

गेट=लक्ष्य, गतिविधियां, समय सारणी और मूल्यांकन

एक अच्छी योजना में लक्ष्य, गतिविधियां, समय सारणी(गतिविधी+समय सारणी=कार्यक्रम) जैसे तत्व शामिल होते हैं, और इसे एक संगठन के भीतर उसके अगुवों,सह-कर्मियों,योजनाओं,नियमों, प्राथममिकताओं और सीमित स्रोतों के साथ कार्यान्वित की जानी चाहिए।

आप किस प्रकार से एक योजना को बनाते हैं? आप अकेले या समूह के साथ मिलकर योजना बना सकते हैं?

(1) तथ्यों और जानकारियों को एकत्र करें। तथ्य आपको बताते हैं कि आपका सन्दर्भ क्या है।
(2) एक लक्ष्य निर्धाति करें। आपके लक्ष्य आपको बताते हैं कि आप क्या हासिल करना चाहते हैं। इसके लिए आपको कुछ निर्णय लेने की ज़रूरत होती है।
(3) गतिविधियां तैयार करें। गतिविधियां दर्शाती हैं कि आप किस तरह से अपने लक्ष्य को पूरा करना चाहते हैं।
(4) एक समय सारणी (कार्यक्रम)तैयार करें। समय सारणी आपको बताती है कि आप कब इस लक्ष्य को पूरा करने जा रहे हैं।
(5) लोगों को व्यवस्थित करें। एक संगठन आपको बता है कि कौन, किस काम के लिए जिम्मेदार है।

ख. एक योजना बनाना

1. तथ्यों को एकत्र करना।

एक लक्ष्य निर्धारित करने के लिए आपको एक निम्नलिखित क्षेत्र में तथ्यों व जानकारियों को एकत्र करना होता है।

(1) परमेश्वर की अगुवाई ।

परमेश्वर बाइबल व अपनी आत्मा के द्वारा जगत के मसीहियों और व्यक्तिगत तौर पर आपसे क्या कहता है?
व्याख्या: योजना बनाते समय परमेश्वर की अगुवाई प्राप्त करना बहुत जरूरी है। अगर आपकी योजनाएं परमेश्वर की योजनाओं (लक्ष्यों,आदेशों और इच्छाओं)पर आधारित नहीं है तो वे सफल नहीं हो सकती। वह हर एक जन व हर एक परिस्थिति पर नियन्त्रण करने वाला परमेश्वर है(अय्यूब 42:2-3; भजन 33:11; नीतिवचन 16:9; 19:21;20:24; 212:30; यशायाह 8:10; 14:24-27;25:1; 40:8; 46:10-11; 48:14; 55:11; यिर्मयाह 1:11; प्रकाशितवाक्य 3:7-8)

(2) आपकी कलीसिया का लक्ष्य।

आपकी कलीसिया या सगंठन का लक्ष्य क्या है?
व्याख्या: आपकी योजना आपकी कलीसिया के दर्शन में उपयुक्त बैठना चाहिये।

(3) प्रगति।

अभी तक आपने क्या हासिल कर लिया है? आपने पिछले वर्ष क्या उन्नति की(1तीमुथियुस 4:15)।
व्याख्या: यह बहुत महत्वपूर्ण है कि आपकी योजना आपके व्यक्तित्व व आपकी सेवकाई में ही निहित हो।

(4) सीखे जाने वाले सबक।

आप अपने पुराने अनुभवों,सफलताओं, असफलताओं और गलतियों से आप क्या शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं?(नीतिवचन 24:32)। उसके कारणों पर विचार करें।
व्याख्या: यदि मान्य हो, तो जो कुछ आपने बीते समय में सीखा है उसे अपनी नयी योजनाओं में इस्तेमाल करें। इस काम और अधिक प्रभावशाली बनता है।

(5) संस्कृति।

जिन जगहों पर आप अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करना चाहते हैं वहां की संस्कृति कैसी है।

---

[1] निर्णन लेने की प्रक्रिया को देखने का अन्य तीन कदमों वाला तरीका:
विचार से जुड़े तथ्यों और जानकारियों को एकत्र करना
एक विचार या मत का निर्माण करना (जानकारियों को आधार पर एक नतीजे पर पहुंचना)
एक निर्णय लेना (तथ्यों के आधार पर एक चुनाव करना)

व्याख्या: आप समूह के जिन लोगों तक पहुंचना और उन्हें प्रभावित करना चाहते हैं उनकी विशेषताओं पर अध्ययन करें। उनका दृष्टिकोण, विश्वास, अन्धविश्वास, मान, शर्तें, आदतें (व्यवस्थाविवरण 18:9-13; मत्ती 15:1-9), ताकि आप इन लोगों को अपने ध्यान में रखते हुए योजनाओं को बना सकें। उनकी कलीसिया का कौन सा पहलू उचित नहीं है और किसे बदला जाना चाहिए?

(6) जरूरतें।

आप लोगों, अपने सहकर्मियों और अपनी किन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जरूरतों को पूरा करना चाहते हैं(नीतिवचन 27:23;यिर्मयाह 12:10-11; जर्कयाह 10:2-3;11:15-17;मत्ती 9:36)(पढ़ें यिर्मयाह 23:1-40; यहेजकेल 34:1-25)।
व्याख्या: उनकी जरूरतों की एक सूची तैयार करें जिसे आप उनको लिख सकें।

(7) सम्भावनाएं(अवसर)।

परमेश्वर आपके सामने किसी प्रकार की सम्भावनाएं रखते तथा द्वार खोलते हैं? (प्रेरितों 14:27; 1कुरिन्थियों 16:9; 2कुरिन्थियों 2:12; कुलुस्सियों 4:3)।
व्याख्या: परमेश्वर के मार्गदर्शन की खोज करें(मैनुएल4, अध्याय 43)।

(8) अवरोधक(समस्याएं)।

आप किस प्रकार की कठिनाईयों,समस्याओं, रूकावटों का सामना कर रहे हैं?(प्रेरितों 16:6-7;2 कुरिन्थियों 11:28; 1थिस्लुनिकियों 2:14,15,18)।
व्याख्या: समस्याएं और रूकावटें परमेश्वर की ओर से होती है, लेकिन ये शैतान की ओर से भी आ सकती हैं। उन पर ध्यान दें,उनके लिए प्रार्थना करें और होने दें कि परमेश्वर का प्रकाश उन पर पढ़े।

(9) माध्यम।

आपके पास कौन से स्रोत या माध्यम उपलब्ध है?
व्याख्या: सम्भव माध्यम या स्रोत हैं: लोग(सहकर्मी),उनका उपलब्ध समय(फिलिप्पियों 2:19-23),सेवा करने के लिए उपलब्ध स्थान(प्रेरितों 19:90) सामग्री,धन(फिलिप्पियों 4:15-16),प्रार्थना का समर्थन (कुलुस्सियों 4:2-4)।

(10) कोशल।

आपके सहकर्मियों और जिन लोगों को आप प्रभावित करना चाहते हैं उनके कौशल क्या हैं?
व्याख्या: उदारहण के लिए : उनके स्वाभाविक गुण,आत्मिक वरदान, उनकी ताकत,उनकी कमज़ोरीयां,विश्वास इत्यादि।

(11) कीमत।

इनकी कीमत क्या है (लूका 14:28-30)?
व्याख्या: कीमत को समय के (2 कुरिन्थियों 11:27), ताकत, अपने इनकार, पैसों और सामग्री, कार्यक्रम और कार्यकर्ताओं की तैयारी, सम्भव विरोध के द्वारा (2 तीमुथीयुस 3:12) नापा जा सकता है।

(12) सलाह।

निम्नलिखित लोग आपको क्या सलाह देते हैं: आपके अगुवे, अन्य परमेश्वर का भय मानने वाले बुद्धिमान लोग, या जिन लोगों ने समान कामों के किया हो?
व्याख्या : आप केवल उपरोक्त अनुसंधान करने के बाद ही किसी से सलाह मांगे।

2. निर्णय लें।

(1) नये विचाारों के लिए दिमाग लड़ाएं।

दिमाग लड़ाने का अर्थ नये विचार की खोज करने के लिए की जाने वाली चर्चा है।

अपने कार्यकर्ताओं के साथ, वरन अपने अगुवों, सलाहकारों और जीवन साथी और बच्चों के साथ विचार-विमर्श करें।

(2) खुले विचारो के साथ आपसे में बातचीत करें।

- एक दूसरे के साथ खुले माहौल में बातचीत करें।
- सारे वैकल्पिक विचारों, रास्तों और तरीकों को तौलें।
- प्रतिक्रियाओं और प्रश्नों को ध्यान से सुनें।
- एक दूसरे के मकसद को जानने का प्रयास करें।
- अपने निर्णयों और कामों के वास्तविक और काल्पनिक परिणामों के बारे में विचार करें। यशायाह 47:7
- "सम्भावित परिणामों पर चिन्तन करें।"
- हर एक विचार को परमेश्वर के वचनों से परखें। सारे निर्णय और योजनाए बाइबल पर आधारित होनी चाहिए।
- हर एक विषय के लिए मन लगाकर प्रार्थना करें।
- प्रस्तावित निर्णयों के बारे में प्रार्थनो व विचार करने के लिए शामिल हुए हर एक जन को समय दें(जैसे कि पत्नी, बच्चे,दल के सदस्य इत्यादि)।

(3) निर्णय लेना।

- जितना सम्भव हो सहकर्मियों के दल के साथ,प्राचीनों के समीती या अपनी मण्डली के साथ मिलकर में निर्णय लें।
- सर्वसम्मति से निर्णय लेने का प्रयास करें (प्रेरितों 15:28) लेकिन मतदान के द्वारा नहीं ।
  -कलीसिया कोई निरंकुशता नहीं है, जहां पासबान ही सारे निर्णयों को लेता हो।
  -न ही कलीसिया कोई लोक तन्त्र है जहां पर कलीसिया के सदस्य अधिक संख्या में मत डालकर अपनी इच्छा को जबरजस्ती मनवा लें।
  -परन्तु मसीही कलीसिया एक मसीह तन्त्र है जहां मसीह की इच्छाओं और योजनाओं को पवित्र आत्मा, बाइबल (सही मतलब बताते हुए), प्राचीनों की परिषद और कलीसिया के सदस्यों द्वारा पूरा किया जाता है।
- बुद्धिमान प्राचीनों की पीठ जितना सम्भव होगा कलीसिया के सदस्यों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में ज्यादा से ज्यादा शामिल करने का प्रयास करेगी (प्रेरितों 1:21-23; प्रेरितों 6:2-3; प्रेरितों 15:4,22-29; 1तीमुथीयुस 3:14-15)! ये "निर्णय" वैसे निर्णय नहीं थे जिनका पालन करना सबके लिए अनिवार्य हो, वरन यह एक सलाह के तौर पर दिया जाने वाला निर्णय था (प्रेरितों 16:4)। इस तरह से निर्णय: (1)गैर यहूदियों से मसीहियत में आये हुए लोगों के लिए खतना कराना अनिवार्य करके परिस्थिति को मुश्किल बनाने वाले नहीं थे, (2) और न ही गैर मसीहियों से यह निवेदन किया जा रहा था कि वे गला घोंटकर मारे गये जानवरों का मांस खाकर मसीही बने यहूदियो पर गुस्सा न करें (रोमियों 14) और (3)यौन अनैतिकता को नज़रअन्दाज़ करें।
- समूह के अगुवे को कुछ निर्णय अकेले ही लेने होगें। ऐसी परिस्थितियों में अगुवा ही निर्णय के लिए ज़िम्मेदार व उत्तरदायी ठहरेगा।

(4) अपने लक्ष्यों को निर्धाति करने से पहले महत्वपूर्ण निर्णय(एक मूल्यांकन सूची)।

- बाइबल का मकसद। आपकी योजना में बाइबल का क्या मकसद छुपा हुआ है?
  व्याख्या: उदाहरण के लिए बाइबल में एक आज्ञा या शिक्षा।
- अपेक्षा। आप परमेश्वर से क्या करवाना चाहते हैं?
- प्रभाव। आप लोगों पर किस तरह का प्रभाव डालना चाहते हैं?
- आपकी सेवाकाई का दर्शन। वे कौन सी शिक्षाएं या सिद्धान्त हैं जिस पर आपको व्यवहार आधारित है?

व्याख्या: ये शिक्षाएं या सिद्धान्त आपकी सेवाकाई को दिशा प्रदान करते हैं जैसे कि ,चेलों, मज़दूरों और अगुवों की संख्या में बढ़ोतरी।

- आपकी सेवाकाई की रणनीति। आपका तरीका क्या है? आपकी कार्य शैली क्या होने जा रही है?
  व्याख्या: आपकी यह कार्य शैली, आपका सबसे महत्वपूर्ण कार्य है,उदाहरण के लिए छोटे समूहों और व्यक्तिगत सम्पर्क के द्वारा।
- योजना। आपकी योजनाएं क्या हैं?
  व्याख्या: ये आपके लक्ष्य और कार्यक्रम हैं(गतिविधियां व समय सारणी)।
- संगठन। आपके संगठन की संरचना क्या है?
  व्याख्या: कौन किसके लिए और किस कारण से और किसी प्रति जिम्मेदार है?
- सम्बन्ध। आपका अपनी कलीसिया व दूसरी कलीसिया के सदस्यों के साथ में कैसा सम्बन्ध है?
  व्याख्या: अपनी कलीसिया या संगठन में अपनी योजना और उस योजना को कार्यान्वित करने के लिए स्थान को निर्धारित करें।
- शैली। आपकी सेवाकाई की शैली, लहजा, और गति क्या है?
  व्याख्या: अपनी अगुवाई की शैली के बारे में विचार करें।

उपरोक्त सभी निर्णयों को निर्धारित करने के बाद आप अपने लक्ष्यों को लिख सकते हैं।

3. लक्ष्य निर्धारित करें।

(1) एक लक्ष्य की महत्वपूर्ण विशेषताएं(मूल्यांकन सूची)।

- परमेश्वर की बुलाहट या चुनौति। परमेश्वर आपसे क्या करवाना चाहता है? परमेश्वर किस कार्य में आपके जीवन को इस्तेमाल करना चाहता है?(यशायाह 30:1-2)।
  व्याख्या: एक अच्छा लक्ष्य परमेश्वर की बुलाहट और चुनौति को प्रगट करता है।
- परमेश्वर की आज्ञाएं व उसकी शिक्षाएं। इस लक्ष्य से सम्बन्धित बाइबल में कौन सी महत्वपूर्ण आज्ञाओं और शिक्षाओं का पालन करने के लिए कहा गया है?(लूका 10:25-28)।
  व्याख्या: एक अच्छा लक्ष्य परमेश्वर की आज्ञा और उसकी शिक्षाओं को प्रगट करता है।
- परमेश्वर का राज्य, कलीसिया और पड़ोसी। परमेश्वर के राज्य, कलीसिया और जिसे संगठन से आप जुड़े हैं उसके लक्ष्य क्या हैं?
  व्याख्या: एक अच्छा लक्ष्य परमेश्वर के राज्य, कलीसिया और अपने पड़ोसी में रूचि दिखाता है।

(2) स्पष्ट लक्ष्यों के कार्य।

लक्ष्य की संरचना ने निम्नलिखित मांगों को पूरा करना चाहिए:

- प्रेरणादायक। आपके लक्ष्य ने आपको स्पष्ट तौर पर बताना चाहिए कि आप जो कर रहें हैं वह 'क्यों' कर रहे हैं।
- चुनाव। लक्ष्य लोगों को अपने प्रति समर्पित होने के लिए कायल करता है।
- सफल। लक्ष्य ने संसाधनों(लोग,धन और समय) की बर्बादी को रोकना और पदभ्रष्टता या गैर-अनिवार्य चीजों को महत्व देने से बचना चाहिए।
- मापने योग्य। लक्ष्य मूल्यांकन करने (समीक्षा) या नियन्त्रण करने का पैमाना तय करता है। इसलिए लक्ष्य पहुंच के दायरे में होने चाहिए और उनके परिणामों को नापा जा सकना चाहिए।

(3) निम्नलिखित विशेषताओं के साथ लक्ष्य की संरचना करें।

लक्ष्य की संरचना:

- संक्षिप्त होनी चाहिए, ताकि उसे याद रखा जा सके।
- स्पष्ट होनी चाहिए, ताकि उसके बारे में लोगों को आसानी से समझाया जा सके।
- वास्तविक होनी चाहिए ताकि उसे हासिल किया जा सके और जिससे समय और संसाधनों की बर्बादी न हो।
- विशिष्ट होनी चाहिए(मापने योग्य) ताकि आप यह जान सकें कि आप अपने लक्ष्य तक पहुंच गये हैं। इसके अलावा वह सभी लोगों को सही मार्ग पर बनाये रखने वाला होना चाहिए ताकि कोई अपने लक्ष्य से न भटके और लोग अपना समय गैर जरूरी चीजों में खराब न करें।
- पारदर्शी होनी चाहिए। यह परिणाम प्रगट करता है क्रिया कलाप नहीं। (चित्रण की शुरूआत: मैंने...से करें)
- प्रेरणादायक हो ताकि लोग काम में लग जाएं और प्रतिभागियों को स्पष्ट तौर पर पता हो कि वे इस कार्य को क्यों कर रहें हैं।
- चुनौतिपूर्ण हो ताकि, उससे विश्वास की बढ़ोतरी और विकास हो।

4. योजना को लिखें

(1) लक्ष्य की संरचना करें।

(2) कार्यों को निर्धारित करें।

क्या काम करने से हम अपने लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं? आप इस काम को किस तरह करना चाहते हैं?

(3) एक समय सारणी अर्थात कार्यक्रम तैयार करें।

समय सारणी या कार्यक्रम वर्णन करता है कि आप उस कार्य को कब करेगें। वह तिथी, सप्ताह का दिन, दिन में आप कब काम को प्रारम्भ करेगें और कब खत्म करेगें दर्शाता है।

(4) लोगों का सुप्रबन्ध करें। अन्त में लोगों के कार्य-वर्णन या हर एक शामिल व्यक्ति से अपेक्षित जिम्मेदारी को लिख लें, ताकि हर व्यक्ति को यह मालूम रहे कि वह किसके प्रति, किसके लिए और क्या काम करने के लिए जिम्मेदार है।

(5) एक जांच सूची तैयार करें। अपने आप से निम्नलिखित प्रश्न करें:

- किस प्रकार से मैं यीशु मसीह को इस लक्ष्य व कार्यो का केन्द्र बना सकता हूं?
- क्या मैंने कभी दूसरों को सलाह दी है(नीतिवचन 15:22;24:6)?
- क्या मैंने संसाधनों को इस्तेमाल अवसर पढ़ने पर इस तरीके से किया है कि मुझे बेहतर तरीके से लक्ष्य की प्राप्ती हो सके?
- क्या मैंने विकल्प के बारे में सोचा है?
- क्या मैं ने योजना में हर बिन्दु के लिए प्रार्थना (अपने सहायक दल के साथ मिलकर)की है(नीतिवचन 16:3), लोगों में से निर्धारित लोगों के लिए (कुलुस्सियों 4:2-4) और समूह के सदस्यों के लिए(कुलुस्सियों 1:9-12)?
- क्या परमेश्वर ने मेरी योजनाओं को स्वीकृत किया है(यशायाह 30:1-2; 2 कुरिन्थियों 10:18; प्रेरितों 15:28)?

ग. योजनाओं को पूरा करना

1. आपने कब योजना को पूरा किया।

'योजना बनाने' को अर्थ अपने संसाधनों को उस काम में लगा देना जिस से आपको खास मकसद पूरा होता हो।

एक योजना पूरी होती है: सुप्रबन्ध, अगुवाई और मूल्यांकन से।

पोल= योजना बनाना, सुप्रबन्ध करना, अगुवाई करना और मूल्यांकन करना

(1) योजना बनाना।

मैं ने अपनी विषय वस्तु को आधार बनाकर योजना को पूरा करने का समय निर्धारित कर दिया है, बहुत से स्पष्ट लक्ष्य व एक कार्यक्रम है जिसके द्वारा उन लक्ष्यों को पूरा किया जा सकता है।

(2) सुप्रबन्ध करना।

मैंने सभी लोगों के लिए यह जानने का इन्तेजाम कर दिया है कि किसके प्रति, किसके लिए और किस वजह से वह जन जिम्मेदार है।

(3) अगुवाई करना।

जब मैं पर्याप्त समय रहते कोई सही निर्णय लेता हूं और इस बात का ध्यान रखता हूं जिस बात को ठाना है वह पूरी हो तो मैं अगुवाई कर रहा हूं।

(4) मूल्यांकन करना (समीक्षा)।

जब मैं तुलना करता हूँ कि मैं ने क्या किया है और मुझे क्या करना चाहिए था, और मैं उनके बीच के अन्तर को समझ पाता हूं तो मैंने सच में मूल्यांकन किया है।

2. शिष्य के लिए एक वर्ष की योजना को उदाहरण।

लक्ष्य	गतिविधियां	समय
मैं ने वर्तमान समूह में 5 लोगों को मसीह का चेला बनाया है।	4 रचनात्मक शिष्यता की नियमावली से ऐसे लोगों को प्रशिक्षित करें जो शिक्षा को आगे बढ़ा सकें।	इस वर्ष 48 साप्ताहिक अध्याय। हर कक्षा की अवधि 2 से 3 घण्टे की।
मैंने उन्हें परमेश्वर के वचन का इस्तेमाल करके जीवन में बदलाव लाने के लिए प्रोत्साहित किया है।	नियमित तौर पर एक एक व्यक्ति से व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात करें।	निवेदन करने पर या जरूरत पड़ने पर लेकिन प्रतिमाह कम से कम एक बार
मसीह का अनुकरण करने वाले लोगों के समाज का निर्माण किया है।	सारे छोटे समूहों या घरेलू कलीसियाओं में 12 सभाएं करें।	माह के बीच में 12 मासिक सभाएं।

3. शिष्यता के मैनुएल 1 के अध्याय 3 का एक उदाहरण।

लक्ष्य	गतिविधियां	समय
हम ने मिलकर आराधना की है	विशेषता: परमेश्वर महान और सामर्थी है।	20 मिनट
हमने एक साथ मिलकर शान्त समय साझा किया है।	मत्ती 8:1-11:24	20 मिनट
मैंन एक नई शिष्यता की शिक्षा दी हैं	सुसमाचार के संदेशो को सार	70 मिनट
हम ने मिलकर प्रार्थना की है।	परमेश्वर के वचन का प्रतिउत्तर देते हुए प्रार्थना	8 मिनट

मैंने उन्हें एक विशेष काम सौंपा है।	अध्याय 4 के लिए निर्धारित कार्यो को लिखा है।	2 मिनट

3. शिष्यता के मैनुएल 1 के अध्याय 4 का एक उदाहरण।

लक्ष्य	गतिविधियां	समय
हमने एक साथ मिलकर शान्त समय साझा किया है।	मत्ती 11:25-14:36	20मिनट
हमने एक बाइबल पद को याद किया और उस पर मनन किया।	प्रार्थना के उत्तर मिलने का निश्चय यूहन्ना 16:24	20मिनट
हमने मिलकर बाइबल अध्ययन किया है।	5 कदमों का तरीका मैं कहां से आया हूँ? उत्पत्ति 1:1-2:4क	70 मिनट
हमने मिलकर प्रार्थना की है।	एक दूसरे के लिए प्रार्थना	8 मिनट
मैं ने उन्हें एक निर्धारित काम दिया है।	अध्याय 5 के लिए निर्धारित कार्य	2 मिनट

5. जांच सूची।

- क्या मैंने कभी दूसरों को सलाह दी है(नीतिवचन 15:22;24:6)?
- क्या मैंने उस सहायक के साथ मिलकर योजना बनायी है, जिसकों मैं भविष्य में नया अगुवा बनाने के लिए प्रशिक्षित कर रहा हूँ?
- क्या परमेश्वर ने मेरी योजनाओं को स्वीकृत किया है(यशायाह 30:1-2; 2 कुरिन्थियों 10:18; प्रेरितों 15:28)?
- क्या मैंने विकल्प के बारे में सोचा है?
- क्या मैंने अवसर पढ़ने पर संसाधनों का बेहतर ढंग से इस्तेमाल किया है?

5. कार्य सूची।

- अपने सहायक के साथ मिलकर अगले अध्याय के लिए क्रिया कलापों को तैयार करें।
- उस अध्याय के लिए सामग्री को इकट्ठा करें, जिसमें अध्याय की तैयारी से सम्बन्धित वह लिखित सामग्री भी शामिल है जिसे आप विद्यार्थियों के घर ले जाने के लिए देने वाले हैं।
- मेज़,कुर्सियों,प्रकाश, तापमान, सफेद बोर्ड व पैन तथा रबर (या श्यामपट व चौक),गीत की किताब,अतिरिक्त बाइबलों की, पेपर व पैन तथा पेयजल की व्यवस्था करें(या फिर इस जिम्मेदारी को अपने सहायक को सौंप दें।
- जो भी कुछ आप करते हैं उसे परमेश्वर की हाथों में सौंपें, और आपकी सारी योजनाएं सफल होगी(नीतिवचन 16:3)। समूह के सभी सदस्यों के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें। अपने सहायक के साथ मिलकर प्रार्थना करें। उदाहरण के लिए कुलुस्सियों 1:9-12 में दी गयी प्रार्थना के समान प्रार्थना करें।

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]

अतिरिक्त आत्मिक वरदान

मैनुएल 7 के 35 अध्याय में वर्णन किये हुए पवित्र आत्मा के प्रथम 5 वरदानों को देखें।

6. अगुवे व प्रबन्धक।

(1) एक अगुवा (रोमियों 12:8)

“एक अगुवा” कलीसिया में एक असाधारण क्षमता(योग्यता) या एक साधारण अनुज्ञापत्र(कार्य,ऑफिस, निर्धारित ज़िम्मेदारी) है। अगुवा *स्वयं आगे आगे चलकर, दिशा निर्देश देकर और एक आदर्श प्रस्तुत करके सबकी अगुवाई करता* है। यह विशेषतौर पर कलीसिया के प्राचीन का काम(या मसीही संगठन के अगुवे का काम) होता है।

(2) प्रबन्धक (1 कुरिन्थियों 12:28)

“एक प्रबन्धक” कलीसिया में एक असाधारण क्षमता(योग्यता) या एक साधारण अनुज्ञापत्र(कार्य,ऑफिस, निर्धारित ज़िम्मेदारी) है। एक प्रबन्धक अपनी बुद्धिमानी के द्वारा कठिन परिस्थितियों में कलीसिया की प्रोत्साहित करता है। कलीसिया में ऐसे भी प्राचीन थे जो बिना प्रचार करने तथा शिक्षा देने के बोझ के ही मण्डली के कामों को किया करते थे। बहुत से सहायकों ने अलग अलग तरीकों से मण्डली के अतिरिक्त प्रशासनिक कार्यों को अपने ऊपर ले लिया, वहीं प्रबन्धकों ने मण्डली में बहुत से आत्मिक कामों को करने के लिए अपने आप को दे दिया।

7. सेवा व सहायता करना।

(1) सेवा करना (रोमियों 12:7)

“सेवा करना” कलीसिया में एक असाधारण क्षमता(योग्यता) या एक साधारण अनुज्ञापत्र (कार्य,ऑफिस, निर्धारित ज़िम्मेदारी) है, उदारहण के लिए एक डीकन। *सेवक भिन्न प्रकार की ज़रूरतों को देखते और उन्हें पूरा करते हैं।*

(2) सहायक (1कुरिन्थियों 12:28)

“सहायता करना”एक असाधारण क्षमता है। सहायक विभिन्न प्रकार के कार्यों में सहायता प्रदान करता है।

8. बुद्धि की बातें, ज्ञान की बातें, भजन या प्रोत्साहित करने वाली बातें बोलना।

(1) बुद्धि की बातें बोलना(1कुरिन्थियों 12:8)

“बुद्धि की बातों को बोलते” समय उसकी विषय वस्तु में ही बुद्धि पायी जाती है। यह एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके द्वारा आप लोगों को *उच्चतम लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सर्वोच्च उपाय बताते हैं।* इस आत्मिक वरदान को प्राप्त लोग दूसरों को *सलाह देते हैं कि वे कैसे परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन व्यतीत कर सकते हैं।*

(2) ज्ञान की बातें बोलना (1 कुरिन्थियों 12:8)

“ज्ञान की बातें बोलते ”समय उसके विषय वस्तु में ही ज्ञान पाया जाता है। यह एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके द्वारा आप लोगों को *पहले से छुपी हुई बातों के मतलब को स्पष्टता से बता पाते हैं।* जिन लोगों को यह आत्मिक वरदान को प्राप्त होता है वे लोगों को परखते हैं *कि कोई विशेष शिक्षा अच्छी या स्वीकृत हैं की नहीं अर्थात वह बाइबल से प्राप्त परमेश्वर के प्रकाशन का समर्थन करती है कि नहीं।*

(3) भजनों को गाना (1 कुरिन्थियों 14:26)

"भजन करना" एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके अन्तर्गत आप पुराने गीतों, नये भजनों और आत्मिक गीतों के द्वारा दूसरों तक अपनी बात पहुंचाते हो(इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16)। जिन मसीहियों को यह आत्मिक वरदान प्राप्त होता है वे गीतों, कविताओं और संगीत के द्वारा परमेश्वर के संदेश को दूसरों तक पहुंचाते हैं।

(4) प्रोत्साहित करने वाली बातों को बोलना (रोमियों 12:8)।

"प्रोत्साहित करने वाली बातों को बोलना" एक असाधारण इच्छा और क्षमता है जिसके द्वारा हम मसीहियों को उन कामों को करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो बाइबल करने के लिए कहती है, चाहे वह सार्वजनिक तौर पर संदेश देने के द्वारा हो या फिर उनसे व्यक्तिगत तौर पर बातचीत करके । जिन मसीहियों के पास यह आत्मिक वरदान होता है वे दूसरे मसीहियों की व्यक्तिगत वृद्धि और सेवा करने के क्षेत्र में सलाह देते हैं। वे मसीहियों को बाइबल की शिक्षाओं का अपने जीवन व अपने चरित्र का निर्माण करने में इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वे मसीहियों को मसीहियों की तरह व्यवहार करने के लिए उत्साहित करते तथा उन्हें विश्वास के कदम उठाने के लिए कहते हैं।

9 भेंट या सहयोग देना।

"देना" (रोमियों 12:8) एक असाधारण इच्छा और योग्यता है जिसके द्वारा हम अपनी सम्पत्ति को लोगों की भलाई और परमेश्वर की महिमा के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं। जिन मसीहियों को यह आत्मिक वरदान प्राप्त होता है वे परमेश्वर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए धन या सम्पत्ति को अर्जित करने में अपना पूरा ध्यान लगाते हैं। वे परमेश्वर के राज्य को बढ़ाने के लिए अपने धन या सम्पत्ति को कलीसिया के मसीहियों(अपनी, दूसरी या विदेशी कलीसिया में) और मसीही संगठनों को देते हैं।

10. दया करना।

"दया करना"(रोमियों 12:8) दूसरों की जरूरतों पर ध्यान देने तथा उन्हें शान्ति देने व उनकी सहायता करने ही एक असाधारण इच्छा और योग्यता है। जिन मसीहियों में यह आत्मिक वरदान पाया जाता है वे अधिकांश अच्छे निरीक्षक व अच्छी तरह से गौर करने वाले होते हैं। वे बहुत लोगों की परिस्थितियों और निराश और चोटिल,शोषित व दबे हुए, बीमार व लाचार, बूढ़े और दुर्बल, तथा भयभीत व शोकित लोगों के विचारों व उनकी भावनाओं और जरूरतों को समझ जाते हैं। उनमें उन लोगों की जरूरतों को पहिचानने तथा उनकी सहायता करने की योग्यता होती है।

11. विश्वास।

"विश्वास" (1 कुरिन्थियों 12:9) परमेश्वर के लिए किसी विशेष काम को करने की एक असाधारण इच्छा और योग्यता है। इस वरदान को प्राप्त किये हुए मसीही लोग उस समय भी परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं जब परमेश्वर उन्हें कोई कठिन काम करने के लिए बुलाता है। उदाहरण के लिए, परमेश्वर उनसे विदेश में जाकर काम करने के लिए कह सकते हैं(इब्रानियों 11:8-10), दबाव व सताव की स्थिति में धीरज धरने के लिए कह सकता है(इब्रानियों 11:25-27), अन्यायी समाज में न्याय लाने के लिए कह सकता है(इब्रानियों 11:33)। जिन मसीहियों में यह आत्मिक वरदान होता है वे परमेश्वर पर चमत्कार करने के लिए विश्वास करने तथा उनके द्वारा बड़े-बड़े काम करने के लिए विश्वास करते हैं। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर पहाड़ों जैसी रूकावटों को उनके रास्ते से हटा सकता है(मरकुस 11:22-23) और उनके लिए मनुष्यों की दृष्टि में असम्भव दिखने वाले कामों को कर सकता है(रोमियों 4:19-21) और शत्रुओं से भी उनका मेल करा सकता है (नीतिवचन 16:7)। वे विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उनको वे चीज़ें प्रदान कर सकता है जो स्वाभाविक तौर पर असम्भव जान पड़ती हैं। जैसे नूह,अब्राहम और मूसा ने अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर की इच्छा को वास्तविकता बना दिया।

12. चंगा करने का वरदान।

"चंगा करने का वरदान"(1कुरिन्थियों 12:9,30) दूसरों की विभिन्न शारीरिक व आत्मिक बीमारियों को चंगा करने की एक असाधारण इच्छा और योग्यता है। जिन लोगों में इस प्रकार के वरदानों में से एक होता है उन्हें परमेश्वर लोगों को चंगा करने के लिए एक मानवीय उपकरण के जैसे इस्तेमाल करते हैं। सारी सच्ची चंगाईयां ईश्वर की ओर से ही मिलती है इसलिए उन्हें आलौकिक चंगाई कहा जा सकता है।

13. चमत्कार व अद्‌भुत कार्य करना।

"चमत्कार व अद्‌भुत कार्य करना"(1कुरिन्थियों 12:10,28-29) आलौकिक कामों को करना(2कुरिन्थियों 11:23-28) या असाधारण कामों व चमत्कारों को करना, एक असाधारण इच्छा व योग्यता है। इन चमत्कारों का मकसद बाइबल के परमेश्वर व उसके प्रकाशन की वास्तविकता की ओर लोगों के ध्यान को आकर्षित करना है और खास तौर पर यीशु मसीह पर नियमित तौर पर विश्वास करने को मज़बूती प्रदान करता हैं जिसका परिणाम अनन्त जीवन होता है (यूहन्ना 20:30-31),लेकिन इसके साथ इसका मकसद जीवित परमेश्वर के विद्यमान होने और बाइबल के प्रकाशनों पर के प्रति विश्वास को जागरूक करना भी है।

बाइबल में तब तब चमत्कार हुए हैं जब जब परमेश्वर ने स्वयं को और अपनी सच्चाई को निम्नलिखित उपायों से प्रगट किया है:

- मूसा(उदारहण. दस आज्ञाएं, लाल समुद्र का पार करना, चट्‌टान से पानी का निकलना, इत्यादि)।
- पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता(खास तौर पर एलिय्याह और एलीशा)
- यीशु मसीह
- नये नियम के प्रेरित(मत्ती 10:1,8; लूका 10:18-20;प्रेरितों 2 :43; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:4)।

14. आत्माओं की परख करना।

"आत्माओं को परखना" (1कुरिन्थियों 12:10) एक असाधारण इच्छा और योग्यता या बुलाहट है जिसके द्वारा आप आत्माओं में अन्तर को पहिचान सकते हैं। जिस समय तक नया नियम नहीं लिखा गया था, मसीही लोग निम्नलिखित पहलुओं को परखने के लिए इस वरदान का इस्तेमाल किया करते थे:

- ईश्वरीय कार्य है या शैतानी(1यूहन्ना 4:1-6; प्रेरितों 13:6-12)
- आत्मिक या मनोवैज्ञानिक
- उन्नति करने वाला हैं या विनाशकारी
- सत्य या झूठ।

ये मसीही जन परख सकते हैं कि जो कुछ नये नियम का भविष्यद्वक्ता कह रहा है वह सत्य है या झूठ और कलीयिसा ने उन शिक्षाओं पर ध्यान देना चाहिए या नहीं(1 कुरिन्थियों 14:29)। वे पहचान सकते हैं कि कलीसिया में कोई विशेष आत्मिक वरदान सच्चा है, गलत, गैर ज़िम्मेदार या झूठा और शैतानी है।

दुष्ट आत्माएं दुष्टात्मा ग्रसित लोगों में होकर तथा उन लोगों में होकर काम करती हैं जो अन्धविश्वास व तन्त्र मन्त्र पर विश्वास करते हैं। दुष्टात्माएं विशेष तौर पर उन कलीसियाओं में काम करती हैं जिनमें अन्यजातियों में से आये हुए नये विश्वासी होते हैं(1यूहन्ना 4:1)। ऐसी आत्माएं अपना प्रदर्शन झूठी भविष्यद्वाणियों के द्वारा तथा किसी एक विशेष चमत्कार को प्रदर्शित करके करती हैं(प्रेरितों 10:13-16)। शैतान द्वारा आत्मिक वरदानों की नकल व मसीह के कार्य दोनों ही इस संसार में विद्यमान हैं(मत्ती 24:23-24; प्रेरितों 20:29-31; 2 कुरिन्थियों 11:13-15)।

15. अन्यान्य भाषाएं।

(1) प्रेरितों के काम में भाषाएं(अन्यभाषाएं)।

(1) प्रेरितों के काम पुस्तक में अधिक भाषाओं या अन्यान्य भाषा में बोलना एक *असाधारण योग्यता थी, जिसके द्वारा दूसरों को परमेश्वर तथा उसके अद्‌भुत कार्यों के बारे में बताया जा सकता था* (प्रेरितों 2:7-11)।

इस आत्मिक वरदान का उद्देश्य योएल 2:28-29 में की गयी ऐतिहासिक भविष्यद्वाणी का पूरा होना था, जिसे पवित्र आत्मा के वास्तव में उण्डेले जाने तथा उसकी उपस्थिति की वास्वतिवकता को प्रमाणित करने के लिए पहले से दिया गया था (प्रेरितों 2:16)। मानव इतिहास में यह पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष और श्रवणीय घटना थी, पहले तो यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले सारे यहूदियों के लिए ,फिर यीशु पर विश्वास करने वाल सामरियों के लिए (आधे-यहूदियों),फिर यीशु पर विश्वास करने वाले अन्यजातियों में से(सारे संसार भर में रहने वाले गैर यहूदियों में से)(प्रेरितों 10:11,15) (प्रेरितों 1:8)। प्रेरितों के काम 2 अध्याय में यह चिन्ह प्रत्यक्ष (आग की सी फटती जीभें)और श्रवणीय (प्रचण्ड आधी का सा शब्द सुनाई दिया)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक उन कामों का *वर्णन करती या उन कामों को जोड़ती है* जो परमेश्वर बीते समय में उद्धार के निमित्त किया था। प्रेरितों की पुस्तक यह *शिक्षा नहीं देती* है कि वर्तमान जगत में इन घटनाओं का होना जरूरी है!

बाइबल हमें *बताती* है कि पवित्र आत्मा प्राप्त करने का सामान्य प्रत्यक्ष चिन्ह कलीसिया का उद्‌गमन (1कुरिन्थियों 12:12-13; प्रेरितों 2:42) और आत्मा के फलों की प्रत्यक्ष उपस्थिति, विशेष तौर पर विश्वासियों के जीवन में प्रेम है(गलातियों 5:22)! चाहें कलीसिया में अन्य आत्मिक वरदानों में कमी हो जाए लेकिन प्रेम कभी कम नहीं होना चाहिए (1कुरिन्थियों 13:1-8)! बाइबल यह शिक्षा नहीं देती है कि दूसरी ज्ञात व समझने योग्य भाषा में भविष्यद्वाणी के साथ साथ पवित्र आत्मा का मिलना (पवित्र आत्मा का बपतिस्मा)या प्राप्त होना जरूरी होता है)! (बाइबल में कहीं पर ऐसी शिक्षा नहीं दी गयी है कि अन्यान्य भाषा में या स्वर्गदूतों का भाषा बोलना पवित्र आत्मा में बपतिस्में का प्रमाण है!)

(2) कुरिन्थियों को लिए प्रथम पत्र में अन्यान्य भाषा।

कुरिन्थियों की पत्री में (1 कुरिन्थियों 12:10,28-30;13:1,8-11; 14:1-33) अन्यान्य भाषा में बात करना अपनी बात को *अनजानी, अज्ञात तथा समझ में न आने वाली भाषा में* (स्वर्गदूतों की भाषा) *व्यक्त करने की एक अति असाधारण योग्यता है।* इस घटना में आग की प्रत्यक्ष जीभें या प्रचण्ड आंधी का स्वर नहीं सुनाई दिया। क्योंकि अन्यान्य भाषा के बोले जाने को सुना तो जा सकता था, लेकिन वह समझ से परे थी जिसकी वजह से कलीसिया में दुविधा खड़ी हो गयी थी।

पौलुस *अचानक से किसी अन्यभाषा में बात करने की बात नहीं करता है, वरन वह स्थायी तौर पर इस भाषा को बोलने की योग्यता के बारे में* तथा इस घटना को नियंत्रित करने के बारे में बात करता है। वाक्य "जो कोई अन्यान्य भाषा में बात करता है" (1 कुरिन्थियों 14:13) का अर्थ किसी ऐसे जन से नहीं है जो अचानक से किसी सभा में पवित्र आत्मा में भरकर अन्यान्य भाषा में बोलने लग जाएं। परन्तु वह वाक्य उस व्यक्ति के बारे में बताता है जिसमें स्थायी तौर पर अन्यान्य भाषा में बोलने की योग्यता है और जो अन्यान्य भाषा में नियमित तौर पर बोलता है। यह बात 1 कुरिन्थियों 14 पद 26,27 और 28 में सही साबित होती है। इसी कारण पौलुस भी कलीसिया की सभा में अन्यान्य भाषा बोलते समय *कुछ सीमाओं को* ध्यान में रखने की सलाह दे सकता है-और यह तब तक सम्भव नहीं हो सकता था जब तक कि कोई जन अचानक से पवित्र आत्मा में भरकर अज्ञात भाषा में बात नहीं करने लगा होता!

कुरिन्थियों की कलीसिया में आत्मिक वरदानों का प्रगटीकरण नये नियम के प्रारम्भिक काल में हुआ था, उस समय तक नये नियम की घटनाओं को पूरा लिखा नहीं गया था। उस समय पर बहुत सी गलतियों और झूठी शिक्षा का सामने आना लाज़मी था। कुरिन्थियों की मण्डली नये विश्वासियों से मिलकर बनी थी जिसमें से ज्यादातर लोग

अन्यजातियों में से ही थे जिन्हें उन समस्याओं और घटनाओं में संघर्ष करना पड़ता जो समस्याएं उनके गैर मसीही माहौल में खड़ी हुआ करती थी। कुरिन्थ की कलीसिया के लोग "आत्मिक वरदानों को प्राप्त करने में जिज्ञासु नहीं थे" अर्थात उनमें "आत्मिक वरदानों को पाने की धुन नहीं थी" वरन उनमें केवल आत्माओं को (गैर-मसीही)पाने की धुन थी (Greek: zélótai este pneumatón) (1 कुरिन्थियों 14:12)। वे शायद यह विश्वास करते थे कि विभिन्न आत्माओं के द्वारा भिन्न भिन्न वरदान मिलते हैं। लेकिन प्रेरित पौलुस ने शिक्षा दी थी कि अलग अलग वरदान एक ही पवित्र आत्मा के द्वारा दिये जाते थे(1 कुरिन्थियों 12:4,11)। वह कुरिन्थियों के मसीहियों को शिक्षा देता है कि वे ऐसे वरदानों को प्राप्त करने का प्रयास करें जिससे कलीसिया में दुविधा और गड़बड़ी उत्पन्न होने की बजाय दूसरों की उन्नति हो(1 कुरिन्थियों 14:33,40)। इसलिए कुरिन्थ की कलीसिया के भीतर इस गड़बड़ी व पापमय परिस्थिति में भविष्यद्वाणी के वरदान और उसके संपूरक, आत्माओं की परख करने वाले वरदान की जरूरत थी(1 कुरिन्थियों 12:10)।

कुरिन्थियों की पत्री हमें बताती है कि अन्यान्य भाषा में बोलना कलीसिया में बहुत सी समस्याओं में से एक समस्या थी। उन जमाने में यहूदी धर्म और ग्रीक दर्शन का बहुत गहरा प्रभाव था(1 कुरिन्थियों 1 व 2), गुट बाज़ी,फूट, झगड़े, आत्मिक अपरिपक्वता (1 कुरिन्थियों 3), मृतकों के साथ शारीरिक यौन सम्बन्ध(1 कुरिन्थियों 5),अन्यजातियों के सामने एक दूसरे पर मुकद्दमा करना और अपनी आज़ादी का गलत इस्तेमाल करना(1 कुरिन्थियें 6), तलाक (1 कुरिन्थियों 7)अन्यजातियों के साथ मिलकर उनके उत्सवों में प्रतिभागी होना और मूर्तियों को चढ़ाए मांस को खाना (1 कुरिन्थियों 8), प्रेरितों के अधिकार को लेकर अभद्र बातों को बोलना(1कुरिन्थ 9),स्त्रियों द्वारा अपने स्थान का शोषण करना(1 कुरिन्थियों 11), नुकसान देय मसीही सभाएं तथा प्रभु भोज का अनुचित रीति से सेवन(1 कुरिन्थियों 11) अन्यान्य भाषा की चाह में आत्माओं को पाने की धुन में लगना(1कुरिन्थियों 12-14) और मृतकों में से जी उठने का इनकार करना(1 कुरिन्थियों 15)!

कुरिन्थियों की कलीसिया की समस्या यह थी कि वहां के लोगों ने अन्यान्य भाषा में बोलने के वरदान को ज्यादा महत्व देना *प्रारम्भी* कर दिया था(1 कुरिन्थियों 12:30) और कलीसिया की सभाओं में अन्यान्य भाषा बोले जाने से दुविधा, गड़बड़ी और मतभेद उत्पन्न हो गये थे(1 कुरिन्थियों अध्याय 14)। इसलिए पौलुस ने आत्मिक वरदानों (ग्रीक: करिश्मा)के मामले को सम्बोधित किया। सबसे पहले उसने बताया कि आत्मा के वरदानों (आत्मिक वरदान, सेवाकाई और काम करने में)में अति विविधता है(1 कुरिन्थियों 12)। उसके बाद वह कहता है सभी आत्मिक वरदानों में प्रेम सर्वश्रेष्ठ है (1 कुरिन्थियों 13)। उसके बाद वह अन्यान्य भाषा और भविष्यद्वाणी के बीच अन्तर को बताता है(1 कुरिन्थियों 14)।

ऐसा प्रतीत होता है कि कुरिन्थियों की कलीसिया में जिन लोगों को आत्मिक वरदान प्राप्त थे वे लोगों का ध्यान पाने के लिए उन वरदानों का गलत इस्तेमाल कर रहे थे। जबकि परमेश्वर ने उन्हें यह आज्ञा दी थी कि कलीसिया में सारे काम क्रम से किये जाए, लेकिन ये सदस्य असम्मानित व अभद्र व्यवहार कर रहे थे। उन्होंने कलीसिया की व्यवस्थित सभाओं को अव्यवस्थित बना डाला। शान्ति की बजाय उन सभाओं में चिड़चिड़ाहट,दुविधा और अव्यवस्था का बोलबाला होने लगा (1 कुरिन्थियों 14:33,40)। हालांकि प्रेरित पौलुस आत्मिक वरदानों को खासी अहमियत देता था, लेकिन सभाओं में गड़गड़ी फैलने की वजह से उसने मण्डली में इन वरदानों का अभ्यास करने से मना कर दिया। उसने आज्ञा दी कि सारे संसार भर की कलीसियाओं की सभाओं में जो कुछ भी होता है, उससे कलीसिया, उसके सदस्यों और आगन्तुकों की उन्नति होनी चाहिए। जिस आजादी के साथ हर एक मसीही अपने आत्मिक वरदानों का

इस्तेमाल कर सकता है वह प्रेम, उन्नति और सेवा के दायरे में होनी चाहिए। मसीहियों को उन सीमाओं के अन्तर्गत सीमित रहना चाहिए जिन्हें पौलुस ने बाइबल में निर्धारित कर दिया है(1 कुरिन्थियों 14:26-40)।

इस तरीके से प्रेरित पौलुस अन्यान्य भाषा को भी अन्य वरदानों में से एक ठहरा कर उसे उचित स्थान प्रदान करता है। वह विशेष तौर पर अन्यान्य भाषा का वरदान प्राप्त मसीहियों को अन्यान्य भाषा में बोलने (जो मसीही लोग अन्यान्य भाषा में बात किया करते थे),प्रार्थना करने और आत्मिक गीत गाने के लिए उत्साहित करता है लेकिन केवल आत्मा में ही नहीं वर समझ के साथ भी(समझने योग्य भाषा में)। 1 कुरिन्थियों 14:13-19 में लिखा है, "इस कारण जो अन्य भाषा बोले (present continuous tense), तो वह प्रार्थना (present continuous tense) करे *(a command)*, कि उसका अनुवाद भी कर सके (जो बात वह आत्मा में होकर कह रहा है उसे वह तुरन्त अपनी मात्र भाषा में बोले) । इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परन्तु मेरी बुद्धि काम नहीं देती। सो क्या करना चाहिए मैं आत्मा से भी (future tense) प्रार्थना *करूंगा;* और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा, मैं आत्मा से गाऊंगा और बुद्धि से भी गाऊंगा। (नहीं तो) यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद प आमीन क्योंकर कहेगा? इसलिये कि वह तो नहीं जानता, कि तू क्या कहता है? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है परन्तु दूसरे की उन्नति नहीं होती (present continuous time)। मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्य अन्य भाषा में बोलता हूँ। परन्तु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है कि औरों के सिखाने के लिए बुद्धि से पाँच ही बातें कहूं।" जब पौलुस "बोलने, प्रार्थना करने और समझ के साथ गीत गाने के बारे में बात करता है" तो इसका केवल एक ही मतलब हो सकता है कि वह कलीसिया में ऐसी भाषा का इस्तेमाल करता है जिसे सब समझ सकें!

पौलुस अन्यान्य भाषा में बोलने वाले, प्रार्थना करने और अज्ञात भाषा में गीत गाने वाले मसीहियों से कहता है कि वे जब अन्यान्य भाषा में प्रार्थना करें तो परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वे जिन बातों को आत्मा में होकर बोले रहें हैं उन बातों को अपनी मात्र में बता सकें। उन्हें अन्यान्य भाषा में सारी बात कहने के बाद उसका अनुवाद करके नहीं बताना चाहिए, वरन इसका उल्टा उन्हें तुरन्त समझ के साथ बताना चाहिए कि वे असल में अपनी आत्मा में होकर क्या कहना मांग रहे थे।

क्योंकि मनुष्य की आत्मा पूरी तरह से उसके नियन्त्रण में होती है(1कुरिन्थियों 14:32), वे चाहें तो अन्यान्य भाषा में न बोल कर मनुष्य को समझ में आने वाली भाषा का चुनाव कर सकते हैं जिससे हर एक सुनने वाले जन की उन्नति हो सके(1कुरिन्थियों 14:19)। केवल इस तरीके से सभा में उपस्थित सभी लोगों की उन्नति हो सकती है।(1कुरिन्थियों 14:12)।

16. अन्यान्य भाषा का अनुवाद।

(1) अन्यान्य भाषा का अनुवाद (1कुरिन्थियों 12:10,30 14:27-28)।

- यह न केवल लोगों की ज्ञात भाषा को *समझने,उनका अनुवाद करने और उसका अर्थ बताने की एक असाधारण योग्यता हैं,* वरन स्वर्गदूतों की अज्ञात भाषा को भी, ताकि कलीसिया में सुनने वाले सभी लोगों की उन्नति हो सके। यह वरदान मनुष्यों द्वारा बोले जाने वाली भाषा और मनुष्य की समझ में न आने वाली स्वर्गदूतों की अज्ञात भाषा, दोनो के लिए पूरक है। जिन लोगों को यह आत्मिक वरदान प्राप्त है वे:
- उन बातों का अनुवाद कर सकते हैं जो अज्ञात मानवीय भाषा में कही गयी हो।

- पहचान सकते हैं कि अन्यान्य भाषा बोलने वाला यह मसीही जन सच्चा या झूठा है।
- परख सकते हें कि जो बाते वह कह रहे हैं उससे कलीसिया की उन्नति होगी या उसका नाश होगा।

(2) पारस्परिक तौर पर आत्मा और मन से बोलना।

यह तो स्पष्ट है कि कुरिन्थियों की कलीसिया में जितने लोग अन्यान्य भाषा में बोला करते थे उनमें से किसी के पास भाषा का अनुवाद करने का कोई आत्मिक वरदान नहीं था। (1कुरिन्थियों 14:13)।

यह केवल उस व्यक्ति के लिए सम्भव था जिसे वास्तव में अन्यान्य भाषा में बोलने तथा उसका अनुवाद करने का वरदान मिला हो, लेकिन उसके लिए उसे *तुरन्त बाद उन बातों को अपने मन अर्थात अपनी मात्रभाषा में बोलने की जरूरत होती है जिन्हें उसने अपनी आत्मा में बोला था।* जिन बातों को वह आत्मा में अन्यान्य भाषा में बोलना चाहता था उन्हीं बातों को उसे अपनी भाषा में प्रगट करना होगा। (1 कुरिन्थियों 14:13-19)!

लेकिन यह योग्यता अपने आप से उत्पन्न होने वाली नहीं है(1 कुरिन्थियों 14:5,13)। सामान्य तौर पर, यदि मण्डली में कोई अन्यान्य भाषा का अनुवाद करने वाला उपस्थित हो तो सब उसे निश्चय तौर पर जानते होगें, कि उस जन को अन्यान्य भाषा का अनुवाद करने का वरदान मिला है और वह व्यक्ति तथा अन्यान्य भाषा बोलने वाला एक ही जन नहीं होगा(1 कुरिन्थियों 12:10;14:27-28)। लेकिन यदि मण्डली में कोई अन्यान्य भाषा का अनुवाद करने वाला न हो या वह अनुवाद करने का इच्छुक न हो ता, प्रेरित पौलुस कहता है कि इस दशा में कलीसिया में अन्यान्य भाषा का उपयोग न किया जाए(1 कुरिन्थियों 14:28)।

(3) अन्यान्य भाषा में बात करने के लिए प्रेरिताई की सीमाएं।

इसके अलावा पौलुस स्पष्ट तौर पर यह भी कहता है कि यदि मण्डली में अनुवाद करने वाला मौजूद और इच्छुक हो तो, कलीसिया में केवल तीन लोग ही बारी बारी करके अन्यान्य भाषा में बात करें, लेकिन वह भी उस दशा में बोली जाएं जब अनुवाद करने वाला तुरन्त उठकर उन बातों को अनुवाद करे!

वह यह भी कहता है कि लोग कलीसिया की सभा में एक एक करके लगातार अज्ञान भाषा या अन्यान्य भाषा में न बोलें(1कुरिन्थियों 14:27)। और वह कलीसिया में महिलाओं को कलीसिया में बोलने (भविष्यद्वाणी करने या अन्यान्य भाषा में बोलने)के लिए मना करता है (1 कुरिन्थियों 14:27)। और इसके अलावा वह महिलाओं को कलीसिया की आधिकारिक सभाओं में बोलने(भविष्यद्वाणी करने या अन्यान्य भाषा में बोलने)के लिए मना करता है (1 कुरिन्थियों 14:34-38)।

17. ब्रह्मचर्य।

ब्रह्मचर्य (1 कुरिन्थियों 7:7,32-35; मत्ती 19:10-12) *परमेश्वर व उसके राज्य की सेवा करने के लिए अविवाहित रहने का अटल समर्पण एक असाधारण योग्यता, चुनाव और बुलाहट है।*
अन्य आत्मिक वरदानों के समान ही, यह आत्मिक वरदान भी परमेश्वर द्वारा स्थायी तौर पर या कुछ समय के लिए दिया जा सकता है अर्थात जब तक परमेश्वर को यह जरूरी लगे।